सरा-सर

अन्याय

{संत रामपाल जी की की गई अन्यायपूर्ण सजा के विषय में सच तथा
अजब अध्यात्म ज्ञान की संक्षिप्त जानकारी पढ़ें इस पुस्तक में}

कबीर, निर्बल को ना सताईए, जाकि मोटी हाय।
बिना जीव की श्वांस से, लोह भस्म हो जाय।।
निरंजन धन तेरा दरबार। जहाँ पर तनिक न न्याय विचार।।

प्रकाशक :-

राष्ट्रीय समाज सेवा समिति, बरवाला
जिला-हिसार (हरियाणा)

मुद्रकः-

भक्तों द्वारा अपने-अपने कम्प्यूटर से निकाले प्रिन्ट

विषय सूची

❑❑❑

''सरा-सर अन्याय''

संत रामपाल जी की की गई अन्यायपूर्ण सजा के विषय में सच तथा अजब अध्यात्म ज्ञान की संक्षिप्त जानकारी पढ़ें इस पुस्तक में :-

कबीर, निर्बल को ना सताईए, जाकि मोटी हाय।
बिना जीव की श्वांस से, लोह भस्म हो जाय।।
निरंजन धन तेरा दरबार। जहाँ पर तनिक न न्याय विचार।।

एक जिम्मेदार व माननीय व्यक्ति कानून को अनदेखा करके मनमानी करता है तो उसे याद रखना चाहिए कि वह कितनी बड़ी गलती कर रहा है। इसका दुष्परिणाम हो सकता है। वर्तमान में भारत देश की जनता सन् 1947 से पहले वाली भोली-भाली तथा अत्याचार व अन्याय सहन करने वाली नहीं है। स्वतंत्र देश की जनता हर क्षेत्र में स्वतंत्रता की आशा रखती है। प्रजातंत्र के अंदर प्रत्येक नागरिक को बोलने का अधिकार प्राप्त है। हम मानते हैं कि कानून है तो देश है। जनता कानून से सुरक्षित है। यदि कानून के रखवाले ही कानून को अनदेखा करेंगे तो जनता में गलत संदेश जाएगा। जब कानून का दुरूपयोग होने लगता है और जनता का दम घुटने लगता है तो जनता कानून को संभाल लेती है। फिर क्या होता है? यह बताने की आवश्यकता नहीं है। लिबिया देश में तानाशाही राजा था। एक उसने 42 वर्ष मनमानी की, अंत में जनता को कानून हाथ में लेना पड़ा और उस तानाशाह को घर-गाँव छोड़कर भागना पड़ा। कई रात्रि एक पुलिया की पाईप में गुजारी। झूठन खाकर पेट भरा। अंत में जनता के हाथों मारा गया। नया शासक चुना गया। देश की जनता ने राहत की साँस ली। वर्तमान में भारत देश के कुछ माननीय भ्रष्ट जज पूर्ण रूप से तानाशाह बने हैं। उन्हें न देश की जनता की परवाह है, न अपने ऊपर के अधिकारी जजों की, वे मनमाने आदेश पारित करते हैं। हमने ऐसे भ्रष्ट जजों की जानकारी पहले भी दी है। हमने तीन पुस्तकें लिखी थी :- 1. सच बनाम झूठ, 2. न्यायालय की गिरती गरिमा, 3. भ्रष्ट जज कुमार्ग पर। अब यह चौथी पुस्तक लिख रहे हैं। इसमें कुछ जजों के कारनामों का उल्लेख किया है। हम मानते हैं कि अधिकतर जज साहेबान कानून के अनुसार कार्य करने वाले न्यायप्रिय तथा ईमानदार हैं। उनका हम तहदिल से सम्मान करते हैं।

★ जज परमात्मा का छोटा रूप है। जिस व्यक्ति की कलम में जिंदगी व मौत का अधिकार है, वह परमात्मा से कम शक्ति वाला नहीं है। यदि ऐसा ताकतवर व्यक्ति अपनी शक्ति का दुरूपयोग करके निर्दोषों को आजीवन कारावास अंतिम श्वांस तक देता है या मौत की सजा देता है, वह जज तो दूर की कौड़ी है, वह तो नेक इंसान भी नहीं है, वह तो जल्लाद है। ऐसे ही व्यक्तियों का कारनामा आप जी इस पत्र में पढ़ेंगे जो इस प्रकार है :-

हरियाणा सरकार के दबाव में दिए गए गलत फैसले

★ संत रामपाल जी महाराज तथा अन्य 22 अनुयाईयों को दी गई आजीवन कारावास की सजा कानून का मजाक है। कानून का दुरूपयोग है।

विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी ने अपने वफादार पुलिस अधिकारी अनिल राव I.G. CID के द्वारा माननीय जज श्री देशराज चालिया पर विशेष दबाव देकर उसे टॉर्चर करके धमकाकर मुकदमा नं. 429/2014 तथा 430/2014 थाना-बरवाला (जिला-हिसार) में हमारे सतगुरू रामपाल दास जी तथा अनुयाईयों की सजा करवाई है।

★ इन दोनों मुकदमों में सजा हो ही नहीं सकती थी, क्योंकि सब गवाह जो मरने वालों के पति, पिता, बेटा-बेटी व संबंधी थे। सबने कोर्ट में बयान देकर बताया कि हमारे व्यक्ति व पत्नी, माँ, बेटी-बेटा, पुत्रवधु जो भी बरवाला आश्रम में मरे हैं, वे पुलिस की बर्बरता से की गई कार्यवाही से मरे हैं। पुलिस ने लाठी मारी, आँसू गैस के गोले मारे, पत्थर मारे। जिस कारण से उनकी मत्यु हुई। आश्रम के किसी भी अनुयाई तथा गुरू जी रामपाल जी का इनकी मौत में कोई हाथ नहीं है। पुलिस ने खाली कागजों पर हमारे दस्तखत यह कहकर कराए थे कि तुमको शव देने हैं। उनकी कार्यवाही करनी है। तीन-चार कोरे कागजों पर प्रत्येक के दस्तखत कराए थे। बाद में पता चला कि उन कागजों पर हमारी ओर से झूठी कहानी बनाकर दरखास्त लिखकर दो हत्या के मुकदमें हमारे गुरू जी रामपाल जी तथा 22 अन्य अनुयाईयों (स्त्री-पुरूषों) पर बना दिए। सन् 2015 में हमने (जिनके नाम से FIR लिखी थी) अपनी ओर से वकील करके माननीय हाई कोर्ट पंजाब व हरियाणा (चण्डीगढ़) में पुलिस प्रशासन हिसार के खिलाफ कार्यवाही करने की अर्जी भी लगाई है कि पुलिस ने हमारी पत्नियों व अन्य को मारा है। डंडों, लाठियों से पीटा, आंसू गैसे के गोले मारे। चिली बम मारे। जिस कारण से उन सब छः जनों की मौत हो गई।

★ पुलिस ने FIR तथा चालान में झूठा लिखा है कि रामपाल के कहने पर इसके इन अनुयायियों ने जबरदस्ती एक कमरे में बंद कर दिया जो 60 फुट लंबा तथा 19 फुट 6 इंच चौड़ा है तथा उसमें आमने-सामने 8 खिड़की लगी हैं और 4 गेट हैं। जिस कारण से उन सबकी दम घुटने से मौत हो गई। इसलिए इन पर IPC की धारा 302, 343, 120B आदि के तहत जुर्म बनता है। चार्ज के समय हमारे वकील जी ने तत्कालीन जज श्री अजय पराशर जी से बताया कि चालान की कहानी के अनुसार धारा 302 नहीं लगती। यह तो हादसा बन सकता है और IPC की धारा 304 पुलिस ने लगानी चाहिए थी। धारा 302 को समाप्त किया जाए, परंतु जज साहब ने भी धारा नहीं बदली। हमने जज श्री अजय पराशर जी से सब मुकदमों को किसी अन्य जज के पास बदलवाने की अर्जी लगाई। कहा कि जज साहेब कानून के अनुसार ट्रॉयल (केस की सुनवाई) नहीं कर रहे हैं। दो बार सैशन

जज साहब हिसार की कोर्ट में अर्जी लगाई, परंतु मुकदमें नहीं बदले। फिर माननीय हाई कोर्ट पंजाब व हरियाणा चण्डीगढ़ में अर्जी लगाई। 27-09-2018 को माननीय हाई कोर्ट ने जज श्री अजय पराशर जी की बदली जींद कोर्ट में कर दी। अतिरिक्त सैशन जज (ADJ) श्री अजय पराशर जी पर भी मुख्यमंत्री हरियाणा श्री मनोहर लाल जी, IG CID श्री अनिल राव के माध्यम से दबाव डालकर अन्याय करने की तैयारी में थे। परमात्मा की कंपा से अजय पराशर जी से पीछा छुट गया। राहत की साँस ली।

★ इसके पश्चात् हमारे तीनों मुकदमें 428, 429, 430 श्री देशराज चालिया अतिरिक्त सैशन जज (ADJ) के पास चले गए। विश्वसनीय सूत्रों से पता चला कि श्री अनिल राव IG ने अपने ऑफिस में कहा कि सरकार के हाथ बहुत लंबे हैं। बाबा रामपाल बचकर कहाँ जाएगा? अब देखना मेरा करिश्मा। अनिल राव I.G. ने ये झूठे मुकदमें मुख्यमंत्री जी के कहने से बनाये थे। अनिल राव जी सन् 2014-2015 में I.G. हिसार रेंज थे। इन्हीं की देखरेख में सब झूठे मुकदमें हमारे गुरू जी तथा भक्तों पर बनाए गए थे। अपनी गलती समाज के सामने आने से छुपाने के लिए मुकदमों में सजा करना इन्हीं की मजबूरी बन गई थी। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने विडियो कान्फ्रैंस के मॉनिटरिंग करते हुए कहा कि किसी कीमत पर भी बाबा रामपाल बचना नहीं चाहिए। यह सब मुकदमों में बरी होता जा रहा है। सरकार की बेइज्जती हो रही है। जिस भी जज के उसके मुकदमें जाऐं, उसे प्रमोशन का लालच देना। नहीं माने तो अन्य तरीका अपनाना, यह काम होना चाहिए। दो मुकदमें फैसले पर हैं। दोनों आजीवन कारावास अंतिम श्वांस तक हों, नोट कर लें। मैं जो कहूँ, वही लिखा जाए। जो कुछ भी जज देशराज जी चालिया ने फैसले में लिखा है, वह अनिल राव ने लिखवाकर दिया था। शब्दाशब्द (word to word) यह लिखना है, कानूनी भाषा आप (जज) बना लेना। यह मुख्यमंत्री जी का सख्त आदेश है।

❑ प्रलोभन :- श्री देशराज चालिया (DR Chalia) ADJ No. 1 है। जज का अगला प्रमोशन सैशन जज का होगा जिसमें मुख्यमंत्री जी की सिफारिश अहम होती है। बिना मुख्यमंत्री की सिफारिश के किसी भी जज की उन्नति (Promotion) नहीं होती। सैशन जज के बाद अगली उन्नति (Promotion) हाई कोर्ट के जज के तौर पर होती जिसमें भी सरकार की राय ली जाती है।

★ विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि जज देशराज जी अच्छे व्यक्ति हैं। इन्होंने कहा कि मैंने तो फाईल भी नहीं पढ़ी है। पढ़कर बताऊँगा। रात्रि में डेढ़ बजे (01:30) तक दोनों फाइलें पढ़ी। अतिंम बहस (Final Arguments) सुनी। लिखित बहस (Written Arguments) दी गई। सब CD की पैन ड्राईव दी गई। दिनांक 06-10-2018 तथा 08-10-2018 को दोनों मुकदमों (429, 430) की बहस सुनकर माननीय जज देशराज चालिया (DR Chalia) जी ने ओपन कोर्ट (Open Court) में सरेआम हमारे वकीलों तथा उपस्थित सब आरोपितों (Accused's) के सामने कहा कि दिनांक 11-10-2018 को फैसला सुनाया जाएगा और आप (हमारे

वकीलों व अनुयाई जो मुकदमों में आरोपित थे, से कहा) अपने जमानती-शिनाख्ती ले आना। सरकारी वकीलों ने कहा, जज साहब जी! आप इन्हें बरी करो तो हमारे ऊपर टिप्पणी ना करना। पहले 426, 427 नं. मुकदमों में जज साहेब ने इन्हें बरी किया था और लिखा था कि सरकारी वकीलों व प्रशासन ने कोई ऐसा प्रमाण नहीं दिया जिससे अपराध सिद्ध हो, इन पर कार्यवाही की जाए। यह पत्र DC व SP हिसार को लिखा था। हमारे वकीलों ने कहा कि फैसला अपने पक्ष में आएगा क्योंकि कोई भी प्रमाण नहीं है। परंतु अभी चुप रहना। परंतु जब सरकार को पता चला कि जज साहब ने अपना पक्का मन बरी करने का बना रखा है तो CM तथा IG अनिल राव ने अपनी सारी ताकत लगा दी। जब जज साहब की आत्मा मानने को तैयार नहीं थी तो धमकी दी गई कि आपकी हमारे पास बहुत शिकायतें हैं कि आप पैसे लेकर फैसले देते हो। आपने बाबा रामपाल से भी आठ करोड़ में सौदा किया है। आपके पास एक करोड़ आ चुका है। आपके खिलाफ CBI से जाँच करवाई जाएगी। अब जज साहब के पास अन्याय करने के अतिरिक्त कोई विकल्प न था। दिनांक 11-10-2018 को जज साहब ने दोनों केसों में फैसला सुनाया। उनका चेहरा बहुत उदास था। जुबान लड़खड़ा रही थी। आँखें झुकी हुई थी। दोषी करार कर दिया। फैसला दिनांक 16-17 अक्तूबर 2018 को सुनाने को कहा। फैसले में जो सरकार ने कहा, वही लिखा।

❑ फैसले की एक झलक :-

जज श्री देशराज चालिया जी की आत्मा मानती थी कि यह दोनों मुकदमें जघन्य अपराध नहीं हैं। इसलिए उन्होंने लिखा कि **with the above observations and having the facts of the case in mind, the court is of the considered view that present case does not fall in the category of rarest of rare case** अर्थात् जज साहब ने दोनों मुकदमों के फैसले में यही लिखा जिसका अर्थ यह है कि उपरोक्त प्रकरण व केस की सच्चाई को ध्यान में रखते हुए यह कोर्ट (जज श्री देशराज चालिया) मानता है कि यह मुकदमा जघन्य अपराध की श्रेणी में नहीं आता।

★ विचार करने की बात है कि जज साहब मानते हैं कि ये मुकदमा जघन्य अपराध (**Hinious Crime**) नहीं है। फिर सरकार के दबाव में सजा जघन्य अपराध वाली कर दी कि :-

धारा 302 और 120B के तहत प्रत्येक को जब तक मरेगा, कैद में रखा जाए और 1-1 लाख रूपये जुर्माना लिया जाए। यदि जुर्माना न भरे तो दो वर्ष की अतिरिक्त कैद काटेगा। कठिन कारावास दी जाती है। कोई राहत न दी जाए यानि सरकार कैदियों को कोई सजा में माफी देती है, वह भी नहीं दी जाए।

❑ विवेचन :- इससे सिद्ध है कि जज साहब पर सरकार का इतना दबाव था कि वे अपना विवेक भी खो बैठे।

❑ प्रमाण :- जज साहब ने विचार नहीं किया कि जब व्यक्ति जेल में अंतिम श्वांस लेगा तो संसार से चला जाएगा। वह एक लाख रूपया क्यों देगा जो जेल

में ही मरेगा। जुर्माना नहीं देगा तो दो वर्ष की कैद और काटनी पड़ेगी। क्या वह व्यक्ति परमात्मा के पास जाकर कहेगा कि जी! जज देशराज चालिया जी के आदेश का पालन करने के लिए दो वर्ष और मेरी आयु बढ़ाओ ताकि जुर्माने के स्थान पर दो वर्ष की सजा पूरी कर आऊँ या उसके शव को दो वर्ष तक आदेश की पालना हेतु जेल में रखा जाए। इससे स्वयं सिद्ध है कि जज देशराज चालिया (**DR Chalia**) सरकार के दबाव में होश-हवाश खो चुका था।

★ यदि **DR Chalia ADJ** अपनी सद्बुद्धि न खोए होते तो संत रामपाल जी के विषय में यह नहीं लिखते कि रामपाल के दिल में दया नहीं। इसमें इंसानियत नहीं है तो यह सजा में नरमी बरतने के काबिल नहीं है। इसलिए मैं सब दोषियों को आजीवन कारावास जब तक मरे जेल में रहे और एक लाख जुर्माना लगाता हूँ। जुर्माना न भरने पर दो वर्ष की अतिरिक्त जेल काटेंगे।

★ माननीय जज साहब! कोस रहे हो संत रामपाल को, सजा सबको सुना रहे हो। अन्य के विषय में तो कोई टिप्पणी नहीं की। उन पर तो रहम करते।

★ इससे भी सिद्ध है कि जज साहब ने सरकार के दबाव में उट-पटांग आदेश पारित किया है। यदि जज साहब अपने विवेक से फैसला देते तो संत रामपाल जी को नहीं कहते कि इसके दिल में दया नहीं क्योंकि दया का नाश तो जज देशराज जी का हुआ स्पष्ट नजर आ रहा है जिसने 23 निर्दोषों को आजीवन कारावास (मरते दम तक जेल) में रहने की सजा सुना दी। अक्तूबर 2018 में गुरूग्राम (गुड़गाँव) में तैनात ADJ श्री कष्णकांत आर्य (हिसार निवासी) के गनमैन (अंगरक्षक) ने इनकी पत्नी व पुत्र की गोली मारकर हत्या कर दी। पत्नी की मौत घटनास्थल पर उसी समय हो गई थी। लड़के की मौत कुछ दिन बाद हस्पताल में हो गई। उसका अंतिम संस्कार हिसार (हरियाणा) में किया गया। उस अवसर पर हिसार के सारे जज गए हुए थे। हाई कोर्ट के जज भी सांत्वना देने गए थे। श्री कष्णकांत जी कभी अपने पुत्र के शव से लिपटकर रो रहा था, T.V. व अखबार में खबर देखकर हमारी आँखें भी भर आई। कलेजा मुँह को आ रहा था। जज कष्णकांत टूट चुका था, उजड़ चुका है। उस महिपाल अंगरक्षक को कहा जा सकता है कि उस अपराधी के दिल में दया नाम की कोई वस्तु नहीं है। वह राक्षस है। एक परिवार उजाड़ दिया। शेष परिजन टक्कर मार-मारकर रो रहे थे। रिश्तेदारों तक गमगीन थे। घोर अंधकार छाया था।

★ अब जज श्री देशराज चालिया में देखते हैं कि इनमें कितनी दया तथा इंसानियत है। महिपाल जल्लाद ने एक परिवार उजाड़ा और उसके रिश्तेदारों को ठेस पहुँचाई दो निर्दोषों को मारकर। इस देशराज ने 23 निर्दोषों की हत्या कर दी। जो व्यक्ति आजीवन जेल में सड़कर मरेगा, वह तो 16-10-2018 तथा 17-10-2018 को फैसला सुनते ही मर गया था। 23 व्यक्तियों के 23 परिवारों के सदस्य टक्कर मार-मारकर रोए। उनके रिश्तेदार भी गमगीन होकर उनको सांत्वना देने उनके घर आए। मौत से भी बद्तर हालात हो गए। श्री देशराज दयावान ने यह नाश

कर दिया। इस महिपाल अंगरक्षक के पास सरकार की दी हुई रिवाल्वर थी। उसका दुरूपयोग करके दो का जीवन छीन लिया। श्री देशराज जी को जज कहें या जल्लाद जिसने सरकार से प्राप्त कलम की शक्ति से 23 निर्दोषों का जीवन छीन लिया। निर्दोष को चाहे रिवाल्वर से मारो, चाहे कलम के आदेश से मारो, दोष एक समान है। महिपाल जालिम की ड्यूटी थी अपराधियों को मारने की जो जज श्री कष्णकांत को हानि पहुँचाने की कोशिश करते। उसने निर्दोषों को मार दिया। श्री देशराज चालिया को सरकार ने अधिकार दिया है दोषियों को सजा देने का। इसने निर्दोषों पर कहर ढ़हा दिया।

★ हमें पूर्ण विश्वास है कि हाई कोर्ट में दूध-पानी होगा और हमें न्याय मिलेगा। लेकिन श्री देशराज का क्या होगा? जब इन पापों का भोग शुरू होगा, तब रोने के सिवाय जज साहब डी.आर. चालिया के पास कुछ नहीं बचा होगा। सच्चा न्यायधीश ऊपर परमेश्वर जी! सतलोक में बैठा है। उसकी कोर्ट में इस जज को कटघरे में खड़ा करके सवाल-जवाब किये जाऐंगे। उससे पहले यहाँ संसार में भी न जाने इसके परिवार पर कुदरत का क्या कहर टूटेगा? श्रीमान् जी के पापों के फलस्वरूप किसी बच्चे की मत्यु हो जाए या इसको कोई भयंकर रोग लग जाए, तब इसकी अकड़ ठीक होगी। परंतु तब देर हो चुकी होगी।

★ हे जज देशराज जी! संत रामपाल जी के विषय में यदि आपने ठीक से जाना होता तो ऐसी बेहुदी-बेतुकी टिप्पणी उनके ऊपर कभी नहीं करते। संत रामपाल जी बताते हैं कि परमात्मा ने संसार में जन्म देने से पहले मत्यु का समय भी प्रत्येक का निर्धारित कर रखा है यानि हे देशराज चालिया जी! आपको भी परमात्मा ने (मत्युदंड) सजा-ए-मौत की सजा सुना रखी है। उसका दिन व समय भी आपको पता नहीं है। इसी कारण से आप अहंकार में अंधे होकर अन्य बेकसूरों को आजीवन कारावास देकर फूले नहीं समा रहे हो। न जाने कब आपकी फूक निकल जाएगी। तत्वज्ञान के अभाव में प्रत्येक मानव यह कहता है कि एक दिन तो सभी ने मरना है। अभी तो मेरी 20-30, 40, 50...... वर्ष आयु है। व्यक्ति 100 वर्ष तो जीवित रह सकता है। इसी अज्ञानता के आधार से मानव जुल्म व अन्याय करते समय जरा भी नहीं डरता, परंतु जब लाईलाज रोग की जानकारी होती है तो नानी याद आ जाती है। साधु-संत व भक्त परमात्मा के विधान से परिचित होते हैं। उनको परमात्मा का दिया मत्यु दिन याद रहता है। वे इसलिए कोई गलती नहीं करते। परमात्मा तथा मौत को याद रखते हैं। संत रामपाल जी सत्संग में बताया-सुनाया करते हैं जो इस प्रकार है :-

★ एक धनीराम नाम का व्यापारी था। वह बहुत मंहगा सामान बेचता था। मिलावट भी करता था। पाप से कोई भय नहीं करता था। उसी शहर से दो कि. मी. दूर एक संत जी का आश्रम था। संत दुबला-पतला था। एक दिन वह साहूकार किसी भक्त के साथ उस आश्रम में गया। साथ में दूध का लोटा व फलों का थैला भी ले गया। आगे देखा तो संत के आश्रम में दूध का घड़ा भरा रखा था। फलों

का ढ़ेर लगा था। साहूकार ने कहा महाराज क्या आप फल नहीं खाते? क्या दूध नहीं पीते? इतने पतले-दुबले हो। क्या आपको कोई चिंता सता रही है जो उदास बैठे हो? संत ने कहा सेठ जी! मुझे मेरी मौत दिखाई दे रही है। इस कारण से उदास हूँ तथा खाना-पीना भी ठीक से नहीं खाया जाता। सेठ ने पूछा कि क्या आपको कोई रोग है? संत ने कहा, नहीं। क्या आप शीघ्र स्वयं चोला (शरीर) त्यागने वाले हो? संत ने कहा, नहीं। सेठ ने कहा कि मत्यु भय किस कारण से सता रहा है। संत ने कहा कि मुझे मेरी मौत दिखाई दे रही है। सेठ ने कहा क्या निकट भविष्य में जीवन अंत की तिथि है? संत ने कहा कि आज से चालीस वर्ष बाद मेरी मत्यु होगी, यह चिंता है। इसी कारण से कुछ विशेष खाने की रूचि नहीं बनती। बस थोड़ा-बहुत खा लेता हूँ। पापकर्म से डरता रहता हूँ। चिंतित रहता हूँ कि कोई पाप न हो जाए। परमात्मा को याद रखता हूँ। सेठ ने कहा, महाराज! आप साधु होकर मौत की चिंता करते हो। आप ने साधु-महात्माओं वाली बात नहीं की, कायर वाली बात की है। मस्त रहो, खाओ-पीओ। एक दिन तो सबने मरना है।

★ संत का शिष्य राजा भी था। संत ने राजा से कहा कि आप सेठ धनीराम को फाँसी की सजा सुनाकर कैद में बंद कर दो। उसको कहना कि आज से चालीस दिन बाद चांदनी चौदस को शाम चार बजे फांसी लगाई जाएगी। धनीराम की कैद-कोठरी में सब प्रकार के फल एक-एक सेर (किलोग्राम) तथा दो लोटे ताजे दूध के भरे रखना। अच्छा हलवा-खीर, कचोरी-पकोड़ी का भोजन खाने को देना। राजा ने सेठ धनीराम को गिरफ्तार करके चालीस दिन बाद चांदनी चौदस को फांसी देने का ऐलान भरी कोर्ट में किया। दोष बताया कि धनीराम ने राधेश्याम का कत्ल किया है। धनीराम रोवै और निर्दोष बतावै। परंतु राजा का आदेश था, उसे कैद-कोठरी में डाला गया। खाने को उपरोक्त सब सामान दिया जाने लगा। चांदनी चौदस यानि जिस दिन सेठ को फांसी लगनी थी। उससे दस दिन पहले संत जी जेल में गया। राजा भी अपने गुरू जी के साथ था। जब संत जी उस कक्ष के सामने पहुँचा जिसमें धनीराम बंद था तो धनीराम ने जोर से आवाज लगाई, महाराज! बचा ले! बचा ले! कतई निर्दोष हूँ। संत जी को तो जाना ही उसके पास था। संत जी कोठरी के निकट गया और पूछा कौन हो आप? क्या दंड प्राप्त है? सेठ ने कहा महाराज! मैं धनीराम हूँ। मुझे दस दिन बाद शाम चार बजे फांसी लगेगी। बचा लो महाराज! बिल्कुल निर्दोष हूँ। संत जी ने कहा हे धनीराम! आप इतने दुर्बल कैसे हो गये और तेरे पास दूध के दो लोटे दो-दो सेर (किलोग्राम) के भरे रखे हैं। चार प्रकार के फल, हलवा, रोटी, खीर और कचोरी तक रखी हैं। क्या खाता-पीता नहीं? धनीराम ने कहा, महाराज! कुछ नहीं खाया-पीया जाता। चांदनी चौदस दिखाई दे रही है। मौत सामने नाचती दिख रही है। कुछ भी खाने को मन नहीं करता। तब संत जी ने कहा कि सेठ जी! मरना तो एक दिन सबने है। फिर मरने से क्या डरना? खा-पी, मौज कर। सेठ धनीराम ने कहा, महाराज! कुछ भी अच्छा नहीं लगता, बचा लो। तब संत जी ने कहा कि सेठ धनीराम जी! जैसे आज आपको

चांदनी चौदस दिखाई दे रही है, इसी प्रकार मुझे वो चालीस वर्ष बाद वाला मत्यु दिन दिखाई दे रहा है। आज पता चला, मत्यु भय कैसा होता है? आप अज्ञान अंधकार में मोह और अहंकार के नशे में जाने का दिन भूले हो। परमात्मा ने मत्युदंड तो जीवन के साथ ही दे दिया है। हम संत और भक्त नहीं भूलते। इसलिए पाप करने से डरते हैं। आप नहीं डरते क्योंकि आपको अध्यात्म ज्ञान नहीं है। राजा से कहा कि धनीराम को छोड़ दो। राजा को संत जी ने सब बता रखा था कि सेठ जी की अक्ल ठिकाने लगाने के लिए ऐसा-ऐसा करना है। राजा ने धनीराम को मुक्त कर दिया। संत जी के चरणों में गिरकर धनीराम जी ने अपनी भूल मानी तथा शिष्य होकर धर्म-कर्म करके जीवन सफल किया। सबसे सस्ता सामान बेचने लगा। शहर में भक्त जी के नाम से विख्यात हुआ। सदा गुरू जी की आज्ञा में रहकर जीवन धन्य किया।

★ इस कथा को पढ़कर व सुनकर भी कोई व्यक्ति सुधार नहीं करता है तो वह कर्महीन व्यक्ति है। उसके पाप कोई गुल अवश्य खिलाऐंगे। यदि सुधार कर लेता है और पूर्ण संत से दीक्षा लेकर भक्ति पर लग जाता है तो पाप कटने शुरू हो जाते हैं। कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, जब ही सतनाम हृदय धरो, भयो पाप का नाश।
जैसे चिंगारी अग्नि की, पड़ी पुराने घास।।

★ सरकार यानि मुख्यमंत्री जी के दबाव में तथा प्रमोशन के लालच में 23 निर्दोषों को सजा देकर घोर अपराध देशराज जी जज साहब ने किया है। जिस-जिसने इस जघन्य अपराध में जितना भाग लिया, परमात्मा उन-उनको उनके भाग्य का दण्ड अवश्य देगा। जैसे जज कष्णकांत आर्य के घर पर कहर टूटा, यह पाप का ही परिणाम है। कहते हैं बूंद-बूंद से घड़ा भरता है। इसी प्रकार थोड़ा-थोड़ा पाप इकट्ठा होकर एकदम फल देता है।

★ कारण कुछ भी बना, श्री देशराज चालिया जी ने घोर अपराध कर दिया है। अब आपके हाथ से जघन्य पाप हो गया है। हमें डर है कि आपके भरे-पूरे परिवार पर परमात्मा की ओर से अवश्य घोर कष्ट आएगा। हम चाहते हैं कि आप संभल जाऐं और पाप करने का स्वभाव छोड़कर परमात्मा से डरकर कर्तव्य कर्म करो। संत रामपाल जी के शिष्य बुद्धिजीवी हैं, सामान्य जनता भी है। IAS तथा IPS, इंजीनियर, जज, डॉक्टर आदि-आदि भी हैं जो परमात्मा को साक्षी मानकर कार्य करते हैं। सरकार का कोई दबाव नहीं मानते।

★ श्री देशराज जी जज साहब ने इन मुकदमों के फैसलों में अध्यात्म ज्ञान का भी वर्णन किया है। फैसला देते समय भी कहा कि मैं साई बाबा को मानता हूँ। संत रविदास जी को आदर्श मानता हूँ। कबीर जी के दोहे मेरी गाड़ी में चलते हैं। मुझे किसी से कबीर जी के दोहों का अर्थ करवाने की आवश्यकता नहीं है यानि अपने को अध्यात्म विद्वान भी बताया। श्रीमान् जी ने संत रविदास जी तथा परमात्मा कबीर जी की वाणी को समझा होता तो यह अन्याय और अत्याचार किसी

के दबाव या लालच में नहीं करते।

★ मुकदमा नं. 429/2014 व 430/2014 थाना-बरवाला (जिला-हिसार) हरियाणा में किया अन्याय :-

★ सब गवाह जो प्रत्यक्षदर्शी (Eye Witness) हैं, जो पुलिस ने Prosecution Witness (Pw's) बनाए थे, सबने कहा कि जिनके ऊपर मुकदमें चलाए जा रहे हैं, इनमें से किसी का भी जरा-सा भी दोष नहीं है।

★ मुकदमा नं. 430/2014 थाना-बरवाला, हिसार (हरियाणा) में रजनी पत्नी श्री सुरेश (U.P.) की मत्यु का बनाया है। इसकी सच्चाई निम्न है :-

★ डॉक्टरों के बोर्ड की रिपोर्ट जो पोस्टमार्टम तथा FSL रिपोर्ट के आधार से बनाई है। उसमें कहा है कि रजनी की मत्यु निमोनिया के कारण हुई है जो फेफड़ों की बीमारी है।

★ इस तथ्य को भी जज चालिया जी ने अनदेखा करके सरकार द्वारा बनाया 302 यानि हत्या का झूठा मुकदमा ही सही माना और आजीवन कारावास (अंतिम श्वांस तक जेल में रहने की) कर दी। साथ में 1 लाख रूपये जुर्माना, अगर जुर्माना नहीं दिया तो 2 वर्ष की अतिरिक्त सजा और काटनी होगी। इस केस में संत रामपाल जी समेत कुल 14 को सजा दी गई।

मौत रोग से हुई है, सजा हत्या की सुनाई है। श्रीमान् देशराज चालिया अतिरिक्त सैशन जज हिसार में जरा भी इंसानियत है तो चुल्लु भर पानी में डूब मरना चाहिए।

अन्य मूर्खता का प्रमाण :- विचार करें भारत की जनता! जब दोषी जेल में मरेगा, फिर वह 1 लाख रूपये जुर्माना क्यों भरेगा। जुर्माना न भरने की दो वर्ष की सजा क्या वह स्वर्ग से वापिस आकर काटेगा। ऐसा फैसला है विवेकहीन देशराज जी का।

❑ ऐसे जज को तो तुरंत प्रभाव से बरखास्त करके जेल में डाला जाए ताकि और निर्दोषों के जीवन नष्ट न करे।

★ मुकदमा नं. 430/2014 में मतक रजनी के पति श्री सुरेश तथा उसकी दादी काशी बाई ने बयान में कोर्ट में कहा कि किसी भी अनुयायी का रजनी की मौत में दोष नहीं है। सारा दोष पुलिस का है। हम आश्रम से बाहर जाना चाहते थे। जो भी आश्रम से बाहर जा रहा था, पुलिस उसे लाठी-डंडों से पीट रही थी तथा पकड़कर ले जा रही थी। हम डर के मारे आश्रम में वापिस चले गए। रजनी पहले से ही बीमार चल रही थी। उसको दिल की बीमारी भी थी। उसका इलाज दिल्ली के बड़े हस्पताल एम्स में चल रहा था। हम दवाई साथ लाए थे। वह समाप्त हो गई। पुलिस ने बाहर से दवाई, दूध, पानी, भोजन की सामग्री आदि-आदि की सप्लाई बंद कर दी थी। आश्रम में जो दवाई सेवादारों की ओर से लाई गई थी, वह समाप्त हो गई थी। दिनांक 19-11-2018 को हम एक प्राइवेट गाड़ी लेकर बरवाला सरकारी हस्पताल में रजनी को ले गए। बरवाला वालों ने अग्रोहा मैडिकल

में भेजा। वहाँ पर मेरी पत्नी की OPD की पर्ची बनाई गई। बाद में उसकी दौराने इलाज मत्यु हो गई। पुलिस ने रजनी का शव देने के लिए कई खाली कागजों पर दस्तखत व अंगूठे लगवाए और लाश दे दी। बाद में पुलिस ने उन कागजों के ऊपर स्वयं मनमानी झूठी कहानी लिखकर FIR तथा 161 के ब्यान लिख लिए। श्री सुरेश कुमार ने पुलिस-प्रशासन के खिलाफ माननीय पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट चण्डीगढ़ में अपना वकील करके केस किया था। कहा था मेरी पत्नी की मौत का जिम्मेदार पुलिस प्रशासन है। वह माननीय हाई कोर्ट के रिकॉर्ड में अब भी दर्ज है।

❑ विशेष :- श्री देशराज चालिया जी ने 3 डॉक्टरों की रिपोर्ट को अनदेखा कर दिया जिसमें रजनी की मत्यु फेफड़ों के रोग निमोनिया से होना बताया था। उसी बोर्ड की टीम का एक डॉक्टर दिलदार सिंह है। उसने पुलिस द्वारा प्रेरित होकर झूठा बयान पोस्टमार्टम के चार वर्ष बाद दिया कि रजनी के नाक, मुख से झाग निकल रहे थे जिस लक्षण के आधार से उसकी मौत बंद कमरे में हुए Suffocation से दम घुटने से भी हो सकती है। ब्यान में इसी डॉक्टर ने क्रोस इग्जामिनेशन (Cross-Examination) में यह भी कहा है कि ऐसे लक्षण धुंए या जहरीली गैस (आंसू गैस के गोलों से निकला धुंआ व जहरीली गैस जो पुलिस द्वारा फैंके गए थे) के कारण भी होते हैं। इस कारण भी मत्यु हो सकती है। इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। तीन डॉक्टरों के बोर्ड ने जिसमें डॉक्टर दिलदार सिंह भी एक सदस्य था, अपनी पोस्टमार्टम रिपोर्ट में कहीं नहीं लिखा है कि रजनी के नाक तथा मुख से झाग निकले थे। डॉक्टर दिलदार सिंह ने जो ब्यान लगभग 4 वर्ष बाद कोर्ट में दिया, उसका आधार क्या था? केवल सरकार को खुश करना था। यदि डॉक्टर दिलदार सिंह के ब्यान पर विचार करें तो उसमें शंका है कि बंद कमरे में बंद करने से भी मत्यु हो सकती है। रजनी का पति तथा पति की दादी जो प्रत्यक्षदर्शी (Eye Witness) हैं, वे कह रहे हैं कि रजनी को किसी कमरे में बंद ही नहीं किया गया। इस सच्चाई को जज श्री देशराज चालिया ने अनदेखा करके अन्याय किया। संशय का लाभ आरोपित को होता है, वह मान्य नहीं होता। कमरे में बंद करने का कारण FIR में लिखा है कि ये सब आश्रम से बाहर जाना चाहते थे। इनको रोकने के लिए कमरे में बंद कर दिया। दम घुटने से मौत हो गई। यदि इस झूठी कहानी को मानें तो भी हत्या करना उद्देश्य नहीं बनता, हादसा बनता है। आजीवन कारावास नहीं की जा सकती।

☞ कानून कहता है कि :-

★ सबूतों के अभाव में भले ही 100 दोषी बच जाऐं, परंतु एक निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए।

★ जज श्री देशराज जी ने तो 23 निर्दोषों को आजीवन कारावास तथा मरने के बाद भी दो वर्ष की अतिरिक्त सजा या 1 लाख जुर्माना भी कर दिया।

★ जज देशराज चालिया (DR Chalia) न्यायपालिका के ऊपर काला धब्बा (Black Spot on Judiciary DR Chalia ADJ) है।

★ दोनों मुकदमों 429/2014 तथा 430/2014 में एक भी सबूत नहीं है जो दोष सिद्ध करे।

★ मुकदमा नं. 429/2014 तथा 430/2014 थाना-बरवाला जिला-हिसार, हरियाणा में 5 जनों (अनुयाईयों) की मत्यु को आधार बनाकर धारा 302, 343 IPC तथा 120B IPC पुलिस ने लगाई थी। चार्ज के समय जज श्री अजय पराशर ने भी कानून को अनदेखा करके इन्हीं धाराओं को सत्य मानकर मुकदमें की सुनवाई (**Trail Proceeding**) शुरू कर दी। अन्याय यहीं से प्रारंभ हुआ था।

★ उपरोक्त दोनों मुकदमों के चार्ज के खिलाफ माननीय पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट चण्डीगढ़ में सन् 2016 में रिविजन लगाई थी। माननीय हाई कोर्ट में भी हमारी सुनवाई नहीं हुई। 11 अक्तूबर 2018 को अन्यायपूर्ण फैसला ही अतिरिक्त सैशन श्री देशराज चालिया जी ने सुना दिए। हाई कोर्ट में चार्ज की रिविजन पर हमारे वकीलों की **Request** करने पर भी बहस नहीं सुनी गई। लंबी-लंबी तारीख अपने आप जज साहब देते रहे। हमारे वकील (**Arguments**) बहस की प्रार्थना करते ही रह जाते, तारीख दे दी जाती थी।

☞ मुकदमा नं. 429/2014 थाना-बरवाला की सच्चाई इस प्रकार है :-

★ इस केस में 4 महिला तथा 1 बच्चे की मत्यु पुलिस कार्यवाही तथा बीमारी के कारण हुई थी।

★ मलकियत कौर (50 वर्ष) पत्नी श्री जरनैल सिंह की मौत का कारण 3 डॉक्टरों के बोर्ड की रिपोर्ट अनुसार :-

★ डॉक्टरों ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि पुलिस ने तो बताया है कि मलकियत कौर की मत्यु बंद कमरे में दम घुटने से हुई है। हमारा विचार (**Opinion**) है कि इसकी मत्यु का कारण स्पष्ट नहीं है। **(Cause of death in case of malkiyat kaur is not definate how ever posibility of asphyxia due to suffocation can not be ruled out.)** फिर भी सफोकेशन से दम घुटने को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता।

★ विचार करें कि भारत की जनता व डॉक्टरों का बोर्ड भी असमंजस में है कि मलकियत कौर की मौत कैसे हुई, कोई पक्का प्रमाण नहीं है। (**Not Definate**) अंदाजा लगाया है कि धुँए से दम घुटने की वजह से भी हो सकती है। स्पष्ट हुआ कि आरोपितों का दोष नहीं जिन पर मुकदमा चलाया गया है और आजीवन कारावास सुनाई गई है। ये पोस्टमार्टम रिपोर्ट तो मुकदमें का चार्ज लगाया, उस समय भी थी। हमारे वकीलों ने उस समय भी कहा था कि यह मुकदमा नहीं बनता, परंतु जज अजय पराशर जी ने नहीं मानी और मनमानी करके चार्ज लगा दिया।

★ अन्य प्रमाण :- मलकियत कौर का पति जरनैल सिंह तथा बेटी बिंदर कौर (28 वर्ष) जो आश्रम में साथ थे। इन्होंने कोर्ट में ब्यान में बताया है कि मलकियत कौर की मत्यु पुलिस द्वारा छोड़े गए आंसू गैस के गोलों, चिली बमों के धुऐं से हुई है तथा जिन आश्रम के आदमियों व औरतों पर मुकदमा बनाया है जो आज कोर्ट

में उपस्थित हैं। बाबा रामपाल VC पर हैं, का कोई हाथ नहीं है।

★ इन दोनों से पुलिस ने खाली कागजों पर दस्तखत करवाकर 161 Crpc. के ब्यान लिखकर इनको गवाह बनाया था। इन्होंने कोर्ट में सच्चाई बताई तो सरकारी वकील ने कहा कि गवाह झूठ बोल रहे हैं। इनको Hostile माना जाए।

★ जज साहब देशराज जी ने तथा अजय पराशर जी ने अन्याय के साथ-साथ अत्याचार करके इन सत्य वक्ताओं तथा अपनी पत्नी व माता के मारे जाने से पीड़ितों पर जख्म पर नमक छिड़का। आदेश दिया कि इन पर मुकदमा चलाया जाए। ये झूठ बोल रहे हैं। यह मुकदमा हिसार में CJM की कोर्ट में चलाया गया है जिसमें वे सभी आरोपी बनाए हैं जिनके परिजन पुलिस की बर्बरतापूर्ण की गई कार्यवाही में मरे थे।

1. मलकियत कौर के पति व बेटी।
2. मतक संतोष के दोनों बेटे।
3. मतक आदर्श के पिता तथा दादा।
4. मतक सरिता के पति, देवर (पति का छोटा भाई)।
5. मतक राजबाला के गाँव का एक व्यक्ति जिसके साथ राजबाला (78 वर्ष आयु की) सत्संग सुनने आश्रम में आई थी, वह गवाह है।
6. मतक रजनी का पति सुरेश तथा सुरेश की दादी (75 वर्ष) जो दोनों गवाह थे।

★ एक तो घर के व्यक्ति मरे, ऊपर से जल्लाद जजों ने इन पर मुकदमा दर्ज करवा दिया। हे पाप आत्माओ! क्यों ऐसे पवित्र पद की गरिमा का नाश कर रहे हो। तुम तो कलंक हो मानवता पर तथा न्यायपालिका पर। तुम तो कीड़े पड़कर मरोगे। तब हम जनता को बताऐंगे कि परमात्मा के घर देर है, अंधेर नहीं। हे मिट्टी के पूतले जजो! तुम भूल गए हो परमात्मा ने तुम्हें भी मत्युदंड सुना रखा है। ऐसे अत्याचारियों का मानव जीवन घट जाता है। अब पता नहीं कहाँ दुर्घटना में ये जल्लाद जज कुत्ते वाली मौत मरेंगे। रोऐंगे इनके बच्चे या कैंसर जैसे भयंकर रोग के शिकार होंगे। जिन्होंने 23 निर्दोषों को भयंकर सजा सुना दी और मतकों के 12 परिजनों पर केस दर्ज करवा दिए। इस अत्याचार और अन्याय करने में 3 जजों की तो प्रत्यक्ष भूमिका है :- 1. अजय पराशर ADJ 2. देशराज चालिया ADJ 3. प्रमोद गोयल सैशन जज। (तीनों हिसार कोर्ट के) श्री अजय पराशर जी ने तो पूरी ट्रॉयल की और भरी कोर्ट में कहने लगा कि मेरे से ऊपर दो और विकल्प हैं। वहाँ जा सकते हैं। मैं सजा करूंगा। कारण :-

★ श्री अजय पराशर जज ने 6 करोड़ रूपये की माँग की थी कि न्याय चाहिए तो सामान पहुँचा दो। हमारे साथियों ने जज अजय पराशर के दलाल को कुछ रूपये देकर मोबाइल से विडियो बना रखी है। समय आने पर पर्दाफाश करेंगे। जनता को पता चलेगा कि यह झूठी सजा करने का क्या कारण है? यह स्टिंग ऑपरेशन करने के बाद यानि विडियो बनाने के बाद हम फैसले आने का इंतजार

करने लगे। हमें विश्वास था कि हमारे गुरू जी तथा भक्त भाई व बहनों का कोई दोष नहीं है। सब गवाह सत्य बता रहे हैं। इसलिए हमने कोई ध्यान नहीं दिया। जज अजय पराशर जी अधिक परेशान करने लगे तो इस जज से केस बदलवाने की अर्जी लगाई। केस तो नहीं बदले गए, परमात्मा की कृपा से इसका तबादला 27-09-2018 को जींद हो गया। हमने राहत की साँस ली। परंतु दुर्भाग्यवश देशराज चालिया ADJ भी ऐसा ही जल्लाद निकला। इसने 8 करोड़ की माँग की। हम पूर्ण आशान्वित थे कि सब गवाह सत्य बता चुके हैं। डॉक्टरी रिपोर्ट में भी किसी का दोष नहीं है। कुछ की तो बीमारी से मौत हुई है। कुछ की पुलिस द्वारा छोड़े गए जहरीली गैस आंसू गैस के गोले से दम घुटने से मौत हुई है। इसीलिए हमने कोई ध्यान नहीं दिया। यदि ध्यान देते तो भी इतनी रकम कहाँ से लाते। परमात्मा पर भरोसा किया, परंतु इन जल्लाद जजों ने जुल्म ही किया। अन्याय कर दिया।

★ श्री देशराज चालिया ने केवल अंतिम बहस सुनकर फैसला दिया है। इस फैसले में लिखा है कि इसमें मेरा सहयोग सैशन जज (हिसार कोर्ट) श्री प्रमोद गोयल ने दिया है। इस डबल बैंच ने यह अन्याय किया। इस प्रकार इस अन्याय में तीन जज तो प्रत्यक्ष हैं। इनको परमात्मा क्या प्रसाद देगा, उसका इंतजार करेंगे और फिर देश की जनता को बताऐंगे कि इनकी दशा क्या हुई?

अब आगे बताते हैं कि दोनों मुकदमों की सच्चाई क्या है :-

☞ मृतक नं. 3 संतोष पत्नी स्व. राममेहर गाँव-भगवतीपुर जिला-रोहतक (हरियाणा) :-

★ इसके दोनों पुत्रों (संदीप व पवन जो 22 व 20 वर्ष की आयु के हैं) ने अपने ब्यानों में सच्चाई बताई थी कि हमारे खाली कागजों पर दस्तखत व अंगूठे पुलिस ने लगवाए थे। कहा था कि ये तो तुम्हारी माता की लाश देने के लिए कागजी कार्यवाही करने के लिए करवाए हैं।

☞ संतोष का पोस्टमार्टम :-

★ संतोष की मृत्यु दम घुटने के कारण हुई है। फिर Cross-Examination में डॉक्टर राजीव चौहान (जो पोस्टमार्टम करने वाले बोर्ड का एक सदस्य है) ने बताया कि संतोष की बच्चेदानी (U-tress) में क्रोनिक नाम की बीमारी थी। (it is correct that in case of santosh there was chromic non specific disease in U-tress.)

★ संतोष के दोनों पुत्रों ने ब्यान में कोर्ट में बताया कि हमारी माता की मृत्यु पुलिस की कार्यवाही से हुई है। हम आश्रम से जाने लगे तो लाठी-डंडे पुलिस मारने लगी। हम वापिस आश्रम में चले गए। पुलिस ने आंसू गैस के गोले आश्रम के अंदर फैंके, पत्थर फैंके। जिसके कारण हमारी माता की मृत्यु हुई थी। आश्रम के किसी व्यक्ति का दोष नहीं है।

❑ विशेष :- पुलिस ने चालान में उस कमरे का नक्शा (Map) बनाकर दिया है जो 60 फुट लंबा 19 फुट 6 इंच चौड़ा जिसमें आमने-सामने 8 खिड़की लगी हैं और 4 गेट हैं। सामान्य व्यक्ति भी बता सकता है कि ऐसे हॉल कमरे में दम घुटने

से मौत कभी नहीं हो सकती। विवेकहीन लालच में अंधे देशराज ने अन्याय करके निर्दोषों को आजीवन जेल की सजा कर दी कि मत्यु तक जेल में रहेंगे और 1 लाख रूपये जुर्माना भी भरेंगे। जुर्माना नहीं भरा तो 2 वर्ष की जेल और काटेंगे यानि मत्यु के बाद भगवान से दोबारा जेल काटने के लिए आज्ञा लेकर आऐंगे क्योंकि यह अज्ञानी जज देशराज चालिया का आदेश है जिसने अपने को परमात्मा से भी ऊपर मान रखा है। अहंकार में सड़ रहा है। इसे यह नहीं पता कि यदि अधरंग मार गया तो न हाथ उठेगा, न पैर। मुँह खुला पड़ा होगा। मक्खियाँ मुख में जाऐंगी और निकलेंगी। तब यह निर्दयी-अन्यायी अपने कुकर्मों को याद करके रोएगा। तब बहुत देर हो चुकी होगी।

☞ मतक धैर्य उर्फ आदर्श (1½ वर्ष) की मौत का कारण :-

★ डॉक्टरों के बोर्ड ने पोस्टमार्टम रिपोर्ट में बताया है कि (फेफड़ों की बीमारी) निमोनिया रोग से आदर्श की मौत हुई है।

★ पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मतक राजबाला (78 वर्ष) की मौत का कारण दम घुटने से बताया है। पुलिस ने उसी 60 फुट लंबे व 19 फुट 6 इंच चौड़े हॉल में बंद करना बताया है जिसमें आमने-सामने 8 खिड़कियाँ तथा 4 गेट लगे हैं।

★ गवाहों ने सच्चाई बताई है कि पुलिस द्वारा फैंके गए आंसू गैस के गोलों के कारण दम घुटकर मौत हुई है। हम प्रत्यक्षदर्शी हैं।

☞ सरिता पत्नी शिवपाल (25 वर्ष) की मौत का कारण :-

★ पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टरों के बोर्ड ने लिखा व बताया है कि लगता है सरिता के माथे पर चोट लगी है जिसके कारण उसके दिमाग में दबाव बनकर मौत का कारण बना है। सरिता के माथे पर लगी चोट नीले रंग की थी जो 6×4 CM की थी। Cross-Examination में यानि हमारे वकील द्वारा जिरह करते समय डॉक्टर राजीव चौहान (जो पोस्टमार्टम करने वाला है) ने माना कि डॉक्टर मोदी की पुस्तक के अनुसार चोट का रंग तीन दिन बाद नीला होता है। डॉक्टर राजीव चौहान ने बताया कि पोस्टमार्टम करते समय हम सब डॉक्टरों ने माना था कि सरिता की तीनों चोटें मौत का कारण नहीं हैं क्योंकि तीनों सामान्य चोटें थी। सरिता की मत्यु भगदड़ में एक-दूसरे पर गिरने के कारण लगी चोट के कारण ब्लड प्रैशर बढ़ने से दिमाग पर दबाव के कारण भी हो सकती है। फिर भी हत्या का मुकदमा नहीं बनता।

❑ विशेष :- उपरोक्त सबकी मत्यु बीमारी या अन्य कारणों से सिद्ध हुई जिनके कारण हत्या का मुकदमा यानि IPC Section 302 का नहीं बनता जिसके आधार से सजा की गई। यह सरासर अन्याय तथा अत्याचार है। न धारा 343 बनती जो बंधक बनाने की है। बंधक बनाने वाले मुकदमा नं. 427/2014 थाना-बरवाला में हमारे गुरू जी तथा अनुयाई पहले ही बरी हो चुके हैं।

★ जज साहब ने कहा है कि पुलिस द्वारा बताई बात सत्य है कि महिलाओं तथा बच्चों को आश्रम के गेट पर बैठाकर ढ़ाल बनाया था। पुलिस तो कह रही है

कि कमरे में बंद करने के कारण दम घुटने के कारण मत्यु हुई है। जज देशराज कुछ और ही कह रहा है।

★ वास्तविकता गवाहों ने बताई है जो पुलिस ने बनाए थे। (Pw's) कहा है कि आश्रम के किसी अनुयाई ने किसी को नहीं रोका। पुलिस के भय से कोई बाहर नहीं निकला। जो निकलता था, उससे पुलिस मारपीट करके जेल भेज रही थी। जिस कारण से कोई भी बाहर नहीं जा सका। गवाहों ने यह भी कहा कि हम अपनी इच्छा से सत्संग सुनने आश्रम में आए थे। अपनी इच्छा से आश्रम में रूके थे।

★ जज ने अपने फैसले में कहा है कि गवाह रामपाल के अनुयाई हैं। इसलिए ब्यान बदल रहे हैं।

❑ विचार करें :- यदि किसी की 25 वर्षीय पत्नी की मौत का कारण कोई निजी रिश्तेदार या भाई, चाचा, ताऊ भी क्यों न हो, व्यक्ति कभी ब्यान नहीं बदलेगा। उसका तो जीवन नष्ट हो गया। दो बच्चे शेष बचे थे। उनका भविष्य नरक बन गया। ऐसे में कोई भी दूर का व्यक्ति गुरू व अन्य अनुयायियों को माफ नहीं कर सकता। यदि जज की दूषित मानसिकता को मानें कि गुरू के नाते गुरू को बचाने के लिए ब्यान बदले हैं। यदि ऐसा करना होता तो वे गुरू को तो यह कहकर बचा सकते थे कि गुरू रामपाल जी का कोई दोष नहीं है। अनुयायियों ने सब किया है।

★ इससे जज की बात झूठी सिद्ध होती है जिसे आधार बनाकर फैसला किया है तथा गवाहों पर मुकदमा चलाने का आदेश दिया है।

❑ विशेष :- मतकों के 12 परिजनों ने एक ही बात कही है। इसे भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। यह शत प्रतिशत सत्य मानी जानी चाहिए थी। ऐसा जज साहब ने नहीं किया जिससे उसकी नीयत में दोष स्पष्ट है। गलत फैसला करके अन्याय किया है।

★ पुलिस ने **FIR No. 426/2014** में कहा था कि रामपाल के कहने से अनुयायियों ने सरकारी कार्य में बाधा की। यह भी पुलिस की बात झूठी पाई क्योंकि इस मुकदमें में संत रामपाल जी तथा सब अनुयायी बरी हो चुके हैं।

★ पुलिस ने **FIR No. 427/2014** में आरोप लगाया था कि रामपाल के कहने से आरोपियों ने उन अनुयाईयों को बंधक बनाकर रखा था जो आश्रम से बाहर जाना चाहते थे।

इस मुकदमें में भी संत रामपाल जी तथा अनुयाई भी बरी हो चुके हैं।

☞ उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि जज श्री देशराज चालिया (**DR Chalia**) ने सब सबूतों को अनदेखा करके अन्याय व अत्याचार अपने स्वार्थवश किया है। ऐसे अन्यायी जज को तुरंत प्रभाव से पदमुक्त कर देना चाहिए। यह तो इतने जिम्मेदार पद के योग्य नहीं है। यह तो जालिम है। दयाहीन है। इसकी इंसानियत का नाश हो चुका है। इस द्वारा दिए गए फैसलों से स्पष्ट है कि इसे कानून का ज्ञान नहीं है।

★ हमने **CCTV** कैमरे की फुटेज **Pen Drive** में जज को दी थी जिनमें स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि पुलिस लाठी-डंडों से बेरहमी से पीट रही है। आंसू गैस के गोले फैंक रही है। पत्थर भी आश्रम में फैंक रही है। आश्रम के अंदर धुँआ बुरी तरह फैला है। आश्रम में भगदड़ मच रही है। धुँए से बचने के लिए आँखों पर तथा मुँह व नाक पर कपड़े रखे हैं। जज ने इनको भी अनदेखा कर दिया और अन्याय कर दिया।

★ फैसलों में पुलिस द्वारा बनाई झूठी कहानी जो चालान में लिखी थी। उसी की कॉपी कर रखी है। उसी को सच मान रखा है। यदि चालान के आधार से ही अन्याय करना था तो चार वर्ष ट्रॉयल की क्या आवश्यकता थी? जिस दिन चार्ज लगाया, उसी दिन यह अन्याय कर देते।

जज देशराज चालिया तथा जज अजय पराशर तो पूर्व जन्म में भी पाप कर्मी रहे होंगे जिनमें दया तथा न्याय को कोई स्थान नहीं है। केवल पद की ताकत का घमंड है। यह पॉवर केवल 58 वर्ष की आयु तक है। उसके पश्चात् घर में भी आदर नहीं होगा। आम व्यक्ति भी इनसे मुँह मोड़कर चलेगा।

★ जज अजय पराशर जी के काले कारनामे :- मुकदमा नं. 428/2014 थाना-बरवाला में एक आरोपी भक्त जमानत पर आया। कुछ महीनों बाद अन्य झूठे केस में जेल जाना पड़ा। उसके जमानती ने जमानत वापिस लेने के लिए अर्जी लगाई। अन्यायी अजय पराशर ने खारिज कर दी। जमानत वापिस लेने के लिए उस जमानती ने माननीय हाई कोर्ट चण्डीगढ़ में अर्जी लगाई। वकील के रूपये दिए। यह अर्जी फरवरी 2017 में लगाई थी, दिसंबर 2018 (यह पत्र लिखने के समय) तक उस पर हाई कोर्ट में सुनवाई नहीं हो पाई है। इसे क्या कहा जाए? न्याय या अन्याय। इस तरह के जालिम जजों ने न्यायालयों में मुकदमों का लोड बना रखा है। यह दो मिनट का कार्य था जिसमें वर्षों लग रहे हैं। अभी क्या पता, कब बात सूत में आवेगी?

ऐसे-ऐसे कई गलत आदेश जज अजय पराशर के हैं, लेकिन पुस्तक का विस्तार अधिक होने के कारण नहीं लिख रहे हैं। बुद्धिमान को तो संकेत ही पर्याप्त होता है।

सैशन जज प्रमोद गोयल जी की कोर्ट में हमने अपने तीनों मुकदमों (428, 429, 430/2014 थाना-बरवाला) जज अजय पराशर जी की कोर्ट से अन्य जज को बदलने की अर्जी लगाई थी। सब कारण लिखे थे, परंतु इनका स्वभाव भी न्याय करने का नहीं था। इन्होंने भी हमारे मुकदमें नहीं बदले। हाई कोर्ट में अर्जी लगाई, दुर्भाग्य से वहाँ भी इसी श्रेणी के जजों की कोर्ट में अर्जी लगी। वहाँ से भी अन्याय ही मिला। परमात्मा की कृपा से अजय पराशर वाली कोर्ट ही मुख्य न्यायधीश हाई कोर्ट चण्डीगढ़ ने किसी कारण से तोड़ दी। आशा जागी थी कि अब तो न्याय मिलेगा, परंतु दुर्भाग्य कहें या परमात्मा की लीला कहें, हमारे मुकदमें उससे भी अन्यायी जज देशराज चालिया के पास चले गए। यह तो जैसे पहले ही तैयार बैठा

था पाप इकट्ठे करने को। इसने जो कुछ किया, ऊपर बता दिया है। सन् 2015 से सन् 2018 तक इन दो जजों देशराज चालिया तथा अजय पराशर को छोड़कर किसी ने पैसे नहीं माँगे और न्याय किया। तीन मुकदमें हिसार कोर्ट में, तीन रोहतक कोर्ट में तथा दो बहादुरगढ़ कोर्ट में, एक झज्जर कोर्ट में चल रहे थे जिनमें बरी हो चुके हैं। किसी जज साहेब ने रूपये की माँग नहीं की। हम पहले भी कह चुके हैं कि अधिकतर जज साहेबान न्यायकारी हैं। परमात्मा से डरकर कार्य करने वाले हैं। कुछ ही हैं जो अन्याय करने वाले हैं। उनको परमात्मा सजा देगा।

★ हमारा यह पत्र लिखने का उद्देश्य जनता को ऐसे अन्यायी जजों के काले कारनामे उजागर करना है और एक दिन देश की जनता भी हमारे साथ आवाज उठाए कि जजों की जवाबदेही तय होनी चाहिए। ऐसे फैसले करके कानून का मजाक करने वाले जज को दंडित किया जाए। अवन्नती (**Demotion i.e. reversion to lower post**) की जावे या (**Terminate**) बरखास्त किया जावे।

''जज (ASJ) देशराज चालिया द्वारा किए गए अनेकों अन्याय''

★ जज श्री देशराज चालिया जज के पद के योग्य नहीं है। इसको जजमेंट करना नहीं आता। प्रमाण के लिए प्रस्तुत हैं इस अज्ञानी के द्वारा किए गए गलत फैसले :-

1. माननीय पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट ने जज देशराज चालिया द्वारा **IPC** की धारा **304-II, 420, 201** तथा **IMC Act 1956 (Indian Medical Council Act 1965)** की धारा 15 के तहत दिए गए फैसले को गलत बताया जो इस प्रकार है:-

☞ साधुराम मेमोरियल होस्पिटल, बरवाला में नौकरी कर रही डॉ. प्रवीन सिवाच के ऊपर शिकायतकर्ता प्रवीन गाँव-कापड़ो, जिला-हिसार ने आरोप लगाया कि उसकी पत्नी नान्हीं देवी आयु 20 वर्ष को गर्भ था। उसकी जाँच के लिए मैं उसे उपरोक्त हस्पताल में ले गया। मेरी पत्नी तथा बच्चे की मृत्यु डॉक्टर श्रीमति प्रवीन सिवाच की लापरवाही से हुई है तथा इसने मेरे साथ धोखाधड़ी भी की। इस आधार पर पुलिस प्रशासन ने उपरोक्त धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया। ट्रॉयल के दौरान सब **PW's (Prosecution Witness)** सरकारी गवाह बैठ गए (**Hostile** हो गए)। फिर भी जज देशराज चालिया ने डॉक्टर श्रीमति प्रवीन सिवाच को उपरोक्त सब धाराओं के तहत दिनांक 05-02-2018 को दोषी करार करके दिनांक 08-02-2018 को सजा कर दी जो इस प्रकार है :-

1. धारा **304-II, IPC** में सात साल की सजा व 10,000 (दस हजार) रूपये जुर्माना। जुर्माना नहीं दिया तो एक वर्ष की अतिरिक्त सजा काटनी होगी।

2. धारा **420 IPC** में पाँच साल की सजा व 5000 रूपये जुर्माना या 6 महीने की अतिरिक्त सजा।

3. धारा **201 IPC** में तीन साल की सजा तथा 5000 रूपये जुर्माना या 6 महीने की अतिरिक्त सजा।

4. धारा **15 IMC Act 1956 (15 of Indian Medical Council Act 1956)** में एक

वर्ष की सजा तथा एक हजार रूपये जुर्माना या एक महीने की अतिरिक्त सजा।

❑ विशेष :- माननीय पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट चण्डीगढ़ की एकल पीठ के जज श्री सुरेन्द्र गुप्ता ने डॉ. श्रीमति प्रवीन द्वारा की अपील नं. CRM-38290-2018 का अपने आदेश नं. CRA-S-790-SB of 2018 दिनांक 15-10-2018 में फैसला दिया जिसमें बताया गया कि ट्रॉयल कोर्ट यानि अतिरिक्त सैशन जज श्री देशराज चालिया द्वारा धारा 304-II IPC, धारा 420 IPC तथा धारा 201 IPC के तहत की गई सजा गलत है, इन्हें खत्म किया जाता है। केवल धारा 15, Indian Medical Counsil Act 1956 के तहत की गई सजा सही है।

❑ विचार करें :- विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि जज श्री देशराज चालिया ने डॉक्टर श्रीमति प्रवीन सिवाच से दस लाख (10,00,000) रूपये रिश्वत के माँगे। मना करने पर यह गलत फैसला कर दिया।

❑ विशेष :- एक जज साहब ने चलती बात पर कहा कि जिसके पक्ष में फैसला नहीं आता, वह कहता है कि अन्याय किया है। आरोप भी लगाए जाते हैं कि जज रिश्वत माँग रहा था। न देने के कारण फैसला हमारे पक्ष में नहीं किया, अन्याय किया है।

★ यदि जज साहब की बात मानें कि गलत आरोप लगाए जाते हैं तो इस मुकदमें में धारा 304-II, 420, 201 IPC बनती ही नहीं जो माननीय उच्च न्यायालय पंजाब व हरियाणा के माननीय जज श्री सुरेन्द्र गुप्ता जी ने सिद्ध कर दी व सजा खत्म कर दी। इन्हीं धाराओं को सही मानकर जज श्री देशराज चालिया जी ने सजा की थी।

☞ निष्कर्ष :- यदि मानें कि श्री देशराज चालिया अतिरिक्त सैशन जज ने रिश्वत नहीं माँगी यानि किसी लालच की पूर्ति न होने के कारण सजा नहीं की तो स्पष्ट है कि श्री देशराज चालिया ASJ को कानून का ज्ञान नहीं है। यह तो इस जिम्मेदार पद के योग्य ही नहीं है। इसलिए इसे तो तुरंत प्रभाव से बरखास्त किया जाना चाहिए। यदि सूत्रों की मानें कि रिश्वत न मिलने के कारण घोर अन्याय किया है तो भी यह भ्रष्ट जज इस पद के योग्य नहीं है, तुरंत प्रभाव से टर्मिनेट किया जाना चाहिए।

★ माननीय पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट के माननीय जज साहब श्री सुरेन्द्र गुप्ता जी ने अपने आदेश के पष्ठ 16 पर लिखा है जो इस प्रकार है :-

The most unfortunate part of the matter is the testimony of mother of the deceased, who has not disclosed the hospital where her daughter was admitted for delivery. Even husband, mother-in-law, father-in-law, brother-in-law, uncle-in-law and other persons, who initially supported the prosecution case in their statements under Sections 161 Cr.P.C., have turned hostile. When none of the prosecution witness is supporting the case of prosecution, finding recorded by learned trial Court that delivery of the deceased is proved to have been handled by the appellant

is not sustainable. The charge for offence punishable under Sections 304 Part II IPC is not proved against the appellant and findings of the trial Court to this effect are set aside and consequent is the fate of charge for offence punishable under Section 201 IPC. Learned trial Court has also convicted the appellant of the charge punishable under Section 420 IPC.

However, there is no evidence on record to prove that the appellant made any false representation to family members of the deceased that she is a qualified doctor. In the absence of any evidence on this score, conviction of appellant for offence under Section 420 IPC is also not sustainable.

★ इस अंग्रेजी की हिन्दी इस प्रकार है :- दुर्भाग्य की बात है कि मरने वाली की माता भी उस हस्पताल का नाम बताने में असमर्थ रही है जिसमें डिलीवरी करवाई थी। यहाँ तक कि मतका का पति, ससुर, सास, देवर, पीतसरा (**Uncle in law**) और अन्य व्यक्ति जो प्रारम्भ में अपने **161 Cr.P.C.** के बयानों में सरकार के मुकदमें का समर्थन कर रहे थे। वे (**have turned hostile**) कोर्ट में अपने बयानों से मुकर गए हैं। (होस्टाइल हो गए हैं।) जब सरकार द्वारा बनाया एक भी गवाह (**P.W.**) मुकदमें को सहयोग नहीं दे रहा (**not supporting**), ऐसे में विद्वान ट्रॉयल कोर्ट यानि जज श्री देशराज चालिया द्वारा दिए फैसले में एपेलेंट जिसे सजा दी गई है, यह कहना कि मरने वाली की डिलीवरी इसने की है, यह सिद्ध होती है कि यह उचित नहीं है, मानने योग्य नहीं है। इसलिए **Appellant** (अर्जी करने वाले यानि डॉ. प्रवीन सिवाच) पर धारा **304-II IPC** के तहत सजा योग्य अपराध सिद्ध नहीं होता। इसलिए सुनवाई करने वाली कोर्ट (**Trial Court**) यानि श्री देशराज चालिया जज का आदेश खारिज किया जाता है। (**findings of the trial court is set aside**) इसी प्रकार अन्य सजाऐं जो धारा **201 IPC** तथा **420 IPC** के तहत दी गई सजाऐं सिद्ध न होने के कारण खारिज (समाप्त) की जाती हैं।

★ जज देशराज चालिया के द्वारा किया अन्य फैसला :- **FIR No. 363, Dated-25-01-2017** थाना-शहर हिसार (हरियाणा)। फैसला दिया :- दिनाँक **31-10-2018** को। इस केस में दो व्यक्तियों से गन प्वांइट पर कुछ रूपये छीने थे। पुलिस सोनीपत से आरोपी पकड़कर लाई जो किसी अन्य केस में जेल में बंद थे। उन पर मुकदमा बना दिया। दोनों मुद्दईयों ने कोर्ट में कहा कि ये वे व्यक्ति नहीं हैं जिन्होंने वारदात की थी। इनको हमने पहली बार देखा है। **IPC** की धारा **364-A** और **395** में आजीवन कारावास सुना दी। **FIR** में **25 Arms Act 1959** लगी है। जज ने सजा **27 Arms Act** में तीन वर्ष की सुनाई है। यह देश का करणधार जज देशराज जो आँखें बंद करके अन्याय करता है। कोई कानून को आधार नहीं मानता है। इसको पता है कि तेरे ऊपर कोई कार्यवाही होनी ही नहीं। कुछ भी लिख दे, कोई पूछने वाला नहीं है। यह अधिक दिन नहीं चलता।

❑ विशेष :- भारत की जनता से निवेदन है कि श्री देशराज चालिया

अतिरिक्त सैशन जज निजी स्वार्थ के कारण ऐसे गलत फैसले करके जनता को पीड़ित करने का आदी (habitual) है। बिल्कुल ऐसे ही हमारे दोनों मुकदमें (429/2014 व 430/2014 थाना-बरवाला, हिसार) हैं जिनमें सरकार द्वारा बनाए सब गवाहों (PW's) ने सच्चाई बताई है। कोर्ट में मुकर गए थे (Hostile हो गए थे)। अपराध सिद्ध नहीं होता, फिर भी जज देशराज चालिया जी ने स्वार्थवश अन्याय कर दिया। अब भटको ऊपर की कोर्टों में।

''अन्याय का अन्य जीवित प्रमाण''

समाचार पत्र दैनिक जागरण में छपी खबर जिसकी हैडिंग है ''सजा पूरी करने के बाद साबित हुआ निर्दोष'' (संजीव मंगला पत्रकार पलवल) पुलिस में दर्ज रिपोर्ट (FIR) के अनुसार 22 अगस्त 2001 को एक नाबालिग लड़की के रिश्ते में चाचा लगने वाले दो लोग उसे उठाकर अपने घर ले गए। उसके हाथ बाँध दिए और अपने परिजनों (माता, बहन, पत्नी) की उपस्थिति में दोनों ने दुष्कर्म किया। मैडिकल रिपोर्ट में दुष्कर्म की पुष्टि नहीं हुई, न शरीर पर किसी तरह के निशान पाए गए। फॉस्ट कोर्ट ने दोनों को बरी कर दिया। लड़की के परिवार वालों ने पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट चण्डीगढ़ में अपील डालकर पुनः ट्रॉयल की माँग की जो हाईकोर्ट में मंजूर हो गई। दोबारा नए सिरे से ट्रॉयल (सुनवाई) हुई। दोनों अभियुक्तों को दस-दस वर्ष की सजा कर दी। हाई कोर्ट ने भी दोनों की सजा बरकरार रख दी। एक का नाम जयसिंह है। उसने हाई कोर्ट से प्राप्त 10 वर्ष की सजा पूरी कर ली है।

सुप्रीम कोर्ट में अपील डाल रखी थी। मुकदमों की अधिकता के कारण शीघ्र सुनवाई नहीं हो पाई। दूसरा श्यामसिंह है जो सात वर्ष जेल में गुजार चुका है। तब माननीय सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया। दोनों को बरी कर दिया। कारण बताया कि न तो मैडिकल रिपोर्ट में दुष्कर्म की पुष्टि हुई है तथा पुलिस में दी गई दरखास्त में कहा है कि दोनों ने अपने घर पर ले जाकर अपनी माता, बहन-पत्नी के सामने दुष्कर्म किया जो कतई विश्वास के योग्य नहीं है। कोई भी अपनी माता, बहन तथा पत्नी के सामने दुष्कर्म नहीं कर सकता। इसलिए दोनों को बरी किया जाता है।

सभ्य समाज विचार करे कि देश में यह क्या चल रहा है? फॉस्ट कोर्ट (शीघ्र सुनवाई के लिए नियुक्त जज) ने इसी आधार पर बरी कर दिया था जिस आधार पर माननीय सुप्रीम कोर्ट ने 17 वर्ष बाद बरी किया।)

गलती किसकी है :- हाई कोर्ट की तथा दोबारा सुनवाई करने वाली कोर्ट की। ऐसे जज मनमानी करते हैं, अन्याय करना इनका शौक बना है। न्यायालय में मुकदमों की अधिकता इसी कारण से है। निर्दोषों को सजा ट्रॉयल कोर्ट यानि सैशन या अतिरिक्त सैशन जज जो DR Chalia जैसा अन्यायी था। उसने बिना आधार के मनमानी करके सजा कर दी। पहले फॉस्ट कोर्ट वाला भी अतिरिक्त

सैशन जज था जिसने न्याय कर दिया था। हाई कोर्ट में भी अन्याय हुआ। कुछ नहीं देखा, आँखें बंद करके मनमाना आदेश अन्यायी जज वाला ही बरकरार रख दिया जो माननीय सुप्रीम कोर्ट ने ठीक किया, परंतु जिन निर्दोषों का व्यर्थ में जीवन बर्बाद हो गया, उनका परिवार बर्बाद हो गया। यही समय था जिसमें परिवार की सबसे अधिक जिम्मेदारी होती है, बच्चों का पालन-पोषण, पढ़ाई-लिखाई, विवाह करना व अन्य कार्य जो समाज में नाते-रिश्तों के निर्वाह का कार्य, सब करना होता है। दस वर्षों में तो सब परिस्थिति बदल जाती है। यदि 9 वर्ष की बेटी व बेटे की आयु मुकदमा बनने के समय होगी तो सब कुछ लुट चुका होगा। पढ़ाई कैसे होगी? पोषण की परेशानी विवाह के योग्य हो चुके हैं, विवाह के लिए रूपया कहाँ से आएगा? आदि-आदि अनेकों कष्टों के कारण अन्यायी जज हैं।

इसका समाधान होना चाहिए। देश में प्रजातंत्र है। आवाज उठाई जानी चाहिए। जजों की जवाबदेही होनी चाहिए।

यहाँ पर हम यह भी स्पष्ट करना उचित समझते हैं कि अधिकतर जज साहेबान न्याय करने वाले परमात्मा से डरकर कार्य करने वाले हैं। यह गुण उनमें खानदान व पूर्व जन्म के शुभ संस्कारों की देन हैं। वे अच्छे परिवार से हैं तथा पहले के जन्मों में भी नेक कर्मी रहे हैं। गीता में लिखा है कि मानव पूर्व जन्म के स्वभाव को वर्तमान में बरतता है। जिनका स्वभाव अच्छा है, वे पूर्व जन्म में भी शुभ कर्म करते थे। इसी प्रकार जिनका स्वभाव अन्याय करने का, अन्य को पीड़ित करने का, चोरी-डाके करने, दुष्कर्म करने का है, वे पूर्व जन्म में भी अत्याचारी व अन्यायी रहे थे। यदि अच्छे विचार सुनने को मिले, साधु-संतों के प्रवचन सुनने को मिलें तो स्वभाव में बदलाव आता है। परमात्मा के संविधान का ज्ञान होता है। व्यक्ति पापों से बचता है।

''श्री देशराज चालिया जज जी ने अध्यात्म पर अज्ञानतापूर्ण टिप्पणी की है'' :-

★ श्रीमान् देशराज चालिया ADJ (अतिरिक्त सैशन जज) हिसार ने बताया कि मैं शिरड़ी वाले सांई बाबा को मानता हूँ यानि सांई बाबा की भक्ति करता हूँ तथा संत रविदास जी को अपना आदर्श मानता हूँ। संत कबीर जी की वाणी सुनता हूँ। उनके अर्थ किसी से समझने की आवश्यकता नहीं समझता। मैं कबीर जी की वाणी के अर्थ स्वयं जान लेता हूँ।

❑ विवेचन :- संत रामपाल दास जी द्वारा किए प्रवचनों से प्राप्त ज्ञान के आधार से विचार करते हैं :-

जैसे श्रीमान् देशराज जी शिरड़ी वाले सांई बाबा जी की पूजा करते हैं। स्वसिद्ध है कि इनको यह भी ज्ञान होगा कि सांई बाबा जी भी तमगुण शिव जी की पूजा करते थे। तमगुण शिव जी की भक्ति से सांई बाबा में आध्यात्मिक सिद्धि शक्ति प्राप्त हुई थी। श्री शिव जी तमगुण की मूर्ति देखें तो पता चलता है कि वे

भी भक्ति करते दिखाई देते हैं। इससे सिद्ध है कि शिव जी से भी ऊपर कोई अन्य प्रभु है। {यदि उस समर्थ अन्य प्रभु की जानकारी प्राप्त करनी है तो कृपया वेबसाईट www.jagatgururampalji.org से निःशुल्क डाउनलोड करें। सत्संगों की विडियो DVD तथा पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' आदि-आदि तथा आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा सब हिन्दू धर्म के गुरूओं के साथ DVD में सुनें, इसी वेबसाईट से प्राप्त करें तथा Youtube पर Satlok Ashram Barwala लिखकर क्लिक करें। फिर उपरोक्त सत्संग देखें, सुनें।}

परम संत जगतगुरू रामपाल दास जी ने सत्संगों में बताया है कि :-

★ श्री मार्कण्डेय महापुराण गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित के पृष्ठ 123 पर स्पष्ट किया है कि ''ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश यानि शिव तीन प्रधान शक्तियाँ हैं। ये ही तीन देवता हैं तथा ये ही तीन गुण हैं यानि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी हैं।''

★ श्री देवी महापुराण श्री कृष्णचन्द खेमचन्द प्रकाशन की श्री वेंकेटश्वर प्रैस मुंबई से संस्कृत के हिन्दी अनुवाद सहित के तीसरे स्कंद में अध्याय 5 के श्लोक 7 में लिखा है कि श्री शिव जी ने कहा कि ''हे माता! यदि आप हम पर दयावान हैं तो मुझे तमगुणयुक्त क्यों बनाया? श्री विष्णु हरि को सतगुण तथा कमल से उत्पन्न श्री ब्रह्मा को रजगुण क्यों उत्पन्न किया?(देवी पुराण 3/5/7)

☞ इन प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि हिन्दू ग्रन्थों (श्री गीता, पुराणों या अन्य ग्रन्थों) में जहाँ पर भी प्रकरणवश केवल रजगुण, सतगुण तथा तमगुण लिखा है तो समझा जाए कि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव जी के विषय में वर्णन है। जैसे श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12-15 तथा 20-23 में वर्णन है कि गीता ज्ञान बोलने वाले प्रभु ने कहा है कि रजगुण यानि ब्रह्मा जी, सतगुण यानि विष्णु जी तथा तमगुण यानि श्री शिव जी द्वारा जो कुछ भी हो रहा है यानि रजगुण ब्रह्मा से जीवों की उत्पत्ति, श्री सतगुण विष्णु जी से स्थिति व कर्मानुसार पालन तथा तमगुण शिव जी से संहार इसका निमित मैं ही हूँ। गीता कौन बोल रहा है? इसका विस्तृत ज्ञान तो उपरोक्त वैबसाईट तथा Youtube में सतलोक आश्रम चैनल से पढ़ने व सुनने से होगा। फिर भी गीता का ज्ञान काल ब्रह्म ने श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवश प्रवेश करके कहा है।

प्रमाण :- गीता अध्याय 11 श्लोक 31 में अर्जुन ने प्रश्न किया कि ''मुझे बतलाइए कि हे उग्ररूप वाले! आप कौन हैं? इसका उत्तर गीता ज्ञान कहने वाले इसी अध्याय 11 के अगले श्लोक 32 में दिया है। कहा है कि ''लोकों का नाश करने वाला मैं बढ़ा हुआ काल हूँ। इस समय इन लोकों को नष्ट करने के लिए प्रवृत हुआ हूँ यानि प्रकट हुआ हूँ।

विचारणीय विषय है कि श्री कृष्ण जी तो अर्जुन के साले थे। उस समय श्री कृष्ण जी के शरीर से बाहर निकलकर काल ब्रह्म ने अपना वास्तविक विकराल काल रूप दिखाया था। यदि वह श्री कृष्ण होता तो क्या अर्जुन अपने साले से

पूछता कि आप कौन हैं? उस समय अर्जुन भयभीत था और काल के विराट शरीर का प्रकाश इतना अधिक था कि अर्जुन पास खड़े श्री कृष्ण को भी नहीं देख पा रहा था। उसकी दृष्टि काल ब्रह्म के विकराल मुख पर टिकी थी। कुछ समय पश्चात् काल ब्रह्म ने अपना शरीर छोटा किया और श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश किया। गीता का ज्ञान काल ब्रह्म ने श्री कृष्ण के शरीर में प्रवेश किए हुए गुप्त रूप से कहा।

★ श्री महाभारत ग्रन्थ में भी प्रकरण है कि श्री कृष्ण जी ने कहा था कि मुझे याद नहीं कि मैंने उस समय यानि युद्ध से पहले (गीता रूपी) क्या ज्ञान में कहा था? समझदार को संकेत ही पर्याप्त होता है। विस्तृत प्रमाण के लिए पूर्वोक्त वेबसाईट www.jagatgururampalji.org से पुस्तक गीता तेरा ज्ञान अमृत तथा गहरी नजर गीता में तथा सत्संगों की D.V.D. से पढ़-सुन, देख सकते हैं।

★ प्रसंग पर आते हैं :- उपरोक्त सत्संगों व पुस्तकों से ''सृष्टि रचना'' के प्रसंग से पता चलेगा कि काल ब्रह्म को पूर्ण परमात्मा का शॉप लगा है। इसने गलती की थी। जिस कारण शॉपवश काल एक लाख मानव शरीरधारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीरों को खाता है। उसके लिए इसने अपनी पत्नी दुर्गा देवी (अष्टांगी देवी जिसे प्रकृति देवी शेरांवाली के नाम से भी जाना जाता है) से शारीरिक संबंध से तीन पुत्रों को उत्पन्न किया। उनके नाम ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रखे। रजगुण ब्रह्मा के प्रभाव से सब जीव परवश हुए। संतानोंत्पत्ति करते हैं। सतगुण विष्णु के प्रभाव से प्रत्येक प्राणी आपस में मोह के कारण जकड़े हैं तथा तमगुण शिव के प्रभाव से संहार होता है। इस प्रकार इन तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) से जो कुछ भी हो रहा है, वह गीता ज्ञान बोलने वाले काल ब्रह्म के निमित ही हो रहा है।

☞ **गीता अध्याय 7 श्लोक 13 में गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने कहा है :-**

त्रिभिः गुणमयैः भावैः एभिः सर्वम् इदम् जगत्।
मोहितम् न अभिजानाति माम् एभ्यः परम् अव्ययम्।।(7/13)

अर्थात् गुणों का कार्य रूप सात्विक, राजस और तामस इन तीनों प्रकार के भावों से यह सारा संसार यानि प्राणी समुदाय मोहित हो रहा है। इसलिए इन तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) से परे यानि इनसे अन्य मुझे तथा अविनाशी को नहीं जानता।(7/13)

☞ गीता अध्याय 7 श्लोक 14 :- क्योंकि यह अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है यानि दुष्ट है जो केवल मुझको ही निरंतर भजते हैं यानि मेरी भक्ति करते हैं। वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं यानि तीनों देवताओं की भक्ति से मिलने वाले लाभ को छोड़कर इनसे अधिक लाभ काल ब्रह्म की साधना करके प्राप्त करते हैं।(7/14)

☞ गीता अध्याय 7 श्लोक 15 :- उपरोक्त त्रिगुणमयी माया यानि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव की भक्ति से मिलने वाले क्षणिक लाभ को

ही पूर्ण लाभ मानने वाले इन देवताओं की साधना में इतनी दढ़ता से लग जाते हैं कि अन्य की बात सुनना भी पसंद नहीं करते। इस त्रिगुणमयी माया (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है (आसुरम भावम् आश्रिताः) राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए (नराधमाः) मनुष्यों में नीच (दुष्कतिनः) दूषित कर्म यानि बुरे कर्म करने वाले (मूढ़ाः) मूर्ख लोग (माम्) मुझको (न प्रपद्यन्ते) नहीं भजते यानि गीता ज्ञान दाता कह रहा है कि मेरी भक्ति नहीं करते। वे अन्य देवताओं की भक्ति करते रहते हैं।

☞ गीता अध्याय 7 श्लोक 20-23 :- वे अन्य देवताओं को अपने-अपने स्वभाव अनुसार भजते हैं। वे उनसे प्राप्त होने वाले शीघ्र नाश वाले फल को प्राप्त करते हैं। उन अन्य देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा तेतीस करोड़ देवी-देवता अन्य देवताओं की श्रेणी में आते हैं) को मैंने ही कुछ शक्ति दे रखी है। वे उसी से अपने साधक को इच्छित तथा क्षणिक लाभ वाले भोग प्रदान करते हैं। परंतु उन (अल्पमेध्साम्) अल्प बुद्धि वालों का यानि मंद बुद्धि वालों का वह फल नाशवान है। देवताओं की पूजा करने वाले देवताओं के लोक में चले जाते हैं। मेरे भक्त मुझे प्राप्त होते हैं यानि ब्रह्म के साधक ब्रह्मलोक में चले जाते हैं।

★ परमात्मा कबीर जी ने अपने द्वारा बताए सूक्ष्मवेद यानि तत्वज्ञान जो संपूर्ण अध्यात्म ज्ञान है, में बताया है कि ब्रह्म को क्षर पुरूष यानि नाशवान प्रभु कहा जाता है। इससे समर्थ परमात्मा परम अक्षर ब्रह्म है, वह मैं (कबीर) ही हूँ। काल ब्रह्म जब नाशवान है तो उसके साधक भी अमर मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते। इसी का प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 1, 3, 8-10 में गीता ज्ञान देने वाले ने अपने से अन्य परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करने वालों के विषय में कहा है कि उस परम दिव्य पुरूष यानि पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने वाले उसी को प्राप्त होते हैं। गीता अध्याय 18 श्लोक 61-62 में गीता ज्ञान देने वाले ने कहा है कि अर्जुन! अंतर्यामी परमेश्वर अपनी शक्ति से प्रत्येक शरीरधारी प्राणी को कर्मानुसार भ्रमण करवाता है। वह सबके हृदय में विराजमान है।(गीता अध्याय 18 श्लोक 61)

★ हे भारत! तू सर्व भाव से उस परमेश्वर की ही शरण में जा। उस परमात्मा की कपा से ही तू परम शांति को तथा (शाश्वतम्) अविनाशी यानि सनातन (स्थानम्) परम धाम को (प्राप्स्यसि) प्राप्त होगा।(गीता अध्याय 18 श्लोक 62)

☞ फिर गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में स्पष्ट किया है कि यदि उस परमेश्वर की शरण में जाना है तो (सर्व धर्मान परित्यज्य माम्) मेरे स्तर की सब धार्मिक क्रियाओं का फल मुझमें त्यागकर (एकम् शरणम्) उस अद्वितीय परमेश्वर की शरण में (व्रज) जा। (अहम) मैं (त्वा) तेरे को सब पापों से मुक्ति दे दूँगा। चिंता मत कर।(गीता अध्याय 18 श्लोक 66)

❑ विशेष :- संत रामपाल दास जी के अतिरिक्त अन्य सब गीता के अनुवादकर्ताओं ने ''व्रज'' शब्द का गलत अर्थ ''आओ'' किया है जबकि संस्कत शब्दकोश में ''व्रज'' शब्द का अर्थ ''जाओ, जाना, चले जाना, गमन करना''

लिखा है। इसी से स्पष्ट हो जाता है कि संत रामपाल दास जी को सर्व धर्मग्रन्थों का यथार्थ ज्ञान है जो उनके द्वारा किए गए सत्संगों की D.V.D. व पुस्तकों में विद्यमान है। उसे पढ़-सुनकर सत्य साधना करके अपना मानव जीवन धन्य करो। (गीता के प्रसंग को आगे बढ़ाते हैं जो संत रामपाल जी द्वारा बताया गया है।)

''ब्रह्मा, विष्णु और महेश से अन्य तीन प्रभु और हैं''

गीता अध्याय 15 श्लोक 1-4 तथा 16-17 में संपूर्ण अध्यात्म को संक्षिप्त में बताया है। संसार की एक पीपल के वृक्ष से तुलना की है। कहा है कि यह संसार उलटे लटके वृक्ष के समान है जिसकी मूल (जड़) यानि सबका धारण-पोषण व उत्पत्तिकर्ता तो ऊपर (शाश्वतम् स्थानम्) सनातन परम धाम में है और उस वृक्ष के तना को अक्षर पुरूष जानो तथा मोटी डार को क्षर पुरूष यानि काल ब्रह्म जानो तथा डार के लगी तीन शाखाओं को रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव जानो। इसको तत्वज्ञान से समझो।(गीता अध्याय 15 श्लोक 1-3)

☞ गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वज्ञान रूपी शस्त्र से अज्ञान को काटकर उसके पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आता यानि उसका पुनर्जन्म नहीं होता। मैं भी उसी की शरण हूँ यानि गीता ज्ञान दाता भी उसी के आधीन है।(गीता अध्याय 15 श्लोक 4)

☞ गीता अध्याय 15 श्लोक 16 :- इस श्लोक में बताया है कि इस संसार में क्षर पुरूष यानि काल ब्रह्म (इक्कीश ब्रह्माण्डों का स्वामी है) तथा अक्षर पुरूष (सात शंख ब्रह्माण्डों का स्वामी है) ये दोनों तथा जितने प्राणी इनके लोकों में हैं, वे सब नाशवान हैं। आत्मा सबकी अविनाशी है।(गीता अध्याय 15 श्लोक 16)

☞ गीता अध्याय 15 श्लोक 17 :- इसमें स्पष्ट किया है कि अविनाशी परमेश्वर तो उपरोक्त दोनों पुरूषों 'क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष' से अन्य है। वास्तव में वही पुरूषोत्तम है। उसे परमात्मा कहा जाता है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है, वह अविनाशी परमेश्वर है। परमात्मा कबीर जी ने सूक्ष्मवेद यानि तत्वज्ञान रूपी अपनी वाणी में बताया है कि :-

कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, निरंजन वाकि डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

अर्थात् कबीर जी ने बताया है कि वृक्ष का जो भाग पृथ्वी के ऊपर है, उसको तना यानि अक्षर पुरूष जानो। उस तने के कई डार (मोटी डाल) होती हैं। उनमें से एक डाल को क्षर पुरूष जानो। उस डार के लगी तीन शाखाओं को तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) जानो। उन शाखाओं को लगे पत्तों को संसार के प्राणी जानो। उस वृक्ष की जड़ें गुप्त हैं यानि जमीन के अंदर हैं। वह परम अक्षर पुरूष है। उसी का वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में किया है। कहा है कि वह अविनाशी परमात्मा सबका धारण-पोषण करता है। कबीर जी

ने अपनी महिमा बताई है :-

कबीर, हम ही अलख अल्लाह हैं, मूल रूप करतार।
अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, मैं ही सिरजनहार।।

अर्थात् कबीर जी ने अपनी स्थिति बताई है कि मैं इस संसार रूप वृक्ष की मूल हूँ। मैं सबका करतार यानि उत्पत्तिकर्ता हूँ।

कबीर, एकै साधै सब सधै, सब साधैं सब जाय।
माली सींचै मूल को, फूलै फलै अघाय।।

अर्थात् कबीर जी ने सत्य साधना करने को कहा है कि जैसे पौधे की मूल (जड़) की सिंचाई करने से पौधे का तना, डार, शाखा उन्नत होकर वृक्ष बनता है। फिर फलता-फूलता है। यह सही विधि है पौधे के रोपने व लाभ लेने की यानि पूर्ण परमात्मा को इष्ट रूप में मानकर पूजा करने से सब प्रभु यानि अक्षर पुरूष, क्षर पुरूष यानि काल ब्रह्म तथा तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) प्रसन्न होते हैं। यह साधना शास्त्र विधि के अनुसार है। इसके विपरित जो अध्यात्म अज्ञानता के कारण पौधे की शाखाओं यानि तीनों देवताओं की पूजा करते हैं। उनको कोई लाभ नहीं मिलता। गीता अध्याय 16 श्लोक 23 में यही बताया है कि जो साधक शास्त्रविधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है यानि जो भक्ति मंत्र या अन्य क्रियाऐं शास्त्रों में वर्णित नहीं हैं, वह साधना करता है। उसे न तो सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है, उन ही उसकी गति यानि मुक्ति होती है।(गीता अध्याय 16 श्लोक 23)

इन तीनों लाभों को प्राप्त करने के लिए भक्त परमात्मा की भक्ति करता है जो शास्त्रविरूद्ध साधना करने से प्राप्त नहीं होती। इसलिए वह साधना करना व्यर्थ है।

☞ **गीता अध्याय 16 श्लोक 24 में कहा है कि इससे तेरे लिए अर्जुन! कर्तव्य यानि जो साधना करनी चाहिए तथा अकर्तव्य यानि जो साधना नहीं करनी चाहिए, उसके लिए शास्त्र ही प्रमाण हैं यानि जो शास्त्रों में कहा है, वैसे कर।(गीता अध्याय 16 श्लोक 24)**

परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि पौधे की एक जड़ (Root) को साधने से पेड़ के सर्वांग सध जाते हैं यानि पौधे को जड़ की ओर से पृथ्वी में लगाना चाहिए। इससे पौधा पेड़ बनकर वांछित लाभ देता है अर्थात् पूर्ण परमात्मा यानि परम अक्षर पुरूष को इष्ट रूप में पूजने से सब देव प्रसन्न होते हैं। साधक को मोक्ष प्राप्त होता है। परंतु पौधे की शाखाओं को जमीन में लगाकर सिंचाई करने से पौधा नष्ट हो जाता है यानि सब साधने से सब समाप्त हो जाता है।

उपरोक्त वर्णन को समझने के लिए कृप्या देखें निम्न दो चित्र :-

गीता अध्याय नं. 15

श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय

कबीर–अक्षर पुरूष एक पेड़ है,
निरंजन (क्षर पुरूष) वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं,
पात रूप संसार।।

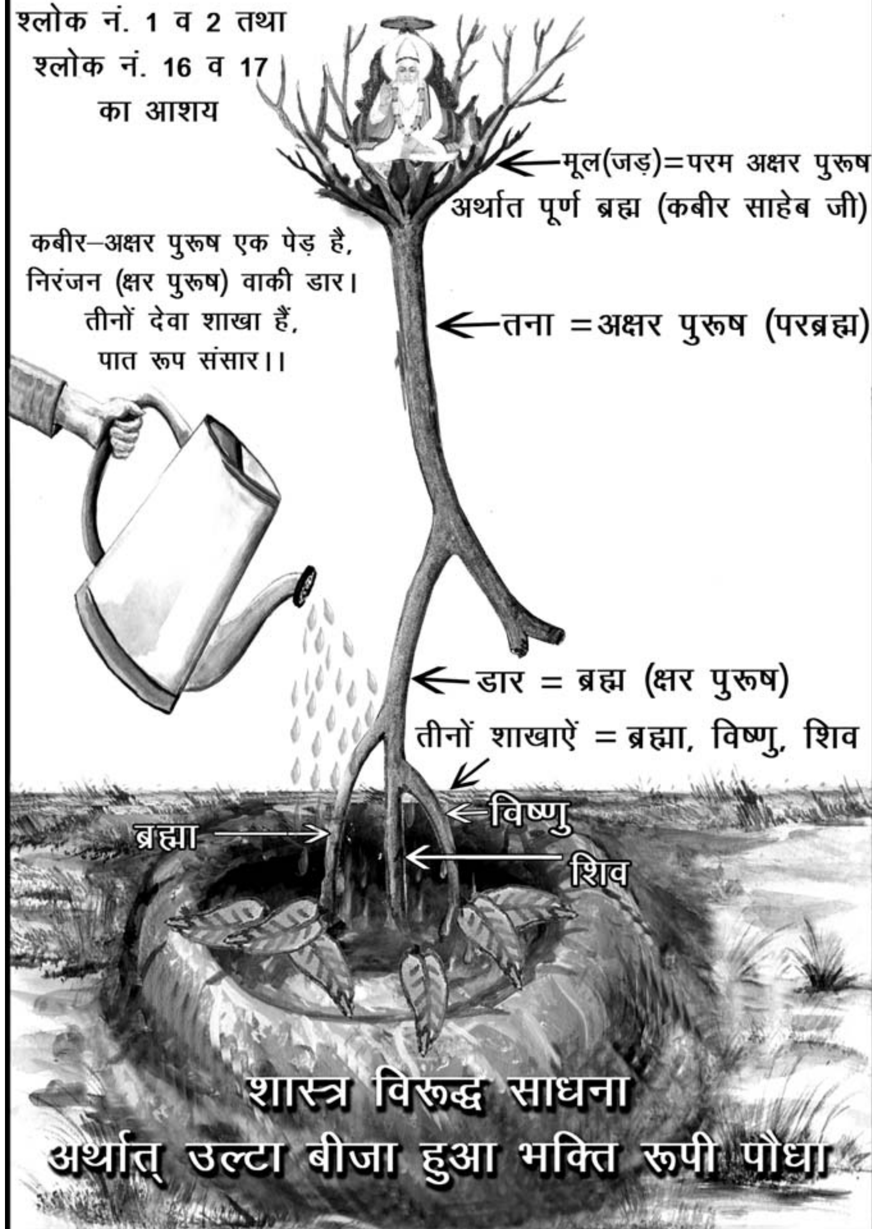
ब्रह्मा
विष्णु
शिव
तीनों शाखाऐं = ब्रह्मा, विष्णु, शिव

डार = ब्रह्म (क्षर पुरूष)

तना = अक्षर पुरूष
(परब्रह्म)

मूल(जड़) = परम अक्षर पुरूष
अर्थात पूर्ण ब्रह्म (कबीर साहेब जी)

शास्त्रानुकूल साधना
अर्थात् सीधा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा


गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 व 2 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय
मूल(जड़)=परम अक्षर पुरूष
अर्थात पूर्ण ब्रह्म (कबीर साहेब जी)
कबीर–अक्षर पुरूष एक पेड़ है,
निरंजन (क्षर पुरूष) वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं,
पात रूप संसार।।
तना =अक्षर पुरूष (परब्रह्म)
डार = ब्रह्म (क्षर पुरूष)
तीनों शाखाऐं = ब्रह्मा, विष्णु, शिव
विष्णु
ब्रह्मा
शिव
शास्त्र विरूद्ध साधना
अर्थात् उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा

❑ विशेष :- गीता अध्याय 3 श्लोक 10-15 तक भी निर्णायक ज्ञान है। कहा है कि अविनाशी परमात्मा सर्व यज्ञों में प्रतिष्ठित है यानि परम अक्षर ब्रह्म को इष्ट रूप में मानकर यज्ञ यानि धार्मिक अनुष्ठान करने से भक्ति का लाभ मिलता है। इस विधि से साधना करके देवताओं (संसार रूपी पौधे की शाखाओं) को उन्नत करो। फिर उन्नत हुए देवता तुम्हें उन्नत करें। इस प्रकार एक-दूसरे को उन्नत करके लाभ को प्राप्त करो यानि एक पूर्ण परमात्मा कबीर जी जो संसार रूप वृक्ष की मूल (Root) हैं, की पूजा इष्ट मानकर करने से देवता उन्नत होंगे यानि पौधे की शाखा वृद्धि को प्राप्त होकर वृक्ष बनकर फल देगी। ये उन्नत हुए देवता तुमको बिना माँगे इच्छित फल देंगे। जब पौधे की जड़ की सिंचाई करके वृक्ष बना दिया तो फल शाखाओं को लगेंगे। अपने आप झड़-झड़कर गिरेंगे। जब साधक पूर्ण परमात्मा की सत्य साधना गुरू धारण करके गुरू जी के बताए अनुसार करता है तो उसके संस्कार अच्छे बनने लगते हैं। भक्ति शास्त्रविधि अनुसार होने से सुख मिलता है। सिद्धि प्राप्त होती है तथा गति यानि मुक्ति होती है। जीवन काल में साधक को उसके संस्कार अनुसार यानि कर्मानुसार फल तीनों देवता (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी) बिना माँगे ही देते हैं। जैसे कर्मचारी या अधिकारी महीना भर ठीक ड्यूटी करता है तो कैशियर (Cashier) अपने आप बिना माँगे ही उसको तनख्वाह देता है। नौकरी सरकार की करता है, तनख्वाह कलर्क देता है। इससे स्पष्ट हुआ कि शास्त्रविधि अनुसार साधना करनी चाहिए जो शास्त्र प्रमाणित है। अन्यथा कोई लाभ नहीं है। अध्यात्म के अंदर तीनों गुणों यानि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी की स्थिति सरकार में कलर्क के समान है। यदि कोई सरकार की नौकरी न करके कलर्क की सेवा में लगा रहे तो वह दिन में दो कप चाय पिला सकता है। इसलिए जो पूर्ण परमात्मा की साधना शास्त्रविधि अनुसार न करके अन्य देवताओं की भक्ति करते हैं, वे गीता अनुसार राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख हैं। उपरोक्त ज्ञान संत रामपाल जी द्वारा बताया है। श्रीमद्भगवत गीता व संतों की बानी से बताया है। उनमें से जज देशराज चालिया भी एक है जो तमगुण शिव के पुजारी सांई बाबा शिरड़ी वाले की मूर्ति की पूजा करता है जो शास्त्रविधि के विरूद्ध होने से व्यर्थ है।

{नोट :- अधिक जानकारी के लिए कृपा पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ - 105 से 205 पर गीता के अध्याय 7, 8, 12, 13, 15 तथा 16 का सारांश। सब शंका समाप्त हो जाएँगी।}

★ जज देशराज चालिया को कानून का कितना ज्ञान है, वह तो इनके द्वारा किए दोनों फैसलों (मुकदमा नं. 429/2014, 430/2014 थाना-बरवाला, जिला-हिसार) तथा नर्स प्रवीन सिवाच के फैसले से पता चलता है तथा यह भी स्पष्ट हो जाता है कि यह अन्यायी तथा राक्षस स्वभाव का है। ऐसा जुल्म अच्छा इंसान नहीं कर सकता। इसलिए मनुष्यों में नीच है और दूषित कर्म करने वाला यानि सरेआम अन्याय करने वाला है तथा मूर्ख इसलिए है कि इसको अध्यात्म ज्ञान शून्य (Zero)

है। संत रामपाल जी जो विश्व में एकमात्र तत्वदर्शी संत, सर्व सद्ग्रन्थों के ज्ञाता हैं, को ढ़ोंगी बाबाओं की श्रेणी में बता रहा है।

☞ अब जज देशराज चालिया जी के अध्यात्म ज्ञान को जाँचते हैं :-

★ संत रामपाल जी महाराज ने बताया है कि यदि कोई किसी देव की पूजा करता है तो शास्त्रविधि विरूद्ध होने से वह व्यर्थ है। उदाहरण के लिए एक साधक श्री शिव जी तमगुण का साधक था। उसने कुछ चमत्कार किए। जनता उस साधक की पूजा करने लगी। उसकी मत्यु के पश्चात् उसके शरीर को जमीन में दबाकर समाधि दे दी। उसके ऊपर यादगार रूप में मंदिर का निर्माण कर दिया। उस मंदिर में उस साधक बाबा की पत्थर की मूर्ति बनवाकर स्थापित कर दी। उस मूर्ति की पूजा उस साधक के अनुयाई करने लगे। उनको देखकर अन्य भी उस मंदिर की मूर्ति की पूजा करने लगे। उस पर मेले लगने लगे।

☞ विचार करें :- गीता अध्याय 7 श्लोक 12-15 तथा 20-23 में तमगुण श्री शिव जी व अन्य देवी-देवताओं की पूजा करना व्यर्थ बताया है। शिव जी तमगुण तो संसार रूपी वक्ष की एक शाखा है। गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने कहा है कि जो अल्प बुद्धि वाले यानि अज्ञानी व्यक्ति अन्य देवताओं की पूजा करते हैं। उन देवताओं को मैंने कुछ शक्ति उनकी भक्ति के कारण दे रखी है। उससे वे देवता अपने पूजकों को कुछ लाभ देते हैं, परंतु शास्त्रविधि विरूद्ध होने से व्यर्थ है।

★ श्री शिव महापुराण (वैंकटेश्वर प्रैस मुंबई से प्रकाशित) के विद्यवेश्वर संहिता में काल ब्रह्म ने सदाशिव रूप में तथा अपनी पत्नी देवी दुर्गा को महापार्बती रूप में प्रकट करके आपस में लड़ रहे ब्रह्मा, विष्णु से कहा कि पुत्रो! तुम ईश (प्रभु) नहीं हो। मैंने तुम्हें तुम्हारे तप के बदले में दो कत्य दिए हैं सष्टि तथा स्थिति के। इसी प्रकार शिव को संहार का कत्य दिया है।

उदाहरण :- श्री शिव तमगुण, ब्रह्म की भक्ति करते हैं। अपने साधकों को ब्रह्म से प्राप्त शक्ति से लाभ देते हैं। शिव जी का साधक अपने साधक को (अपने सेवकों को) अपनी साधना से लाभ देता है। परंतु गीता कहती है कि मूल की पूजा करो यानि परम अक्षर ब्रह्म की पूजा करो। गीता ज्ञान देने वाला भी गीता अध्याय 18 श्लोक 61-62 में कहता है कि मेरे से अन्य परमेश्वर है। सर्व भाव से उस परमेश्वर की ही शरण में जा। उसकी कपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा। इससे सिद्ध हुआ कि ब्रह्म की पूजा भी मोक्षदायक नहीं है क्योंकि काल ब्रह्म (गीता ज्ञान देने वाले) की भक्ति से भी परम शांति तथा सनातन परम धाम प्राप्ति नहीं होती जो भक्ति का मूल उद्देश्य है। अन्य देवताओं की भक्ति से कुछ मिलने वाला नहीं है। जैसे कोई ट्रक की ट्यूब में हवा भरवाकर गाँव में खड़ा करके अन्य के साईकिल या मोटर साईकिल में हवा भर रहा है और अपनी महिमा बना रहा है तो मूर्ख है। उसकी ट्यूब खाली हो रही है। उसका ट्रक भी नहीं चल पाएगा। उसको चाहिए कि वह अन्य से कहे कि आप हवा भरने वाले कम्प्रैशर के मालिक के पास जाओ और अपने वाहनों के पहियों की ट्यूब में हवा

भरा लो। यह समझदारी है।

ब्रह्म काल, परम अक्षर ब्रह्म की पूजा करता है। शिव जी, काल ब्रह्म की पूजा करता है। जबकि काल ब्रह्म कहता है कि परम अक्षर ब्रह्म की साधना से पूर्ण भक्ति लाभ मिलता है। गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने अपनी भक्ति से होने वाली गति यानि मुक्ति को अनुत्तम (घटिया) बताया है। संत रामपाल को छोड़कर गीता के अन्य सब अनुवादकों ने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 के अनुवाद में अनुत्तम का अर्थ अति उत्तम किया है जो गलत है। संत रामपाल जी ने यथार्थ अनुवाद किया है। यदि कोई Bad का अर्थ उत्तम करता है तो गलत है।

★ श्री शिव जी तमगुण की पूजा करने वाला भी पूर्ण लाभ से वंचित रहता है। फिर उस शिव जी के पुजारी (सांई बाबा जैसों) के सेवकों को क्या मिलेगा? विचार कर लें। एक-दूसरे के टायर-ट्यूब से कब तक काम चलेगा? यानि पूर्ण परमात्मा के अतिरिक्त किसी भी देवता या उसके पुजारी की पूजा करने वाले का मानव जीवन नष्ट हो जाता है।

उदाहरण :- जैसे श्री लंका का राजा रावण श्री शिव जी तमगुण का उपासक था। भले ही शिव जी की साधना से धन भी मिला। आकाश में उड़ने की शक्ति भी आ गई। परंतु अंत बुरा हुआ। राक्षस कहलाया। पराई स्त्री को उठाया। परत्रिया अबला का अपरहण रूपी दूषित कर्म किया जो मनुष्यों में नीच व्यक्ति ही करते हैं। मूर्ख था जो अपनी पत्नी मंदोदरी के अनेकों बार समझाने पर भी नहीं माना। पूरे परिवार को मरवा दिया। सर्व धन छोड़कर चला गया। नरक में गिरा। यदि जन्म-मरण नहीं मिटा तो परम शांति नहीं होती। परम शांति सनातन परम धाम में जाने से होगी। उसके लिए गीता अध्याय 18 श्लोक 61-62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में स्पष्ट किया है।

☞ रही बात मूर्ति की पूजा करने की यह भी ठीक नहीं :-

जैसे कोई वैद्य (डॉक्टर) था। वह नाड़ी देखकर रोग को जानता था तथा सही उपचार करता था। उसकी बहुत प्रसिद्धि थी। उसकी मत्यु के उपरांत उसके शरीर को पथ्वी में दबाकर श्रद्धापूर्वक उसके ऊपर यादगार रूप में मंदिर बनाकर उसमें उस वैद्य की पत्थर की मूर्ति रख दी। यदि कोई रोगी उस वैद्य की मूर्ति के पास अपना उपचार करवाने के उद्देश्य से जाए तो क्या लाभ होगा। कुछ नहीं व्यर्थ। वर्तमान का कोई जीवित वैसा ही विद्वान वैद्य खोजकर उससे अपना उपचार करवाना चाहिए। उस मूर्ति के भरोसे अपना जीवन नष्ट नहीं करना चाहिए।

★ श्री देशराज चालिया अतिरिक्त सैशन जज तो सांई बाबा शिरड़ी वाले (तमगुण श्री शिव के पुजारी) की मूर्ति से आत्म कल्याण करवाने जाता है। इससे इस श्रीमान् की अक्ल का अंदाजा लगाया जा सकता है तथा इसको कितना अध्यात्म ज्ञान है? यह भी स्पष्ट है और इस महाशय ने विश्व में एकमात्र सर्व अध्यात्म ज्ञान सम्पन्न तत्वदर्शी संत रामपाल जी को ढ़ोंगी बाबा बताया है जिन्होंने

गीता, वेदों, पुराणों का सार निकालकर जनता के समक्ष रख दिया है जो ऋषियों, महर्षियों को समझ नहीं आया।

''महर्षि दयानंद सरस्वती के फैन देशराज जी ADJ''

श्री देशराज चालिया जज ने मुकदमा नं. 429/2014 व 430/2014 के फैसले में अपने जैसे अध्यात्म ज्ञानहीन महर्षि दयानंद सरस्वती की प्रशंसा की है तथा संत रामपाल जी महाराज की आलोचना की है कि रामपाल ने महर्षि पर टिप्पणी की थी जिस कारण से विवाद में आया। वहाँ पर भी मुकदमा बना।

हे अध्यात्म ज्ञानहीन देशराज जी! पढ़ ले नीचे लिखे संत रामपाल जी द्वारा की गई कथित महर्षि दयानंद सरस्वती के ''सत्यार्थ प्रकाश'' नामक ग्रन्थ की समीक्षा :-

❑ संत रामपाल जी ने बताया जो हमने सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक से जाँचा :-

सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक कथित महर्षि दयानंद सरस्वती जी के द्वारा लिखी है। जो कुछ भी उन्होंने अपने जीवन काल में जैसा वेदों को समझा तथा जैसे उनके समाज सुधार के विचार थे तथा अन्य संतों के प्रति उनकी जैसी धारणा थी, वह सब लिखी है। सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक वर्तमान में कथित महर्षि दयानंद माना जाएगा।

☞ सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 11 में लिखा है कि :-

★ एक रामदास नाम का व्यक्ति जो जाति का चमार था, अपने आपको संत कहलाता था। औरतों से घिरा रहता था। जाति का डेढ़ था। अशिक्षित था। उसकी लोग पूजा करते थे।

☞ संत कबीर जी के विषय में :- कबीर अशिक्षित था। उट-पटांग गाता फिरता था। उसने जीवन काल में जो कुछ बोला, उसके अनुयाईयों ने लिख लिया। उसे कबीर बानी कहते हैं। कुछ नीच जाति के जुलाहे उसके जाल में फँस गए। ऐसे लोगों से समाज को क्या लाभ हो सकता है?

☞ सिक्ख धर्म के प्रवर्तक श्री नानक देव जी को मूर्ख कहा है और लिखा है कि वेदों की निंदा करता था। ऐसे मूर्खों का नाम संत है।

❑ कथित महर्षि दयानंद के सत्यार्थ प्रकाश में समाज बिगाड़ का प्रमाण :-

कथित महर्षि दयानंद सरस्वती आर्यसमाज प्रवर्तक ने सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 4 में लिखा है कि:-

विधवा का पुनर्विवाह नहीं करना चाहिए। वह संतान उत्पन्न करने के लिए, कि रंडवे (जिसकी पत्नी मर गई हो यानि विधुर) के पास जाकर गलत काम करके गर्भ धारण करके संतान उत्पन्न कर ले। वह संतान विधवा के मृत पति की मानी जाएगी। उसी का गोत्र होगा। उसी की सम्पत्ति की अधिकारी होगी।

★ सत्यार्थ प्रकाश के इसी चौथे समुल्लास (Chapter) में यह भी लिखा है कि जिन लड़कियों का नाम पार्बती, नर्मदा, काली, गंगा, जमना, सरस्वती हो, उनसे

विवाह मत करो।

★ पिता का एक गोत्र छोड़कर तथा माता की छः पीढ़ियाँ छोड़कर यानि माता की छः पीढ़ियों के गोत्र को छोड़कर बच्चों का विवाह करो। (हे देशराज जज जी! क्या ये राय किसी बुद्धिमान व्यक्ति की हो सकती है। इस प्रकार तो बच्चों का विवाह होना ही बंद हो जाएगा। ऐसे विवाह कभी संभव नहीं हो सकता। श्री शिव जी की पत्नी का नाम पार्बती है। फिर तो श्री शिव जी से भी गलती हुई है विवाह करने में।)

{सुनते रहिए जज देशराज! आपके हीरो कथित महर्षि दयानंद सरस्वती के बोल जिनको उजागर करने के कारण निरूत्तर होकर आर्यसमाज के व्यक्तियों ने जनता को बहकाकर सतलोक आश्रम करौंथा पर आक्रमण किया था। वे चाहते थे कि रामपाल को मार दिया जाए ताकि कथित महर्षि दयानंद की पोल खुलने से बच सके।

संत रामपाल जी ने दयानंद जी पर लगभग नौ (9) घण्टे का सत्संग कर रखा है जो वेबसाईट www.jagatgururampalji.org पर D.V.D. में उपलब्ध है तथा Youtube पर ''सतलोक आश्रम चैनल'' को सर्च करके हैडिंग ''आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा आर्य समाज बनाम संत रामपाल जी'' को क्लिक करके पूरी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कुछ झलक यहाँ भी देखें।}

❑ सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 4 में अंत के पष्ठों में लिखा है :-

1. यदि किसी का पति रोजगार के लिए दूर देश गया हो और तीन वर्ष न आए तो वह स्त्री किसी अन्य पुरूष से गर्भ धारण करके संतान उत्पन्न कर ले। वह संतान विवाहित पति की मानी जाएगी। उसी का गोत्र होगा। उसी की सम्पत्ति की अधिकारी होगी।

2. यदि किसी का पति झगड़ा करता है। मारपीट करता है तो वह स्त्री अपने पति से शारीरिक संबंध न करे। किसी अन्य पुरूष के पास जाकर गर्भ धारण करके संतान उत्पन्न कर ले। रहे अपने पति के घर पर। वह गैर-पुरूष से उत्पन्न संतान विवाहित पति की मानी जाएगी। उसी का गोत्र होगा। उसी की सम्पत्ति की अधिकारी होगी।

3. यदि पत्नी को गर्भ रह जाए तो पति एक वर्ष तक अपनी पत्नी से मिलन न करे। यदि पुरूष से रहा न जाए तो किसी विधवा के पास जाकर उससे गलत काम कर ले।

4. दयानंद जी ने इसी चौथे समुल्लास में प्रारम्भ में लिखा है कि 24 वर्ष की लड़की का 48 वर्ष के पुरूष से विवाह करो। यह उत्तम समय है।

5. बच्चा पैदा होने के पश्चात् माता केवल छः दिन बच्चे को अपना दूध पिलाए। फिर अपने स्तनों पर कोई पदार्थ लगाकर सुराख बंद कर ले। दूध आना बंद कर ले। नवजात बच्चे को दूध पिलाने के लिए कोई धायी (नर्स) लाओ। उस नर्स यानि धायी का दूध बच्चे को पिलाओ। (उपरोक्त वर्णन चौथे अध्याय से है।)

{हे देशराज जज साहब! अपने स्टार (Star) महर्षि दयानंद जी से पूछो कि एक गाँव में चार महिलाओं को बच्चे पैदा हो जाऐं तो बच्चों को दूध पिलाने के लिए चार नर्स-धायी कहाँ मिलेंगी? फिर उन नर्सों के बच्चों को दूध कौन पिलाएगा?}

जज देशराज जी! यह है आपके हीरो कथित महर्षि दयानंद सरस्वती का समाज सुधार। इससे समाज में अशांति फैलकर कत्लेआम हो जाएगा। आप इस कथित महर्षि मानवता के नाश करने वाले के फैन हैं। इसी से पता चलता है कि आपने कैसा जजमेंट किया है। जैसा दयानंद को समझा, ऐसा इन दोनों मुकदमों की फाईलों को समझा है।

☞ कथित महर्षि दयानंद सरस्वती की अधिक जानकारी के लिए उपरोक्त Youtube पर व Website पर कल्कि करें।

☞ जब दयानंद के अध्यात्म अज्ञान को संत रामपाल जी द्वारा किए सत्संग की D.V.D. तथा Youtube में सतलोक आश्रम चैनल पर देखेंगे तो दयानंद जी को कोसते (आलोचना करते) रह जाओगे।}

6. कथित महर्षि दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 8 में लिखा है कि :-

❑ किसी ने प्रश्न किया दयानंद सरस्वती से :-

प्रश्न :- क्या सूर्य, चाँद, तारे आदि नक्षत्रों पर भी पृथ्वी की तरह प्रजा बसती है और क्या वहाँ पर भी ऐसे ही पदार्थ हैं जैसे पृथ्वी पर हैं?

उत्तर महर्षि दयानंद का :- हाँ! सूर्य, चन्द्र, तारों तथा सब ग्रहों पर पृथ्वी की तरह सब प्रजा रहती है। जो-जो पदार्थ पृथ्वी पर हैं यानि गेहूँ, ज्वार, चावल आदि-आदि, कनक, काजू, बादाम आदि-आदि मेवे, सेब-संतरे आदि फल, नदी-झरने सब पृथ्वी की तरह सूर्य, चाँद आदि-आदि सब ग्रहों (शुक्र ग्रह, मंगल ग्रह आदि-आदि) पर भी हैं। वहाँ रहने वाले विद्वान व्यक्ति इन्हीं वेदों को पढ़ते हैं।

पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश'' की रचना सन् 1875 में की थी। जिस (आग के गोले जिसका तापमान एक लाख डिग्री सैल्सियस से भी अधिक है) सूर्य (Sun) में भी उपरोक्त व्यवस्था बताई है। संत रामपाल जी महाराज ने इस ''सत्यार्थ प्रकाश'' का गहन अध्ययन करके मानव समाज को बताया है कि यह ग्रन्थ तो घर में रखने योग्य भी नहीं है। इसको समाज में बेचकर आर्य समाज के प्रधान जनता का धन व्यर्थ कर रहे हैं तथा ''सत्यार्थ प्रकाश'' का ज्ञान मानव सभ्यता का नाश करने वाला है। मिथ्या बातों से भरा है जिसको सभ्य शिक्षित समाज में पढ़कर भी नहीं सुनाया जा सकता।

☞ महर्षि दयानंद जी की अक्ल पर पत्थर पड़े थे जो इतना भी विवेक नहीं रखता था कि सूर्य पर मानव व वन, खेत, बाग, जल स्रोत दरिया व खाद्य पदार्थ बताऐ हैं। कारण यह था कि कथित महर्षि दयानंद जिसे समाज सुधारक भी कहा जाता है। यह तो भाँग पीता था, तम्बाकू खाता व सूंघता था, हुक्का पीता था। उस समय चाय पीता था। साधना काल में यह नशीली वस्तुओं का सेवन करता था।

उसी दौरान ''सत्यार्थ प्रकाश'' की रचना की थी। आर्य समाज के व्यक्तियों द्वारा लिखी पुस्तकों में यह प्रमाण है। उन पुस्तकों को जिनमें दयानंद के विषय में नशीली वस्तुऐं सेवन करने का उल्लेख है, उनको सत्संग में प्रोजैक्टर पर दिखाया है, उनकी D.V.D. बनी हैं। **Youtube** पर **Satlok Ashram Channel** पर क्लिक करके ''आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा आर्य समाज बनाम संत रामपाल जी'' की विडियो में देखा जा सकता है।

☞ विधवा के लिए तथा विवाहिता के लिए समाज में आग लगाने के निर्देश दिए हैं। जज साहब इस महर्षि के फैन हैं।

❑ महर्षि दयानंद को वेद ज्ञान नहीं था :-

संत रामपाल जी महाराज ने सत्संग करके प्रोजेक्टर पर महर्षि दयानंद की अध्यात्म अज्ञानता को जनता के रूबरू किया जिनकी D.V.D. भी बनाई हैं जो लगभग 10-12 घण्टे की हैं जो ''आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा आर्यसमाज बनाम संत रामपाल जी'' के **Title** से **Youtube** पर डाली गई हैं। **Youtube** पर ''सतलोक आश्रम चैनल'' को सर्च करके हैडिंग ''आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा आर्य समाज बनाम संत रामपाल जी'' को खोजें। उसमें सत्संग की विडियो डाली हैं जिनमें आर्य समाजियों द्वारा लिखी वे पुस्तकें दिखाई हैं जिनमें दयानंद के विषय में लिखा है कि वह भाँग पीता था, तम्बाकू खाता-सूँघता था। हुक्के में तम्बाकू पीता था। उस समय चाय भी पीता था। कभी-कभी नंगा भी रहता था। **Video Clips** को देखें। उनमें सत्यार्थ प्रकाश को दिखाया है, वेदों से मिलाया है जो पूर्ण रूप से वेद ज्ञान के विपरित है यानि झूठा ज्ञान ''सत्यार्थ प्रकाश'' का है जो महर्षि दयानंद के पूरे जीवन का अनुभव है।

❑ एक झलक :- सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास (अध्याय) 7 में किसी ने प्रश्न किया :-

प्रश्न :- क्या परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए? क्या परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना करने यानि भक्ति साधना करने से भक्त के पाप नाश होते हैं?

उत्तर (महर्षि दयानंद का) :- हाँ, करनी चाहिए, परंतु परमात्मा की भक्ति से पाप नाश नहीं होते। अन्य लाभ होता है।

प्रश्न :- फिर भक्ति करने का क्या लाभ?

उत्तर (महर्षि दयानंद का) :- परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना करनी चाहिए। उससे अन्य लाभ होते हैं जैसे परमात्मा का साक्षात्कार होना।

★ संत रामपाल जी ने विवेचन व विश्लेषण करके बताया :-

महर्षि दयानंद जी को वेदों का विद्वान माना जाता है। उन्होंने स्वयं सत्यार्थ प्रकाश में भी स्पष्ट किया है कि मैं वेद ज्ञान को सत्य मानता हूँ। वेद के विरूद्ध किसी की बात को सत्य नहीं मानता हूँ।

★ महर्षि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश में कहा है कि परमात्मा निराकार है।

★ परमात्मा किसी एक स्थान पर ऊपर किसी लोक में नहीं रहता।

★ परमात्मा भक्ति करने वाले के पाप नाश नहीं करता।

❑ विवेचन :- महर्षि दयानंद जी एक तरफ तो कहते हैं कि परमात्मा निराकार है। फिर उसका साक्षात्कार साधना करने से होना मानते हैं। साक्षात्कार तो साकार का होता है, निराकार का नहीं। महर्षि दयानंद के अपने विचारों में विरोधाभास उनकी अज्ञानता का प्रतीक है।

★ महर्षि दयानंद जी के अपने विचार हैं कि परमात्मा की भक्ति से पाप नाश नहीं होते जबकि यजुर्वेद अध्याय 8 श्लोक 13 में छः बार लिखा है कि परमात्मा अपने भक्त के सब पाप नाश कर देता है। घोर से घोर पाप भी परमात्मा की साधना से नाश हो जाते हैं। जाने-अनजाने में हुए पाप भी परमात्मा की भक्ति से नाश हो जाते हैं। कपा देखें फोटोकॉपी यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 की जो आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित वेद से ली है।

देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमस्यात्मकृतस्यैनसोऽवयजनमस्येनसऽएनसोऽवयजनमसि। यच्चाहमेनो विद्वाँश्चकार यच्चाविद्वाँस्तस्य सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि ॥१३॥

पदार्थः—हे सब के उपकार करने वाले मित्र ! आप (**देवकृतस्य**) दान देने वाले के (**एनसः**) अपराध के (**अवयजनम्**) विनाश करने वाले (**असि**) हो (**मनुष्यकृतस्य**) साधारण मनुष्यों के किये हुए (**एनसः**) अपराध के (**अवयजनम्**) विनाश करने वाले (**असि**) हो (**पितृकृतस्य**) पिता के किये हुए (**एनसः**) विरोध आचरण के (**अवयजनम्**) अच्छे प्रकार हरने वाले (**असि**) हो (**आत्मकृतस्य**) अपने किये हुए (**एनसः**) पाप के (**अवयजनम्**) दूर करने वाले (**असि**) हो (**एनसः एनसः**) अधर्म्म के अधर्म्म के (**अवयजनम्**) नाश करने हारे (**असि**) हो (**विद्वान्**) जानता हुआ मैं (**यत्**) जो (**च**) कुछ भी (**एनः**) अधर्म्माचरण (**चकार**) किया, करता हूं वा करूँ (**अविद्वान्**) अनजान में (**यत्**) जो (**च**) कुछ भी किया करता हूं वा करूं (**तस्य**) उस (**सर्वस्य**) सब (**एनसः**) दुष्ट आचरण के (**अवयजनम्**) दूर करने वाले आप (**असि**) हैं ॥१३॥

★ संत रामपाल जी ने महर्षि दयानंद की अज्ञानता को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण दिया है कि :- साबुन (Soap) के गुणों में लिखा है कि साबुन के प्रयोग से कपड़े का मैल नाश हो जाता है।

यदि किसी से प्रश्न किया जाए कि क्या साबुन के प्रयोग करने से कपड़े का मैल नाश हो जाता है। उत्तर मिले कि नहीं साबुन के प्रयोग से कपड़े का मैल नाश नहीं होता। परंतु साबुन का प्रयोग करना चाहिए।

स्वाभाविक बात है कि प्रश्न उठेगा कि फिर साबुन लगाने का क्या लाभ?

★ अज्ञानी व्यक्ति उत्तर देवे कि कपड़े पर साबुन के प्रयोग से मैल नाश नहीं होता, परंतु कपड़ा मजबूत हो जाता है तो वह कितना जानता है साबुन के विषय में? यह उसके उत्तर से पता चलता है। इसी प्रकार वेदों में परमात्मा के गुण लिखे हैं। परमात्मा की पहचान भी लिखी है। जिनमें लिखा है कि परमात्मा की भक्ति से

भक्त के पाप नाश हो जाते हैं। कथित महर्षि दयानंद जी कहते हैं कि परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना यानि भक्ति से पाप नाश नहीं होते। इससे सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानंद जी को वेदों का बिल्कुल ज्ञान नहीं था।

★ अन्य उदाहरण :- किसी ने वैद्य (डॉक्टर) का बोर्ड अपने घर के आगे लगा रखा हो। औषधि भी देता हो। वह उस क्षेत्र में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त किए हो। कोई उस वैद्य से प्रश्न करे कि क्या औषधि सेवन करने से रोग नाश हो जाता है। क्या औषधि खानी चाहिए रोग नाश के लिए? उत्तर मिले कि औषधि खानी चाहिए। औषधि खाने से रोग नाश नहीं होता। तो क्या वह व्यक्ति वैद्य है? उत्तर स्पष्ट है कि नहीं, महामूर्ख है। यही दशा महर्षि दयानंद के अध्यात्म व सामाजिक ज्ञान की है जिसका फैन देशराज चालिया ADJ है।

★ अन्य अज्ञानता :- महर्षि दयानंद मानते थे कि परमात्मा ऊपर किसी लोक में एक स्थान पर नहीं रहता, निराकार है। जबकि ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मंत्र 3 में लिखा है कि परमात्मा सब लोकों के ऊपर एक स्थान पर बैठा है।(इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मंत्र 3 की फोटोकॉपी इसी पुस्तक के पृष्ठ 42 पर पढ़ें।)

★ इससे सिद्ध हुआ कि कथित महर्षि दयानंद सरस्वती को वेद ज्ञान नहीं था। वास्तव में दयानंद को किसी क्षेत्र का ज्ञान नहीं था, न खगोल-भूगोल का, न समाज सुधार का और न ही अध्यात्म का। यह पूर्ण रूप से अज्ञानी था।

★ संत रामपाल जी भी आध्यात्मिक गुरू यानि अध्यापक हैं तथा श्री दयानंद जी, श्री विवेकानंद जी, संत श्री गुरू नानक जी, संत रविदास जी तथा परमात्मा कबीर जी भी आध्यात्मिक गुरू यानि अध्यापक थे। इन धर्मगुरूओं ने यदि धर्मशिक्षा में कोई त्रुटि की है और वर्तमान गुरू उस त्रुटि को ठीक करता है तो अच्छी बात है। उसका विरोध न करके धन्यवाद करना चाहिए।

★ संत रविदास, श्री गुरू नानक देव जी (सिख धर्म प्रवर्तक) तथा परमात्मा कबीर जी तथा संत कबीर जी के शिष्य संत गरीबदास जी का ज्ञान वेदों से मेल करता है। वेद परमात्मा का संविधान माना जाता है तथा अध्यात्म शिक्षा का पाठ्यक्रम (Syllabus) है। जिन अध्यापकों द्वारा बताया ज्ञान पाठ्यक्रम से मेल नहीं करता, वे अज्ञानी हैं। विद्यार्थियों का भविष्य नष्ट कर रहे हैं।

☞ कबीर जी ने भी यजुर्वेद अध्याय 8 श्लोक 13 का समर्थन किया है :-

कबीर, जब ही सतनाम हृदय धरो, भयो पाप का नाश।
जैसे चिंगारी अग्नि की, पड़े पुराने घास।।

अर्थात् जब साधक परमात्मा के सच्चे नाम का जाप दिल लगाकर सच्ची श्रद्धा से करता है तो उसके पाप ऐसे जलकर नष्ट हो जाते हैं जैसे पुराने-सूखे घास को आग की एक चिंगारी जलाकर भस्म कर देती है।

★ परमात्मा ऊपर आकाश में बने सतलोक स्थान पर रहता है। यह वेद भी कहते हैं। प्रमाण ऊपर ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मंत्र 3 में है। संत गरीबदास जी (छुड़ानी गाँव वाले) को परमात्मा कबीर जी ऊपर अपने स्थान पर लेकर गए थे,

जिस लोक में रहते हैं, जहाँ से सशरीर चलकर आते हैं। संत गरीबदास जी ने भी यही कहा है कि :-

गरीब, गगन मण्डल में रहत है, अविनाशी आप अलेख।
जुगन–जुगन सत्संग है, धर–धर खेलैं भेष।।

अर्थात् संत गरीबदास जी ने बताया है कि अविनाशी परमात्मा गगन मण्डल में यानि आकाश में (सतलोक) सच्चखण्ड में रहता है। वहाँ से प्रत्येक युग में अन्य वेष बनाकर पथ्वी पर लीला करता है।

महर्षि दयानंद जी ने परमात्मा कबीर जी को सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 11 में मूर्ख कहा है। उनकी वेदज्ञानयुक्त वाणी को उट-पटांग बताया है। तो महर्षि कैसा था? कहावत है कि मूर्खों को तो मूर्ख ही लगते हैं।

☞ स्वामी विवेकानंद को कितना अध्यात्म ज्ञान था? :-

स्वामी विवेकानंद जी के आध्यात्मिक गुरू श्री रामकष्ण परमहंस जी थे जो ''काली देवी'' के परम भक्त थे। श्री विवेकानंद जी भी काली के भक्त थे जबकि पवित्र गीता शास्त्र में देवी-देवताओं की भक्ति करने वाले मूर्ख बताऐ हैं। केवल एक पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने को कहा है। इससे समझ लें कि स्वामी विवेकानंद जी को कितना अध्यात्म ज्ञान था। संत रामपाल जी ने जो वेदों, गीता व संतों की वाणी के गूढ़ रहस्यों को जाना है तथा सत्संग करके मानव पर महा-उपकार किया है। संत रामपाल जी का ज्ञान परमात्मा संत शिरोमणि कबीर जी, श्री गुरूनानक देव जी, संत श्री रविदास जी व अन्य प्रसिद्ध महापुरूषों के ज्ञान के आधार पर निर्धारित है जिससे जीव का कल्याण संभव है। कथित महर्षि दयानंद तथा स्वामी विवेकानंद जी का ज्ञान वेद-संतों व गीता के विरूद्ध होने से व्यर्थ है।

गीता व वेदों में एक परमात्मा को इष्ट रूप मानकर उसकी भक्ति से सर्व लाभ बताया है। अन्य देवी-देवताओं को इष्ट मानकर उनकी भक्ति करना व्यर्थ कहा है। इसका कारण संत रामपाल जी के संत्संगों का सार रूप पूर्व में विस्तारपूर्वक बता दिया है।

संत रामपाल जी ने अपने सत्संग वचनों में बताया है जो इस प्रकार है :-

जब तक मानव को आत्म ज्ञान व परमात्म ज्ञान तथा कर्मफल का ज्ञान नहीं होगा, तब तक वह अपने स्वभाववश ही कार्य करता है। स्वभाव पूर्व जन्म के संस्कारों से बनता है तथा वर्तमान जीवन में परिवार व कुल के लोगों के संग से भी स्वभाव प्रभावित होता है। यदि अच्छे विचारों वाले कुल में जन्म होता है तो उनका प्रभाव बच्चे के स्वभाव पर गिरता है। परंतु बड़ा होने पर उसके पूर्व जन्म का स्वभाव अधिक सक्रिय रहता है। कुल के लोग तो उसे संसारिक कार्यों व परंपराओं का ज्ञान तथा अच्छे-बुरे का ज्ञान ही करवा सकते हैं। युवा होने पर व्यक्ति (स्त्री-पुरूष) अपने परिवार वालों की बातों पर कम ध्यान देता है। अपनी नई सोसाइटी को अधिक महत्व देता है। ऐसे समय में उसे सत्संग की आवश्यकता होती है। सत्संग में परमात्मा का संविधान जो धार्मिक शास्त्रों में वर्णित है, वह तथा

जो परम संतों के विचार हैं, वे विस्तारपूर्वक समझाए जाते हैं जिससे बुरे से बुरे स्वभाव वाला व्यक्ति भी अपना स्वभाव नेक कर लेता है। वह कभी पाप नहीं करता। भगवान से डरकर अपने संसारिक कार्य तथा धर्म कार्य करने लग जाता है। जब तक इंसान की सोच (विचारधारा) नहीं बदलेगी, तब तक कितना ही कठिन कानून बनाया जाए या कितना ही व्यवस्था में बदलाव किया जाए, सब व्यर्थ रहेगा।

☞ कठिन कानून से जेलें तो भर जाऐंगी, परंतु अपराध कम नहीं हो पाऐंगे, बलात्कार कम नहीं होंगे। इन सबका समाधान सत्संग प्रवचनों से संभव है।

★ जज देशराज चालिया जी ने फैसला सुनाते समय जो शब्द अध्यात्म तथा बाबाओं पर कहे, उनमें यह भी कहा था कि ‘‘वर्तमान में अनेकों बाबा धर्म प्रचार कर रहे हैं। भोली जनता इनके जाल में फँस जाती है क्योंकि उनको पता नहीं है कि ये आस्था का नाजायज फायदा उठाते हैं।’’ अपनी राय देते समय देशराज जी ने कहा कि इन सबके अध्यात्म ज्ञान की जाँच होनी चाहिए। संत रविदास, संत कबीर दास, गुरू नानक जी, महर्षि दयानंद सरस्वती तथा स्वामी विवेकानंद जैसे संतों के ज्ञान से जाँचा जाना चाहिए ताकि भोली जनता ढ़ोंगी बाबाओं के पास जाकर ठगने से बचे और इनकी पोल-पट्टी खुले।

★ श्रीमान् देशराज चालिया जी! हम आपकी इस बात का समर्थन करते हैं। यह शुभ कार्य अवश्य होना चाहिए। हम उन व्यक्तियों का आजीवन अहसान मानेंगे जो इन संतों के अध्यात्म ज्ञान का विश्लेषण करके मानव जाति को बताऐंगे कि वर्तमान में इन-इन संतों का अध्यात्म ज्ञान सही है। इन सब बाबाओं का ज्ञान गलत है। विश्व का मानव धन्य हो जाएगा। इससे बड़ा उपकार मानव जाति पर अन्य नहीं हो सकता।

★ यदि हम सीधे-सीधे कहें कि यह परोपकार संत रामपाल जी ने कर रखा है। सब बाबाओं के अध्यात्म ज्ञान का विश्लेषण कर रखा है। वर्तमान के सर्व धर्म प्रचारकों व गुरूओं के अध्यात्म ज्ञान का विश्लेषण देखें। **Youtube** पर **"Satlok Ashram Barwala"** लिखकर क्लिक करें। फिर ‘‘आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा’’ को सर्च करें। फिर जिस भी संत व शंकराचार्य, आर्यसमाज, स्वामी ज्ञानानंद, एस्कोन, राधास्वामी, कबीर पंथ दामाखेड़ा वालों का, श्री मधुपरमहंस रांजड़ी (जम्मू) वाले का, जयगुरूदेव मथुरा वालों का, मुसलमान धर्म का, सिक्ख धर्म का, गीता का, वेदों तथा पुराणों का विश्लेषण सर्च करके देखें। जिस भी धर्म या संत का विश्लेषण देखना है, उसका नाम लिखें, बनाम संत रामपाल लिखें। जैसे ‘‘आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा चारों शंकराचार्य बनाम संत रामपाल’’ लिखकर कल्कि करें और **Play** करके सच्चाई आँखों देखें।

परमात्मा चाहने वाली नेक आत्माऐं संत रामपाल जी द्वारा किए गए अध्यात्म ज्ञान के विश्लेषण को आलोचना कहते हैं। बात वहीं आकर रूकती है कि श्रद्धालुओं को यथार्थ अध्यात्म ज्ञान नहीं है। वर्तमान भारत देश की जनता सुशिक्षित है। जैसे इंजीनियर, डॉक्टर, **IAS, IPS**, वकील, जज, **B.A., M.A., P.H.D.,**

प्रोफेसर, लैक्चरार आदि-आदि सुशिक्षित व्यक्ति हैं, परंतु इनको अध्यात्म ज्ञान शुन्य है। प्रमाण के लिए जज श्री देशराज चालिया जी पर्याप्त हैं जो शिरड़ी वाले सांई बाबा की भक्ति करते हैं। शिरड़ी में पत्थर की मूर्ति के समक्ष अपने कल्याण में अन्य सुख-सुविधाओं की प्रार्थना करने जाते हैं। इनको परमात्मा के विषय में क-ख भी ज्ञान नहीं है और अध्यात्म पर बड़ी-बड़ी टिप्पणी कोर्ट में बैठकर करते हैं। कोर्ट में उपस्थित व्यक्ति इसकी ऊवा-बाई सुनने को मजबूर होते हैं क्योंकि वे कानून व न्यायालय का सम्मान करते हैं। वे उस जज की कुर्सी की इज्जत करते हैं।

★ एक बार पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट, चण्डीगढ़ के माननीय जज श्री के.सी. पुरी जी हिसार कोर्ट का वार्षिक निरीक्षण करने आए। वहाँ से वे राजस्थान राज्य में गाँव-सालासर में हनुमान जी की मूर्ति की पूजा करने गए। जज देशराज जी को कौन समझाए कि आप यानि जज भी वहीं खड़े हो जहाँ अन्य भोले श्रद्धालु खड़े हैं। जो भक्तजन संतों से जुड़े हैं, वे तो उनकी बातें सुनकर उनसे प्रभावित होकर उनकी पूजा करने में लगे हैं। आपका क्या कर लें जो एक पत्थर के पीछे पड़े हो जो न बोल सकता, न सुन सकता। आपसे भोला कौन होगा? सुशिक्षित होते हुए भी इतनी समझ नहीं रखते कि पत्थर का बाबा जी क्या देगा? क्या पत्थर की सेब की मूर्ति से सेब का लाभ मिलेगा?

★ हम दावे के साथ कह रहे हैं कि वर्तमान में यथार्थ अध्यात्म ज्ञान जो शास्त्रों में वर्णित है, संत रामपाल जी के अतिरिक्त विश्व में किसी भी संत, बाबा, धर्मगुरू या आचार्य, शंकाराचार्य को नहीं है। भारत की सुशिक्षित जनता से हमारा निवेदन है कि संत रामपाल जी के अध्यात्म ज्ञान को समझो। उस पर तर्क करो। इनके सत्संगों को सुनो। इन्होंने तो ऐसा विश्लेषण कर रखा है कि आप जैसा सुशिक्षित श्रीमान् तो तुरंत जान लेंगे कि माजरा क्या है? इन्होंने सर्व ग्रन्थों को सत्संग में दिखाया है। उनकी विडियो D.V.D. बनाई हैं। आप केवल देखें, कोई ग्रन्थ भी मोल लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती, सब शास्त्रों को विडियो में दिखाया है, हाथो-हाथ सच्चाई मिलती है।

❑ संत रामपाल द्वारा किया अध्यात्म विश्लेषण व सत्संग की एक झलक जो मानव को विश्वास करने के लिए विवश कर देती है। उन्होंने कहा है :-

सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए कोई आधार होना अनिवार्य है। जैसे दो पड़ोसी किसानों का विवाद है कि 'क' ने कहा कि 'ख' मेरे खेत की जमीन अपनी ओर किए है। मेरी जमीन दस फुट इसने दबा रखी है। कब्जा कर रखा है। ख कहता है कि आप माप करवा लें, पता चल जाएगा। मापने के लिए किसी मील पत्थर की आवश्यकता पड़ती है जो दोनों पक्षों को मान्य हो कि यह सही है। उस पत्थर से पैमाईस (Measurement) दोनों के सामने की जाती है। जो भी विवाद होता है, वह निपट जाता है।

★ इसी प्रकार अध्यात्म ज्ञान के सत्य-असत्य की जाँच के लिए हमारे धर्मग्रन्थ जैसे पवित्र चारों वेद, पवित्र श्रीमद्भगवतगीता जो चारों वेदों का सार रूप है,

पवित्र पुराण, पवित्र उपनिषद तथा परमात्मा कबीर जी की पवित्र वाणी यानि उनके द्वारा बताया सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान जिसे संत भाषा में सूक्ष्मवेद कहा है तथा वेद भाषा में तत्वज्ञान कहा है तथा परमात्मा प्राप्त संतों की पवित्र वाणी मील का पत्थर है।

❑ पहले सद्ग्रन्थों का विश्लेषण करता हूँ :-

★ चारों पवित्र वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) तथा इनका सार रूप पवित्र श्रीमद्भगवत गीता प्रभुदत्त (**God Given**) शास्त्र है। पवित्र पुराण देवताओं तथा ऋषियों का बताया अपना अनुभव है। इसी प्रकार उपनिषद हैं जो ऋषियों का अपना अनुभव है। पुराणों व उपनिषदों का जो ज्ञान प्रभुदत्त अध्यात्म ज्ञान से मेल नहीं करता, वह विश्वास के योग्य नहीं है। उसे प्रमाण रूप में नहीं ले सकते। जैसे महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपने अनुभव से ''सत्यार्थ प्रकाश'' नामक बारहवां उपनिषद बना दिया। लिख दिया कि यह वेदों आदि सद्शास्त्रों के ज्ञान के आधार से लिखा है। वास्तव में पूरा का पूरा सत्यार्थ प्रकाश का ज्ञान वेदों के विरूद्ध है। इसलिए ऐसे शास्त्र विश्वास के योग्य नहीं हैं।

☞ अब संतों की अमृतवाणी का विश्लेषण करता हूँ :-

इस बात को वर्तमान के सर्व संत मानते हैं कि संत मत परमात्मा कबीर जी से प्रारम्भ हुआ है। इनसे पहले जितने भी संत हुए हैं, उनका अध्यात्म ज्ञान तीनों देवताओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) के इर्द-गिर्द ही रहा है। विशेषकर श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को अधिक मानते रहे हैं। इनसे ऊपर भी कोई प्रभु है। यह ज्ञान केवल परमात्मा कबीर जी ने काशी (बनारस) शहर में प्रकट होकर सन् **1398** से **1518** तक **120** वर्ष तक पृथ्वी पर रहकर अपने मुख कमल से अमृतवाणी बोलकर बताया है। यह अध्यात्म ज्ञान सत्य और संपूर्ण है यानि अध्यात्म ज्ञान का मील का पत्थर है। पवित्र वेद परमात्मा की यथार्थ जानकारी देते हैं कि परमात्मा कैसा है? कहाँ रहता है? उसकी महिमा वेदों में भरी पड़ी है। परमात्मा का परिचय वेदों में है। वेद, गीता व पुराण, ग्रन्थ हिन्दू धर्म के व्यक्तियों को पूर्ण रूप से मान्य हैं।

☞ वेद परमात्मा का परिचय बताते हैं कि :-

1. पूर्ण परमात्मा जो सर्व की उत्पत्ति करने वाला है, वे सर्व लोकों के ऊपर के लोक में विराजमान है। प्रमाण ऋग्वेद मण्डल **9** सूक्त **54** मंत्र **3** में कृपा देखें फोटोकॉपी इस वेदमंत्र की जिसका अनुवाद महर्षि दयानंद सरस्वती जी के चेलों आर्यसमाजियों द्वारा किया गया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रकाशित है।

इस वेद मंत्र में स्पष्ट है कि (अयम्) यह परमात्मा (पुनानः) पवित्र है। यह (विश्वानि) सर्व (भुवनोपरि) लोकों के ऊपर के भाग में (तिष्ठति) बैठा है यानि वहाँ विद्यमान है। (सोमः देवः) अमर परमात्मा (सूर्यः न) सूरज के समान है यानि जैसे सूर्य ऊपर आकाश में है और उसका प्रकाश तथा उष्णता चारों ओर अपना लाभ

दे रहे हैं। इसी प्रकार परमात्मा ऊपर आकाश में एक लोक में बैठकर अपनी निराकार परमेश्वरीय शक्ति से सर्व लोकों तथा प्राणियों को संभाले हुए है।

अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि ।
सोमो देवो न सूर्यः ।।३।।

पदार्थः—(सूर्यः, न) सूर्य के समान जगत्प्रेरक (अयम्) यह परमात्मा (सोमः, देवः) सौम्य स्वभाव वाला और जगत्प्रकाशक है और (विश्वानि, पुनानः) सब लोकों को पवित्र करता हुआ (भुवनोपरि, तिष्ठति) सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व भाग में भी वर्तमान है ।।३।।

वेदों में परमात्मा का अन्य परिचय :-

2. परमात्मा अपने निवास स्थान यानि सर्वोपरि लोक से सशरीर चलकर पृथ्वी पर आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनको अपने विषय में ज्ञान बताने के उद्देश्य से मिलता है। अपने मुख से वाणी बोलकर तत्वज्ञान यानि यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताता है। एक कवि की तरह आचरण करता हुआ पृथ्वी पर विचरण करके कविताओं, दोहों, चौपाईयों के रूप में वाणी बोलकर यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताता है। जिस कारण से प्रसिद्ध कवि की पदवी भी प्राप्त करता है। प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मंत्र 2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मंत्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 16-20, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9 में है। {कृपा देखें फोटोकॉपी इन वेदमंत्रों की इसी पुस्तक के पृष्ठ 93-103 पर।}

★ उपरोक्त वेदमंत्रों में दिए परमात्मा के परिचय पर केवल ''कबीर जी'' खरे उतरते हैं। इसलिए प्रमाणित हुआ कि काशी वासी कबीर जुलाहा पूर्ण परमात्मा है। इसलिए यह भी सिद्ध हो जाता है कि परमात्मा द्वारा बताया गया अध्यात्म ज्ञान तथा सामान्य ज्ञान पूर्ण रूप से सत्य है।

★ अन्य परम संतों की अमृतवाणी में प्रमाण कि कबीर धाणक (जुलाहा) परमात्मा है। सबको उत्पन्न करने वाला, सबका धारण-पोषण करने वाला अविनाशी परमात्मा कुल का मालिक एक यही है।

(क) संत दादू जी की वाणी में प्रमाण :-

जिन मोकूं निज नाम दिया, सोई सतगुरू हमार।
दादू दूसरा कोई नहीं, एक कबीर सिरजनहार।।

अर्थात् संत दादू जी ने स्पष्ट किया है कि मुझे यथार्थ नाम जाप करने को कबीर जी ने दिया है, वह मेरा सतगुरू है। वह ही सर्व सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता है, सबका रचनहार है।

(ख) श्री गुरू नानक देव जी (सिक्ख धर्म प्रवर्तक) की वाणी में प्रमाण :- (श्री ग्रन्थ साहिब पृष्ठ 24 पर)

फाई सूरत मलूकि वेश, ईह ठगवाड़ा ठगी देश।

खरा सियाणा बहुते भार, धाणक रूप रहा करतार।।

★ **अर्थात् श्री नानक जी ने कहा है कि कबीर जी मुझे ऊपर अपने लोक यानि सतलोक में लेकर गए थे। उन्हें तीन दिन तक ऊपर सचखंड में रखा था। फिर वापिस पृथ्वी पर शरीर में छोड़ा था। बताया था कि मैं वर्तमान में काशी (बनारस) शहर में जुलाहे (धाणक) की भूमिका में लीला करने यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताने पृथ्वी पर गया हुआ हूँ। सतनाम (सच्चा भक्ति मंत्र) लेने के लिए काशी में आना। पृथ्वी पर लौटकर श्री नानक जी काशी शहर में गए। वहाँ पर धाणक (जुलाहे) रूप में परमात्मा को देखकर श्री नानक जी ने उपरोक्त वाणी कही कि यह जो धाणक के वेश में बैठा है, यह करतार है। यह ठग है। अपने को छुपाए हुए है। यह विद्वान है। यह महिमावान है। इसकी सूरत यानि रूप मन मोहने वाली है। यह जिस भी देश में जाता है, वैसा ही वेश बना लेता है।**

2. श्री ग्रन्थ साहेब जी पृष्ठ 721 पर वाणी :-

एक अर्ज गुफतम पेश तोदर कून करतार। हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

अर्थात् नानक जी ने स्पष्ट नाम भी बताया कि वह करतार कबीर है जो (बेएब) निर्विकार परमात्मा है।

3. श्री गुरू ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 731 पर वाणी :-

अंधुला नीच जाति प्रदेशी मेरा छिन आवै तिल जावै।
जाकि संगत नानक रहंदा, क्यूकर मौंहडा पावै।।

★ **अर्थात् श्री गुरू नानक जी ने प्रेम भाव से अपनापन दिखाते हुए कबीर धाणक परमात्मा की प्रशंसा व महिमा की है। कहा है कि मेरा प्रभु जिसे धाणक जाति में प्रकट होने से नीच जाति का कहते हैं। यह नीच जाति वाला मेरा महबूब है जो सचखण्ड रूपी प्रदेश में रहता है। यह इतना सक्षम है कि एक क्षण (सैकिण्ड) में अपने ऊपर के लोक में चला जाता है। एक क्षण में नीचे पृथ्वी पर आ जाता है। ऐसे परमात्मा के साथ मैं (नानक जी) रहता हूँ। इसका वार-पार कैसे पाया जा सकता है? इन प्रमाणों से स्पष्ट हुआ है कि श्री नानक जी ने कबीर धाणक को परमात्मा बताया है।**

(ग) संत धर्मदास जी (बांधवगढ़, मध्यप्रदेश वाले) :-

★ **इनको भी परमेश्वर कबीर जी ऊपर अपने लोक में लेकर गए थे जैसे श्री गुरू नानक जी तथा संत दादू जी को लेकर गए थे। धर्मदास जी को अपना परिचय करवाकर वापिस शरीर में छोड़ दिया था। उन्होंने भी बताया कि यह कबीर जुलाहा पूर्ण परमात्मा है। वाणी :-**

आज मोहे दर्शन दियो जी कबीर।।(टेक)।।
अमर लोक से चलकर आए, काटन जम की जंजीर।
हिन्दू के तुम देव कहाए, मुसलमान के पीर।।

★ **अर्थात् धर्मदास जी ने कहा है कि हे कबीर जी! मुझे फिर से दर्शन दो। आप तो ऊपर अमर लोक (सचखण्ड) से सशरीर चलकर आए हो। हमारे जैसे जीवों**

के कर्मों के कारण काल द्वारा लगाई जंजीर को काटने आए हो। आपको हिन्दू तो परमात्मा कहते हैं, मुसलमान पीर कहते हैं।

☞ (श्री धर्मदास जी का विशेष प्रकरण पवित्र पुस्तक ''कबीर सागर'' में अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' में विस्तार से लिखा है।)

(घ) संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा वाले) ने भी काशी वाले कबीर जुलाहे को परमात्मा बताया है। कथा जो जानने योग्य है :-

''संत गरीबदास जी को मिले परमात्मा कबीर जी''

★ संत गरीबदास जी गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा में धनखड़ गोत्र जाट किसान श्री बलराम जी के पुत्र थे। श्री बलराम जी मूल रूप से गाँव करौंथा जिला-रोहतक, हरियाणा के रहने वाले थे। छुड़ानी में अपने ससुर श्री शिवलाल सिहाग की प्रार्थना पर घर-जमाई बनकर रहे थे क्योंकि श्री शिवलाल का कोई पुत्र नहीं था। एक बेटी थी जिसका नाम रानी था। उसका विवाह श्री बलराम धनखड़ (करौंथा) से कर रखा था। जमीन लगभग अढ़ाई हजार (2500) बड़ा बीघा यानि लगभग 1400 एकड़ थी। संत गरीबदास जी का जन्म सन् 1717 (वि.संवत् 1774) में गाँव-छुड़ानी में हुआ था। जब वे दस वर्ष के हुए तो अन्य किराये के पालियों व अन्य गाँव के पालियों के साथ अपने ही खेतों में प्रतिदिन की तरह गाय चराने गए हुए थे। फाल्गुन महीने की शुक्ल पक्ष द्वादशी वि.संवत् 1784 (सन् 1727) को लगभग दिन के दस बजे एक जिंदा वेशधारी बाबा गाँव-कबलाना की ओर से छुड़ानी की ओर आया। उसी रास्ते पर छुड़ानी व कबलाना गाँव की सीमा पर छुड़ानी गाँव की सीमा में अपने खेत में बालक गरीबदास व अन्य सब ग्वाले पाली एक जांडी के पेड़ के नीचे बैठकर खाना खा रहे थे। जिंदा बाबा रास्ते से चला आ रहा था। जब पालियों के पास आया तो सबने एक स्वर में कहा कि बाबा जी! आओ, खाना खाओ। बाबा ने खाना खाने से मना कर दिया और कहा कि मैं केवल दूध पीता हूँ। पाली बोले कि बाबा जी! दूध पिला देंगे। अभी गाय का दूध निकालते हैं। बाबा जी ने कहा मैं तो कंवारी गाय का दूध पीता हूँ। पाली बोले कि आप मजाक कर रहे हो। कंवारी गाय कैसे दूध देगी। बाबा ने कहा कि आप डेढ़-दो वर्ष की बच्छिया लाओ। दिखाता हूँ कि कैसे दूध देती है। बालक गरीबदास जी अपनी प्रिय बच्छिया को लाए जो लगभग डेढ़ वर्ष की थी। बाबा जी ने बच्छिया की कमर पर थपकी लगाई। बच्छिया के थन बड़े-बड़े हो गए। थनों के नीचे मिट्टी का छोटा-सा मटका (लगभग चार-पाँच लीटर दूध की क्षमता वाला बरोला) बालक गरीबदास लेकर बैठे। थनों से दूध की धार चली। बरोला भरने पर थनों से दूध निकलना बंद हो गया। बालक गरीबदास जी ने दूध का भरा बरोला बाबा जी को थमा दिया। बाबा जी ने लगभग एक लीटर दूध पीया और शेष दूध बालक गरीबदास जी को दे दिया और कहा कि आप सब पाली पी लो, यह अमंत हो गया है। यह प्रसाद बन गया है। उपस्थित 15-20 पाली यह सब लीला देख रहे थे। वे

डर गए कि बाबा ने जादू-जंत्र करके दूध निकाला है। हम पर गलत प्रभाव पड़ेगा। फिर पता नहीं बाबा किस जाति का है। इसका झुठा दूध पीने से हमारा धर्म भ्रष्ट हो जाएगा। आपस में यह कहते हुए उस जांडी के पेड़ की छाया को त्यागकर चल पड़े। उनके देखते-देखते बालक गरीबदास जी ने उस दूध में से कुछ दूध पीया और बाबा जी के चरण दबाने लगा। जब बालक दूध पीने लगा तो उनमें जो 40-50 वर्ष के पाली थे, उन्होंने कहा कि गरीबू! दूध ना पी, यह जादू-जंत्र का है। तू मर जाएगा। परंतु बालक ने उनके विरोध के बाद भी दूध पी लिया। बाबा जिंदा ने बालक गरीबदास को परमात्मा की कथा सुनाई। बालक गरीबदास जी के आग्रह करने पर कि मुझे आप वह स्थान दिखाओ जहाँ परमात्मा ऊपर के लोक में रहता है, बाबा जी उनकी आत्मा को ऊपर के लोक में लेकर गए। शाम पाँच बजे के आसपास अन्य पाली घर चलने की तैयारी करने लगे तो बालक गरीबदास जी की याद आई। देखा तो बालक पेड़ के नीचे बैठा है। बाबा गायब है। एक व्यक्ति ने पहले आवाज लगाई। जब बालक टस से मस नहीं हुआ तो हाथ से कंधा पकड़कर हिलाया और बोला कि अच्छा भक्त बना, बोलता भी नहीं। उसी समय बालक जमीन पर लुढ़क गया। देखा तो पता चला कि बालक गरीबदास मर चुका था। गाँव में संदेश दिया। गाँव के लोग उस स्थान पर दौड़े-दौड़े गए जो गाँव से लगभग डेढ़ कि.मी. दूर था। लड़के का शव गाँव में लाए। कुछ लोग इकट्ठा होकर शमशान घाट पर ले गए। चिता पर बालक का शव रख दिया। उस प्रक्रिया में लगभग सात से आठ घण्टे लग गए।

★ दूसरी ओर बाबा जिंदा स्वयं परमेश्वर थे जो बालक गरीबदास जी की आत्मा को ऊपर लेकर गए थे जिसको श्री ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के लोक, माता दुर्गा का लोक, काल ब्रह्म का ब्रह्मलोक, अक्षर पुरूष का लोक (सात शंख ब्रह्माण्डों का क्षेत्र) तथा अपना सर्वोपरि सतलोक आदि-आदि का भ्रमण करवाकर अपना तथा अन्य देवी-देवताओं की क्षमता से परिचित करवाकर वापिस शरीर में प्रवेश कर दिया। बालक के शव का अंतिम संस्कार करने के लिए चिता को अग्नि लगाने की तैयारी की जा रही थी। उसी समय बालक गरीबदास जी उठकर बैठ गए तथा चिता से उतरकर खड़े हो गए। माता-पिता, नाना-नानी व ग्रामीणों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। श्री बलराम जी का इकलौता पुत्र था बालक गरीबदास। यही नाना का वारिस था। यह कमाल देखकर सबने परमात्मा का धन्यवाद किया। अपने-अपने इष्टदेवों की मन्नतें बोली। कहर का समय खुशी में बदल गया, परंतु बालक गरीबदास का व्यवहार व भाषा बदल गई थी। जब उनसे प्रश्न किया कि क्या हो गया था? कोई जवाब नहीं दे रहा था। अपने-अपने स्तर की शिक्षा बालक को दे रहे थे। ऐसे किसी बाबा का प्रसाद नहीं खाना चाहिए। ये बाबा जादू-जंत्र करके मार डालते हैं आदि-आदि चेतावनी देकर बालक को समझाया।

★ बालक गरीबदास ऊपर की दुनिया को आँखों देखकर आए थे। उनको पृथ्वी का जीवन ऊपर के सुख की तुलना में स्वर्ग के सामने नरक लग रहा था।

उसका मन इस दुःख भरी दुनिया से खिन्न था। जिंदा वेशधारी परमात्मा जी ने बालक को संपूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान बताया था। बालक का ज्ञानयोग व दिव्य दृष्टि खोल दिए थे। बालक को ज्ञान हो गया था कि मानव जन्म केवल आत्म कल्याण के लिए मिला है। मानव जीवन सीमित है। मृत्यु निश्चित है। मृत्यु से पहले ऊपर की दुनिया में सदा सुखी तथा अमर जीवन पाने के लिए बहुत कुछ करना है। यदि मानव जन्म रहते मोक्ष योग्य स्मरण-सेवा, दान-धर्म नहीं बना तो मानव जीवन व्यर्थ है। उनको जिंदा बाबा यानि परमेश्वर जी ने प्रेरणा की कि हे गरीबदास! मेरे द्वारा तेरे को दी गई दीक्षा मंत्र यथार्थ हैं। अध्यात्म ज्ञान भी संपूर्ण तथा यथार्थ है। तेरा मोक्ष तो निश्चित है। अब तू इस यथार्थ ज्ञान को जनता में बता। मेरा साक्षी (witness) बन। मैंने तेरे को सब कुछ दिखा दिया है। सब ज्ञान बता दिया है। कलयुग में सब मानव यथार्थ अध्यात्म ज्ञान तथा भक्ति के यथार्थ मोक्षदायक नामों व अन्य धार्मिक क्रियाओं को नहीं जानता। काल ब्रह्म ने सब मानवों को अपने दूत संतों के माध्यम शास्त्रों व परमात्मा प्राप्त संतों के यथार्थ ज्ञान से अलग गलत ज्ञान द्वारा मनमाने आचरण पर लगा रखा है जिससे किसी का भी कल्याण नहीं होगा। तू इस यथार्थ ज्ञान को कलमबद्ध करना ताकि भविष्य में प्रमाण रहे कि परमात्मा ने मुझे बताया है कि मैं काशी में लहरतारा तालाब में कमल के फूल पर नवजात शिशु के रूप में विक्रमी संवत् 1455 (सन् 1398) ज्येष्ठ मास की पूर्णमासी को विराजमान हुआ था। उस समय मैं वहाँ अपने सतलोक स्थान से सशरीर गया था। मुझे वहाँ से जुलाहा नीरू उठा ले गया था। वहाँ भी मैंने लीला की थी। कंवारी गाय का दूध पीता था। मेरी कृपा से कंवारी गाय ने दूध दिया था। पूरे काशी शहर के स्त्री-पुरूष देखने आए थे। जब मैं पाँच वर्ष के लीलामय शरीर का हुआ तो काशी शहर के प्रसिद्ध महर्षि रामानंद पंडित को ज्ञान चर्चा में हरा दिया था जो श्री विष्णु सतगुण का उपासक था। वेदों तथा गीता व पुराणों का प्राकांड विद्वान माना जाता था। परंतु उसे किसी भी शास्त्र का यथार्थ ज्ञान नहीं था। पूर्व के गुरू व संतों से सुना-सुनाया लोकवेद जनता को बता रहा था। उस समय मेरी लीलामय आयु पाँच वर्ष थी तथा स्वामी रामानंद आचार्य की आयु 104 वर्ष थी। वे श्री विष्णु जी को अजर-अमर यानि अविनाशी मानते थे। मैंने उनको मेरे द्वारा रचे संसार की कथा सुनाई और बताया कि श्री विष्णु जी सतगुण, श्री शिव जी तमगुण तथा श्री ब्रह्मा जी रजगुण की भक्ति करने वालों को गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तथा 20 से 23 में राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख बताया है। श्री देवी महापुराण के तीसरे स्कंद में श्री विष्णु जी ने स्वयं स्वीकारा है कि मैं, ब्रह्मा तथा शंकर अविनाशी नहीं है। हमारा आविर्भाव यानि जन्म तथा तिरोभाव यानि मृत्यु होती है। हे देवी दुर्गा! आप हमारी माता हो। शास्त्रों का यह ज्ञान सुनकर महर्षि रामानंद स्वामी जी जैसे नींद से जागा हो। उसके चेहरे का भाव बता रहा था कि हमें यह पता ही नहीं। कारण यह था कि स्वामी रामानंद जी को चारों वेद, श्रीमद्भगवत गीता तथा सब पुराण कंठस्थ थे। उन्हें समझने में देर नहीं

लगी। उसी समय मान गए कि हमको गलती लगी है। आप सत्य कह रहे हो। इसके पश्चात् मैं (कबीर जी) स्वामी रामानंद जी को तेरे (गरीबदास जी) की तरह ऊपर लेकर गए तथा सर्व देवों का परिचय देकर शरीर में वापिस छोड़ा। उन्होंने भी माना कि कबीर! आप सर्व के मालिक व सृजनहार हो।

गरीब, बोलत रामानंद जी, सुनो कबीर करतार। गरीबदास सब रूप में, तू ही बोलनहार।।
दोहूं ठोर है एक तू, भया एक से दो। गरीबदास हम कारने, आये हो मग जोय।।

अर्थात् परमात्मा कबीर जी को आँखों देखकर यह कि वास्तव में सर्व का उत्पत्तिकर्ता है, यह ही दोनों स्थानों (ऊपर सतलोक में परमात्मा रूप में तथा यहाँ नीचे संत रूप में) पर आप ही हैं। आप ही हम जीवों के लिए वहाँ से (मग जोय) चलकर आए हैं। आपकी शक्ति से सब जीव बोल रहे हैं। आप समर्थ परमात्मा हैं।

★ हे गरीबदास! इसी प्रकार मैं (कबीर जी) श्री नानक देव जी को भी तेरे (गरीबदास जी) की तरह ऊपर लेकर गया था। तीन दिन बाद वापिस शरीर में छोड़ा था। वे पहले श्री विष्णु सतगुण की पूजा करते थे। गीता का पाठ करते थे। मेरी शक्ति तथा तीनों देवताओं की स्थिति से परिचित होने के पश्चात् उनकी सर्व साधना त्याग दी थी।

★ हे गरीबदास! इसी प्रकार मैं (कबीर जी) श्री दादू जी को भी तुम्हारी तरह ऊपर लेकर गया था, फिर छोड़ा था।

★ हे गरीबदास! और सुन। एक अब्राहिम अधम सुल्तान बलख शहर का मुसलमान राजा था। उसको भी सत्यज्ञान बताकर मुक्त किया था।

★ हे बालक! और बताऊँ, एक धर्मदास नाम का बनिया था जो बांधवगढ़ नगर में रहता था। धन का वार-पार नहीं था। स्वयं के समुद्री जहाज थे। बहुत बड़ा व्यापारी था। कभी अकाल गिर जाता या बाढ़ के कारण आपत्ति आती तो वहाँ का राजा भी धर्मदास के पिता-दादा से वित्तीय सहयोग लेता था। श्री धर्मदास का गुरू रूपदास ब्राह्मण था जो स्वामी रामानंद का शिष्य था जो वैष्णव धर्म से जुड़ा था। श्री विष्णु जी का दृढ़ भक्त था। श्री धर्मदास जी अपने गुरू जी के आदेश से श्री विष्णु जी, श्री शंकर जी की भक्ति करवाता था, व्रत रखता था, तीर्थों पर मोक्षार्थ जाता था। एक समय धर्मदास मथुरा नगरी में तीर्थ लाभ के लिए गया था। मैं (कबीर जी) भी उसके कल्याणार्थ जिंदा बाबा के रूप में उसे मिला। वह गीता का पाठ कर रहा था। मैंने उसे गीता में ही समझाया। (धर्मदास जी को सत्य मार्ग कैसे मिला? कृपया पढ़ें पुस्तक ''गीता तेरा ज्ञान अमृत'' में। इस पुस्तक को वेबसाईट www.jagatgururampalji.org से मुफ्त डाउनलोड करें और पढ़ें । यहाँ पर केवल संक्षिप्त वर्णन किया है।)

★ धर्मदास जी से मैंने (कबीर जी ने) प्रश्न किया कि आपका इष्ट देव कौन है? उत्तर मिला = श्री विष्णु जी, उन्हीं के अवतार श्री कृष्ण जी तथा श्री रामचन्द्र जी हुए हैं। गीता पुस्तक जिसका मैं अभी पाठ कर रहा था, आप (कबीर जी) सुन रहे थे। यह ज्ञान श्री कृष्ण जी ने अपने भक्त अर्जुन पाण्डव को बताया था। एकमात्र

श्री विष्णु जी ही सर्व सष्टि रचने वाले हैं। कुल के मालिक हैं। अविनाशी हैं। इनके अतिरिक्त कोई परमात्मा नहीं है। केवल इनकी भक्ति से ही जन्म-मरण समाप्त होता है। ये पूर्ण परमात्मा हैं। मैंने (कबीर जी ने) धर्मदास से प्रश्न किया कि क्या श्री कष्ण व श्री विष्णु में कोई अंतर है या ये एक ही प्रभु अन्य रूप में प्रकट हुए हैं? श्री धर्मदास जी ने कहा कि श्री विष्णु जी ही माता देवकी जी के गर्भ से श्री कष्ण रूप में जन्मे थे। मैंने (कबीर जी ने) कहा कि श्री विष्णु जी सतगुण हैं। क्या आप मानते हैं? धर्मदास जी ने अपनी आध्यात्मिक विद्वता दिखाते हुए कहा कि श्री विष्णु जी सतगुण हैं। श्री शिव जी तमगुण तथा श्री ब्रह्मा जी रजगुण हैं। इन तीनों देवताओं द्वारा सारा संसार चल रहा है। रजगुण ब्रह्मा जीवों की उत्पत्ति करते हैं। सतगुण विष्णु पालन तथा तमगुण शिव संहार करते हैं। मैंने (कबीर जी ने) कहा कि अभी तो आप कह रहे थे कि श्री विष्णु जी से अतिरिक्त कोई भगवान ही नहीं है। ये दो और कहाँ से आ गए? और सुन, सेठ जी! आप गीता में पढ़ रहे थे, मैं सुन रहा था कि गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में गीता ज्ञान बोलने वाले तेरे कष्ण उर्फ विष्णु ने कहा कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। गीता अध्याय 7 श्लोक 12-15 तथा 20-23 में तीनों गुणों यानि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव की भक्ति करने वाले राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख कहे हैं। आप सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव की पूजा कर रहे हो, जबकि गीता ज्ञान कहने वाले आपके विष्णु उर्फ कष्ण ने तो गीता अध्याय 18 श्लोक 61-62 में अपने से अन्य समर्थ परमात्मा बताया है तथा कहा है कि हे भारत! सर्व भाव से तू उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमात्मा की कपा से ही तू परमशांति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा। हे धर्मदास! क्या आपको पता है कि वह परमेश्वर कौन है?

★ उत्तर (धर्मदास का) = नहीं। मैंने कहा कि उस परमात्मा के बिना जीव कल्याण नहीं हो सकता। यह सब सुनकर धर्मदास सिर पकड़कर बैठ गया। उस परमात्मा की जानकारी के लिए अति आग्रह किया तो उसे भी तेरे (गरीबदास जी) की तरह ऊपर की दुनिया में लेकर गया। तीन दिन तक ऊपर के स्वर्ग लोक तथा देव व देवी, उनके स्थान व स्थिति से परिचित करवाकर अपने सतलोक में ले गया। फिर वापिस शरीर में छोड़ा तो उसे विश्वास हुआ कि वास्तव में मैं (कबीर काशी वाला जुलाहा) ही परमात्मा हूँ। उसके पश्चात् अन्य उपासना त्यागकर मेरे द्वारा बताई भक्ति करके मुक्ति पाई।

★ बालक गरीबदास जी, परमात्मा कबीर जी द्वारा बताए ज्ञान को दोहे, शब्दों, चौपाईयों के रूप में बोलने लगे। सारा-सारा दिन अपने आप बोलते रहने लगे। पिता-माता, नाना जी को बच्चे के जीवित होने की तो खुशी थी, परंतु गम था कि लड़का पागल (Mental) हो गया है। पता नहीं क्या-क्या बोलता रहता है? बालक को पागल समझकर वैद्यों को दिखाया, परंतु कोई लाभ नहीं हुआ। ऐसे तीन वर्ष बीत गए। बालक तेरह वर्ष का हो चुका था। एक दिन संत श्री दादू दास जी

के पंथ का अनुयाई संत गोपाल दास गाँव-छुड़ानी में अपने एक सेवक के घर आया। बालक के इलाज के लिए संत गोपाल दास को भी दिखाया तथा बताया कि एक बाबा ने जंत्र-जादू करके बालक का जीवन खराब कर दिया। कहते हैं कि संत की विद्या को संत ही जानते हैं। आप बालक को ठीक करो। संत गोपाल दास जी ने बालक गरीबदास से पूछा कि बेटा! कौन था वह कमबख्त जिसने तेरा जीवन बर्बाद कर दिया? यह प्रश्न सुनकर बालक गरीबदास जी ने कुछ वाणी कही :-

गरीब, अलल्ल पंख अनुराग है, सुन्न मंडल रहे थीर।
दास गरीब उधारिया, सतगुरू मिले कबीर।।

अर्थात् कहा कि मेरे को सतगुरू रूप में परमात्मा कबीर जी मिले थे। वे ऊपर के लोक में स्थायी निवास करते हैं। वहाँ से चलकर आए थे।

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।1
सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्ध है तीर।
दास गरीब सतगुरू भजो, अविगत कला कबीर।।2
अजब नगर में ले गए, हमको परमेश्वर आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सूते चादर तान।।3
तीन लोक का राज है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
ऊँचा धाम कबीर का, वाणी बिरह विदेश।।4
रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शंकर कहावै रे।
चौथे पद का भेद नियारा, कोई बिरला साधु पावै रे।।5
हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद ना पाया, कांशी मांहे कबीर हुआ।।6

★ भावार्थ :- वाणी नं. 1 :- बालक गरीबदास जी ने आँखों देखी परमात्मा कबीर जी की महिमा बताई। कहा कि मेरे को सच्चा अध्यात्म ज्ञान बताने वाले यानि सतगुरू कबीर जी मिले जो असंखों ब्रह्माण्डों को रचने वाले हैं। परमात्मा कबीर जी ने सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करके अपनी शक्ति से व्यवस्थित किया है। उन सर्व ब्रह्माण्डों का परमात्मा पर कोई भार नहीं है। जैसे वैज्ञानिकों ने वायुयान बनाकर आकाश में उड़ा दिया। उसके अंदर स्वयं भी विराजमान हो गया। विमान का भार वैज्ञानिक पर नहीं होता। इसी प्रकार परमात्मा ने सर्व ब्रह्माण्डों व लोकों को आकाश में ठहराया है। परमात्मा उनमें विराजा है। परमात्मा के ऊपर एक रति (एक ग्राम) भी भार नहीं है।

★ वाणी नं. 2 :- परमात्मा कबीर जी ही वास्तव में सब पदों के योग्य हैं, जैसे परमात्मा पद, सिरजनहार पद, सतगुरू पद, कवि की पदवी, धारण-पोषण पद, आदि-आदि पदवी पर परमात्मा ही पूर्ण हैं। जैसे ब्रह्मा रजगुण को उत्पत्ति करने वाला पदाधिकारी कहा जाता है। यह तो केवल रजगुण से प्रभावित करके जीवों में काम-वासना जाग्रत करके संतानोत्पत्ति के लिए प्रेरित करते हैं। संतान उत्पत्ति

नर-मादा करते हैं। नाम ब्रह्मा जी का कहा जाता है। लेकिन परमात्मा कबीर जी तो ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा इनके पिता काल ब्रह्म, इनकी माता देवी दुर्गा के भी उत्पन्नकर्ता हैं। इसलिए वास्तव में सृजनहार का यथार्थ पद परमात्मा का ही है। इस प्रकार पालन करने वाले को विष्णु कहा करते हैं। यह तो जीव को उसके कर्म अनुसार देते हैं। परमात्मा कबीर जी तो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करते हैं। जो विष्णु का पोषण करने वाले यानि यथार्थ पालनकर्ता की पदवी प्राप्त है, इसलिए परमात्मा कबीर जी सब पदवी के मूल हैं। इनके पास सब सिद्धियाँ हैं यानि असंख्यों सिद्धियाँ परमात्मा कबीर जी सत्यपुरूष जी के पास हैं। श्री गणेश जी व श्री शंकर जी के पास तो केवल अष्ट सिद्धि हैं यानि आठ सिद्धियाँ हैं। इसलिए संत गरीबदास जी ने कहा कि उस कबीर जी की भक्ति करो। वह स्वयं उस अविगत पूर्ण ब्रह्म यानि सतपुरूष की कला (अतवार) है।

★ **वाणी नं. 3 :- बालक गरीबदास जी ने कहा कि मेरे को स्वयं परमात्मा अपने ऊपर के लोक से आकर अपने साथ ले गए जो अनोखा शहर है। वहाँ की झिलमिलाहट देखकर आनन्दित हुआ और मेरा कल्याण निश्चित होगा। इसलिए (सोए चादर तान) निश्चिंत हो गया हूँ। {चादर तानकर सोना = निश्चिंत होकर रहना, बेफिक्र होना।}**

★ **वाणी नं. 4-5 :- श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी का तो केवल तीन लोक (पृथ्वी लोक, पाताल लोक तथा स्वर्ग लोक) का राज है यानि तीनों देवता एक-एक विभाग (उत्पत्ति, पालन, संहार) के मंत्री हैं, परंतु परमात्मा कबीर जी का धाम इन सबसे ऊँचा है। वे तो अनन्त कोटि लोकों के राजा हैं, सम्राट हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ये तीन पद हैं। चौथा पद काल ब्रह्म का है जो इक्कीस ब्रह्माण्डों का स्वामी है। इन सबसे ऊपर परम पद कबीर जी का है जो असंख्यों ब्रह्माण्डों का स्वामी है। कुल का मालिक एक यही है। यह ज्ञान किसी बिरले साधु-संत को है।**

❑ **{शिरड़ी वाले सांई बाबा जी तमगुण श्री शंकर जी के पुजारी थे। इन्हीं को सबका मालिक एक कहते थे। सारा मुसलमान धर्म तमगुण शंकर जी की पूजा करता है। संत गरीबदास जी ने बताया है कि** ''वही मोहम्मद, वही महादेव, वही आदम, वही ब्रह्मा। दास गरीब दूसरा कोई नहीं, देख आपने घरमां।।'' **अर्थात् हजरत मोहम्मद जी श्री शंकर तमगुण के लोक से आई पुण्यात्मा थे। काबा मंदिर में भी शिवलिंग जैसा एक पत्थर है। आज भी वहाँ उसको सिजदा किया जाता है। बाबा आदम जी, श्री ब्रह्मा रजगुण के लोक से आई अच्छी आत्मा थे। श्री ईसा मसीह जी, श्री विष्णु सतगुण के लोक से आई अच्छी आत्मा थे। श्री विष्णु के पुत्र कहाए। यह सब मर्म-भेद परमात्मा कबीर जी ने अपने भक्त संत गरीबदास जी को बताया जो संत रामपाल जी ने खोज करके सरल करके बताया है।}**

★ **वाणी नं. 6 :- बालक गरीबदास जी ने बताया कि हम सब यानि मैं, अब्राहिम अधम सुल्तान (मुसलमान), श्री नानक देव जी (सिक्ख धर्म प्रवर्तक) तथा श्री दादू दास जी को दीक्षा देकर पार किया। वे जुलाहा जाति वाले कबीर जी हैं**

जो सतगुरू और परमेश्वर की भूमिका करते हैं। वे ही काशी शहर में 120 वर्ष (सन् 1398 से सन् 1518 तक) सतगुरू की भूमिका करके चले गए। उनका किसी को भेद नहीं लगा।

★ **बालक गरीबदास जी से उपरोक्त वाणी सुनते ही संत गोपाल दास जी समझ गए कि बालक को जिंदा बाबा के रूप में परमात्मा मिले हैं क्योंकि गोपाल दास जी श्री संत दादू दास जी के अनुयाई थे। उनको ज्ञान था कि संत दादू दास जी को परमात्मा बूढ़े (वृद्ध) बाबा के वेश में मिले थे। दादू जी उस समय 11 वर्ष के बालक थे। उनकी आत्मा को भी परमात्मा संत गरीबदास, संत धर्मदास तथा संत नानक देव की तरह ऊपर ले गए थे। तीन दिन-रात बालक दादू जी अचेत रहे थे। सचेत होते ही कहा था :-**

जिन मुझको निज नाम दिया, सोई सतगुरू हमार। दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सिरजनहार।।
दादू नाम कबीर की, जे कोई लेवे ओट। उनको कभी लागे नहीं, काल व्रज की चोट।।
दादू नाम कबीर का, सुनकर कांपे काल। नाम भरोसे नर चले, बांका न होवे बाल।।
जो—जो शरण कबीर की, तर गए अनंत अपार। दादू गुण केता कहूँ, कहत न आवै पार।।
कबीर कर्ता आप हैं, दूजा ना कोय। दादू पूर्ण जगत को, सत् भक्ति दृढ़ावै सोय।।
सुमरत नाम कबीर का, कटे काल की पीर। दादू दिन—दिन ऊँचा होवै, परमानंद सुख सीर।।
और संत सब कूप हैं, केते झरिता नीर। दादू अगम अपार हैं, दरिया सत कबीर।।

(ये वाणी संत दादू जी के ग्रन्थ में दर्ज हैं।)

❑ **संत गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि :-**

दादू कू सतगुरू मिलिया, देई पान की पीक। बूढ़ा बाबा जिसे कहें, यह दादू की नहीं सीख।।

★ **अर्थात् संत गरीबदास जी ने संत गोपाल दास जी का भी भ्रम निवारण कर दिया कि दादू को परमात्मा कबीर जी मेरे की तरह जिंदा बाबा के रूप में मिले थे। दादू जी ने स्पष्ट बताया था कि वह कबीर परमात्मा थे। दादू जी के अनुयाई कहते हैं कि दादू जी को एक बूढ़ा बाबा रूप में मिला था। उसने पान खाकर दादू जी के मुँह में थूका था जिससे दादू जी अचेत हो गए। तीसरे दिन सचेत हुए तो उनको उसी का वैराग्य हो गया। उससे मिलने के लिए जंगल में नदी के किनारे-किनारे भटकते थे। यह दादू जी ने बताया। दादू जी ने स्पष्ट कहा कि मुझे कबीर जी सतगुरू रूप में मिले थे। वे ही सबके सृजनहार हैं। दूसरा कोई नहीं है।**

★ **संत गोपाल दास जी ने ये वाणी बालक गरीबदास जी से सुनी। तब पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि बालक को परमात्मा ही बाबा जिंदा के वेश में मिले हैं। इससे सब भेद लेना चाहिए। संत गोपाल दास जी (उस समय 62 वर्ष की आयु के थे) ने 13 वर्ष के बालक गरीबदास के चरण पकड़ लिए तथा सब भेद लिखवाने का आग्रह किया। बालक गरीबदास जी ने स्वीकार कर लिया। संत गोपाल दास जी जाति से बनिया थे। पढ़-लिख लेते थे। छः महीने तक सब वाणी लिखी गई जो वर्तमान में ग्रन्थ रूप में संग्रहित हो गई। पहले हस्थलिखित थी, अब प्रिन्ट की गई हैं। इसी के आधार से मैं (संत रामपाल दास) सत्संग करता हूँ। यह सब ज्ञान**

बताने का मेरा (रामपाल जी) उद्देश्य यह है कि अध्यात्म ज्ञान स्वयं परमात्मा ने बताया है और बालक गरीबदास ने लिखवाया है जिसमें कोई कपट व स्वार्थ नहीं था। यह सर्व ज्ञान गीता, वेदों, पुराणों से तो मेल करता ही है, परंतु जो ज्ञान इन शास्त्रों में स्पष्ट नहीं है, वह भी इस ज्ञान में बताया है। यदि कोई आत्म कल्याण का सच्चा इच्छुक है तो उसके लिए मेरे (रामपाल जी) द्वारा दिया यह तत्वज्ञान मील का पत्थर है।

❑ **विशेष :- जैसे वेदों में भी लिखा है कि परमात्मा सब लोकों के ऊपर के लोक में विराजमान है, वहाँ से गति करके पृथ्वी पर आता है। यथार्थ अध्यात्म ज्ञान वाणी द्वारा बोलकर बताता है। नेक आत्माओं को मिलता है। आप जी ने ऊपर पढ़ा कि कबीर परमात्मा अच्छी आत्माओं को मिला। उनको यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताया। इससे सिद्ध हुआ कि परमात्मा के सर्व लक्षण कबीर जी काशी वाले जुलाहे पर खरे उतरते हैं। इसलिए कबीर जुलाहा पूर्ण परमात्मा है। (Kabir the weaver is Supreme God.)**

★ **यह उपरोक्त अध्यात्म ज्ञान संत रामपाल दास जी ने बार-बार अपने सत्संग वचनों में बताया है। हमने इस पत्र में जनता के हित के लिए लिखा है तथा जज श्री देशराज चालिया जी की गलतफहमी दूर करने का उद्देश्य भी है कि वे संत रामपाल जी को ठीक से समझकर अपने किये पाप का प्रायश्चित करने के लिए समय रहते क्षमा याचना कर लें, नहीं तो पछताना पड़ेगा। उस समय बहुत देर हो चुकी होगी।**

☞ **हे देशराज जी! संत रामपाल जी तथा हम उनके अनुयाई तो फलदार वृक्ष के समान हैं। जो फलदार पेड़ को पत्थर भी मारता है, वह उसे भी फल ही देता है। आपने हमें पत्थर क्या गोली-सी मार दी, परंतु हम तो आपको अनमोल अध्यात्म ज्ञान बता रहे हैं। केवल उलाहने नहीं दे रहे। आप भी परमात्मा के बच्चे हो, परंतु मार्ग से भटक गए हो। आपको मार्गदर्शन भी कर रहे हैं। आप ऐसे पाप ना करो, परमात्मा से डरो।**

समझदार को संकेत ही पर्याप्त होता है।

★ **संकेत नं. 1 :- बरवाला आश्रम की घटना में सबसे गंदा रोल भगवान दास D.S.P. का था। एक वर्ष बाद गोली मारकर आत्महत्या करनी पड़ी।**

★ **संकेत नं. 2 :- जब संत रामपाल जी झूठे मुकदमें में जुलाई 2006 से अप्रैल 2008 तक रोहतक जेल में थे। सन् 2007 में उनको बहादुरगढ़ कोर्ट में एक सिपाही ने हथकड़ी लगाकर पेश किया। उसको इंचार्ज ने मना भी किया कि ऐसा ना कर, परंतु वह नहीं माना। संत जी की बेइज्जती करना उसका उद्देश्य था। संत रामपाल जी ने कोई एतराज नहीं किया। समाचार पत्रों में फोटो छपा। उस समाचार पत्र की कटिंग उस सिपाही ने अपने घर के आगे लगाई। कुछ महीने बाद उसके हाथ-पैर टेढ़े होने लगे। मुख भी टेढ़ा हो गया। उसी गाँव में संत रामपाल जी के अनुयाई भी हैं। उसकी बुरी दशा देखकर उन्होंने उस सिपाही से तथा उसकी पत्नी**

से कहा कि इसे सतलोक आश्रम बरवाला में संत रामपाल जी के पास ले जाओ, माफी माँगो। वे दयालु हैं, क्षमा कर देंगे। परंतु शर्म का मारा व अहंकार का मारा वह नहीं माना। सन् 2012 तक लगभग 7-8 लाख रूपये खर्च कर दिए। व्हीलचेयर (wheel chair) पर बैठाकर इधर-उधर ले जाते थे। सन् 2012 में संत रामपाल जी का अनुयाई फिर उस सिपाही के घर गया। उस सिपाही को समझाया। उसकी पत्नी बोली कि हम डर के मारे संत जी के पास नहीं जाते। कहीं सब बातें याद करके और नाराज न हो जाऐं। आप एक बार जाकर संत जी से जिक्र करो। यदि वे कहेंगे तो हम चल पड़ेंगे। हम उजड़ चुके हैं। गलती बड़ी भारी कर रखी है। वह अनुयाई संत रामपाल जी के पास आया और सब बताई। संत जी ने कहा कि उसका किया उसे मिल चुका है। उसे लाओ और दीक्षा दिलाओ। उसकी पत्नी उसे आश्रम में लेकर आई। व्हीलचेयर पर बैठाकर संत जी के पास स्टेज के पास दर्शन स्थल पर लाई और रो-रोकर अपनी गलती की क्षमा याचना की। संत जी ने कहा कि बेटी! मुझे तो याद भी नहीं, कब हथकड़ी लगाई थी, किसने लगाई थी? इसकी गलती का फल परमात्मा ने दिया है। मैंने क्षमा कर दिया है। दीक्षा दे दी है, आशीर्वाद दे दिया है। परमात्मा कब क्षमा करेंगे, उस समय का इंतजार करना। वह व्यक्ति न बोल सकता था, न हाथ हिलते थे, न पैर सीधे होते थे। 15 दिन बाद फिर बरवाला आश्रम में प्रति महीना होने वाला सत्संग था। उस सिपाही को उसकी पत्नी लेकर आई। रामपाल जी के अनुयाई जो उसी गाँव के हैं, वे सहायता करके लाए। उस समय वह कुछ-कुछ बोलने लगा। हाथ कुछ-कुछ सीधे होने लगे। उस गलती को याद करके रोने लग जाता है।

उसका पूरा पता इस प्रकार है :- नाम :- मक्खन सिंह, गाँव-भूंदड़वास, तहसील-रतिया, जिला-फतेहाबाद (हरियाणा)।

★ संत रामपाल दास जी द्वारा किए गए सत्संग सर्व शास्त्रों से प्रमाणित हैं तथा जिन-जिन महापुरूषों को परमात्मा मिले हैं, जिनका वर्णन ऊपर के सत्संग विश्लेषण में किया कि वाणी को आधार मानकर प्रवचन करते हैं। उन महान संतों की अमतवाणी के गूढ़ रहस्यों को सरल स्पष्ट करके ऐसे समझाते हैं जो सीधा आत्मा को छू जाते हैं और सच्चाई को स्वीकार करने के लिए विवश होना पड़ता है।

''संत रामपाल जी द्वारा किए गए सत्संग की झलक''

★ परमात्मा कबीर जी ने अपनी अमतवाणी में बताया है कि वर्तमान में जिन प्राणियों को मानव शरीर प्राप्त है, यह उनके पूर्व जन्म के भक्ति-दान-धर्म शुभ कर्मों का फल है। यदि वर्तमान में सत्य भक्ति शास्त्र अनुसार नहीं की, शुभ कर्म, दान-धर्म नहीं किए तो अगले जन्म में अन्य प्राणियों के शरीर मिलेंगे।

★ आप देखते हैं कि वर्तमान में कोई मानव तो राजा बना है, कोई सेठ धनी है, कोई उच्च अधिकारी है, कोई निर्धन है, कुछ ऐसे धनी व्यक्ति हैं या उच्च अधिकारी हैं तथा डाकू-लुटेरे हैं जो अन्याय, अत्याचार, लूट-हत्या कर रहे हैं, शराब

पी रहे हैं। माँस खाते हैं। जीव हिंसा करते हैं, कसाई लोग नित अनेकों जीवों को बेरहमी से मारते-काटते हैं। मछुवारे मछलियाँ पकड़ते हैं जो तड़फ-तड़फकर जान देती हैं। मानव उन्हें खाकर अपना स्वाद बनाता है। ऐसे अनेकों व्यक्ति हैं। फिर भी उनको जीवन में कोई कष्ट नहीं आता।

★ कारण :- जैसे इन्वर्टर की बैट्री चार्ज की जा चुकी है और उसको कहीं अन्य स्थान पर उपयोग के लिए लगाया गया है। पुनः चार्ज भी नहीं किया जा रहा है। वह पूरा कार्य कर रही होती है। यदि उसको पुनः चार्ज नहीं किया गया तो वह अधिक समय नहीं चलेगा। जब तक पूर्व में चार्ज की गई एनर्जी रहेगी, तब तक उपयोगकर्ता को कोई परेशानी नहीं होगी। परंतु पुनः चार्ज न करने के कारण एकदम सब कार्य करना बंद कर देगी। समझदार व्यक्ति उसे चार्जिंग पर लगाते हैं। कुछ समय बिजली के अभाव में वह बैट्री कार्य करती है।

★ इसी प्रकार जिन जीवात्माओं को मानव जन्म मिला है। यह इनके पूर्व जन्म-जन्मान्तर के शुभ कर्मों तथा भक्ति कर्मों का परिणाम है। जिसने जितनी भक्ति की कमाई भक्ति धन पहले मानव जन्मों में जोड़ी थी, वह वर्तमान में उसी के अनुसार उच्च पद, बड़ा व्यवसाय, राजपद या अन्य सुख-सुविधा के साधन प्राप्त किए हुए है। जिन्होंने कम भक्ति धन व शुभ कर्म कम जोड़े हैं, वे निर्धन हैं या मध्य श्रेणी में काम-चलाऊ संसारिक सुख-सुविधा प्राप्त हैं।

★ जो व्यक्ति उच्च पद पर है, धनी है या राजपद पर मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री यानि राजा बने हैं। इन सर्व सुख-सुविधा समंपन्न व्यक्तियों में से कुछ नित पाप करते है। उपरोक्त बुराईयाँ करते हैं। फिर भी सुखी जीवन जी रहे हैं। उनके परिवार के बच्चे भी उच्च पदों को प्राप्त हो जाते हैं, भक्ति भी नहीं करते। उनके जीवन में कोई कष्ट आया दिखाई नहीं देता। ऐसे व्यक्तियों के पूर्व जन्मों के शुभ कर्म अधिक होते हैं। जब तक पूर्व के पुण्य खर्च नहीं होंगे, तब तक वे सुखी रहेंगे। जब वे पुण्य समाप्त हो जाऐंगे, तब पाप कर्मों के भोगने का दौर प्रारम्भ होगा। तब दुःख पर दुःख आऐंगे। वे लोग महाकष्ट भोगेंगे।

★ समाचार पत्रों में खबर छपी थी कि एक शशीकला (बदला हुआ नाम) विधवा के नाम पंचकुला में चण्डीगढ़ के पास सौ एकड़ (100) किले जमीन थी। राज-घराने से सम्बन्ध था। कोई दुःख नहीं था। वर्षों से सुख ही सुख था। राज-घराने के व्यक्ति शराब-माँस सेवन करना, हिंसा करना, मौज-मस्ती तो करते ही हैं। निर्बल को सताना उनकी आदत बन जाती है। पति की मत्यु हो गई। शशीकला का एक लड़का था। उस लड़के को तीन लड़कियाँ और एक लड़का हुए। बेटे ने आत्महत्या कर ली। पुत्रवधु के चरित्र पर शक हुआ और दोष आया कि कहीं यह अपने हिस्से की बच्चों की जमीन को बेचकर प्रेमी को न दे दे। इसलिए उसकी हत्या शशीकला ने अपनी बड़ी बेटी को विश्वास में लेकर बदमाशों से करवा दी। गुमशुदा की रिपोर्ट लिखवा दी। कुछ वर्षों बाद बड़ी बेटी ने सौ एकड़ जमीन प्राप्ति के लिए अपने पति के सहयोग से माता शशीकला व भतीजे-भतीजियों की हत्या

करवा दी। कुल नाश हो गया। बड़ी लड़की व पति तथा अन्य हत्यारोपी जेल में सड़ेंगे। इनके पूर्व जन्म के पुण्य समाप्त हो गए और पापों का दौर शुरू हो गया।

★ कुछ ऐसे भी भाग्यवान व्यक्ति देखे हैं जो उच्च पदों से (मिलिट्री के अफसर पद से व जज पद से रिटायर व I.A.S. व I.P.S. पद) रिटायर होकर सारा जीवन सुखमय बिता जाते हैं। वे न गुरू बनाते हैं, न भक्ति करते हैं। यदि कोई भक्ति करता है तो शास्त्रविरूद्ध करता है तथा माँस सेवन, शराब व धुम्रपान भी करता रहता है। फिर भी मत्यु प्रयन्त सुखी नजर आते हैं। यह उनके पूर्व जन्मों के शुभ-कर्म, पुण्य तथा भक्ति का फल मिल रहा है। उनके शुभ कर्म इतने अधिक थे जो पूरे जीवन चले। वे अगले जन्म में कुत्ते-गधे आदि-आदि अन्य प्राणियों के शरीरों में घोर कष्ट भोगेंगे क्योंकि उन्होंने भक्ति शास्त्र विधि अनुसार नहीं की यानि पुनः बैट्री चार्ज नहीं की जिसका परिणाम ऐसा होता है। यह परमात्मा का विधान है।

★ सुख-दुःख का विश्लेषण किया जाएगा तो वास्तव में वे लोग सुखी बिल्कुल नहीं होते। केवल धन का अभाव न होने से अन्य सामान्य तथा निर्धन श्रेणी के व्यक्तियों को सुखी लगते हैं। उनमें से किसी को पुत्र प्राप्त न होने का दुःख, किसी को पुत्र से दुःख जो धन का नाश कर रहा होता है। मना करने पर मरने की बात करता है। किसी की बेटी ससुराल में परेशान होती है। जिस कारण से माता-पिता की नींद हराम हो जाती है। किसी को स्वयं कोई रोग हो जाता है। किसी को व्यवसाय में हानि का दुःख आदि-आदि किसी न किसी कष्ट से प्रत्येक लाठसाहब दुःखी अवश्य होता है। कोई मानता है कि मेरे को कोई कष्ट नहीं है। उस पर न जाने कब बुरे कर्म की मार आ गिरे, पल में नष्ट हो जाएगा। यहाँ पर यह कहना कि मैं सुखी हूँ, बहुत बड़ी भूल है। कबीर परमात्मा जी ने बताया है कि इस लोक में जिसमें आप रह रहे हो, कोई भी सुखी नहीं है। थोड़े दुःख को सुख मान रखा है। शब्द :-

तन धर सुखिया कोए ना देखा जो देखा सो दुःखिया हो।
उदय–अस्त की बात करत है, मैंनें उनका किया विवेका हो।।(टेक)
घाटै बाधै सब जग दुःखिया, क्या ग्रहस्थी–बैरागी हो।
सुखदेव ने दुःख के डर से, गर्भ में माया त्यागी हो।।
साच कहूँ तो जग ना मानै, झूठ कही ना जाई हो।
ब्रह्मा विष्णु शिवजी दुःखिया, जिन यह राह चलाई हो।।
सुरपति दुःखिया भूपति दुःखिया, रंक दुःखी बपरीति हो।
कहैं कबीर और सब दुःखिया, एक संत सुखी मन जीती हो।।

★ अर्थात् परमात्मा कबीर जी ने बताया है कि यह स्थान यानि पथ्वी जो काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों के क्षेत्र में एक ब्रह्माण्ड के अंदर एक सब से छोटा स्थान है। इस में आप देख रहे हो कि सर्व प्राणी नाशवान हैं। सर्व पदार्थ भी नाशवान हैं। इस प्रकार इस काल ब्रह्म यानि क्षर पुरूष के इक्कीस ब्रह्माण्डों के सभी लोकों के प्राणी भी इसी तरह नाशवान हैं। जो जन्मा है, उसकी मत्यु निश्चित है।

जो मर गया, उसका जन्म भी अवश्य होगा। चाहे मानव रूप में, चाहे अन्य जीव-जन्तुओं व अन्य प्राणियों के रूप में हो। यहाँ तक कि स्वर्ग लोक में गए शुभकर्मी जीव भी स्वर्ग रूपी होटल में अपने पुण्यों का फल भोगकर पुनः पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। जरूरी नहीं है कि वे मानव जन्म ही प्राप्त करेंगे। वे कर्मानुसार अन्य जीवों का जन्म भी प्राप्त करके कर्म भोग पूरा करेंगे। और सुनो स्वर्ग लोक के देवता तथा देवताओं का राजा (सुरपति) इन्द्र भी अपना सुख भोगकर मरेगा, पृथ्वी पर गधे-कुत्ते आदि-आदि के शरीर कर्मानुसार अवश्य प्राप्त करेगा। और सुनो तीनों देवता (रजगुण श्री बह्मा, सतगुण श्री विष्णु, तथा तमगुण श्री शिव) भी समय आने पर मृत्यु को प्राप्त होकर पृथ्वी पर मानव तथा अन्य प्राणियों के शरीर प्राप्त करके कष्ट उठाऐंगे। ये तीनों देवता काल ब्रह्म (जो इनका पिता है) के लिए उत्पत्ति, पालन व संहार करके भोजन की व्यवस्था करते हैं। इन्होंने यह राह यानि परंपरा (उत्पत्ति, पालन व संहार करने की परंपरा) चला रखी है। कारण यह कि काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) को पूर्ण परमात्मा यानि परम अक्षर ब्रह्म का शॉप लगा है कि तू प्रतिदिन एक लाख मानव शरीरधारी जीवों का आहार करेगा तथा सवा लाख उत्पन्न करेगा। यह क्षर पुरूष यानि काल ब्रह्म (जिसे ज्योति निरंजन भी कहा जाता है) तथा आप सब प्राणी पहले ऊपर सतलोक (अमर लोक) में रहते थे। वहाँ जन्म-मरण नहीं है। वृद्धावस्था भी नहीं है। वहाँ पर इस क्षर पुरूष ने देवी दुर्गा (जिसे अष्टंगी व प्रकृति देवी भी कहते हैं) के साथ छेड़छाड़ की। फिर रेप करने की कोशिश की थी। परंतु देवी दुर्गा के विरोध के चलते सफल नहीं हो पाया क्योंकि यह भी सतपुरूष समर्थ की बेटी है। शक्ति में काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) से कम नहीं है। जिस कारण से इसको उपरोक्त शॉप लगा है। आप सब प्राणी इस द्वारा की गई तपस्या के कठिन प्रत्यन को देखकर इसको चाहने लगे। परमात्मा को छोड़कर इसके फैन बन गए जो परमात्मा को अच्छा नहीं लगा और यह उस पवित्र लोक की मर्यादा के खिलाफ होने से काल को इक्कीस ब्रह्माण्डों व तुम्हारे सहित सतलोक से सोलह संख कोस (एक कोस लगभग 3 कि.मी. का होता है) की दूरी पर भेज दिया। तुम्हारी तरह दुर्गा देवी ने भी यही गलती की थी जिसके परिणामस्वरूप इस दुःखों के घर काल लोक में आप सब दुःखी हैं। (कृप्या इसका पूर्ण ज्ञान ''सृष्टि रचना'' अध्याय में इसी पुस्तक के पृष्ठ 206 से 269 पर पढ़ें।) सतलोक में कोई कष्ट नहीं है। वहाँ पर मरण व वृद्धावस्था नहीं है। जन्म के बाद बाल-लीला, फिर युवावस्था हो जाती है। किसी पदार्थ की कमी नहीं है। जब से उस स्थान को छोड़कर आप इस दुःखमय स्थान पर आए हो, आपकी चेतना काल ब्रह्म ने समाप्त कर दी है। आपको भूल लग गई है कि कोई सतलोक भी है और आप वहाँ रहा करते थे, परंतु उस सुख की खोज में अवश्य लगे हो। वह सुख ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्माण्डों में नहीं है। वह सुख अक्षर पुरूष के सात संख ब्रह्माण्डों में भी नहीं है। परमात्मा कबीर जी बताना चाहते हैं कि काल ब्रह्म नहीं चाहता कि आपको जानकारी हो कि तुम सतलोक से आए हो। काल ब्रह्म (क्षर

पुरूष) को भय बना रहता है कि यदि इन जीवों को यह पता लग गया कि ऊपर कोई और सुखमय स्थान है तो यह सब मेरे काल लोक से निकल जाऐंगे। मेरी क्षुधा कैसे शांत होगी? मैं भूखा मर जाऊँगा। इसलिए सतलोक और सतपुरूष को पूर्ण रूप से भुला रखा है। कबीर जी ने बताया कि मैं सतपुरूष (परम अक्षर पुरूष) हूँ। मैंने सब संष्टि की उत्पत्ति की है। काल ब्रह्म व देवी दुर्गा व तुम सब जीवों व सब ब्रह्माण्डों की रचना मैंने की। आप सब जीव मेरी आत्मा हो, मेरे बच्चे हो। मैं स्वयं ही सतलोक से चलकर यहाँ आया हूँ। मैं जो यह ज्ञान बता रहा हूँ, मेरे अतिरिक्त कोई नहीं बता सकता। इस दुःखमय स्थान से निकलने और सतलोक में जाने के लिए भक्ति ही एकमात्र साधन है। यथार्थ भक्ति मंत्र मैं स्वयं ही आकर प्रकट करता हूँ। काल ब्रह्म ने सबको गलत भक्ति मार्ग बताया है जिससे इसके जाल में ही तुम फँसे रह जाते हो। मेरे द्वारा बताये यथार्थ अध्यात्म ज्ञान को तुम आलोचना मानते हो। जिस कारण आप सब जीव यहाँ महान दुःख उठा रहे हो। यहाँ कोई भी सुखी नहीं है। गलती से आप राज के भोग को सुख मानते हो। कोई बड़ा अधिकारी बन गया, कोई धनी है, कई कोठी-कार हैं, पुत्र-पुत्री हैं, अधिक संपति है। इसी को सुख मान रहे हो। कोई रोगी है, कोई कोढ़ी है, कोई धन अधिक होने से डाकु-चोरों से दुःखी है। कोई धन के अभाव से दुःखी है। कुछ समय का जीवन है। इसी में संतान-सम्पत्ति, पति-पत्नी परिवार को सुख मान रहे हो जबकि आप प्रतिदिन देखते हो, सुनते हो कि कोई रोग से मर गया। कोई सर्प के डसने से मर गया व भूकंप के कारण शहर-नगर नष्ट हो जाते हैं। कार-कोठी, परिवार सब नष्ट हो जाते हैं, स्वयं भी मर जाते हैं। यह सब झूठा सुख है। काल ब्रह्म ने आपको धोखे में रखा है। सब प्राणी काल का चबीना यानि काल ब्रह्म का आहार हैं। वाणी के द्वारा कबीर जी समझाया है कि :-

कबीर, झूठे सुख को सुख कहें, मानत है मन मोद।
सकल चबीना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद।।

★ भावार्थ ऊपर कर दिया है। कबीर जी ने जो ऊपर शब्द में कहना चाहा है, उसका सरलार्थ करने के लिए यह उपरोक्त सच्चाई वर्णन करनी पड़ी है जो कबीर परमात्मा जी ने स्वयं बताई है। कहा है कि आप काल ब्रह्म के जाल में फँसे हो। आप तो इस पंथ्वी पर सुखी होना चाहते हो। इक्कीस ब्रह्माण्डों में मुझे कोई सुखी नहीं मिला, जो मिला वह दुःखी ही मिला। प्रथम दुःख तो जन्म-मरण, वंद्धावस्था है। इसे तो आप सामान्य प्रक्रिया मान बैठे हो क्योंकि आपको इसके विकल्प का पता नहीं है। परमात्मा कबीर जी ने अन्य दुःख बताऐ हैं। कहा है कि ''तन धर सुखिया कोई ना देखा, जो देखा सो दुःखिया हो। उदय–अस्त की बात करत हैं, मैंने सबका किया विवेका हो।।'' **अर्थात् जितने भी जीव काल लोक में हैं, सब दुःखी हैं। जो कहते हैं कि राजा बहुत सुखी है। मैंने तो उदय-अस्त तक राज करने वाले राजाओं का जीवन भी देखा है, फिर उनके जीवन पर विवेक किया है। उनका भी जीवन महादुःखी है।**

★ **एक उदय-अस्त तक राज करने वाला राजा था। उदय यानि जहाँ से सूर्य निकलता है और अस्त यानि जहाँ सूर्य छिपा अर्थात् पूरी पथ्वी का राजा था। उसे चक्रवर्ती राजा कहते हैं। मैं एक साधु बाबा के वेश में उसके राज-दरबार में गया। उसने अपने कई दुःख गिनाए तथा आशीर्वाद की याचना की। मेरे आशीर्वाद से वे दुःख दूर हो गए। पुत्र नहीं था, पुत्र की प्राप्ति हो गई। शरीर में असाध्य रोग था जो किसी भी वैद्य से ठीक नहीं हो रहा था। वह मेरे आशीर्वाद से ठीक हो गया। उसकी रानी पर किसी पित्तर का दवाब था जो ब्राह्मणों के बताए सब श्राद्ध कर्मों के करने से भी ठीक नहीं हो रहा था, वह ठीक हो गई। मैंने उस राजा को सतलोक व सतपुरूष के विषय में बताया तो उसने कोई रूचि नहीं दिखाई और कहने लगा कि स्वर्ग से आगे तो कोई स्थान आज आपके मुख से सुन रहे है जो विश्वास के योग्य नहीं है। महाराज! लो एक सौ एक स्वर्ण की मोहरें, आपका धन्यवाद जो आपकी कपा से मुझे उपरोक्त सुख हुए। हमारे पूर्वज तो भगवान विष्णु तथा भगवान शंकर व देवी की पूजा करते आए हैं। हम तो इन्हीं की पूजा करेंगे। मैंने (कबीर परमात्मा जी ने) कहा कि हे भिखारी! तू क्या धन देगा, यह सर्व ब्रह्माण्ड मेरे हैं। तेरी कभी भी मत्यु हो सकती है। सब यहीं रह जाएगा। यदि जन्म-मरण, वद्धावस्था के कष्ट से बचना चाहता है तो दीक्षा ले। मेरे पास यथार्थ भक्ति विधि है। परंतु राजा नहीं माना। विनाश काले विपरीता बुद्धि वाली कहावत सिद्ध हुई। कुछ दिन पश्चात् एक ऋषि से युद्ध कर बैठा। सर्वनाश को प्राप्त हुआ। ऋषि भी काल ब्रह्म का पुजारी था। उसमें सिद्धि आ गई थी। उस ऋषि को अपनी सिद्धि का अहंकार था। राजा को सेना का अहंकार था। राजा की 72 क्षौणी सेना का ऋषि ने सिद्धि से पुतली बनाकर सब सेना को मार डाला। (एक क्षौणी सेना दो लाख अठारह हजार सैनिकों की होती थी जिसमें हाथी, घोड़ों व रथों पर सवार होकर व पैदल सैनिक होते थे।) ऋषि भी पाप का भागी बना। वह भी नरक भोगेगा। गलत साधना करके राजा वाली आत्मा ने तप किया था। तप से चक्रवर्ती राजा बना था। ऋषि ने गलत साधना की। वह साधना तो करने लगा था मोक्ष प्राप्त के लिए, परंतु यथार्थ भक्ति मंत्र न मिलने से गलत मंत्रों का जाप किया। सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। उसी से खुश होकर अपने को धन्य मान बैठा। चक्रवर्ती राजा मानधाता की सर्व सेना (बहत्तर क्षौणी सैनिकों) को सिद्धि से मारकर उस क्षेत्र में Hero बन गया। अगले जन्मों में ऋषि जी भी कुत्ते की योनि में जाएगा। जितने सैनिक ऋषि ने मारे थे, वे उस कुत्ते के जीवन को प्राप्त ऋषि के सिर को कीड़े बनकर खाऐंगे। जब तक मेरे (कबीर जी) द्वारा बताया अध्यात्म ज्ञान पर विश्वास करके मेरे द्वारा बताई यथार्थ साधना नहीं करोगे, तब तक सुख स्वपन में भी नहीं मिलेगा।** ''घाटै–बाधै सब जग दुःखिया, क्या गहस्थी बैरागी हो। सुखदेव ने दुःख के डर से, गर्भ में माया त्यागी हो।।'' **अर्थात् कबीर परमात्मा जी काल ब्रह्म के लोक में प्राणियों के दुःखों की गिनती करवा रहे हैं। कहा है कि जिस किसी को व्यवसाय में घाटा (Loss) हो जाता है तो उसका दुःख तो जगजाहिर होता है यानि सबको**

पता होता है। जिस किसी को लाभ (बाहदा) हो जाता है तो वह और अधिक धन कमाने की तड़फ करके ऐसा व्यवसाय प्रारम्भ करेगा। अपनी पूंजी तो सब लगा देगा और करोड़ों उधार (Loan) लेकर भी लगा देगा। व्यवसाय में मंदा हो जाना स्वाभाविक बात होती है। उस बाहदे (Benifit) वाले की दिन का चैन, रात की नींद समाप्त हो जाती है। यह समस्या गहस्थी को भी होती है। जो ऊपर घाटे-बाहदे वाले गहस्थी की स्थिति बताई है। ऊपर ऋषि जी को बाहदा हुआ यानि सिद्वि मिली। उनसे घाटा (Loss) कर लिया। सैनिक मारकर पाप इकट्ठे किए। राजा को तप करके राज मिला। यह बाहदा हुआ। फिर ऋषि से पंगा लेकर घाटा (Loss) करके दुःखी हुआ। अध्यात्म ज्ञान होने पर पता चलता है कि मानव (स्त्री पुरूष) का जन्म पूर्ण संत की खोज करके दीक्षा लेकर जन्म-मरण तथा वद्वावस्था के कष्ट से छुटकारा प्राप्त करने के लिए मिलता है। यह लाभ नहीं हुआ तो इससे बड़ा घाटा और नहीं है।

★ एक सुखदेव ऋषि जी थे जो श्री ब्यास जी के पुत्र थे। उनको माता जी के गर्भ मे ज्ञान हो गया था कि मानव शरीर बड़ा दुर्लभ है। पहले भी उनको मानव शरीर मिले थे, परंतु माता के गर्भ से बाहर संसार में जाते ही उदेश्य की भूल लग जाती है। इसलिए बारह वर्ष तक शरीर से बाहर ही नहीं आया। जब काल ब्रह्म के व्यवस्थकों यानि ब्रह्मा-विष्णु-शिव ने बाहर आने को कहा तो सुखदेव ने कहा कि आपकी त्रिगुणमयी माया का प्रभाव भयंकर है। यह माता के गर्भ से बाहर आते ही चेतना समाप्त कर देता है। इसे रोको तो बाहर आऊँगा अन्यथा नहीं। ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव जी ने कुछ क्षणों के लिए अपने प्रभाव को रोका तो ऋषि सुखदेव गर्भ से बाहर आया। ब्यास ऋषि ने पुत्र का सुखदेव नाम रखा। पुत्र ने पिता की ओर नजर भी नहीं की। उठकर जंगल की और चल पड़ा। ऋषि वेद ब्यास जी ने कहा कि पुत्र! आप कहाँ जा रहे हो? मैंने तेरे जन्म होने का वर्षों इंतजार किया। मेरे पास आओ। मेरे सीने से लग जाओ। सुखदेव ने कहा कि ऋषि जी! न जाने कितनी बार तुम मेरे पिता और मैं आपका पुत्र रूप हुआ, अनेकों जन्मों में मैं आपका पिता और आप मेरे पुत्र रूप में हुए हैं। यह दुःख अपार है। अबकी बार मुझे सब याद है। इसलिए मैं मोहजाल में नहीं फँसूगा, अपना मोक्ष कराऊँगा। यह कहकर पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति से आकाश में उड़ गया। दूर जंगल में जाकर भक्ति करने लगा। फिर पता चला कि गुरू बिन कल्याण नहीं है तो राजा जनक से दीक्षा लेकर साधना की।

दोनों (राजा जनक गुरू तथा शिष्य सुखदेव) स्वर्ग में गए। स्वर्ग में गए प्राणी भी अपने भक्ति कर्मों का फल स्वर्ग में समाप्त करके फिर से जन्म-मरण के चक्र में गिर जाते हैं। जो भक्ति के मंत्र काल ब्रह्म के भ्रमित ज्ञान में ऋषि व संत व वर्तमान के बाबा लोग गुरू बनकर बताते हैं, इनसे वह मोक्ष प्राप्त नहीं होता जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में बताया है कि हे अर्जुन! तत्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमात्मा के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ पर गए साधक फिर लौट

कर संसार में कभी जन्म नहीं लेते तथा न वह परमेश्वर मिलता जिसका वर्णन गीता अध्याय 18 श्लोक 61-62 में किया है। कहा है कि परम अक्षर पुरूष ने सब जीवों को कर्मों के अनुसार जन्म-मरण के चक्र में व्यवस्थित किया है। सबके हृदय में विराजमान है। (अध्याय 18 श्लोक 61)

★ गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता बोलने वाले ने अपने से अन्य परम अक्षर ब्रह्म की शरण में जाने को कहा है कि हे भारत! तू सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा (शाश्वतम् स्थानम्) सनातम परम धाम को (प्राप्स्यसि) प्राप्त होगा। जन्म-मरण समाप्त होने के पश्चात् ही परम शान्ति होती है। सतलोक ही सनातन परम धाम है। (गीता अध्याय 18 श्लोक 62)

★ कबीर परमात्मा द्वारा बताई साधना के बिना उपरोक्त पूर्ण मोक्ष यानि जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

❑ प्रमाणः- सिक्ख धर्म के प्रवर्तक श्री नानक जी वाला जीव सत्ययुग में राजा अंबरीष थे जो श्री विष्णु जी के परम भक्त थे। जिनकी भक्ति के प्रभाव से ऋषि दुर्वासा जी भी हार मानकर गए थे। अंबरीष के जीवन की भक्ति के पुण्य स्वर्ग में समाप्त करके त्रेतायुग में वही श्री नानक जी वाला जीव राजा जनक के रूप में जन्मे थे। उस समय भी वे श्री विष्णु जी के परम भक्त थे। सुखदेव जैसे गर्भयोगेश्वर ने भी राजा जनक से दीक्षा ली और दोनों (राजा जनक और सुखदेव ऋषि) स्वर्ग गए। राजा जनक वाला जीव अपना स्वर्ग का समय पूरा करके यानि अपनी भक्ति की शक्ति तथा धर्म पुण्यों को स्वर्ग में समाप्त करके पुनः पृथ्वी पर श्री नानक देव जी के रूप में ननकाना साहिब में भी कालूराम खत्री के घर पुत्र रूप में जन्में। उस जीवन में भी ये पुण्यात्मा श्री विष्णु जी उर्फ श्री कृष्ण जी के भक्त थे। परमात्मा कबीर जी एक जिन्दा बाबा का वेश बनाकर श्री नानक जी से नगर सुलतानपुर लोधी के पास बह रही बेई नदी पर मिले, जब श्री नानक जी सुबह के समय स्नान करने के लिए प्रतिदिन की तरह गए थे। कबीर जी ने जिंदा बाबा के वेश में श्री नानक जी से ज्ञान चर्चा की। फिर उनकी आत्मा को ऊपर सत्यलोक में लेकर गए। सत्य साधना के मंत्र यानि सतनाम (सच्चा मंत्र) कबीर जी ने दिया। तब श्री नानक जी का जन्म-मरण व वृद्धावस्था का महादुःख समाप्त हुआ।

★ विचार करने के योग्य है कि ऋषि सुखदेव जी को गर्भ में ही ज्ञान हो गया था कि मानव जन्म केवल जन्म-मरण के कष्ट से पूर्ण छुटकारा के लिए मिलता है। वे घर भी त्याग गए। श्री जनक राजा जी को गुरू भी बनाया। मान लिया था कि मोक्ष मिल गया, परंतु जन्म-मरण बना रहा, मोक्ष नहीं हुआ। सुखदेव के गुरू श्री जनक जी का भी जन्म-मरण समाप्त तब हुआ जब उनको परमात्मा कबीर से यथार्थ भक्ति मंत्र मिले। ऋषि सुखदेव अभी स्वर्ग में हैं। उसके कुछ पुण्य बचे हैं। उनकी आइसक्रीम खाकर फिर पृथ्वी पर यदि मानव जन्म हुआ और वे यथार्थ भक्ति के मंत्र नहीं मिले जो उनके गुरू जी वाले जीव श्री नानक जी को मिले थे

जो वर्तमान में मेरे (संत रामपाल के) अतिरिक्त विश्व में किसी के पास नही हैं तो सुखदेव जी का जन्म-मरण चक्र कभी समाप्त नहीं हो सकता। दुःख बना रहेगा।

साच कहूँ तो जग ना माने, झूठ कही ना जाई हो।
ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी दुःखिया, जिन ये राह चलाई हो।।

★ अर्थात् कबीर जी ने कहा है कि जो उपरोक्त सत्य ज्ञान मैं बताता हूँ, इसे लोग मानने को तैयार नहीं। मैं झूठ कह नहीं सकता, सच ही कहूँगा। कोई माने चाहे ना माने कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी भी जन्म-मरण के चक्र से बाहर नहीं हैं। जैसे श्री विष्णु जी स्वयं श्री रामचन्द्र जी के रूप में राजा दशरथ के घर अयोध्या नगरी में जन्मे थे। उनका सारा जीवन कष्टों से भरा रहा। जैसे विवाह होते ही चौदह वर्ष का बनवास मिला। पत्नी सीता का अपहरण हुआ। पिता दशरथ जी की मौत हो गई। रावण से घोर युद्ध हुआ। करोड़ों व्यक्ति मारे गए। सीता जी को अयोध्या लाये। कुछ वर्षों पश्चात् सीता जी का त्याग करना पड़ा जो गर्भवती थी। जंगल में पत्नी सीता ने लव नाम के पुत्र को जन्म दिया। ऋषि बाल्मीकि के आश्रम में रही। वहाँ किसी कारण से ऋषि जी ने भक्ति की शक्ति से कुशा घास के पत्तों को निमित बनाकर एक बालक बनाया। उसका नाम कुश रखा। रामचन्द्र अयोध्या के राजा थे। जिस व्यक्ति के पुत्र-पत्नी घर से बाहर जंगल में भटक रहे हों, वह व्यक्ति स्वपन में भी सुखी नहीं हो सकता, चाहे लोकलाज में अपना दुःख प्रकट न करे। अंत में श्री रामचन्द्र ऊर्फ श्री विष्णु ने जीवन से दुःखी होकर अयोध्या के पास बह रही सरयू नदी में छलाँग लगाकर जीवन लीला का अंत किया यानि आत्महत्या की।

★ इसी प्रकार श्री विष्णु के अन्य अवतार श्री कष्ण ने जीवन भर महान दुःख झेला। जन्म जेल में हुआ। परमात्मा की कपा से जेल से बालक श्री कष्ण बाहर गए। माता -पिता कष्ण जी के जन्म के बाद भी 14 वर्ष जेल में रहे। जन्म से ही मामा कंस दुश्मन बना रहा। कभी किसी राक्षस को कष्ण जी को मारने भेजता, कभी पूतना दुधी से विष लगाकर मारने गई। कंस को मारा तो कालयवन ने मथुरा पर आक्रमण कर दिया। मुचकंद पर पीला वस्त्र (पीताम्बर) डालकर धोखे से कालयवन को मरवाया। फिर मथुरा छोड़कर द्वारिका में परिवार तथा कुल के लोगों के साथ जाकर बसे। दुर्वाशा ऋषि के शॉप से श्री कष्ण जी के सामने सर्व यादव जो उनके परिवार के थे, आपस में लड़कर मर गए। एक-दूसरे को मार डाला। काल ब्रह्म के प्रभाव से शेष बचे यादव स्वंय कष्ण ने मुसलों से मार डाले। श्री कष्ण जी को एक बालिया नाम के शिकारी ने जहर से बना तीर मारकर मौत के घाट उतारा। श्री विष्णु जी ही श्री राम रूप में जन्मे थे। उस समय सुग्रीव के भाई बाली को वक्ष की ओट लेकर धोखे से मारा था। वही श्री राम वाला जीव यानि श्री विष्णु जी, श्री कष्ण रूप में जन्में। उनकी मौत यानि बाली वाली आत्मा जो बालिया नामक भील रूप में जन्मी जो शिकारी बना था, के द्वारा हुई। श्री विष्णु जी भी जन्म-मत्यु के महाकष्ट भोग रहे हैं।

☞ श्री शंकर जी पर संकट आया :- एक भस्मासुर नामक साधक ने तप करके

श्री शिव जी को खुश करके भस्मकड़ा माँगा। प्राप्त होने पर श्री शिव जी को मारने लगा। श्री शंकर पूरी स्पीड से जान बचाकर भागे। जिनके जीवन की रक्षा भगवान ने पार्वती रूप धारकर भस्मासुर को गण्डहथ नाच नचाकर मारकर की थी। इससे सिद्व है कि श्री शंकर जी अविनाशी नहीं हैं। यदि अविनाशी होते तो डरकर भागने की आवश्यकता नहीं थी। भस्मासुर का उद्देश्य श्री शकंर जी को मारकर उनकी पत्नी पार्वती के साथ रेप करना था जो भस्मासुर ने भस्मकड़ा हाथ में आते ही स्पष्ट भी कर दिया था कि शंकर हो ले होशियार! तेरे को मारूँगा, पार्वती को पत्नी बनाऊँगा। (श्री शंकर तमगुण श्री शिरड़ी वाले साँई बाबा का भगवान है। जिसे वे कुल का मालिक बताकर दुनिया को भ्रमित कर गए।) श्री शिव जी अपनी पत्नी को भी छोड़कर डरकर भाग गया। वह अन्य का क्या दुःख दूर करेगा? विचार करो कि लकीर के फकीर मत बनो। मेरे (रामपाल) के यथार्थ अध्यात्म ज्ञान को समझो। कल्याण इसी से सम्भव है। मेरे (रामपाल के) इस परमार्थी कार्य को आलोचना न समझो। इसको धार्मिक भावनाओं को ठेस मत मानो। आपकी जीवन रक्षा जानो। भावनाओं को ठेस नहीं है।

☞ उदाहरण :- एक बच्चा दो वर्ष का था। उसकी माता खेत में पशुओं का चारा लाने के लिए चली गई। उस समय वह बच्चा सो रहा था। दिन के दस बजे का समय था। गर्मी का मौसम था। गाँव के साथ दरिया बह रही थी। दरिया पर एक पुल था जो उस गाँव से आधा किलोमीटर पीछे था। लड़के की माता पुल से दरिया पार करके दूसरे किनारे-किनारे पटरी पर चलकर अपने गाँव के बराबर आई क्योंकि उसके खेत उसी और थे जो आगे दरिया के दूसरे किनारे से सटे थे। इसलिए खेतों में जाने का रास्ता दरिया का दूसरा किनारा यानि पटरी थी। जब लड़के की माता गाँव के सामने दूसरी पटरी पर आई, तब तक लड़का जाग गया और माता की तलाश करने लगा। लड़के की दादी भी किसी काम से दूसरे घर गई थी। सोचा था कि लड़का सो रहा था। अभी आ जाती हूँ। प्रतिदिन ऐसा ही होता था। परंतु उस दिन लड़का शीघ्र नींद से जाग गया। इत्तेफाक से माता भी सामने दिखाई दे गई। वह 1- 2 वर्ष का अबोध बच्चा माँ-माँ करता हुआ दौड़ पड़ा और दरिया से दस फुट दूर था। बच्चा माँ की प्राप्ति की धुन में सीधा दरिया में गिरना था। उस दरिया के किनारे एक भद्रपुरूष आ रहा था। उसे समझते देर न लगी कि बालक माँ के पास जाना चाहता है, परंतु मार्ग गलत पकड़ा है। यह डूबकर मर जाएगा। उस व्यक्ति ने उस बच्चे को उधर जाने से रोकना चाहा, परंतु वह नहीं रूका। उस व्यक्ति ने बच्चे को पकड़ा और हाथों में उठा लिया। लड़का बुरी तरह रोने लगा। नीचे उतरने के लिए छटपटाने लगा। उस व्यक्ति को थप्पड़ मारने लगा क्योंकि उस व्यक्ति ने उस बालक की भावनाओं को ठेस पहुँचा रखी थी। उस व्यक्ति ने बच्चे के रोने-बिलखने की परवाह न करते हुए उसको माता जी से मिलने के उद्देश्य से कुमार्ग पर नहीं जाने दिया। जिससे उसका जीवन नष्ट हो जाना था और माता भी नहीं मिलनी थी। जैसे-तैसे बच्चे का विरोध झेलते हुए उस

व्यक्ति ने बालक को सुमार्ग पर लाकर पुल पर छोड़ा और उधर से बालक की माता भी वापिस पुल के पास आ गई। बालक को माँ मिल गई और जीवन रक्षा भी हो गई। तो वह भावनाओं को ठेस पहुँचाना अनिवार्य तथा परोपकारी था। ऐसा ही परोपकारी प्रयत्न मेरा (रामपाल दास का) तथा मेरे अनुयाईयों का है। हम आप सब भक्तों को कुमार्ग पर जाने से रोक रहे हैं। आप परमात्मा प्राप्ति के लिए कुमार्ग पर चल रहे हो, जिस मार्ग से कभी-भी कल्याण नहीं होगा। जन्म-मरण व वृद्धावस्था का दुःख दूर नहीं होगा। शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करने से आपको कुछ भी भक्ति लाभ नहीं होगा। यह श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में प्रमाण है।

★ गीता अध्याय 16 श्लोक 23 :- जो व्यक्ति शास्त्रविधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है। उनको न सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है, न उनको गति यानि जन्म-मरण से मुक्ति मिलती है।

★ गीता अध्याय 16 श्लोक 24 :- हे अर्जुन! इससे तेरे लिए कर्तव्य यानि जो भक्ति कर्म करने चाहिऐं तथा अकर्तव्य यानि जो भक्ति कर्म नहीं करने चाहिए, की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं अर्थात् जो शास्त्रों में कहा, वैसे साधना कर।

★ विचार करने की बात है कि परमात्मा की भक्ति इन तीन वस्तुओं के लिए ही की जाती है कि सुख प्राप्त हो, कार्य सिद्धि हो तथा जन्म-मरण से पूर्ण मुक्ति मिले।

★ जैसे कि पत्र के पूर्व में बताया है कि गीता अध्याय 7 श्लोक 12-15 तथा 20-23 में रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव तथा अन्य देवी-देवताओं की भक्ति करने वालों को राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दुषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है क्योंकि इनकी भक्ति करना शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण है।

☞ अन्य प्रमाणः- गीता अध्याय 17 श्लोक 1 में अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे भगवन! जो साधक शास्त्रविधि त्यागकर देवी-देवताओं आदि की पूजा श्रद्धा से करते हैं। उनकी निष्ठा यानि स्थिति कौन-सी है, सात्विक है या राजसी अथवा तामसी है।

★ उत्तर गीता ज्ञान दाता का गीता अध्याय 17 श्लोक 2-6 में :- जिसका जैसा पूर्व जन्म का संस्कार है, उनका स्वभाव वैसा ही होता है व वैसी ही श्रद्धा होती है। जो सात्विक श्रद्धा वाले यानि नेक स्वभाव वाले हैं, वे देवताओं की पूजा करते हैं, राजसी श्रद्धा वाले यक्षों तथा राक्षसों की पूजा करते हैं तथा तामस श्रद्धा वाले प्रेतों की पूजा करते हैं। यह शास्त्रविरूद्ध होने से गलत है। जो शास्त्रविधि को त्यागकर मन कल्पित घोर तप को तपते हैं, वे अहंकार व दंभ यानि पाखण्ड से युक्त हैं। वे शरीर में कमलों में स्थित सर्व देवी-देवताओं, मुझे तथा परमात्मा को कृश करने वाले, नष्ट करने वाले हैं। उन अज्ञानियों को असुर स्वभाव के जान।

☞ निष्कर्षः- पवित्र श्रीमद्भगवत गीता के उपरोक्त श्लोकों से यह भी स्पष्ट हो गया कि देवी-देवताओं, प्रेत, पित्तरों आदि की पूजा करना है तो शास्त्रविधि के विरूद्ध है। परंतु अच्छे व्यक्ति स्वभाववश देवताओं की पूजा करते हैं। देवताओं की

पूजा करना भी गीता अध्याय 7 श्लोक 12-15 तथा 20-23 में निषेध कहा है तो वह पूजा शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण है जिसका कोई लाभ नहीं है। ऊपर गीता अध्याय 16 श्लोक 23 में स्पष्ट किया गया है कि शास्त्रविधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करते हैं, उनको सुख, सिद्वि तथा गति प्राप्त नहीं होगी।

☞ **प्रसंग चल रहा है कि परमात्मा कबीर जी ने बताया है :-**

सुरपति दुःखिया भूपति दुःखिया रंक दुःखी बपरीती हो।
कह कबीर और सब दुःखिया एक संत सुखी मन जीती हो।।

★ **अर्थात् परमात्मा कबीर जी ने इस वाणी में बताया है कि जन्म-मरण न तो सुरपति यानि देवताओं के स्वामी इन्द्र का समाप्त है। उसके ऊपर भी आपत्तियाँ आती हैं जो पुराणों में ढ़ेर सारे प्रकरण हैं कि इन्द्र को दुर्वासा ऋषि ने शॉप दे दिया तो उसका राज्य समाप्त हो गया। रावण के पुत्र मेघनाद ने इन्द्र के साथ युद्ध करके पराजित किया। सर्व देवताओं को कैद में डाल दिया। भूपति यानि सारी पथ्वी का राजा भी दुःखी। (चक्रवर्ती राजा के नाश की कथा पहले लिख दी है) फिर कहा है कि रंक यानि निर्धन जो सत्य भक्ति नहीं करता, वह तो दुःखी होना ही है, यह तो सबको ज्ञान है, यह तो रीति है ही कि निर्धन को सबसे अधिक दुःख होता है। कबीर जी ने कहा है कि और सब दुःखी हैं जो ऊपर वर्णन कर दिया, परंतु संत सुखी होता है जिसने अपने मन को आन-उपासना तथा काल ब्रह्म के लोक के झूठे सुख से हटाकर एक परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) की भक्ति में लगा लिया है।**

★ **यह उपरोक्त ज्ञान संत रामपाल जी के सत्संगो से लिखा है जैसा कि संत रामपाल जी ने स्पष्ट किया है कि एक बालक माता से मिलने कुमार्ग पर जा रहा था। वह सच्ची भावना से जा रहा था, परंतु मार्ग ठीक न होने के कारण वह मर जाता। उसको सुमार्ग पर लाने के लिए, उसका जीवन बचाने के लिए उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाना उस विद्वान पुरूष का परम कर्तव्य था जो उसने किया। यही परोपकारी कार्य हमारे गुरू जी संत रामपाल दास जी कर रहे हैं। उनके द्वारा लिखी पुस्तकों को जनता में बाँटकर हम (उनके अनुयाई) कर रहे हैं। उस बच्चे ने थप्पड़ भी मारे, लात भी मारी, परंतु उस भद्रपुरूष ने परोपकार बंद नहीं किया। माँ से बेटा मिला दिया। तत्वज्ञानहीन गुरूओं द्वारा बताई शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण पर श्रद्धा से लगे व्यक्तियों को सच्चा भक्ति मार्ग जो परमात्मा कबीर जी ने बताया है, उस मार्ग पर लगाने के लिए पुस्तक वितरण करते हैं तो अपनी भावनाओं को ठेस पहुँचाना मानकर हमें पीटते हैं। फिर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने के लिए मुकदमें कर देते हैं। लगभग 7-8 मुकदमें तो हिसार कोर्ट में हैं। पंजाब राज्य में भी हैं। हम तथा संत रामपाल जी को उस भद्रपुरूष की तरह ज्ञान है कि हम उनके जीवन को बचाना चाहते हैं जो शास्त्र के विरूद्ध भक्ति करने से नष्ट होने जा रहा है। हम आप सब मानव के जीवन की रक्षा मरते दम तक करते रहेंगे। देखना है कि वह पल कब आएगा यानि हम आपको सुमार्ग पर कब लगा पावेंगे तथा आपको अपने परम अक्षर पुरूष से सत्यलोक में कब मिलाकर**

आपको सदा के लिख सुखी कर पावेंगे। परमात्मा आपको सद्बुद्धि दे। आप शान्त मन से हमारे परमार्थ को समझकर हमारा साथ दें। हमें अपना समझो। यथार्थ भक्ति मार्ग संत रामपाल जी से प्राप्त करके अपना तथा अपने परिवार का कल्याण कराओ। सनातम परम धाम में (सतलोक) में चलो।

संत रामपाल दास जी द्वारा किए सत्संग जो परमात्मा का विधान है :-

''भक्ति की शक्ति को सुरक्षित रखें''

भक्ति करने से साधक की आत्मा में ईश्वरीय शक्ति ऐसे संग्रहित हो जाती है जैसे चॉर्जर से इन्वर्टर की बैट्री में पॉवर। वर्तमान मानव जीवन में जो साधु-संत का जीवन जी रहे हैं, वे पूर्व जन्म की भक्ति के कारण प्रेरित हैं, वे साधना अवश्य करेंगे। हम देखते हैं तथा पूर्व की घटनाऐं भी सुनते-पढ़ते हैं कि एक नाथ बाबा से किसी व्यक्ति ने शरारत की थी। नाथ जी ने उसे शॉप दे दिया। उस व्यक्ति को वित्तीय हानि हो गई। ऋषि दुर्वासा जी से श्री कष्ण के पुत्र अनिरूद्ध व अन्य यादव युवाओं ने मजाक किया था। दुर्वासा जी ने उन्हें शॉप दे दिया कि यादव कुल का नाश हो जाएगा। कुछ वर्षों के उपरांत द्वारका नगरी के सब 56 करोड़ नर यादव आपस में लड़कर मर गए। यहाँ तक कि श्री कष्ण जी भगवान की संज्ञा वाले भी दुर्वासा ऋषि के शॉपवश मरे थे। ऐसी-ऐसी अनेकों घटनाऐं हैं जो बाबा लोगों द्वारा लाभ व हानि होने का ज्ञान करवाती हैं।

★ इसी प्रकार राजा लोगों का इतिहास बताता है कि जिन-जिन व्यक्तियों ने राजा की इच्छा के विरूद्ध कार्य किया तो उन्हें मत्युदण्ड तक दे दिया गया। जिन-जिन व्यक्तियों ने राजा की सेवा की, चापलूसी की। उनको राजीयक अधिकारी नियुक्त किया या हजारों एकड़ जमीन देकर विशेष लाभ दिया। राजा लोगों का आदेश कानून होता था। अपने आदेश से राजा लोग किसी को लाभ-हानि कर देते थे।

★ राजपद की प्राप्ति पूर्व जन्म की भक्ति से होती है। साधु बाबा तथा राजा परमात्मा के विधान से परिचित न होने के कारण अपनी पूर्व जन्म की व वर्तमान में कर रहे भक्ति की शक्ति को खर्च करके अपनी आध्यात्मिक हानि कर लेते हैं। जैसे बाबा ने शॉप दिया तो किसी को हानि हुई। किसी को लाभ व सुख होने का आशीर्वाद दिया तो उसे लाभ हुआ। इस प्रकार दिए गए शॉप व आशीर्वाद से बाबा जी की पूर्व जन्मों की भक्ति-शक्ति तथा वर्तमान में की गई साधना की शक्ति खर्च होती है। ऐसे साधु परमात्मा की भक्ति की शक्ति खर्च करके परमात्मा प्राप्ति से तो वंचित रह ही जाते है, अपितु किसी को शॉप देकर हानि करने के पाप के जिम्मेदार और हो जाते हैं। जिस कारण से नरक में भी गिरते हैं। उन साधु-संतों की संसार में तो प्रसिद्धि हो जाती है, परंतु भविष्य विष के तुल्य हानिकारक हो जाता है। नरक का समय भोगकर वे बाबा प्रेत योनि को प्राप्त होते हैं। लाभ-हानि के कारण प्राप्त प्रसिद्धि के कारण लोग उस संत-साधक के मत शरीर को जमीन में दफनाकर उसके ऊपर यादगार रूप में मंदिर का निर्माण करा देते हैं। उसकी

मूर्ति बनाकर उसमें रख देते हैं। वहाँ पर धूप-दीप जलाकर अपने सुख व शान्ति की मन्नत माँगते हैं। वह बाबा प्रेत योनि को प्राप्त करके उस मंदिर में अपने शव के ऊपर रहने लगता है। भक्ति की शक्ति कुछ शेष रह जाती है जो उस मानव जीवन में पूरी नष्ट हाने से पहले मत्यु के कारण बच जाती है। उस शेष भक्ति की शक्ति को वह साधक बाबा प्रेत बनकर अपनी मूर्ति व यादगार की पूजा करने वालों की मन्नत पूरी करके नष्ट कर देता है। भोले व्यक्ति उस मंदिर में विराजमान प्रेत की पूजा करके जीवन नष्ट कर जाते हैं। उन मनुष्यों को चाहिए था कि वे पूर्ण संत से दीक्षा लेकर भक्ति करके अपनी आत्मा में भक्ति शक्ति संग्रह करते जिससे उनके सर्व कार्य भी सिद्ध होते और मोक्ष भी मिलता।

वह समाधि के मंदिर में बैठा प्रेत पूर्व जन्म के स्वभाववश प्रेत योनि में भी किसी को हानि तथा किसी को लाभ करके अपनी शेष भक्ति की शक्ति का भी नाश करके पशु-पक्षी की योनि को प्राप्त करता है। पूर्ण रूप से अपना भविष्य नष्ट कर लेता है। उदाहरण के लिए शिरड़ी वाले सांई बाबा पर्याप्त हैं। ये पूर्व जन्मों की भक्ति के कारण परमात्मा प्राप्ति की तड़फ में घर त्यागकर चले गए। किसी नकली गुरू से दीक्षा लेकर एकान्त स्थान पर बैठकर घोर तप किया। नकली संतों द्वारा बताई शास्त्रविधि विरूद्ध साधना के कारण साधक को कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं होता। आध्यात्मिक तप व किसी शास्त्र की एक-दो वाणी (दोहे-श्लोक) का जाप करने से सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। सिद्धि तो ऐसी जानों जैसे इंजैक्शन लगाने वाली शिरंज व सूई होती है। उसके द्वारा बोतल से दवाई निकालकर अन्य के शरीर में डाल दी जाती है। कुछ सिद्धियाँ मत्यु के बाद प्रेत बने पूर्व तपस्वी व साधक के पास भी साथ रहती हैं। सिद्धि प्राप्त जीवित व्यक्ति या प्रेत व पितर योनि प्राप्त आत्मा उस सिद्धि रूपी शिरंज से अपनी आत्मा से भक्ति की शक्ति निकाल कर अपने प्रसंशक व पुजारी की आत्मा में शॉप व आशीर्वाद रूप में डाल देता है। प्रेत-पितर का शॉप गुप्त कार्य करता है। उस मूर्ख ने अपनी आत्मा से परमात्मा की भक्ति की शक्ति नष्ट कर दी तथा अपने आश्रित भोले श्रद्धालुओं का भी जीवन नष्ट कर दिया। उन बाबाओं के मानने वालों को कुछ संसारिक लाभ मिले जिससे उन्होंने अपना जीवन धन्य मान लिया और उस प्रेत बाबा के फैन होकर जीवन नष्ट कर गए। यदि उस बाबा को तत्वज्ञान होता तो ऐसी गलती कभी नहीं करता। जिन संतों को तत्वज्ञान प्राप्त है, वे न तो शॉप देते हैं, न आशीर्वाद देते हैं, वे अपने फैन को सत्य साधना भक्ति संग्रह करने को कहते हैं। वह तत्वदर्शी संत परमात्मा से सीधा जुड़ा (Connected) होता है। मानों वह मिनी पॉवरहाऊस होता है। परमात्मा को थर्मल प्लांट मानों। वह संत दीक्षा देकर अपने भक्त यानि उपभोक्ता को कनैक्शन देता है। उस भक्त यानि उपभोक्ता को गुरू मर्यादा में रहना होता है। यदि अनुयाई मर्यादा भंग कर देता है तो उसका कनैक्शन कट जाता है। गलती का पता लगने के पश्चात् क्षमा याचना करके पुनः उपदेश लेना पड़ता है यानि फिर से कनैक्शन ठीक करना पड़ता है जिससे संत तथा अनुयाई दोनों मोक्ष प्राप्त करते

हैं तथा वर्तमान जीवन में भी सुख मिलता है। संसारिक लाभ भी मिलता है। संकटों का नाश भी होता है। अकाल म॑त्यु भी नहीं होती। दुर्घटना में भी रक्षा होती है। वर्तमान में मेरे (रामपाल दास के) अतिरिक्त विश्व में किसी भी संत के पास यथार्थ अध्यात्म ज्ञान तथा मोक्ष प्राप्ति के नाम नहीं हैं जिनसे दोनों लाभ मिलते हैं जो उन भ्रमित बाबाओं के आशीर्वाद से भी नहीं मिल सकते। मोक्ष भी मिलेगा जो उस बाबा की शरण में नहीं मिलता।

''भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त प्रेत रूपी फौजी बाबा''

चीन देश की सीमा से सटी भारतीय सीमा में नाथुला चौकी भारतीय सेना की है। वहाँ पर ''बाबा मंदिर'' है जिसकी संक्षिप्त सत्य कथा जो वर्तमान में टी.वी. चैनलों व यूट्यूब पर दिखाई जाती है, इस प्रकार है :-

पंजाब प्रान्त का एक हरभजन सिंह नाम का युवक भारतीय सेना में सिपाही भर्ती हुआ। अक्तूबर सन् 1968 में वह नाथुला चौकी पर संतरी की सेवा में रात्रि में तैनात था। वहाँ से वह गायब हो गया। कई दिनों तक खोज की गई। कोई पता नहीं लगा। कुछ दिन बाद वह अपने एक मित्र सैनिक के स्वपन में आया और बोला कि मैं इस कारण से नाले में गिर गया था। मैं खड़ा-खड़ा ड्यूटी दे रहा था, घूम भी रहा था। गुरू का ध्यान भी कर रहा था। अचानक नाले में गिरकर मर गया। मेरी एक यादगार बनवाओ। मैं देश सेवा करता रहूँगा। उस मित्र ने सुबह-सुबह अन्य को स्वपन बताया, परंतु किसी ने ध्यान नहीं दिया। लगातार कई दिन भिन्न-भिन्न रैंक के अधिकारियों को स्वपन दिखाई दिया तथा चीन की ओर से की गई घुसपैठ भी बताई। अधिकारी कुछ सैनिक लेकर वहाँ गए तो बात सच्ची पाई और उस दिन चीनी सेना ने उस चौकी को तबाह कर देना था। अधिकारियों ने फिर भी विशेष महत्व हरभजन सिंह को नहीं दिया। ऐसी शरारत चीनी सेना ने फिर की। संतरी सो रहा था। संतरी को हरभजन सिंह की आत्मा ने जगाया। संतरी नींद में था, फिर सो गया। सैनिक हरभजन सिंह की आत्मा ने कमांडैंट को जगाया। सैल्यूट लगाया और सब बात बताई कि सर! दुश्मन की सेना अति निकट आ चुकी है। संतरी को जगाया था, वह फिर सो गया। सबकी जान को खतरा है। हरभजन सिंह की आवाज में दर्द भरा था। कमांडैंट उठा, सैनिक सर्तक किए, साथ लेकर उस स्थान की ओर चला जो हरभजन सिंह ने बताई थी, सब सत्य मिला। चीनी सेना मात्र पाँच सौ फुट दूर थी, वापिस भगाई। हरभजन सिंह के बताए स्थान पर एक चबूतरा बनाया गया जहाँ बैठकर वह जीवित समय में भक्ति करता था। बाद में उस पर मंदिर बनवाया गया है। सेना ने उसे अपना जीवित सिपाही मान लिया, बकायदा सरकार से मंजूरी ली गई। अन्य सैनिकों की तरह उसे म॑त्यु उपरांत भी जीवित सैनिकों की तरह पूरी तनख्वाह तथा उन्नति समय-समय पर दी गई। उस नाथुला चौकी के सैनिक कहते हैं कि हरभजन सिंह की आत्मा प्रतिदिन आती है, खाना भी खाती है। उसके लिए अलग से कक्ष बनवाया गया है।

प्रतिदिन उसका भोजन उसमें रखा जाता है। ड्रैस भी धोकर प्रैस करके रखी जाती है। जब हरभजन सिंह वार्षिक छुट्टी पर अन्य सैनिकों की तरह घर आता था तो उसके लिए ट्रेन में सीट सरकार की ओर से बुक करवाई जाती। उसके साथ एक सैनिक उसका बिस्तर लेकर चलता। रेल में रिजर्व सीट पर बिस्तर लगाया जाता। उस सीट पर एक अन्य यात्री गलती से सीट पर बैठ गया। उसे अपनी सीट का धोखा लगा। वह पेशाब करके अपनी सीट पर आ रहा था। जब वह हरभजन वाली सीट पर बैठा तो उसे ऐसा लगा कि कोई सीट पर लेटा है। यात्री सैकिण्ड में खड़ा हो गया। तब साथी सैनिक ने उस यात्री को बताया कि यह सीट सैनिक के लिए है। आपकी सीट आगे है। तब सैनिक ने उस यात्री को सब कहानी बताई। अधिक विस्तार न करके बस इतना बता दूँ कि श्री हरभजन सिंह मत्यु के उपरांत भी सेना में अन्य सैनिकों की तरह उन्नति प्राप्त करता हुआ सूबेदार मेजर के रैंक को प्राप्त करके रिटायर हुआ। इस कथा के बताने का उद्देश्य है कि श्री हरभजन सिंह पूर्व जन्म में भी साधक था। जिस कारण से इस जन्म में भी उसकी रूचि परमात्मा में दढ़ थी। भक्ति शक्ति पूरी समाप्त नहीं हुई थी। मत्यु हो गई। मत्यु उपरांत प्रेत योनि मिली। शेष भक्ति की शक्ति से वह अनहोनी करता रहा। अब उसका मंदिर बन गया। भूत की आयु हजार वर्ष तक भी हो जाती है, पहले भी समाप्त हो सकती है। जो कोई उस मंदिर में श्रद्धा से जाएगा, उसको ऐसे ही स्वपन में छोटी-मोटी घटना की जानकारी देता रहेगा। भोला साधक उससे प्रभावित होकर अन्य को भी बताएगा। उसे भी उसी साधना में लगाएगा। मानव जन्म मोक्ष करवाने के लिए प्राप्त होता है। यदि पूर्ण सतगुरू नहीं मिला तो मानव जीवन का कोई लाभ नहीं। व्यर्थ समय व्यतीत किया। अब न मुक्ति हरभजन सिंह की हुई, न उस मंदिर में जाने वाले की होगी। यह परमात्मा का विधान है। यदि हरभजन सिंह नहीं मरता तो फौज की नौकरी पूरी करके पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति की प्रेरणा से साधु-बाबा बनता। यदि सतगुरू पूर्ण नहीं मिलता तो भी उसकी पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति से अन्य व्यक्तियों को ऐसी घटनाओं का ज्ञान स्वपन में करवा देता। तब भी इसकी पूजा होनी थी। लेकिन मुक्ति तो शास्त्र विधि अनुसार पूर्ण गुरू से दीक्षा लेकर ही संभव है जो वर्तमान में मेरे (रामपाल दास) अतिरिक्त विश्व में किसी के पास नहीं है।

राधा स्वामी डेरा ब्यास इस बात का गवाह है कि बाबा जैमल सिंह फौज में सैनिक था। पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति की प्रेरणा से प्रेरित होकर आगरा शहर के श्री शिवदयाल राधास्वामी से मिले, दीक्षा ली। उसके पश्चात् लगभग पच्चीस वर्ष फौज में नौकरी की। फिर रिटायर होकर ब्यास नदी के किनारे बाबा बनकर रहने लगा। करोड़ों लोगों का जीवन नष्ट कर दिया। जिस शिवदयाल जी, आगरा पन्नी गली वाले से पूर्ण गुरू मानकर दीक्षा ली थी, मत्यु के पश्चात् भूत बनकर अपनी चेली बुक्की में प्रवेश हो गया। जब शिवदयाल की मुक्ति नहीं हुई तो जैमल सिंह तथा अन्य राधास्वामी वालों की कैसे होगी?

जिनका अध्यात्म ज्ञान ही गलत है तो उनकी साधना भी गलत है। जो बात मैं आप जी को बता रहा हूँ कि विश्व में मेरे अतिरिक्त किसी के पास यथार्थ अध्यात्म ज्ञान नहीं है और न ही संपूर्ण मोक्ष की साधना है। यह बात अविश्वसनीय महसूस होती है और प्रथम बार सत्संग सुनने वाला समझता है कि यह रामपाल अपनी महिमा बना रहा है। झूठ बोल रहा है। यह कैसे हो सकता है कि विश्व में किसी को यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान नहीं। हजारों गुरू हैं, करोड़ों अनुयाई हैं। वर्तमान में शिक्षित व्यक्ति भी संतों से जुड़े हैं जिनमें IAS, IPS, LLB, HCS, HPS, Engineer, Doctor, BA, MA, PHD, Judge तथा बड़े-बड़े राजनेता भी उनके शिष्य हैं। क्या वे आँखें बंद करके उन संतों के अनुयाई बने हैं? इस विषय में इतना ही कहूँगा कि आप मेरे सत्संगों की DVD आश्रम से ले जाना जो आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा की हैं। सुन तथा समझकर देखें कि सच्चाई क्या है? सत्संग की DVD यूट्यूब पर भी सतलोक आश्रम बरवाला चैनल पर देखी जा सकती हैं। आप हाथ मलते रह जाओगे, मानोगे कि वास्तव में विश्व में किसी के पास यथार्थ अध्यात्म ज्ञान नहीं है। जब ज्ञान ही ठीक नहीं है तो समाधान तो अपने आप ही गलत होता है।

जितने भी अधिकारी व राजपद प्राप्त व्यक्ति हैं, वे पूर्व जन्म में परमात्मा की साधना करते थे। उस भक्ति की शक्ति से उनको कुछ ऐसे अधिकार प्राप्त हैं जिनसे वे लाभ-हानि कर सकते हैं। जो इनका गलत प्रयोग करते हैं तो भक्ति तो क्षीण होती ही है, पाप के भागी भी बनते हैं। जिस कारण से भक्ति की शक्ति इन्वर्टर की बैट्री की तरह समाप्त होने पर सब सुख समाप्त हो जाऐंगे। इसलिए मैं (रामपाल दास) चाहता हूँ कि मानव जाति को परमात्मा के संविधान यानि तत्वज्ञान से परिचित करवाऊँ और मानव जीवन को नष्ट होने से बचाऊँ क्योंकि मुझे संपूर्ण अध्यात्म ज्ञान हो गया है। मुझे परमात्मा का साक्षात्कार हो गया है। आप सब जीव परमात्मा कबीर जी की आत्मा हैं। आप काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) के जाल में फँसे हैं। श्री ब्रह्मा रजगुण, श्री विष्णु सतगुण तथा श्री शिव तमगुण तक को पता नहीं है कि आप सबके साथ धोखा हुआ है। ये तीनों काल ब्रह्म तथा देवी दुर्गा से उत्पन्न इनके पुत्र हैं। फिर भी काल ने इनको भी सत्य से वंचित रखा है। परमात्मा कबीर जी जो सर्व की उत्पत्तिकर्ता हैं, ने स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर बताया है, काल ब्रह्म का पूरा जाल समझाया है। बताया है कि ये तीनों भी मरते हैं। नई पुण्यात्माओं को ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के पद पर रखा जाता है। काल ब्रह्म (जिसने श्री कृष्ण जी में प्रवेश करके गीता का ज्ञान बोला) को चिंता रहती है कि यदि मेरे लोक में रहने वालों को ऊपर की शक्ति यानि पूर्ण परमात्मा का पता लग गया तो सब उसी की भक्ति करके मेरे जाल से निकल जाऐंगे। वास्तव में काल ब्रह्म तो खलनायक व कसाई की भूमिका कर रहा है।

जैसा कि परमात्मा कबीर जी ने संत गरीबदास जी को ऊपर ले जाकर सर्व ब्रह्माण्डों व सर्व प्रभुओं, देवी-देवताओं की स्थिति से परिचित करके पृथ्वी पर शरीर में छोड़ा। फिर संत गरीबदास जी ने परमात्मा का बताया ज्ञान व आँखों देखा

यथार्थ अध्यात्म ज्ञान करवाया। उसको आधार मानकर मैं (रामपाल दास) सत्संग करता हूँ। इसके साथ-साथ परमात्मा कबीर जी ने संत धर्मदास जी (गाँव-बांधवगढ़, प्रान्त-मध्यप्रदेश) को भी संत गरीबदास जी की तरह ऊपर के लोकों में ले जाकर तीन दिन बाद शरीर में प्रवेश करवाया था। उसके पश्चात् धर्मदास जी ने आँखों देखी परमात्मा की स्थिति-शक्ति का वर्णन किया जो ''कबीर सागर'' ग्रन्थ में लिखा है। उस सन् 1398-1518 तक जब कबीर जी जुलाहे की भूमिका करते हुए काशी शहर में रहा करते थे। धर्मदास जी उनके समकालीन थे। जो-जो शंका धर्मदास जी को हुआ करती थी, परमात्मा कबीर जी समाधान करते थे। संत धर्मदास जी लिखा करते थे जो कबीर सागर नाम से ग्रन्थ बना है। उसको भी आधार मानकर सत्संग करता हूँ। जो ज्ञान संत गरीबदास जी तथा धर्मदास जी ने बताया है, उसे सत्य मानता हूँ क्योंकि मैंने इन दोनों संतों की सत्यता की जाँच के लिए अपने हिन्दु धर्म के शास्त्र जैसे चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद), श्रीमद्भगवत गीता, सर्व पुराण जो सँख्या में अठारह हैं, श्रीमद् भागवत, सुधासागर, महाभारत तथा ईसाई धर्म का शास्त्र बाईबल जो तीन पुस्तकों (तौरत, जबूर, इंजिल) को मिलाकर बना है तथा मुसलमान धर्म की पुस्तक कुरआन् शरीफ (मजीद), जैन धर्म का ग्रन्थ तथा जैन धर्म की अन्य पुस्तक ''आओ जैन धर्म को जानें'' तथा सिक्ख धर्म का श्री गुरू ग्रन्थ साहेब आदि-आदि सर्व धर्मग्रन्थों का गहन अध्ययन किया तो पाया कि जो ज्ञान संत गरीबदास जी ने अपने ग्रन्थ में लिखवाया है तथा जो कबीर जी के सानिध्य में संत धर्मदास जी ने कबीर सागर में लिखा है, पूर्ण रूप से मेल करता है।

जो ज्ञान इन सर्व धर्मों के शास्त्रों में नहीं है, वह भी इन दोनों संतों की वाणी में तथा कबीर जी की वाणी में है।

उदाहरण के लिए यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 में कहा है कि परमात्मा के विषय में कोई कहता है कि वह जन्म लेता है (सम्भवात्) कोई कहता है परमात्मा (असम्भवात्) कभी उत्पन्न नहीं होता अर्थात् निराकार है। इसका यथार्थ ज्ञान (धीराणाम्) तत्वज्ञानियों से समझो। इससे सिद्ध है कि वेद ज्ञान सम्पूर्ण नहीं है।

गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा है कि (ब्रह्मणः मुखे) सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान परमात्मा अपने मुख से बोलकर बताता है। उस वाणी में पूर्ण ज्ञान है। उससे पूर्ण मोक्ष होता है, वह तत्वज्ञान है।

गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि उस ज्ञान को तू तत्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ। उनको दण्डवत् प्रणाम करने से कपट छोड़कर प्रश्न करने से तत्वज्ञानी संत तुझे तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

इससे भी सिद्ध है कि गीता ज्ञान भी सम्पूर्ण नहीं है।

कुरान शरीफ की सूरत फुर्कानि (25) की आयत नं. 59 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा कबीर है। उसने छः दिन में सृष्टि की रचना की और सातवें दिन तख्त पर जा विराजा। उसकी खबर किसी बाखबर (तत्वदर्शी संत) से पूछो।

इससे भी सिद्ध है कि कुरान शरीफ का भी ज्ञान अधूरा है।

यहाँ पर स्पष्ट करना चाहूँगा कि जैसे दसवीं कक्षा तक की पाठ्यक्रम की पुस्तकों का ज्ञान गलत नहीं है, परंतु उनमें B.A. तथा M.A. का ज्ञान नहीं है। इसी प्रकार कबीर जी, संत गरीबदास जी तथा धर्मदास जी के अध्यात्म ज्ञान को तो B.A. व M.A. वाला जानो तथा अन्य शास्त्रों का ज्ञान दसवीं तक का जानो।

यहाँ पर यह स्पष्ट करना भी अनिवार्य समझता हूँ कि श्री गुरू ग्रन्थ साहेब में महला पहला की वाणी स्वयं श्री नानक जी की बताई है तथा कबीर जी की वाणी भी गुरू ग्रन्थ साहेब में अंकित हैं जो संत गरीबदास जी तथा संत धर्मदास जी वाली वाणी जितनी सत्य तथा उत्तम हैं। परंतु संपूर्ण ज्ञान उनमें भी नहीं है क्योंकि कुछ वाणी जो नानक साहब जी ने बोली थी व लिखी थी, वे श्री गुरू ग्रन्थ साहेब में अंकित नहीं की गई। उदाहरण के लिए ''प्राण संगली'' एक पवित्र पुस्तक है जिसमें सब वाणी श्री गुरू नानक देव जी की हैं। वे सब वाणी श्री गुरू ग्रन्थ साहेब में नहीं हैं। इसलिए संपूर्ण ज्ञान नहीं है। श्री गुरू नानक जी को भी कबीर परमात्मा मिले थे, उनको भी संत गरीबदास जी तथा संत धर्मदास जी, संत दादू दास जी की तरह ऊपर लेकर गए थे, तीन दिन बाद वापिस शरीर में छोड़ा था। श्री नानक जी का ज्ञान भी सत्य है। संत गरीबदास जी तथा संत धर्मदास जी के ज्ञान का समर्थन है कि पूर्ण परमात्मा कबीर है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश तो तीनों लोक में प्रधान हैं। कबीर जी को सतपुरूष कहते हैं, पारब्रह्म भी कहते हैं। परंतु जैसे संत गरीबदास जी व संत धर्मदास जी ने विस्तारपूर्वक बताया है, उतना विस्तार श्री गुरू नानक जी की वाणी में नहीं है। जितना है, वह B.A तथा M.A वाला ही है।

★ संत धर्मदास जी ने तो परमात्मा कबीर जी के साथ रहकर उनसे वार्ता करके ग्रन्थ कबीर सागर लिखा है, परंतु संत गरीबदास जी ने परमात्मा कबीर जी के सन् 1518 में सतलोक जाने के बाद सन् 1730 में जब वे तेरह साल के हुए, तब दादू पंथी संत गोपाल दास द्वारा लगभग 212 वर्ष पश्चात् लिखवाया था। जब परमात्मा कबीर जी स्वंय पथ्वी पर बाबा जिन्दा के वेश में प्रकट होकर संत गरीबदास जी को ऊपर के लोकों का अवलोकन करवाकर शरीर में छोड़ा था। संत गरीबदास जी ने कबीर परमात्मा जी व संत धर्मदास जी की वार्ता का वर्णन किया है तथा जो-जो लीला कबीर जी ने उस समय (सन् 1398-1518 तक) की थी, वे सब बताई हैं कि कैसे सशरीर सतलोक से आकर काशी शहर के बाहर लहरतारा नामक सरोवर में कमल के फूल पर नवजात शिशु के रूप में प्रकट हुए थे। वहाँ से नीरू-नीमा जुलाहा दंपति उठा ले गए। कंवारी गाय का दूध बालक कबीर ने पीया। स्वामी रामानंद महर्षि को कैसे-कैसे ज्ञान में हराया? स्वामी रामानंद जी को भी कबीर जी ऊपर लेकर गए थे। फिर शरीर में छोड़ा था। स्वामी रामानंद जी ने भी माना है कि कबीर जी! आप पूर्ण परमात्मा हो। कैसे केशव बनजारा बनकर अठारह लाख व्यक्तियों को तीन दिन भोजन-भण्डारा कबीर जी ने करवाया। कैसे-कैसे कबीर जी को सिकंदर लोधी राजा ने गंगा दरिया में डुबोकर मारना चाहा, परंतु वे नहीं मरे।

बंदूक से गोली मारी, तोब के गोले मारे, परंतु कबीर जी नहीं मरे। हाथी से कुचलवाकर मारना चाहा, नहीं मरे। जैसे शिव जी भस्मासुर से डरकर भागे थे, ऐसे कबीर जी नहीं डरे आदि-आदि प्रकरण संत गरीबदास जी ने अपने ग्रन्थ में लिखवाया है। प्रश्न उठेगा कि लगभग दो सौ वर्ष पूर्व की कबीर जी के जीवन की घटनाओं का उल्लेख संत गरीबदास जी ने किया है। उस पर कैसे विश्वास किया जा सकता है?

उत्तर यह है :- जैसे श्री तुलसी दास जी ने लाखों वर्ष पूर्व त्रेतायुग में जन्में श्री रामचन्द्र पुत्र श्री दशरथ की जीवनी कलयुग में बताई। उसे रामचरित्र मानस यानि रामायण नाम दिया है, जिसे पूरा हिन्दु धर्म सत्य मानता है।

अन्य प्रमाण :- श्रीमद्भगवत गीता महाभारत के युद्ध के समय बोली थी जिसे केवल अर्जुन, संजय और धतराष्ट्र ने ही सुना था। लगभग 21 वर्ष बाद वेदब्यास ऋषि जी ने महाभारत ग्रन्थ की रचना की थी जिसमें श्रीमद्भगवत गीता भी उसमें उसी समय लिखी तथा चारों वेद सतयुग में ब्रह्मा जी ने स्वयंभू मनु को बताए। अठारह पुराणों में भी लाखों वर्ष पूर्व की घटनाऐं लिखी हैं जो वेद ब्यास जी ने द्वापर युग के अंत में गीता ग्रन्थ के साथ ही लिखे थे जो आज पूरा हिन्दु समाज (धर्म) सत्य मानता है।

कारण :- जिस किसी महापुरूष की दिव्य दष्टि खुल जाती है, वह भूत, भविष्य तथा वर्तमान के तीनों कालों की बातें जान लेता है। दिव्य दष्टि को ऐसा जानो जैसे दूरदर्शी (दूरबीन) होती है। उसकी रेंज होती है।

श्री वेद ब्यास जी की दिव्य दष्टि परमात्मा कबीर जी ने खोली थी। जैसे दूरबीन की रेंज होती है, उसी प्रकार दिव्य दष्टि की भी रेंज होती है। वेद ब्यास जी की दिव्य दष्टि ब्रह्म द्वारा खोली गई थी जिसकी रेंज संत गरीबदास जी की दिव्य दष्टि से बहुत न्यून थी क्योंकि संत गरीबदास जी की दिव्य दष्टि पूर्ण परमात्मा कबीर जी द्वारा खोली गई थी। दिव्य दष्टि को ज्ञान योग भी कहते हैं। संत गरीबदास जी ने गुरूदेव के अंग की वाणी में कहा है कि :-

गरीब, माया का रस पीय कर, हो गए डामाडोल।
ऐसा सतगुरू हम मिला, ज्ञान योग दिया खोल।।

अर्थात् संत गरीबदास जी ने बताया है कि विश्व के सब प्राणी माया का रस पीकर डामाडोल फिरते हैं यानि जैसे गीता अध्याय 7 श्लोक 12-15 में कहा है कि त्रिगुणमयी माया यानि श्री ब्रह्मा रजगुण, श्री विष्णु सतगुण तथा श्री शिव तमगुण की भक्ति से मिलने वाले क्षणिक संसारिक भोग प्राप्त करके मस्त फिरते हैं। इस त्रिगुणमयी माया के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच हैं, दुषित कर्म करने वाले मूर्ख मेरी (गीता ज्ञान दाता की) यानि ब्रह्म की भक्ति नहीं करते। संत गरीबदास जी ने कहा है कि मुझे ऐसा सतगुरू मिल गया जो स्वंय पूर्ण ब्रह्म है। उसने मेरा ज्ञान योग (दिव्य दष्टि) खोल दिया। इसलिए मैं इस त्रिगुणी माया से ऊपर उठ चुका हूँ। इन देवताओं को इष्ट

रूप में नहीं मानता। मेरा पूर्ण मोक्ष होगा।

इस प्रकार संत गरीबदास जी वाणी को मैं (रामपाल) सत्य मानता हूँ और सर्व ग्रन्थों से भी जाँच करके पेटैंट प्राप्त कर चुका हूँ। अब आप इसकी जाँच करें और मेरे से दीक्षा लेकर अपना मानव जन्म सुधारो, आत्म कल्याण कराओ।

★ जिन श्रद्धालुओं को सम्पूर्ण तत्वज्ञान प्राप्त नहीं है। वे स्वंय निर्णय नहीं कर सकते कि किस संत का ज्ञान शास्त्र प्रमाणित है, किसका शास्त्र के विरूद्ध है? धार्मिक गुरू एक आध्यात्मिक शिक्षक है। हमारे वे ग्रन्थ जो पहले बता चुका हूँ, चारों वेद, श्रीमद्भगवत गीता, पुराण, महाभारत आदि-आदि धार्मिक विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम (Syllabus) है। शिक्षक द्वारा की गई गलती शिक्षक ही शुद्ध कर सकता है। विद्यार्थी निर्णय नहीं ले सकते। वे तो अपने शिक्षक का पूरा सम्मान व विश्वास करते हैं। एक लड़के के पिता जी शिक्षक थे। उसका लड़का अन्य स्कूल में पाचँवी कक्षा में पढ़ता था। एक दिन पिता ने पुत्र से प्रश्न किया कि भारत देश की राजधानी किस शहर में है? लड़के ने उत्तर दिया कि इलाहाबाद। पिता जी ने कहा, गलत। भारत देश की राजधानी नई दिल्ली है। लड़का नहीं माना। कहा कि हमारे अध्यापक जी ने यही बताया है जो सत्य है। अधिक जोर देने से लड़का रोने लगा। नहीं, मेरे मास्टर जी ने ठीक बताया है। पिता जी अगले दिन उस लड़के के स्कूल में गया। उसके अध्यापक को सब बात बताई। तब उस अध्यापक ने भी कहा कि भारत की राजधानी नई दिल्ली है। तब वह बालक माना। इसी प्रकार मैं (रामपाल दास) जो पूर्व संत शिक्षकों की गलती को बता रहा हूँ तो श्रद्धालु मानने को तैयार नहीं होते। उसके लिए मैंने सर्व धर्मगुरूओं को आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा के लिए दो बार आमंत्रित किया और निवेदन किया कि एक अन्तर्राष्ट्रीय टी.वी. चैनल हम बुक करवा देते हैं। आप आओ और चर्चा करो और जो शास्त्रों की सच्चाई है, वह जनता को बताकर एक भक्ति दिशा दी जाए। परंतु कोई नहीं आया। हमने दूसरी विधि अपनाई। साधना टी.वी. चैनल वालों को कुछ अध्यात्म विषय पर प्रश्न लिख दिये और निवेदन किया कि आप सब धर्मगुरूओं से ये प्रश्न पूछो और रिकॉर्डिंग कर लो। हम उनके इन्ट्रव्यू आपके चैनल पर अपने खर्चे से टैलिकॉस्ट करवा देगें। जनता को यथार्थ अध्यात्म ज्ञान मिल जाएगा। पूरे विश्व का मानव आपका सदा आभारी रहेगा। साधना चैनल वालों ने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ली। सर्व धर्मगुरूओं व चारों शंकराचार्यों से प्रश्न करके उनके अध्यात्म ज्ञान को रिकॉर्ड कर लिया। जैसा उनको ज्ञान था, वह बताना पड़ा। मैंने उनके अध्यात्म ज्ञान को धर्मग्रन्थों से तुलना करके झूठा सिद्ध कर दिया जो ''आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा'' नाम से साधना टी.वी. पर कार्यक्रम प्रसारित किया गया। उससे शिक्षित वर्ग को हाथों-हाथ सच्चाई मिल गई। वे श्रद्धालु उन झूठे गुरूओं को त्यागकर मेरे पास आकर यथार्थ भक्ति की दीक्षा लेकर अपना कल्याण करवा रहे हैं। यह आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा Youtube पर ''सतलोक आश्रम बरवाला'' चैनल पर देखी जा सकती है।(संत रामपाल दास जी द्वारा बताये सत्संगों से ज्ञान समाप्त।)

★ विश्लेषण :- उपरोक्त यथार्थ अध्यात्म यानि तत्वज्ञान से स्पष्ट हो गया है कि जो संत रामपाल जी के अतिरिक्त किसी भी मंदिर-मूर्ति या संत-बाबा द्वारा बताई साधना पूजा करते हैं, उनका पूर्ण मोक्ष सम्भव नहीं है। जज साहब ने जिस परम संत पर टिप्पणी की है, पुनः विचार करने की आवश्यकता है। हम जज देशराज जी से ईर्ष्या नहीं करते। हम उनका भला चाहते हैं क्योंकि हम परमात्मा कबीर जी के उपदेश का पालन करने वाले हैं। परमात्मा कबीर जी ने अपनी अमृतवाणी में कहा है कि :-

कबीर जो तोकूं काँटा बोये, ताको बो तू फूल। तोहे फूल के फूल हैं, वाको हैं त्रिशूल।।

जज देशराज जी ने तो अन्याय करके हमारे गुरूदेव जी तथा भक्त भाई-बहनों के लिए काँटे बो दिए। हम आपको ऐसा सत्य ज्ञान देना चाहते हैं जिससे आपका मानव जीवन नष्ट होने से बच सके तथा आप भविष्य में किसी के साथ अन्याय न करें और घोर पाप से बच सकें। एक सच्चे न्यायधीश बनें।

★ एक जज साहब हरियाणा में सेवारत था। वह मनमाने आदेश पारित करता था। अहंकार चरम पर था। सब डरते थे कि इस जज के पास मुकदमा गया है तो न्याय की कम आश है। परमात्मा सब देखता है। उसका एक पुत्र 20 वर्ष की आयु में दुर्घटना से मारा गया। जज साहब टूट गया। जीवन नीरस लगने लगा। परमात्मा सच्चा न्यायधीश है, इस बात का सच्चा अहसास हुआ। अपनी औकात का पता चला। उसके पश्चात् उस श्रीमान् में इतना बदलाव हुआ कि हर कोई हैरान था। परमात्मा से डरकर निर्णय किए। जिस किसी का केस उस जज को लगता था तो वकील भी कह दिया करते कि दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा, न्याय मिलेगा। यदि जज साहेबान को पहले ही तत्वज्ञान (सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान) होता तो प्रारम्भ से ही परमात्मा से डरकर कार्य करता। पुत्र भी जीवित रहता। पाप भी न लगते।

★ हिसार कोर्ट का एक ADJ अत्यंत अन्यायी था। रूपये दो तो न्याय, नहीं तो दण्ड। जिस किसी का केस उस अन्यायी को लगता था, न्याय की आश त्याग देते थे, पहले ही भयभीत हो जाते थे। कानून को जेब में रखता था। मनमाने आदेश करता था। कहता था कि ऊपर जा सकते हो। एक दिन दिसंबर की छुट्टियों के बाद घर से आ रहा था। आते ही तीन फैसले देने थे। अंतिम बहस शेष थी। तीनों केसों में गरीब व्यक्ति थे, झूठे केस बने थे। आते ही सजा करनी थी। तीनों जजमेंट लिखवाकर छुट्टी पर गया था। बहस तो मात्र औपचारिकता करनी थी। उन गरीबों को उस जज के रीडर ने बता दिया था क्योंकि उनमें से दो उसके किसी जानकार के रिश्तेदार थे। जज साहब छुट्टी बिताकर आ रहे थे। कोहरा धुँध बहुत थी। जज ड्राईवर से कह रहा था कि शीघ्र चल। टोहाना के पास दुर्घटना हो गई। केवल वह जज मरा। कम से कम 100 फुट ट्रक में गाड़ी फँसकर घिसटती चली गई। ड्राईवर साईड में गिर जाने से बच गया। परमात्मा सब देखता है। हद पार करते ही लपेट देता है। फिर क्या, उसकी पत्नी विलाप कर रही थी। कोई संतान नहीं थी। आयु

45 वर्ष हो चुकी थी। परमात्मा कबीर जी ने अपनी प्यारी आत्मा संत गरीबदास जी को बताया है कि :-

कबीर, दुर्बल को ना सताईये, जाकि मोटी हाय।
बिना जीव की श्वांस से, लोह भस्म हो जाय।।

★ अर्थात् कबीर जी ने कहा है कि गरीब व दुर्बल व्यक्ति नहीं सताना चाहिए। उसकी आत्मा से निकली हॉय (बद्दुआ) प्रबल होती है। वह हॉय ऐसे नष्ट कर देगी जैसे लोहार कारीगर की मंत पशु की खाल से बनी धौंकनी की श्वांस (हवा) से अहरन का लोहा भी भस्म हो जाता है। मानव तो जीवित है, उसकी श्वांस तो उस धौंकनी की श्वांस से कई गुणा प्रबल होती है। इसलिए परमात्मा से डरकर अपनी ड्यूटी निभानी चाहिए। तीनों व्यक्तियों के केस अन्य जज के पास लगे। उसने तीनों को बरी किया।

★ अब जज देशराज चालिया, अजय पराशर व प्रमोद गोयल के साथ परमात्मा क्या सलूक करते हैं, भविष्य बताएगा। जब तक पूर्व जन्म की बैट्री चल रही है, तब तक तो सब ठीक चलता दिखाई देगा, परंतु पुण्य समाप्त होते ही कहर का दौर अवश्य शुरू होगा। उसका स्वरूप क्या होगा? यह भी आने वाले समय में प्रत्यक्ष हो जाएगा। हम बद्दुआ नहीं दे रहे, हम परमात्मा का विधान बता रहे हैं। हमारे साथ अत्याचार व अन्याय हुआ है। इसलिए आत्मा अप्रत्यक्ष रूप से रो रही है।

★ संत रामपाल जी बार-बार सत्संग में परमात्मा का विधान बताते हैं तथा कथाऐं सुनाकर प्रमाण देते हैं कि :-

➢ आंध्रप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जी हैलिकॉप्टर द्वारा राजधानी से अन्य शहर में किसी जनसभा को संबोधित करने के लिए रवाना हुए। मुख्यमंत्री जी के आगमन का इंतजार हजारों व्यक्ति कर रहे थे। फूलों के हार, उनके स्वागत के लिए सैंकड़ों व्यक्ति लिए बैठे थे। स्कूल बालिकाओं की नाच-गाने की तैयारी थी। सुसज्जित स्टेज बना रखी थी। प्रोग्राम के बाद एक हस्पताल का उद्घाटन करना था। रास्ते में हैलिकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। मुख्यमंत्री जी तथा साथ वाले सब मारे गए। तीन दिन बाद पता चला कि कहाँ हड्डियाँ बिखरी पड़ी हैं। फूलों के हार, नाच-गाने का आनंद, हस्पताल की दीवार पर उद्घाटन का मुख्यमंत्री के नाम का पत्थर धरा-धराया रह गया। कबीर जी ने बताया है कि :-

कबीर कहाँ जन्में कहाँ पाले–पोषे, खूब लडाए लाड।
ना बेरा इस देही के, कहाँ खिंडैंगे हाड।।

★ अर्थात् हे मानव! भक्ति कर ले, परमात्मा से डर ले। मौत को मत भूल। संसार में जीवन का कोई निर्धारित समय नहीं है। कोई स्थाई ठिकाना नहीं है। कहाँ जन्म होता है। माता-पिता पालन करते हैं, प्यार करते हैं। युवा होने पर अपनी समझ से चलता है। परमात्मा व मौत को भूलकर मान-बड़ाई तथा स्वार्थवश अन्याय-अत्याचार करता रहता है। सत्संग न सुनने से मानव जीवन को नष्ट करके पल्ला झाड़कर परमात्मा के दरबार में खाली जाकर खड़ा हो जाता है। पापों की गठरी सिर पर

रखकर ले जाता है। वहाँ कोई नहीं जानता कि पथ्वी पर यह राजा था या रंक। वहाँ तो पुण्य और पाप तथा नाम के जाप की गणना होती है। उस सच्चे दरबार में तो राम नाम का धन देखा जाता है। मुख्यमंत्री जी कहाँ जन्में थे? कहाँ अस्थियाँ बिखर गई? कोई पानी पिलाने वाला भी नहीं था। यदि कुछ समय जीवित भी रहे होंगे तो कोई बचाने वाला नहीं था। जब C.M. पद था तो नखरा-नाज, अहंकार से सड़ रहा था। किसी की बोलने की हिम्मत नहीं थी। एक पलक में वह मिट्टी का पुतला मिट्टी बन गया। मुख्यमंत्री से गधा बनकर खड़ा हो गया।

➢ ऐसे ही एक कर्नाटक राज्य का मुख्यमंत्री हैलिकॉप्टर दुर्घटना में मरा था। सात दिन में वह स्थान मिला था जहाँ दुर्घटनाग्रस्त हैलिकॉप्टर पड़ा था। कुत्ते हड्डियों को घसीट रहे थे। गीदड़ खा रहे थे।

➢ डबवाली शहर जिला-सिरसा (हरियाणा) में एक प्रोपर्टी डीलर था। परिवार में पत्नी, बेटी-बेटा कुल चार सदस्य थे। बेटी दिल्ली के किसी कॉलेज में पढ़ रही थी। छुट्टियों के कारण लड़की घर आई थी। रविवार को लड़की को दिल्ली हॉस्टल में छोड़ने आते समय कुछ खरीददारी करके लाने के उद्देश्य से चारों जने अपनी कार में दिल्ली के लिए चले। डबवाली से चार कि.मी. के लगभग सिरसा रोड़ पर भाखड़ा नहर की बड़ी ब्रांच राजस्थान कनाल है। उनकी कार का संतुलन बिगड़ गया। गाड़ी उस नहर में गिर गई। शाम का समय था। आगे-पीछे कोई गाड़ी नहीं थी। किसी ने भी कार को नहर में गिरते नहीं देखा। दो दिन बाद खोज हुई। सबके मोबाईल बंद आ रहे थे। तीसरे दिन वह गाड़ी राजस्थान में दिखाई दी जहाँ दो नहर बन जाती हैं। उसके पास अच्छी शानदार कीमती कोठी थी, कई प्लॉट थे। बैंक में भी धन था। एक पल में क्या से क्या हो गया, विचार करें तो कलेजा मुँह को आता है। जब वह कार नहर में गिरी तो बच्चे, पिता-माता से लिपटकर रोये होंगे कि बचा लो-बचा लो। माता-पिता भी भय के कारण हॉय मर गए, हॉय मर गए, भगवान बचा ले, ये चिल्ला रहे होंगे क्योंकि कार में पानी घुसने में पाँच-दस मिनट अवश्य लगती हैं। यह कैसी खतरनाक मौत थी? एकदम गिरकर मर जाए तो भी भय का सामना नहीं होता। वे मौत को आते देखकर तड़फकर मरे। कोई बचाने वाला नहीं था। उस धन का क्या बनेगा जिसके इकट्ठा करने में दिन देखी न रात। पुण्य देखा न पाप। भाई देखा न बाप। परमात्मा के सत्संग में जाने का भी समय मानव के पास नहीं होता। जब तक बैट्री चार्ज रहती है तो धरती आकाश एक करके रखता है। जब ऐसी दुर्गति में मरते हैं तो उस समय परमात्मा को याद करते हैं।

★ जिन बच्चों को सुखी बनाने के लिए धन जोड़ने में पूरा जीवन लगा दिया। परमात्मा स्वपन में भी याद नहीं आया। मौत की भूल पड़ गई। उसका परिणाम यह हुआ कि न आप रहे न बच्चे रहे। कबीर जी ने कहा है कि :-

मौत भूल गया बावले, अचरज किया कौन।
ये तन मिट्टी में मिलेगा, ज्यों आटे में लौन।।

कबीर दुःख में सुमरन सब करें, सुख में करे ना कोए।
जे सुख में सुमरन करें, तो दुःख काहे कूँ होए।।
कबीर सुख में सुमरन ना किया, दुःख में किया याद।
कहै कबीर ता दास की, कौन सुनै फरियाद।।

➢ **सन् 2005 में हरियाणा प्रान्त में चण्डीगढ़ में दो कैबिनेट मंत्रियों ने शपथ ग्रहण की :- एक हिसार से ओमप्रकाश जिंदल, दूसरा पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल का सुपुत्र सुरेन्द्र सिंह। ओमप्रकाश जिंदल का अपना हैलिकॉप्टर था। दोनों उसमें सवार होकर दिल्ली को रवाना हुए। आधे घण्टे बाद दोनों दुर्घटना में मर गए, हैलिकॉप्टर क्रैश हो गया।**

★ **कबीर जी समझाते हैं कि :-**

नाम सुमर ले सुकर्म कर ले, कौन जाने कल की? खबर नहीं पल की।।

कबीर जी मानव को समझाते हैं कि मानव जीवन का मूल उद्देश्य परमात्मा की भक्ति करना, अच्छे कर्म करना, दान-धर्म करके मोक्ष प्राप्ति करना है। उसे भूलकर डले ढ़ोने में जीवन नष्ट कर जाता है। एक पल का पता नहीं क्या हो जाएगा। फिर भी विचार नहीं करता। अध्यात्म ज्ञान के अभाव का यह परिणाम होता है।

कबीर जी ने बताया है कि :-

कबीर राम नाम कड़वा लगे, मीठे लागै दाम।
दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम।।

★ **संत रामपाल जी सत्संग में उपरोक्त कथाऐं सुनाया करते हैं तथा एक यह कथा भी वे सुनाते हैं :-**

★ **मेरे पूज्य गुरूदेव स्वामी रामदेवानन्द का आश्रम पंजाब प्रान्त के फिरोजपुर जिले की तहसील-तलवंडी भाई की में है। उनके सतलोक गवन के पश्चात् वहाँ की संगत की प्रार्थना पर मैं प्रत्येक महीने के दूसरे रविवार को सत्संग किया करता था। शेष समय हरियाणा में सत्संग करता था। मई 1997 के दूसरे रविवार का सत्संग होना था। एक सेठ भक्त का रिश्तेदार सपरिवार एक वृद्धा की मृत्यु के बाद शोक व्यक्त करने शुक्रवार को आया था। वह शनिवार को शाम लगभग चार बजे चण्डीगढ़ अपने घर जाने लगा तो सेठ भक्त ने उससे कहा कि आप आज यहीं रूको, कल सत्संग होगा। सुबह 9 बजे तक आप सत्संग सुनकर प्रसाद खाकर जाना। रिश्तेदार ने कहा कि मेरा एक कंपनी से अनुबंध होना है। कंपनी के अधिकारी कल दो बजे चण्डीगढ़ आऐंगे। उस ठेके में मेरे को पाँच लाख का फायदा होना है। मैंने उनके लिए होटल बुक करवा रखा है। उनकी आगवानी के लिए कल होटल में मेरा होना अनिवार्य है। तलवंडी भाई की अन्य संगत ने भी उस रिश्तेदार से निवेदन किया कि रात-रात की बात है। कल 11 बजे के बाद चले जाना। रिश्तेदार ने कहा कि मैंने अन्य संतों के बहुत सत्संग सुने हैं, परंतु आज मेरे पास समय नहीं है। संगत ने कहा है कि आपने ऐसा सत्संग नहीं सुना होगा। एक बार सुन लोगे तो नींद-सी समाप्त हो जाएगी। आँखें खुल जाऐंगी, परंतु रिश्तेदार को**

तो पाँच लाख के अतिरिक्त कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था। उस समय यदि उसे कोई कह देता कि कल दस बजे परमात्मा ने आना है। आप दर्शन करके जाना तो भी वह मना कर देता। परिवार में बेटा-बेटी तथा दो वे पति-पत्नी थे। चारों कार में सवार होकर चल पड़े। अंबाला शहर के पास जी.टी. रोड़ पर बजरी से भरा ट्रक सड़क के मध्य में खराब खड़ा था। पिछले दोनों पहिए निकालकर जैक लगा रखा था। दुर्भाग्यवश पूरी स्पीड से चल रही कार ट्रक के नीचे घुस गई। जैक निकल गया। ट्रक कार पर गिर गया। चारों उसी समय मर गये। अब चाट ले उस पाँच लाख के फायदे को।

कबीर राम नाम कड़वा लगै, मीठे लागे दाम। दुविधा में दोनों गए, माया मिली ना राम।।

★ युद्धिष्ठर पाण्डव से यक्ष ने एक प्रश्न यह भी किया था कि दुनिया में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है? युद्धिष्ठर ने कहा कि हम अन्य को मरता देखते हैं। सब कुछ छोड़कर जा रहा है, परंतु अपने विषय में कभी चिंता नहीं करते कि यह दशा हमारी भी होगी। कुछ शुभ कर लें, पाप से डर लें। कारण यह है कि कबीर अध्यात्म ज्ञान का अभाव जीव के मानव जीवन का नाश है। कबीर जी की यथार्थ अध्यात्म ज्ञान व मोक्ष मंत्र विश्व में मेरे (संत रामपाल जी के) अतिरिक्त किसी के पास नहीं है। यह विश्वास होना कठिन है क्योंकि भ्रमित ज्ञान बताने वाले संत बहुत हैं।

➢ इन सब कथाओं को सुनाने का अभिप्राय यह है कि जो शेष बचे हैं, वे समझते हैं कि हम अभी नहीं मरेंगे। मैं यह बताना चाहता हूँ कि जो मर गए, वे भी यही सोचा करते थे। यह दुःखद घटना किसी के साथ भी घट सकती है। जो भक्ति नहीं करते, वे कोरे पाप साथ लेकर जाएेंगे या भक्ति बिन खाली जाएेंगे। मानव जन्म भी शीघ्र न पाएेंगे। नरक में तथा चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाऐंगे। मैं आप सबको परमात्मा के विधान से परिचित करवाकर घोर कष्ट से बचाना चाहता हूँ। जो भक्ति करते हैं, परंतु शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करते हैं, गीता अध्याय 16 श्लोक 23 के अनुसार कोई उनको कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं मिलेगा। वे साधना करके भी धोखा खाऐंगे। मैं सतर्क कर रहा हूँ कि आप मेरे से दीक्षा लें। पूर्ण मोक्ष मिलेगा। सुख मिलेगा, आध्यात्मिक शक्ति यानि सिद्धि मिलेगी जो मोक्ष के लिए प्रयोग की जाती है। किसी के लाभ-हानि के लिए भक्त प्रयोग नहीं कर सकता और परमगति यानि पूर्ण मोक्ष मिलेगा। वह सनातन परम धाम (शाश्वतम् स्थानम्) मिलेगा जिसके विषय में गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि गीता ज्ञान देने वाले ने अपने से अन्य परमेश्वर की शरण में जाने के लिए कहा है। उस परमेश्वर की कपा से ही जीव परमशांति यानि पूर्ण मोक्ष तथा सनातन परम धाम को प्राप्त करता है। यह मोक्ष वह है जिसका वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में है। गीता ज्ञान देने वाले ने कहा है कि तत्वज्ञान रूपी शस्त्र से अज्ञान को काटकर उसके पश्चात् परमात्मा के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक कभी लौटकर संसार में नहीं आते यानि उनका जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाता है। यह सत्य साधना वर्तमान में मेरे (संत

रामपाल के) पास है, विश्व में किसी के पास नहीं है। सत्य साधना पूर्ण परमात्मा कबीर जी की करने से साधक के पाप समाप्त हो जाते हैं। इसका प्रमाण वेदों (यजुर्वेद अध्याय 8 श्लोक 13) में भी है तथा पूर्ण परमात्मा अपने सत्य साधक की आयु भी बढ़ा देता है। वेद भी गवाह हैं। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 161 मंत्र 2 में कहा है कि यदि साधक की आयु शेष न हो, मत्यु के निकट पहुँच गया हो तो भी मैं उसको मत्यु से छुड़वाकर सौ वर्ष की आयु प्रदान कर दूँगा। उसको प्राप्त भी होऊँगा। इसलिए मेरा निवेदन है कि शीघ्र आऐं और अपनी आत्मा का कल्याण करवाऐं।

➢ एक पंजाब व हरियाणा के गवर्नर साहब श्री सुरेन्द्र नाथ जी थे। उन्होंने सन् 1985 में रिटायरमेंट से छः महीने पहले हिमाचल प्रदेश की पहाड़ियों पर मनोरम स्थान पर तीन करोड़ का प्लॉट मोल लिया। सोचा था कि जीवन का शेष समय उस सुंदर स्थान पर बिताऐंगे। प्लॉट की रजिस्ट्री करवानी थी। हैलिकॉप्टर में तीन करोड़ रूपये (उस समय सौ रूपये का सबसे बड़ा नोट था) लेकर गवर्नर साहब अपनी पत्नी व छोटे बेटे के साथ चण्डीगढ़ से चले। रास्ते में पहाड़ों में हैलिकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। तीनों मर गए। नोट वहीं बिखरते फिरे। उन नोटों को बकरियों ने खाया और थूक दिया। गडरियों ने थैले भर-भरकर ढ़ोए। गवर्नर साहब की सरकारी कोठी की तलाशी ली गई। तहखाने में चालीस करोड़ रूपये मिले जो बिना हिसाब के थे यानि दो नंबर के थे। सब रूपये सरकारी कोष में जमा किए गए। माननीय गवर्नर साहब ने पाप से धन संग्रह करने में कोरे पाप इकट्ठे किए। धन तो यहीं रह गया, सपरिवार विनाश को प्राप्त हुआ और वे पाप साथ ले गया। गवर्नर तो गधा बनेगा और गवर्नरनी गधी बनेगी, यह परमात्मा का विधान है।

★ संत गरीबदास जी ने परमात्मा का विधान बताया है :-

गरीब, मत्यु पीछे तू पशुआ कीजै, गधा बैल बनाय।
छप्पन भोग कहाँ मन बौरे, कुरड़ी चरने जाय।।

अर्थात् जो प्राणी मानव जन्म प्राप्त करके सत्य साधना शास्त्रानुकूल नहीं करते। मत्यु के पश्चात् गधे-बैल आदि पशुओं के जीवन प्राप्त करते हैं। मानव जीवन में मोहन भोजन खाते थे। हलवा, खीर, कचौरी-पकौड़ी तथा कई-कई सब्जी बनाकर खाते थे। छप्पन प्रकार के व्यंजन खाते थे। गधे के जीवन में वह भोजन नहीं मिलता। फिर तो कुरड़ी (कूड़े-कचरे के ढ़ेर) पर चरने यानि भोजन खाने जाएगा। इसलिए समय रहते संभल जाओ।

गरीब, सुखदेव ने चौरासी भुगती, बना पजावै खर वो।
तेरी क्या बुनियाद प्राणी, तूं पैंडा पंथ पकर वो।।

अर्थात् संत गरीबदास जी ने परमात्मा कबीर जी से प्राप्त अध्यात्म ज्ञान में परमात्मा का विधान बताया है कि जो मानव जीवन प्राप्त प्राणी भक्ति करता है, परंतु सत्य साधना शास्त्रविधि अनुसार नहीं करता। उसे भी भक्ति का कोई लाभ नहीं मिलता। सुखदेव ऋषि जी ने अपनी किसी पूर्व जन्म की कथा बताई कि वह

भी भक्ति करके भी खर (गधा) बना था। इसलिए संत गरीबदास जी ने बताया है कि हे भोले मानव! जब शास्त्रविरूद्ध साधना करके सुखदेव जैसे महर्षि भी चौरासी लाख योनियों के कष्ट को प्राप्त हुए यानि खर बने तो तेरी क्या बुनियाद है? इसलिए वह सत्य भक्ति वाला पंथ (मार्ग) पकड़ ले। अपना कल्याण करवा ले। वह वास्तविक भक्ति मार्ग वर्तमान में संत रामपाल दास जी महाराज के अतिरिक्त पृथ्वी पर किसी संत के पास नहीं है। यह जाँच-पड़ताल की जा सकती है।

हम निवेदन करते हैं कि शिक्षित समाज संत रामपाल जी के तत्वज्ञान को पढ़ें। सत्संग की DVD देखें या टी.वी. चैनल साधना पर शाम 07:30 से 08:30 बजे सत्संग देखें या Youtube पर ''सतलोक आश्रम बरवाला'' लिखकर सर्च करें, फिर उस चैनल पर क्लिक करके ''आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा चारों शंकराचार्य बनाम संत रामपाल'' देखें-सुनें, आँखें खुल जाऐंगी। आपका मानव जीवन धन्य हो जाएगा। खुशी होगी। यदि आप नहीं सुधरे तो परमात्मा के दरबार में आप कटघरे में खड़े किए जाओगे। आपसे प्रश्न किया जाएगा कि मुकदमा नं. 429-430/2014 थाना-बरवाला जिला-हिसार, हरियाणा (भारत) में जिन निर्दोषों को तूने सजा सुनाई थी, वे कितने आदमी थे। आप बोलोगे! 23 सरकार। कितनों को सजा दी? सबको सरकार। क्या यह न्याय था? आप कहोगे कि आपका नमक खाया है, क्षमा करो। धर्मराज जो विश्व का प्रधान न्यायधीश है, वह कहेगा कि अब यमदूतों के मुगदर खा। ले जाओ इस अपराधी को। सिर के बाल उड़ा दो, मार-मारकर डाल दो नरक में। वहाँ हम हँस रहे होंगे, आप रो रहे होंगे। कबीर जी ने कहा है :-

कबीर, जब तुम आए जगत में, जगत हँसा तुम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हँसो जग रोये।।

हम जगत से हँसते हुए जाऐंगे। यदि आप नहीं संभले तो रोते हुए जाओगे और जो ऊपर बताया, यह कष्ट भी उठाओगे।

☞ संत रामपाल जी द्वारा अन्य धर्मों की जानकारी दी गई जो इस प्रकार है:-

★ राधा स्वामी पंथ आगरा तथा उसकी शाखा डेरा सच्चा सौदा सिरसा तथा जगमाल वाली, राधास्वामी ब्यास डेरा, दिनोद (भिवानी), राधास्वामी वाली भक्ति को नया नाम ''जयगुरूदेव'' देकर मथुरा में डेरा बना है। ये सब सतलोक व सतपुरूष का राग अलापते रहते हैं। सतलोक में क्या यथार्थ व्यवस्था है। सतपुरूष वास्तव में कैसा है? इनको इस विषय में क-ख का भी पता नहीं है। इनकी साधना कबीर जी द्वारा बताई साधना के विपरित है। जिस कारण से व्यर्थ है। करोड़ों जीवों के अनमोल मानव जीवन को नष्ट करने में लगे हैं। एक निरंकारी पंथ है। उनके ज्ञान का भी कोई सिर-पैर नहीं है। उस पंथ में भी करोड़ों जीव फँसे हैं।

★ निरंकारी पंथ :- इस पंथ की स्थापना सन् 1929 में बाबा बूटा सिंह ने की थी। इनका सिद्धांत है कि परमात्मा निराकार है। यह भी कहते हैं कि हम परमात्मा के दर्शन करवा देते हैं। पहले परमात्मा देखो, फिर हम पर विश्वास करो। इनसे पूछा जाए कि निराकार को कैसे देखा जा सकता है? बरगला रहे हैं। परमात्मा का

दर्शन करवाने के लिए इनके गुरू जी दोनों हाथों की हथेलियों (पंजों) को सामने हवा में एक फुट के अंतर में रोक लेते हैं और कहते हैं कि दोनों पंजों के बीच में जो खाली जगह है, यह परमात्मा मानो यानि परमात्मा निराकार है। इसलिए सर्वव्यापक है। यह परमात्मा का दर्शन हो गया, ऐसे कहते हैं। इनका भक्ति करने का नाम मंत्र है ''तू ही एक निरंकार है, मैं तेरी शरण मैंनु बख्श ले''। इसको बार-बार बोलकर जाप करने से मुक्ति बताते हैं जो शास्त्रों में प्रमाणित न होने से व्यर्थ है। इस निरंकारी पंथ के दूसरे गद्दी वाले बाबा अवतार सिंह जो सन् 1943 से 1962 तक गद्दी पर रहे। तीसरे बाबा गुरूवचन सिंह सन् 1962 से 1980 तक गद्दी पर रहे जिनकी सन् 1980 में हत्या कर दी गई थी। उसके पश्चात् चौथे बाबा हरदेव सिंह जी जो गुरूवचन जी के पुत्र थे, सन् 1980 में गद्दी पर बैठे। सन् 2016 में विदेश में गए थे। वहाँ दुर्घटना में मरे थे। पाँचवीं बाबा हरदेव सिंह की पत्नी सविंदर कौर सन् 2017 में गद्दी पर बैठी जो जुलाई 2018 में कैंसर रोग से मरी। छठी बाबा हरदेव सिंह जी की छोटी बेटी सुदीक्षा सन् 2018 से गद्दी पर है। इस पंथ से किसी का कल्याण संभव नहीं है।

☞ प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी पंथ :- इस पंथ के प्रवर्तक लाला श्री लेखराज जी शर्राफ थे। इस पंथ का मानना है कि शिव बाबा सबका मालिक है तथा शंकर एक साकार देवता है जो तमगुण प्रधान है। शिव बाबा निराकार है। वह किसी अन्य के शरीर में प्रवेश करके अपना कार्य करता है। उसी ने श्री क ष्ण में प्रवेश करके श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान दिया था। उसी ने श्री लेखराज जी के शरीर में प्रवेश करके यह पंथ चलाया है। श्री लेखराज जी बाल-बच्चेदार थे। शर्राफ (सुनार) का कार्य करते थे। शिव बाबा वर्तमान में अधेड़ स्त्री या पुरूष में प्रवेश करता है। जिस अधेड़ आयु के पुरूष में प्रेत की तरह प्रवेश करके ज्ञान बताता है, उसे ब्रह्माकुमार कहते हैं। जिस अधेड़ स्त्री में प्रेतवत प्रवेश करके ज्ञान बोलता है, उसे ब्रह्माकुमारी कहते हैं। अधिकतर इनका बाबा शिव महिलाओं में प्रवेश करके लीला करता है। इसलिए इस पंथ का नाम ब्रह्माकुमारी पंथ पड़ा है। इनका मानना है कि जिसने गीता ज्ञान कहा, वही है शिव बाबा जो इनका इष्ट देव है जो गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में कहता है कि मैं बढ़ा हुआ काल हूँ। अब प्रकट हुआ हूँ। मैं सब सेना का नाश करूँगा। हे अर्जुन! नहीं लड़ेगा तो भी इन सबको मार दूँगा जो गीता अध्याय 4 श्लोक 5 , अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 10 श्लोक 2 में अपनी स्थिति बता रहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। मेरी उत्पत्ति को देवता तथा ऋषिजन भी नहीं जानते क्योंकि ये सब मेरे से ही उत्पन्न हुए हैं। जो अपनी साधना का मंत्र केवल एक ओं (ओम् = ॐ) अक्षर गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में बताता है, उसका अंतिम स्वांस तक स्मरण करने से ॐ नाम के जाप से मिलने वाली परमगति मिलती है।

★ गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अपनी साधना से मिलने वाली गति को अनुत्तम यानि घटिया (Bad) गति यानि मुक्ति कहा है क्योंकि जन्म-मरण गीता ज्ञान

देने वाले शिव बाबा काल का भी होता है। इसलिए इसने गीता अध्याय 18 श्लोक 61-62 में अपने से अन्य परमेश्वर बताया है तथा कहा है कि हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा। परमात्मा की कपा से ही तू परम शान्ति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा। गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वदर्शी संत से तत्वज्ञान मिलने के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर कभी संसार में नहीं आते। मैं उसकी शरण में हूँ। उस परम अक्षर ब्रह्म यानि सच्चिदानन्द घन ब्रह्म के उस परम पद की प्राप्ति का मंत्र गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में बताया है। कहा है कि सच्चिदानन्द घन ब्रह्म यानि परम अक्षर की प्राप्ति का ॐ-तत्-सत् यह तीन नाम के मंत्र का स्मरण है।

★ ब्रह्माकुमारी पंथ के अनुयाई कोई मंत्र जाप नहीं करते। वे केवल काल ब्रह्म (जिसे वे शिव बाबा कहते हैं) के द्वारा अधेड़ महिला में प्रवेश करके बोला ज्ञान लिख लेते हैं, जिसे वे मुरली कहते हैं, उसको पढ़ते हैं। इसी से अपना कल्याण मानते हैं जो शास्त्रविरूद्ध होने से व्यर्थ है जो गीता अध्याय 16 श्लोक 23 में स्पष्ट किया है। इनमें से कुछ अब ॐ शान्ति बोलते हैं। यह इनका जाप मंत्र नहीं है। ये इनका नारा है। इनका ज्ञान बिना सिर-पैर का है जो किसी शास्त्र से मेल नहीं करता।

★ ब्रह्माकुमारी पंथ का ज्ञान इनके शिव बाबा काल ब्रह्म ने मुर्लियों के रूप में अधेड़ महिला ब्रह्माकुमारी में प्रवेश करके बताया है जो इस प्रकार है :-

एक युग 1250 वर्ष का है। कुल चार युग हैं। चारों का कुल समय पाँच हजार (5000) वर्ष का है। इस काल ब्रह्म ने गलती भी की है। काल ब्रह्म ने अगली मुरली में कहा है कि पाँच युग होते हैं। {पाँच युग मानेंगे तो कुल समय पाँच हजार वर्ष से अधिक हो जाएगा क्योंकि इनका एक युग एक हजार दो सौ पचास (1250) वर्षों का है।}

★ अन्य सिद्धांत बताया है :- ये पुनर्जन्म को मानते हैं। कहते हैं कि मानव का अगला जन्म मानव का ही होगा। वह अन्य प्राणियों के शरीर प्राप्त नहीं करेगा। स्त्री का जन्म स्त्री का होगा। पुरूष का जन्म पुरूष यानि नर का ही होगा।

★ चार युग पूरे होने पर यानि पाँच हजार वर्ष पूरे होने के पश्चात् पथ्वी के सब प्राणी नष्ट हो जाऐंगे। शिव बाबा उनको मारकर कल्याण करेगा। फिर से प्रथम युग की शुरूआत होगी। उस समय जो अंतिम युग में जिस नाम से जिस पिता के नाम से, जिस किसी की पत्नी या पति था, जो जिस शहर या गाँव में था, जिस देश में था, जो अंधा था, लंगड़ा, लुला, काना, भैंगा या सुंदर या कुरूप, गोरा या काला था, वह उसका प्रथम युग में वही नाम, वही पिता का नाम, वही गाँव-शहर का नाम, वही पति-पत्नी, उतनी ही संतान, उनका भी वही नाम तथा शरीर की जैसी भी उपरोक्त स्थिति (लंगड़ा-लुला, काना, अपाहिज या सुंदर-स्वस्थ) थी, उसी रूप-स्वरूप में जन्म व जीवन होगा। और घटनाऐं पूर्व के सब युगों में जीवन में घटी थी, वे ही घटेंगी। जो राजा है, राजा बनेगा। धनी है तो धनी होगा। निर्धन है तो निर्धन होगा।

★ ब्रह्माकुमारी पंथ के अनुसार यह अंतिम युग चल रहा है। ये यह भी कहते हैं कि गीता का ज्ञान द्वापर युग में ही दिया था, परंतु ये द्वापर को दूसरा युग मानते हैं यानि सतयुग जो इनके अनुसार 1250 वर्ष का है। इसके पश्चात् द्वापर युग आता है। इनके अनुसार लगभग अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व गीता का ज्ञान दिया गया।

☞ विश्लेषण :- यह उपरोक्त ज्ञान निराधार है। यदि भक्ति करने से भविष्य के जन्मों में भाग्य या शरीर की स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो भक्ति की आवश्यकता ही समाप्त हो जाती है। यदि इस पंथ के व्यक्ति कल्याण के इच्छुक हैं तो इनको पुनः विचार करना होगा। इनके अनुसार गीता का ज्ञान लगभग अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व दिया गया। तो उस समय महाभारत का युद्ध भी हुआ होगा। ईशा मसीह का जन्म वर्तमान से 2018 वर्ष पूर्व हुआ। प्रथम शंकराचार्य जी का जन्म ईशा से 508 वर्ष पूर्व हुआ यानि वर्तमान से 2526 वर्ष पूर्व हुआ। इनके अनुसार तो 2500 वर्ष तो महाभारत वाले कोई भी पात्र नहीं थे। यह इन दोनों महापुरूषों (ईशा मसीह तथा शंकराचार्य जी) का तो लिखित प्रमाण है। इतिहास गवाह है। महाभारत का युद्ध 5500 वर्ष पहले हुआ था। उस समय ईसाई धर्म था ही नहीं। ब्रह्माकुमारी पंथ का ज्ञान बिना सिर-पैर का यानि झूठा है। इस पंथ में भी लाखों श्रद्धालु जुड़े हैं जिनका अनमोल मानव जीवन नष्ट हो रहा है। इनको विचार करना चाहिए।

★ ये उपरोक्त पंथ काल ब्रह्म ने चला रखे हैं जो इसी के जाल में रहेंगे क्योंकि इनकी भक्ति की विधि जो परमात्मा कबीर जी द्वारा बताई गई है, वह नहीं है। अपनी इच्छा से मनमाने नाम जाप कर तथा करवा रहे हैं।

★ संत रामपाल जी ने सब पंथों की पुस्तकों को प्रोजेक्टर पर जनता को सत्संग में दिखाया है। हमने D.V.D व C.D बनाकर Website व Youtube पर अपलोड कर रखी हैं। उनको देखने से तुरंत सत्य-असत्य का निर्णय हो जाता है। जिन्हें देखकर उपरोक्त काल के पंथों को त्यागकर अनेकों व्यक्ति संत रामपाल जी से दीक्षा लेकर अपना तथा अपने परिवार का जीवन धन्य कर रहे हैं।

★ संत रामपाल जी के सत्संगों से :-

''गुरू बिना साधना सफल नहीं होती''

कबीर जी ने यथार्थ अध्यात्म ज्ञान यानि तत्वज्ञान में कहा है कि :-

कबीर, गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दोनों निष्फल हैं, चाहे देखो बेद पुराण।।

अर्थात् गुरू से दीक्षा लिए बिना नाम जाप करना तथा दान करना व्यर्थ है। प्रमाण दिया है कि :-

कबीर, राम कष्ण से कौन बड़ो, उन्हों भी गुरू कीन्ह।
तीन लोक के वे धनी, गुरू आगे आधीन।।1।।
कबीर, गर्भ योगेश्वर गुरू बिना, लाग्या हर की सेव।
कह कबीर बैकुण्ठ से फेर दिया सुखदेव।।2।।

कबीर, राजा जनक गुरू किया, फिर लाग्या हर की सेव।
कह कबीर बैकुण्ठ में चले गए सुखदेव।।3।।

वाणी नं. 1 का भावार्थ :- कबीर परमात्मा जी ने कहा है कि हे हिन्दुओ! आप श्रीराम तथा श्री कष्ण से बड़ा तीन लोक में किसी को नहीं मानते। उन्होंने भी गुरूदेव जी से दीक्षा ली और आजीवन गुरू जी के आगे दण्डवत् प्रणाम करके आधीन रहे। गुरू आज्ञा का पालन किया। फिर आपकी क्या बुनियाद है कि आप बिना गुरू के मूर्ति-मंदिर पूजकर मोक्ष प्राप्त कर लोगे। आप भी पूर्ण गुरू से दीक्षा लेकर शास्त्रों में वर्णित साधना करो जिससे आपका मानव जीवन व्यर्थ न जाए। अन्य प्रमाण दिया है।

वाणी नं. 2 का भावार्थ :- सुखदेव ऋषि को तो माता के गर्भ में ही ज्ञान हो गया था कि भक्ति बिना मानव जीवन व्यर्थ हो जाता है। पूर्व जन्मों की भक्ति की सिद्धि-शक्ति से आकाश में उड़ जाते थे। एक बार बैकुण्ठ में चले गए। विष्णु जी को पता चला तो उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया तथा कहा कि बिना गुरू के व्यक्ति का स्वर्ग में प्रवेश निषेध है। आप पथ्वी पर जाइये। गुरू बनाइए, फिर आइए।

वाणी नं. 3 का भावार्थ :- वह गर्भ योगेश्वर यानि जो माता के गर्भ में ही भक्त बन गया था, परंतु गुरू नहीं किया था। उसने राजा जनक को गुरू बनाया। गुरू जी के द्वारा बताई साधना की। तब सुखदेव जी स्वर्ग में जा सके। इसलिए मानव को चाहिए कि पूर्ण गुरू से दीक्षा लेकर अपना मानव जीवन (स्त्री-पुरूष का) सफल करें।

★ वर्तमान में सत्य साधना तथा तत्वज्ञान मेरे (संत रामपाल के) अतिरिक्त विश्व में किसी के पास नहीं है। यदि विश्वास नहीं है तो Youtube पर Satlok Ashram Barwala चैनल को सर्च करके ज्ञान चर्चा देख लें।

★ हे माननीय जज देशराज जी! आपने बिना जाँच किए ही संत रामपाल जी को अन्य बाबाओं की श्रेणी में मानकर गलत टिप्पणी की है। आप अब भी अपना कल्याण नहीं कराना चाहेगे तो बहुत पछताओगे। नरक में लटकाए जाओगे। कुत्ते-गधे बनकर पथ्वी पर धक्के खाओगे। हमें आपको कर्मों अनुसार होने वाला भविष्य का कष्ट आध्यात्मिक ज्ञान की दष्टि से दिखाई दे रहा है।

★ वर्तमान में आप (जज देशराज जी!) तथा अन्य उच्च अधिकारी, राजनेता, धनी व्यक्ति तथा अन्य मध्यम वर्ग के व्यक्ति संसार की दष्टि में सुखी दिखाई देते हैं तथा भक्त व संत सदा ही जगत के लोगों के विरोध को झेलते रहे हैं। उनका वर्तमान जीवन कष्टमय दिखाई देता है। गीता अध्याय 18 श्लोक 36-37 में कहा है कि भक्तों का वर्तमान जीवन विष के समान कष्टमय होता है, परंतु उनका भविष्य अमत के तुल्य होता है। वे परमात्मा की गोद में ऊपर के अमर लोक में अमर पद प्राप्त करके सदा के लिए सुखी हो जाते हैं तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 38 में उपरोक्त जगत के व्यक्तियों के विषय में कहा है कि उनका वर्तमान जीवन अमत के तुल्य आनंददायक लगता है, परंतु उनका भविष्य विष के तुल्य होता है

क्योंकि वे केवल अपने पूर्व जन्मों के पुण्यों का आनंद ले रहे हैं। सत्य भक्ति नहीं करते। जिस कारण से भविष्य के जन्मों में पशु-पक्षियों के जीवन को प्राप्त करके असंख्यों जन्म कष्ट भोगेंगे।

☞ संत रामपाल दास जी द्वारा बताया अद्वितीय आध्यात्मिक ज्ञान :- संत धर्मदास जी को परमात्मा कबीर जी ने अध्यात्म ज्ञान बताया जो इस प्रकार है :-

★ कबीर जी ने बताया कि हे धर्मदास! यह काल ब्रह्म यानि ज्योति निरंजन का लोक है। इसने अपने खाने के लिए सर्व मानव को जन्म-मत्यु के चक्र में धोखा करके डाल रखा है। मानव का विवेक समाप्त कर रखा है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी तक को भी यथार्थ अध्यात्म ज्ञान नहीं बता रखा है। मैंने काल ब्रह्म की आत्मा में संपूर्ण अध्यात्म ज्ञान सतलोक से ई-मेल किया था और इसे कहा था कि यह ज्ञान मानव को बता ताकि ये स्वलोक वापिस आ सकें और मानव जीवन में भी सत्य साधना करके सुखी जीवन जी सकें। जब काल ब्रह्म ने संपूर्ण वेद ज्ञान पढ़ा तो इसे चिंता बनी कि यदि यह यथार्थ भक्ति विधि व मेरी काल होने की जानकारी प्राणियों को हो गई। मेरे जाल का ज्ञान हो गया तो कोई भी मेरे लोक में नहीं रहेगा। इसलिए काल ब्रह्म ने उस सम्पूर्ण वेद से वह ज्ञान निकालकर शेष वेद ज्ञान अपने बड़े पुत्र ब्रह्मा को दिया। ब्रह्मा जी ने अपनी संतान ऋषियों को दिया। वेदव्यास जी ने उस शेष बचे अधूरे वेदज्ञान को चार भागों में विभाजित करके ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद नाम रखे जो वर्तमान में मानव पढ़ रहा है। इन वेदों में यथार्थ मोक्ष मार्ग नहीं है। चारों वेद मेरी (कबीर जी की) महिमा से भरे हैं। मेरी जानकारी है, परंतु वह अधूरी है। वेदों में मैंने संकेत दिया है कि यथार्थ ज्ञान किसी तत्वदर्शी संत से पूछो। परमात्मा आकाश में सबसे ऊपर के लोक में रहता है। वहाँ से चलकर पथ्वी पर आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनको यथार्थ ज्ञान अपने मुख से वाणी बोलकर बताता है। परमात्मा संपूर्ण अध्यात्म ज्ञान को कवित्व से वर्णन करता है यानि वाणी, दोहे, साखी, चौपाई, शब्द, कविता रूप में बोलकर सुनाता है। जिस कारण से एक प्रसिद्ध कवि की पदवी प्राप्त करता है।

हे धर्मदास! मैं (कबीर जी) वही भूमिका समय-समय पर प्रकट होकर करता हूँ। उसी के तहत अब बालक रूप धारण करके काशी शहर में लहरतारा सरोवर में कमल के फूल पर प्रकट हुआ हूँ। वहाँ से मुझे नीरू जुलाहा उठा लाया था। वेदों का ज्ञान मेरे ऊपर ही खरा उतरता है। परंतु ये हिन्दु धर्मगुरू अपनी रोजी-रोटी के खतरे के कारण जनता को वेदों का सही भेद नहीं बता रहे। कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा। तब मैं अपनी आत्मा को यथार्थ ज्ञान दूँगा। उसको सद्ग्रन्थों को ठीक से समझने की बुद्धि दूँगा। उस समय पूरे विश्व के मानव (स्त्री-पुरूष) शिक्षित होंगे। तब यह यथार्थ अध्यात्म ज्ञान जन-जन तक पहुँचाया जाएगा। (हे देशराज जज साहब जी! संत रामपाल जी वे कबीर जी की आत्मा हैं जिनको यथार्थ अध्यात्म ज्ञान कबीर जी ने दिया है। आप जज हैं। इनके सत्संगों से भी जान सकते हैं।) अब देखें प्रत्यक्ष प्रमाण वेदों में कि परमात्मा कैसी लीला

करता है तथा वेद अनुसार कौन है वह परमात्मा?

★ प्रमाण :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 26-27 में, सूक्त 82 के मंत्र 1-2, सूक्त 54 मंत्र 3, सूक्त 96 मंत्र 16-20, सूक्त 94 मंत्र 1, सूक्त 95 मंत्र 2 में परमात्मा की जानकारी है। पढ़ें विस्तृत उल्लेख :-

''पूर्ण परमात्मा अपने वास्तविक ज्ञान को स्वयं ही ठीक-ठीक बताता है''

☞ प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 16 से 18 :-

★ ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 16 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा के वास्तविक नाम का ज्ञान कराऐं। इसी का बोध मंत्र 17-18 में विशेष विवरण से कहा है तथा जहाँ पूर्ण परमात्मा रहता है, उस स्थान का वर्णन किया है।

''पवित्र वेदों में कविर्देव (कबीर परमेश्वर) का प्रमाण''

कविर्देव अपने ज्ञान का संदेशवाहक बनकर स्वयं ही आता है तथा अपना स्वस्थ ज्ञान (वास्तविक तत्वज्ञान) स्वयं ही कराता है।

★ स्वयं कविर्देव (कबीर परमेश्वर) जी ने अपनी अमृतवाणी में कहा है :-

(कबीर सागर के अध्याय ''अगम निगम बोध'' पृष्ठ 12 पर)

बेद मेरा भेद है, मैं ना बेदन के मांहीं।
जौन बेद से मैं मिलूं, वह बेद जानते नांहीं।

शब्द :- अविगत से चल आए, कोई मेरा भेद मर्म नहीं पाया। (टेक)
न मेरा जन्म न गर्भ बसेरा, बालक हो दिखलाया।
काशी नगर जल कमल पर डेरा, वहाँ जुलाहे ने पाया।।
मात–पिता मेरे कुछ नाहीं, ना मेरे घर दासी(पत्नी)।
जुलहा का सुत आन कहाया, जगत करें मेरी हाँसी।।
पाँच तत्व का धड़ नहीं मेरा, जानुं ज्ञान अपारा।
सत्य स्वरूपी (वास्तविक) नाम साहेब(पूर्ण प्रभु) का सोई नाम हमारा।।
अधर द्वीप (ऊपर सत्यलोक में) गगन गुफा में तहां निज वस्तु सारा।
ज्योत स्वरूपी अलख निरंजन (ब्रह्म) भी धरता ध्यान हमारा।।
हाड़ चाम लहु ना मेरे कोई जाने सत्यनाम उपासी।
तारन तरन अभय पद दाता, मैं हूँ कबीर अविनाशी।।

★ उपरोक्त शब्द में कबीर परमेश्वर कह रहे हैं कि न तो मेरी कोई पत्नी है, न ही मेरा पाँच तत्व का (हाड-चाम, लहू अर्थात् नाड़ियों के जोड़-जुगाड़ वाली काया) शरीर है, मैं स्वयंभू हूँ तथा काशी के लहरतारा नामक तालाब के जल में कमल के फूल पर स्वयं प्रकट होकर बालक रूप बनाया था। वहाँ से मुझे नीरू नामक जुलाहा उठा कर ले गया था। जो वास्तविक नाम परमेश्वर का अर्थात् मेरा है(वेदों में कविर्देव, गुरु ग्रन्थ साहेब में हक्का कबीर तथा कुर्आन शरीफ में अल्लाह कबीरन्) वही नाम मेरा है, मैं ऊपर ऋतधाम में रहता हूँ तथा आप का भगवान

ज्योति निरंजन (ब्रह्म) भी मेरी पूजा करता है।

कबीर सागर अध्याय ”ज्ञान बोध“ (बोध सागर) :-

पष्ठ 29 -- नहीं बाप ना माता जाए, अविगत से हम चल आए।
कल युग में कांशी चल आए, जब हमरे तुम दर्शन पाए।।

पष्ठ 36 -- भग की राह हम नहीं आए, जन्म मरण में नहीं समाए।
त्रिगुण पांच तत्व हमरे नांही, इच्छा रूपी देह हम आहीं।।

प्रमाण - 1. पवित्र यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25 :-

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः।।25।।

समिद्धः–अद्य–मनुषः–दुरोणे–देवः–देवान्–यज्–असि– जात–वेदः–आ– च–वह– मित्रमहः–चिकित्वान्–त्वम्–दूतः– कविर्–असि–प्रचेताः।

अनुवाद – (अद्य) आज अर्थात् वर्तमान में (दुरोणे) शरीर रूप महल में दुराचार पूर्वक (मनुषः) झूठी पूजा में लीन मननशील व्यक्तियों को (समिद्धः) लगाई हुई आग अर्थात् शास्त्र विधि रहित वर्तमान पूजा जो हानिकारक होती है, अग्नि जला कर भस्म कर देती है ऐसे साधक का जीवन शास्त्रविरूध साधना नष्ट कर देती है। उसके स्थान पर (देवान्) देवताओं के (देवः) देवता (जातवेदः) पूर्ण परमात्मा सतपुरुष की वास्तविक (यज्) पूजा (असि) है। (आ) दयालु , (मित्रमहः) जीव का वास्तविक साथी पूर्ण परमात्मा के (चिकित्वान्) स्वस्थ ज्ञान अर्थात् यथार्थ भक्ति को (दूतः) संदेशवाहक रूप में (वह) लेकर आने वाला (च) तथा (प्रचेताः) बोध कराने वाला (त्वम्) आप (कविर्) कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर (असि) है।

भावार्थ :- जिस समय भक्त समाज को शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण (पूजा) कराया जा रहा होता है। उस समय कविर्देव (कबीर परमेश्वर) तत्व ज्ञान को प्रकट करते हैं।

जिन-जिन पुण्यात्माओं ने परमात्मा को प्राप्त किया उन्होंने बताया कि कुल का मालिक एक है। वह मानव सदश तेजोमय शरीर युक्त है। जिसके एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ सूर्य तथा करोड़ चन्द्रमाओं की रोशनी से भी अधिक है। उसी ने नाना रूप बनाए हैं। परमेश्वर का वास्तविक नाम अपनी-अपनी भाषाओं में कविर्देव (वेदों में संस्कत भाषा में) तथा हक्का कबीर (श्री गुरु ग्रन्थ साहेब में पष्ठ नं. 721 पर क्षेत्रीय भाषा में) तथा सत् कबीर (श्री धर्मदास जी की वाणी में क्षेत्रीय भाषा में) तथा बन्दी छोड़ कबीर (सन्त गरीबदास जी के सद्ग्रन्थ में क्षेत्रीय भाषा में) कबीरा, कबीरन् व खबीरा या खबीरन् (श्री कुरान शरीफ़ सूरत फुर्कानि नं. 25, आयत नं. 19, 21, 52, 58, 59 में क्षेत्रीय अरबी भाषा में)। इसी पूर्ण परमात्मा के उपमात्मक नाम अनामी पुरुष, अगम पुरुष, अलख पुरुष, सतपुरुष, अकाल मूर्ति, शब्द स्वरूपी राम, पूर्ण ब्रह्म, परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं, जैसे देश के प्रधानमंत्री का वास्तविक शरीर का नाम कुछ और होता है तथा उपमात्मक नाम प्रधान मंत्री जी, प्राइम मिनिस्टर जी अलग होता है। जैसे भारत देश का प्रधानमंत्री जी अपने पास

गृह विभाग रख लेता है। जब वह उस विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करता है तो वहाँ गृहमंत्री की भूमिका करता है तथा अपना पद भी गृहमन्त्री लिखता है, हस्ताक्षर वही होते हैं। इसी प्रकार ईश्वरीय सत्ता को समझना है।

जिन सन्तों व ऋषियों को परमात्मा प्राप्ति नहीं हुई, उन्होंने अपना अन्तिम अनुभव बताया है कि प्रभु का केवल प्रकाश देखा जा सकता है, प्रभु दिखाई नहीं देता क्योंकि उसका कोई आकार नहीं है तथा शरीर में धुन सुनना आदि प्रभु भक्ति की उपलब्धि है।

आओ विचार करें - जैसे कोई अंधा अन्य अंधों में अपने आपको आँखों वाला सिद्ध किए बैठा हो और कहता है कि रात्री में चन्द्रमा की रोशनी बहुत सुहावनी मन भावनी होती है, मैं देखता हूँ। अन्य अन्धे शिष्यों ने पूछा कि गुरु जी चन्द्रमा कैसा होता है। चतुर अन्धे ने उत्तर दिया कि चन्द्रमा तो निराकार है वह दिखाई थोड़े ही दे सकता है। कोई कहे सूर्य निराकार है वह दिखाई नहीं देता रवि स्वप्रकाशित है इसलिए उसका केवल प्रकाश दिखाई देता है। गुरु जी के बताये अनुसार शिष्य 2½ घण्टे सुबह तथा 2½ घण्टे शाम आकाश में देखते हैं। परन्तु कुछ दिखाई नहीं देता। स्वयं ही विचार विमर्श करते हैं कि गुरु जी तो सही कह रहे हैं, हमारी साधना पूरी 2½ घण्टे सुबह 2½ घण्टे शाम नहीं हो पाती। इसलिए हमें सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रकाश दिखाई नहीं दे रहा। चतुर गुरु जी की व्याख्या पर आधारित होकर उस चतुर अन्धे की (ज्ञानहीन) व्याख्या के प्रचारक करोड़ों अंधे (ज्ञानहीन) हो चुके हों। फिर उन्हें आँखों वाला (तत्वदर्शी सन्त) बताए कि सूर्य आकार में है और उसी से प्रकाश निकल रहा है। इसी प्रकार चन्द्रमा से प्रकाश निकल रहा है नेत्रहीनों! चन्द्रमा के बिना रात्री में प्रकाश कैसे हो सकता है? जैसे कोई कहे कि ट्यूब लाईट देखी, फिर कोई पूछे कि ट्यूब कैसी होती है जिसकी आपने रोशनी देखी है? उत्तर मिले कि ट्यूब तो निराकार होने के कारण दिखाई नहीं देती। केवल प्रकाश देखा जा सकता है। विचार करें :- ट्यूब बिना प्रकाश कैसा?

यदि कोई कहे कि हीरा स्वप्रकाशित होता है। फिर यह भी कहे कि हीरे का केवल प्रकाश देखा जा सकता है, क्योंकि हीरा तो निराकार है, वह दिखाई थोड़े ही देता है, तो वह व्यक्ति हीरे से परिचित नहीं है। फोकट जौहरी बना है। जो परमात्मा को निराकार कहते हैं तथा केवल प्रकाश देखना तथा धुन सुनना ही प्रभु प्राप्ति मानते हैं वे पूर्ण रूप से प्रभु तथा भक्ति से अपरिचित हैं। जब उनसे प्रार्थना की कि कुछ नहीं देखा है तुमने, अपने अनुयाइयों को भ्रमित करके दोषी हो रहे हो। न तो आपके गुरुदेव के तत्वज्ञान रूपी नेत्र हैं और न ही आपको। इसलिए दुनियाँ को भ्रमित मत करो। इस बात पर सर्व अज्ञान रूपी नेत्रों के अन्धों ने लट्ठ उठा लिए कि हम तो झूठे, तूं एक सच्चा। आज वही स्थिति संत रामपाल जी महाराज के साथ है।

इस विवाद का निर्णय कैसे हो कि किस सन्त के विचार सही हैं किसके गलत हैं? मान लिजिए जैसे किसी अपराध के विषय में पाँच वकील अपना-अपना विचार

व्यक्त कर रहे हैं। एक कहे कि इस अपराध पर संविधान की धारा 301 लगेगी, दूसरा कहे 302, तीसरा कहे 304, चौथा कहे 306 तथा पाँचवां वकील 307 को सही बताए।

ये पाँचों ठीक नहीं हो सकते। केवल एक ही ठीक हो सकता है यदि उसकी व्याख्या अपने देश के पवित्र संविधान से मिलती है। यदि उसकी व्याख्या भी संविधान के विपरीत है तो पाँचों वकील गलत हैं। इसका निर्णय देश का पवित्र संविधान करेगा जो सर्व को मान्य होता है। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न विचार धाराओं में तथा साधनाओं में से कौन-सी शास्त्र अनुकूल है या कौन-सी शास्त्र विरुद्ध है? इसका निर्णय पवित्र सद्ग्रन्थ ही करेंगे, जो सर्व को मान्य होना चाहिए (यही प्रमाण पवित्र श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में) कि ''जो शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करते हैं उनको न तो सुख प्राप्त होता है न सिद्धी तथा न उनकी गति होती है अर्थात् व्यर्थ।

''तत्व-ज्ञानहीन भक्त से ज्ञान चर्चा''

➢ प्रश्न भ्रमित भक्त का :- परमेश्वर निराकार है, तुम साकार किस आधार से कहते हो, यदि साकार है तो किस आकार में हैं ? पशु, पक्षी या मनुष्य रूप में या कोई पत्थर है परमात्मा ?

➢ उत्तर संत रामपाल जी महाराज का :- मैं परमेश्वर को वेदों के आधार से साकार मानता हूँ तथा उन परम सन्तों के अनुभव की वाणी के आधार से साकार मानता हूँ जिन्होंने परमात्मा का साक्षात्कार किया है। इसके साथ-2 तत्वज्ञान के आधार से व गुरू देव द्वारा प्राप्त दीक्षा मन्त्रों की साधना से जाना तथा देखा परमेश्वर साकार है तथा नराकार हैं। महर्षि दयानन्द तथा दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित कुछ वेद मन्त्रों में भी यह स्पष्ट है कि परमेश्वर एक देशीय तथा राजा के समान दर्शनीय है अर्थात् नराकार है। परमेश्वर ऊपर तीसरे मुक्ति धाम में रहता है, वहाँ से गति करके अर्थात् चल कर आता है और वरणीय पुरूष अर्थात् श्रेष्ठ आत्मा, जो दृढ़ भक्त हैं। उनको आकर परमात्मा मिलता है। उन्हें तत्वज्ञान का उपदेश सुनाता है। जिसका प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26-27,ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 16 से 20, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8-9 मैं हैं। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मंत्र 1 में स्पष्ट किया है कि परमेश्वर पृथ्वी लोक पर कवियों की तरह भूमिका करता हुआ, विचरण करता है (कवियन् व्रजम्) और भी अनेक वेद मन्त्रों में प्रमाण है कि परमेश्वर साकार नराकार है, जिन वेद मन्त्रों में महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों ने अर्थों के अनर्थ कर रखें हैं। इस पुस्तक में आपको उन मन्त्रों की फोटो कॉपिया भी पढ़ने को मिलेंगी जो महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों के द्वारा अनुवादित हैं, जिनमें वे सच्चाई को नहीं छुपा सके। उन्होंने वेदों के उन मन्त्रों का यथार्थ अनुवाद कर दिया। इसे परमेश्वर की कृपा ही मानेंगे कि उन्होंने आंख मिचौलि करके वेदों की सच्चाई को प्रकट रखा। आप महर्षि दयानन्द तथा दयानन्द के भक्तों द्वारा किए

गये वेद मन्त्रों के अनुवाद की फोटो कापी भी पढ़ेंगे। इससे स्वतः निर्णय हो जाएगा कि वास्तविकता क्या है?

संत रामपाल दास जी महाराज ने बताया कि मेरे पूज्य इष्ट देव कबीर परमेश्वर जी सन् 1398 (वि. संवत् 1455 ज्येष्ठ शुदी पूर्णमासी) को सत्यलोक से अर्थात् तीसरे मुक्ति धाम से चल कर आए। अपनी अच्छी आत्माओं, दृढ़ भक्तों (आदरणीय धर्मदास जी, आदरणीय मलूक दास जी, आदरणीय दादू दास जी, आदरणीय नानक देव जी, आदरणीय गरीब दास जी गाँव छुड़ानी जिला झज्जर (हरियाणा) व आदरणीय घीसा दास जी गाँव खेखड़ा, जिला मेरठ (उत्तर प्रदेश) को मिले।

परम पूज्य कबीर जी जो काशी शहर में जुलाहा रूप में लीला किया करते थे। वे स्वयं परमेश्वर हैं। उन्होंने ही वे लीलाऐं की हैं, जो वेद बताते हैं कि परमेश्वर ऐसी लीलाऐं करता है। इसी प्रकार लीला करने, परमेश्वर प्रत्येक युग में आते हैं। भक्तों को उपदेश देते हैं तथा यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान को अपनी अमृत वाणी (सच्चिदानन्द घन की वाणी अर्थात् कर्विवाणी) में कहते हैं। इसी वाणी को 'सूक्ष्म वेद' कहते हैं। जिस का विवरण श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 4 श्लोक 32, 34 में भी है। गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में अन्य अनुवाद कर्त्ताओं ने अर्थों का अनर्थ किया है। मूल पाठ गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में ''ब्रह्मणः मुखे'' शब्द है जिसका अनुवाद ''वेद की वाणी'' किया है। यहाँ 'ब्रह्मण' का अर्थ उचित नहीं किया है। कृप्या देखें उन्हीं अनुवाद कर्त्ताओं द्वारा गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ब्रह्मणः'' का अर्थ ''सच्चिदानन्द घन ब्रह्म'' जो उचित अनुवाद है। यहाँ गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का ज्ञान ''ब्रह्मणः मुखे'' सच्चिदानन्द घन ब्रह्म ने अर्थात् परमेश्वर ने अपने मुख कमल से उच्चारण करके कहा है। वह 'सच्चिदानन्द घन' की वाणी है जिसमें परमेश्वर ने यज्ञों व धार्मिक अनुष्ठानों को विस्तार से कहा हैं। यह ज्ञान कबीर परमेश्वर जी ने सन् 1398 संवत् 1455 ज्येष्ठ पूर्णमासी से सन् 1518 (माघ शुदी एकादशी सं. 1575) तक अतिथि की तरह रहकर के अपने मुख कमल से बोला था। जिसे ''कबीर वाणी'' कहते हैं। इसी को तत्वज्ञान तथा सूक्ष्मवेद भी कहते हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा था :-

हम ही अलख अल्लाह है, कुतुब गोस और पीर।
मैं हूँ खालिक धणी, मेरा नाम कबीर।।
सोलह संख पर हमारा तकिया, गगन मण्डल के जिन्दा।
हुक्म हिसाबी हम चल आए, काटन यम का फंदा।।

महर्षि रामानन्द जी से कबीर परमेश्वर जी ने कहा था :-

ए स्वामी सृष्टा मैं सृष्टि हमरे तीर। गरीब, दास अधर बसूं, अबिगत सत् कबीर।।

कबीर परमेश्वर ने आदरणीय धर्मदास जी को तत्वज्ञान बताया :-

धर्मदास यह जग बौराना, कोई ना जाने पद निर्वाणा।

यही कारण में कथा पसारा, इन से कहिए वह राम नियारा।।
अब मैं तुमसे कहूँ चिताई, त्रिदेवन की उत्पत्ति भाई।
माँ अष्टंगी पिता निंरजन, ये जम दारूण वंशन अंजन।।
निरंजन किन्हें भोग विलासा, दुर्गा को रही तब आशा।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा, विष्णु, शिव नाम धराए।।
तीनों देव अविनाशी नाहीं, जन्में मरें आवें जाहीं।
तीन देव की जो करते भक्ति, उनकी कबहु ना होवे मुक्ति।।
बेद मेरा भेद है, मैं ना मिलूं बेदन के माहीं।
जौण बेद से मैं मिलूं, उसे बेद जानते नाहीं।।

उपरोक्त सच्चिदानन्द घन ब्रह्म (कबीर परमेश्वर) की वाणी है। जिसमें परमेश्वर ने अपने मुख कमल से कहा है कि हे धर्मदास ! (जो उन श्रेष्ठ आत्माओं में से एक हैं, जिनको परमेश्वर मिले थे) यह सर्व संसार मोक्ष मार्ग से अपरिचित है, मैं पूर्ण परमात्मा हूँ। मैंने सर्व संष्टि की रचना, अपने वचन से की है। चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) मेरी ही महिमा का गुणगान कर रहे हैं। परन्तु मेरे परम पद को प्राप्त करने का भक्ति मार्ग इन चारों वेदों में नहीं है। जिस वेद से (कबीर वाणी जिसे 'सुक्ष्म वेद' कहते हैं उससे) अर्थात् सुक्ष्म वेद से मेरी प्राप्ति हो सकती है। वह भक्ति विधि इन वेदों में नहीं है। हे धर्मदास! और बताता हूँ कि जिन तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी) को आप अजर-अमर अविनाशी-अजन्मा कहते हो। वे तीनों नाशवान हैं, इनका जन्म-मत्यु होता है। ज्योति निरंजन अर्थात् क्षर ब्रह्म इन तीनों का पिता है तथा दुर्गा इनकी माता है। इन तीनों देवताओं की भक्ति करने वालों का कदापि मोक्ष नहीं हो सकता।

पुण्यात्माओं! उस समय महर्षि दयानन्द जैसे गुरू पद प्राप्त व्यक्तियों ने परमेश्वर कबीर जी का घोर विरोध किया था तथा जनता को बरगलाया था कि कबीर अशिक्षित है, यह संस्कत नहीं पढ़ा है, यह सब झूठ कह रहा है कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी नाशवान है, यह झूठ कह रहा है कि वेदों में परमात्मा साकार है। यह जुलाहा (धाणक) अपने आप को परमात्मा कह रहा है। परमेश्वर तो निराकार है। वह विराट परमात्मा कण-कण में विद्यमान है। यह कबीर क्या जाने वेदों, श्रीमद् भगवत् गीता तथा पुराणों के विषय में? इस की बातों में न आना।

उस समय उन अज्ञानियों का दाव लग गया क्योंकि जनता शिक्षित नहीं थी। अज्ञान के आधार से दयानन्द जैसे वेद ज्ञानहीन प्राणी केवल एक संस्कत भाषा को पढ़ कर महर्षि पद पर विराजमान हो गए। दयानन्द शास्त्री तो हो सकता है महर्षि नहीं। यही भाषा अब आप दयानन्द भक्त आर्यसमाजी बोल रहे हो कि रामपाल संस्कत भाषा नहीं जानता है, यह क्या जाने वेदों के गूढ़ रहस्यों को। इसी बात से वर्तमान शिक्षित समाज भी भ्रम में है कि वेद संस्कत भाषा में हैं तथा रामपाल जी संस्कत नहीं जानता, इसीलिए वेदों को नहीं समझ पा रहा है और परमात्मा को साकार कह रहा है। महर्षि दयानन्द ने तो वेदों के आधार से ''सत्यार्थ प्रकाश''

की रचना की है। यह धारणा अभी तक बनी हुई है। जब तक जनता वेदों की सच्चाई से परिचित नहीं होगी तब तक इस शास्त्री दयानन्द को महर्षि मानते रहेंगे। मुझ दास का प्रयत्न है कि वेदों की सच्चाई जनता के रूबरू करूं। जिससे अज्ञान का नाश और ज्ञान का प्रकाश हो सके। इसलिए ''महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों द्वारा किए वेदों के अनुवाद जनता को दिखाता हूँ कि परमेश्वर के निराकार होने का शोर मचाने वालों के द्वारा किए, अनुवादों में ही, परमेश्वर साकार लिखा है। ''सत्यार्थ प्रकाश'' के विवेचन से भी परमेश्वर साकार सिद्ध होता है। निराकार परमेश्वर कहने वालों अर्थात् महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों के कर कमलों से किए अनुवाद में साकार-नराकार परमेश्वर के प्रमाण प्रस्तुत हैं उन्हीं के अनुवाद की फोटोकापियाँ।

➢ प्रश्न भ्रमित भक्त का :- परमात्मा को साकार मानें तो उसका शरीर सिद्ध हुआ, शरीर सिद्ध हुआ तो उसको उत्पन्न करने वाला कोई और होगा, यदि परमात्मा को साकार मानें तो वह सर्वव्यापक नहीं हो सकता तथा अन्तर्यामी भी नहीं हो सकता। यदि यह माने कि परमेश्वर ने अपना शरीर आप बना लिया तो इससे पहले परमात्मा निराकार था। यह सत्य है जो महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि परमेश्वर निराकार है, यही वेदों में प्रमाण है कि परमेश्वर निराकार है। हम वेदों को सत्य मानते हैं।

➢ उत्तर संत रामपाल जी महाराज :- विचारणीय विषय है कि जैसे गिरगिट (करेलिया) एक छिपकली जैसा जानवर होता है। वह अपना रंग रूप बदल लेता है तो क्या परमात्मा उस करेलिये से भी गया गुजरा है, जो उसी परमेश्वर द्वारा बनाया गया है। परमेश्वर समर्थ है। वह एक वचन से सर्व ब्रह्मण्डों को उत्पन्न कर देता है। फिर नियम बना देता है यह सर्व सष्टि उस परमेश्वर के बनाए विद्यान अनुसार बनती बिगड़ती रहती है। परमात्मा अन्य सर्व प्राणियों के शरीर बनाता है तो वह अपना शरीर भी बना सकता है। जैसे दर्जी (Tailor) अन्य के वस्त्र बनाता है तो वह अपने भी बना सकता है। जो बात वेदों में प्रमाणित है तो उस को आप के न मानने से अभिप्राय यही होगा की आप सत्य अनुगामी नहीं है मन मुखी तथा हठी व्यक्ति हैं। यह देखें ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18-19-20, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8-9 जो दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है तथा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधी सभा दिल्ली से तथा श्री वेदभिक्षु आर्यसमाज मन्दिर करोल बाग, पो. मुखमेल पुर, इब्राहिम नगर, दिल्ली से प्रकाशित है।

दयानन्द के भक्त कहते रहे हैं कि संत रामपाल दास जी महाराज झूठ बोलता है कह रहा है कि वेदों में परमात्मा साकार बताया है। अब आप अपनी आँखों से पढ़ें वेदों में परमेश्वर साकार है नराकार हैं के ढेर सारे प्रमाण। कबीर परमेश्वर कहा करते :-

निरंजन धन तेरा दरबार, जहां पर तनिक न न्याय विचार।

साच्चों को तो झूठा बतावें, इन झूठों का ऐतबार।।

❑ **परमेश्वर कविर्देव (कबिर परमेश्वर) अपने रूप को सरल करके अपने लोक से आता है। अपने उपासक के विघ्नों को नाश करते हैं। अच्छी आत्मा को मिलते हैं।**

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26

इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति ॥२६॥

पदार्थः—(**यज्वे**) यज्ञ करने वाले यजमानों के लिए परमात्मा (**विश्वानि सुपथानि**) सब रास्तों को (**कृण्वन्**) सुगम करता हुआ (**मृधः**) उनके विघ्नों को (**अतिगाहते**) मर्द्दन करता है और (**पुनानः**) उनको पवित्र करता हुआ और (**निर्निजं**) अपने रूप को (**गाः कृण्वानः**) सरल करता हुआ (**हर्य्यतः**) वह कान्तिमय परमात्मा (**कविः**) सर्वज्ञ (**अत्योन**) विद्युत् के समान (**क्रीळन्**) क्रीड़ा करता हुआ (**वारं**) वरणीय पुरुष को (**पर्य्यर्षति**) प्राप्त होता है ॥२६॥

यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26 की फोटो कापी है। महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। ''परमात्मा भक्ति करने वाले भक्तों के सर्व विघ्न नाश करता है। अपने रूप को सरल करता हुआ अर्थात् अपना रूप हल्के तेजयुक्त करके वह कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर श्रेष्ठ पुरूष को मिलता है।

विचार करें :- दयानन्द के भक्त कहते हैं कि ''कविः'' का अर्थ कविर्देव या कबीर कैसे किया है, यह उचित नहीं। महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 1 में ''यजुः'' का अर्थ यजुर्वेद किया है। हम 'व' को 'ब' कहते हैं। देव का अर्थ परमेश्वर होता है। इसलिए जहाँ पर वेदों में परमात्मा की महिमा का प्रकरण है, वहाँ पर यदि ''कविः'' शब्द लिखा है तो उसको कविर्देव कहा जाता है = इसे कबिर परमेश्वर कहने लगे तथा कबीर लिखने लगे। परमेश्वर का यही नाम वेदोक्त है।

❑ **परमेश्वर द्यूलोक अर्थात् प्रकाशमान सत्यलोक के तीसरे पृष्ठ (स्थान) पर विराजमान है। एक देशीय है। साकार है।**

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27

असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः ।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ॥२७॥

पदार्थः—(**उदन्युवः**) प्रेम की (**ताः**) वे (**शतधाराः**) सैंकड़ों धाराए (**असश्चतः**) जो नानारूपों में (**अभिश्रियः**) स्थिति को लाभ कर रही हैं। वे (**हरिं**) परमात्मा को (**अवनवन्ते**) प्राप्त होती हैं। (**गोभिरावृतं**) प्रकाशपुञ्ज परमात्मा को (**क्षिपः**) बुद्धिवृत्तियां (**मृजन्ति**) विषय करती हैं। जो परमात्मा (**दिवस्तृतीये पृष्ठे**) द्युलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है और (**रोचने**) प्रकाशस्वरूप है उसको बुद्धिवृत्तियाँ प्रकाशित करती हैं ॥२७॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27 की फोटो कापी है।

जो दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। इसमें स्पष्ट लिखा है कि परमात्मा द्यूः लोक अर्थात् प्रकाशमान सत्यलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है। भावार्थ है कि परमेश्वर एक देशीय है साकार है वहाँ से चलकर पृथ्वी लोक पर सत्यज्ञान प्रदान करने आते हैं।

❑ परमेश्वर राजा के समान दर्शनीय है साकार है। अपने निज स्थान से जहां परमेश्वर रहता है। वहाँ से तीव्र गामी होकर बिजली जैसी गति से आता है। अपने दृढ़ भक्त को जो अच्छी आत्मा दृढ़ भक्त होता है। उसे आकर मिलता है।

जैसे आकाशीय विद्युत किसी धातु को आधार बनाकर ही गिरती है। उसी प्रकार परमेश्वर विद्युत से भी अधिक तीव्रता से आते हैं। अपनी अच्छी आत्मा को उद्देश्य बनाकर मिलते हैं। उसको तत्वज्ञान कराने के उद्देश्य से मिलते हैं।

देखें प्रमाण :- (महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटोकॉपी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम् ॥१॥

पदार्थः—(**सोमः**) जो सर्वोत्पादक प्रभु(**अरुषः**) प्रकाशस्वरूप (**वृषा**) सद्गुणों की वृष्टि करने वाला (**हरिः**) पापों के हरण करने वाला है, वह (**राजेव**) राजा के समान (**दस्मः**) दर्शनीय है। और वह (**गाः**) पृथिव्यादि लोक-लोकान्तरों के चारों ओर (**अभि अचिक्रदत्**) शब्दायमान हो रहा है। वह (**वारं**) वरणीय पुरुष को जो (**अव्ययं**) दृढ़भक्त है उसको (**पुनानः**) पवित्र करता हुआ (**पर्य्येति**) प्राप्त होता है। (**न**) जिस प्रकार (**श्येनः**) विद्युत् (**घृतवन्तं**) स्नेहवाले (**आसदं**) स्थानों को (**योनिं**) आधार बनाकर प्राप्त होता है। इसी प्रकार उक्त गुण वाले परमात्मा ने (**असावि**) इस ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया ॥१॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1 की फोटो कापी है जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। छोटे आकार वाले ऋग्वेद से लिया है। इसमें स्पष्ट लिखा है कि परमेश्वर राजा के समान दर्शनीय है अर्थात् परमेश्वर नराकार है। अपने दृढ़ भक्त को अचानक आकर मिलता है। जैसे आकाशीय बिजली किसी धातु विशेष पर गिरती है।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 2

कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि ।
अपसेधन्दुरिता सोम मृलय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् ।।२।।

पदार्थ—हे परमात्मन् ! (वेधस्या) उपदेश करने की इच्छा से आप (माहिनं) महापुरुषों को (पर्येषि) प्राप्त होते हैं और आप (अत्यः) अत्यन्त गतिशील पदार्थ के (न) समान (अभिवाजं) हमारे आध्यात्मिक यज्ञ को (अभ्यर्षसि) प्राप्त होते हैं । आप (कविः) सर्वज्ञ हैं (मृष्टः) शुद्ध स्वरूप हैं (दुरिता) हमारे पापों को (अपसेधन्) दूर करके (सोम) हे सोम ! (मृलय) आप हमको सुख दें और (घृतं वसानः) प्रेमभाव को उत्पन्न करते हुए (निर्निजं) पवित्रता को (परियासि) उत्पन्न करें ।।२।।

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 2 की फोटो कापी है जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित है। इस में स्पष्ट है कि परमात्मा का नाम (कविः) कविर्देव है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 2 में यह भी स्पष्ट किया है कि वह परमात्मा उपदेश करने की इच्छा से (तत्वज्ञान को स्वयं प्रकट होकर बताने की इच्छा से) अत्यन्त गतिशील पदार्थ के समान अर्थात् बिजली जैसी गति से चलकर भक्तों को अनुष्ठानों में मिलता है। दयानन्द भक्तों ने ''कवि'' का अर्थ सर्वज्ञ किया है कोई भी ''कवि'' सर्वज्ञ नहीं होता इसलिए कवि का अर्थ सर्वज्ञ करना अनुचित है। कविः का अर्थ कवि या काव्यकार तो किया जा सकता है। परन्तु जहां पर परमात्मा की महिमा का वर्णन हैं वहाँ यह परमात्मा का नाम है वहाँ ''कविः'' का अर्थ कविर्देव करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के तीसरे समुल्लास में पष्ठ 64 पर लिखा है कि वेद ईश्वर कत होने से निभ्रान्त है अर्थात् वेदों का प्रमाण वेद आधीन है वेद की विशेष व्याख्या ''ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'' नामक पुस्तक में देख लिजिए। महर्षि दयानन्द का कहने का भावार्थ है कि वेदों को जानने के लिए व्याकरण में उलझने की आवश्यकता नहीं हैं। वेद ज्ञान प्रथम है व्याकरण निघटु आदि ऋषियों कत हैं वे त्रुटि युक्त हो सकते हैं। वेद ज्ञान स्वतः प्रमाण है। इसलिए ''कविर्'' का अर्थ कबिर या कबीर करना सुक्ष्मवेद अनुसार उचित है। यदि इन व्याकरण वालों की मानें तो यह जान लें कि उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर का नाम ''कवि'' है। जैसे किसी लड़की का नाम ''कविता'' है। यदि कविता शब्द का अर्थ कर दिया जाए तो उस लड़की को कैसे जान सकेंगे। जहां पर बेटी कविता का वर्णन है। वहां उसका अर्थ न करके कविता लिखना उचित है। ऐसा ही ''कवि'' के विषय में जाने। उसे कविर्देव वेदों में लिखा है। उसी को कबिर्देव=कबिर परमेश्वर = कबीर साहेब लिखने तथा उच्चारण करने लगे। जैसे किसी का नाम धर्मवीर है। उसको अपनी भाषा में धरमबिर लिखने लगे, बोलने लगे फिर भी संकेत ''धर्मवीर'' की ओर है। इसी तरह बेदों में अंकित कविर्देव को कबिर परमेश्वर लिखने लगे (कबीर साहब लिखने व बोलने लगे) परन्तु यह ''कबिर'' नाम परमेश्वर का है। वही परमेश्वर काशी शहर में जुलाहा जाति में प्रकट व प्रसिद्ध हुआ। वेद उसी का गुण-गान कर रहे हैं।

अन्य उदाहरण :- यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 1 के मूल पाठ में ''यजुः'' शब्द लिखा है। जो यजुर्वेद का बोधक है। महर्षि दयानन्द ने (यजुः) का अर्थ यजुर्वेद किया है। जो सही है यदि ''यजुः'' का अर्थ अन्य कर दिया जाए तो अनर्थ हो जाएगा। यजुः का अर्थ यज्ञीय स्तुतियाँ तथा उपासना भी होता है। इसी प्रकार ''कविः'' शब्द का अर्थ इस ऋग्वेद के मण्डल 9 सूक्त 82 के मंत्र 2 में कविर्देव करना उचित है क्योंकि इसमें परमेश्वर की महिमा का वर्णन है। आप (कविः) कविर्देव हैं, लिखने से दयानन्द के भक्तों वाला अनुवाद शुद्ध हो जाता है।

❑ परमेश्वर मनुष्य सदृश है। साधक जन समाधि में उस नराकार परमेश्वर को देखते हैं। कृप्या देखें ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27 में जो महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27

यं त्वा जनास इन्धते मनुष्वदङ्गिरस्तम ।

अग्ने स बोधि मे वचः ॥२७॥

पदार्थः—(अङ्गिरस्तम) हे सबको अत्यधिक रस देने वाले ! (अग्ने) हे सबके आधार सर्वशक्तिमान् ! (मनुष्वत्) विज्ञाता मनुष्यों के तुल्य (यम् त्वाम्) जिस तुझे (जनासः) मनुष्य (इन्धते) समाधि में देखते हैं (सः) वह तू (मे वचः) मेरे स्तुतिरूप वचनों को (बोधि) कृपा करके सुन ॥२७॥

यह ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27 की फोटोकॉपी है। जो महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। इसमें स्पष्ट है कि परमात्मा (मनुष्वत्) विज्ञाता अर्थात् तत्वदर्शी मनुष्यों के तुल्य है (त्वा) आप को (जनासः) साधक जन (इन्धते) समाधि में देखते हैं।

विचार करें :- यह अनुवाद परमात्मा को निराकार बताने वालों के कर कमलों से हैं। जिस में स्पष्ट है कि परमात्मा मनुष्य सदृश है। समाधि में देखा जाता है। अब परमेश्वर को निराकार कहने वालों को या तो चुल्लू भर पानी में डूब कर मर जाना चाहिए या सत्य को स्वीकार कर अक्षय मोक्षार्थ हेतु मुझ दास (रामपाल दास) से उपदेश लेकर अपना तथा अपने परिजनों का उद्धार कराना चाहिए। इस ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27 का यथार्थ अनुवाद इस प्रकार है (मनुष्वत् अंगिरस्तम अग्ने) हे परमेश्वर! आप मनुष्य सदृश सर्वांग युक्त साकार सशरीर हैं (यम् त्वा) जिस आपको (जनास्) साधक जन (इन्धते) समाधि में देखते हैं। (स) वह आप (मे) मेरे को (वचः) अपने अमृत वचन अर्थात् तत्वज्ञान का (बोधि) बोध कराऐं।

❑ परमात्मा तीन प्रकार से शरीर धारण करके संसार का धारण पोषण करता है। देखें दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26 तथा ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8 में जो अग्रलिखित हैं :-

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटोकॉपी)
ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26

त्रिभिष्ट्वं देव सवितर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः ।
अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ।२६।

पदार्थः—(सोम) परमात्मन् ! (अग्ने) हे ज्ञानस्वरूप ! (सवितः) हे सर्वोत्पादक ! (देव) हे दिव्य गुणसम्पन्न परमात्मन् ! (त्वं) आप (त्रिभिः) तीन (धामभिः) शरीरों से (वर्षिष्ठैः) जो श्रेष्ठ हैं तथा (दक्षैः) दक्षतायुक्त हैं उनसे (नः) हम लोगों को (पुनीहि) पवित्र करिये ।।२६।।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)
ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8

तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो धमन्ति बाकुरं दृतिम् ।
त्रिधातु वारणं मधु ।।८।।

पदार्थः—(तं) उस पुरुष को (अग्रुवः) उग्रगतियें (हिन्वन्ति) प्रेरणा करती हैं और (बाकुरं) भासमान (दृतिं) शरीर को वह पुरुष प्राप्त होता है जिसमें (त्रिधातु) तीन प्रकार से (वारणं) दूसरों का वारण करने वाला (मधु) मधुमय शरीर मिलता है ।८।।

यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8 की फोटो कापी है इस से पहले ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26 की फोटो कापी है जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित है। इन मंत्रों में भी परमेश्वर सशरीर प्रमाणित है कि परमात्मा का तीन स्थिति में शरीर है। एक शरीर में परमेश्वर द्यूलोक अर्थात् शाश्वत स्थान जिसे सत्यलोक भी कहा है उस लोक में अत्यन्त तेजोमय शरीर युक्त हैं। उस शरीर के एक रोमकूप का प्रकाश करोड़ सूर्यो तथा करोड़ चन्द्रमाओं के मिले जुले प्रकाश से भी अधिक है। परमेश्वर के शरीर की यह प्रथम स्थिति है। दूसरी स्थिति जो शरीर धारण करने की है उसमें परमेश्वर प्रत्येक युग में एक नवजात शिशु का रूप धारण करके किसी शहर से कुछ दूरी पर वन में जलाशय में जल के ऊपर कमल के फूल पर विराजमान होता है। जिस कारण से परमेश्वर को नारायण भी कहा जाता है। नार का अर्थ जल तथा आयण का अर्थ है अवतरित होना अर्थात् आना। इसलिए परमेश्वर को नारायण कहा जाता है। जिस का अर्थ है जल पर विश्राम करने वाला। तीसरी स्थिति में परमेश्वर सन्त या ऋषि का रूप धारण करके श्रेष्ठ पुरूषों को जो दढ़ भक्त होते हैं। उनको मिलता है। उनको तत्वज्ञान से परिचित करवाता है। इस मन्त्र में दयानन्द के भक्त अपने कर कमलों से लिख रहे हैं कि परमात्मा सुन्दर शरीर धारण करता है। वेद ज्ञान सही है परन्तु, महर्षि दयानन्द का ‘‘सत्यार्थ प्रकाश’’ झूठा है। जिस में कहा है कि परमात्मा निराकार है। आकाश

में किसी एक लोक में नहीं रहता। आप जी स्वयं देखें इन वेद मन्त्रों में स्पष्ट है कि परमेश्वर तीन स्थिति में शरीर धारण करता है। सबसे ऊपर के लोक में रहता है। वहाँ से सशरीर चलकर यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताने आता है। पुरूष का आध्यात्मिक अर्थ परमेश्वर है। महर्षि दयानन्द के द्वारा अनुवादित यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 17 में दयानन्द ने ''पुरूष'' का अर्थ पूर्ण परमात्मा किया है तथा ''ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'' पृष्ठ 125 पर ''पुरूष'' का अर्थ किया है कि ''पुरूष'' उस को कहते हैं जो सर्वशक्तिमान ईश्वर कहलाता है। इसलिए पाठकों से निवेदन है कि ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8-9 में अनुवाद कर्ताओं ने जो चतुरता की है, उसे समझें तथा पुरूष का अर्थ परमेश्वर जानें।

❑ परमात्मा किस प्रकार तीन शरीर धारण करता है? कृप्या पढ़ें निम्न व्याख्या:-

1. अत्यधिक प्रकाशयुक्त मानव सदृश शरीर में परमेश्वर सत्यलोक में विराजमान हैं। जिसके एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी अधिक है।

2. शिशु रूप में पृथ्वी पर प्रकट होता है। लीलामय शरीर से बड़ा होता है फिर तत्वज्ञान प्रचार करता है।

3. ऋषि या सन्त रूप में कहीं भी प्रकट होकर दृढ़ भक्तों को मिलता है तथा तत्वज्ञान प्रचार करता है।

❑ जब परमात्मा दूसरी प्रकार का शरीर धारण करके अर्थात् शिशु रूप धारण करके पृथ्वी पर प्रकट होता है उस समय उनके पालन की लीला कंवारी गौवों द्वारा होती है। कृप्या पढ़ें ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9 में जो निम्न हैं:-

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9

अभी३ममघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् ।
सोममिन्द्राय पातवे ॥९॥

पदार्थः—(इमं) उस (सोमं) सौम्यस्वभाव वाले श्रद्धालु पुरुष को (शिशुं) कुमारावस्था में ही (अभि) सब प्रकार से (अघ्न्याः) अहिंसनीय (धेनवः) गौवें (श्रीणन्ति) तृप्त करती हैं (इन्द्राय) ऐश्वर्य्य की (पातवे) वृद्धि के लिये। (उत) अथवा उक्त श्रद्धालु पुरुष को अहिंसनीय वाणियें ऐश्वर्य्य की प्राप्ति के लिये संस्कृत करती हैं ॥९॥

★ विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9 की फोटो कापी है जो महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। इसमें परमेश्वर के दूसरे प्रकार के शरीर की स्थिति का वर्णन है। इसमें स्पष्ट है कि (शिशुम्) बालक वेश में प्रकट (सोमम्) परमात्मा की (श्रीणन्ति) परवरिश (अभी अध्न्याः) पूर्ण रूप से अछूति यानि कंवारी (धेनवः) गायों द्वारा होती है।

वेद में स्पष्ट है कि जिस शरीर में परमात्मा शिशु रूप धारण करके वन (जंगल) में जल पर प्रकट होता है। उस समय उस बालक वेशधारी परमात्मा के

पोषण की लीला कंवारी गौवों द्वारा होती है। यही प्रमाण पवित्र ''कबीर सागर'' नामक सद्ग्रंथ के अध्याय ''ज्ञान सागर'' के पृष्ठ 74 पर है जो आदरणीय धर्मदास जी द्वारा लगभग सन् 1460 के आसपास लिखा गया था। उसमें लिखा है कि परमेश्वर कबीर जी शिशु रूप धारण करके 'लहरतारा' नामक सरोवर में कमल के फूल पर अपने द्यूलोक (सतलोक) से चलकर आकर विराजमान हुए। वहाँ से उन्हें एक निःसन्तान जुलाहा नीरू (नूर अली) घर ले आया। बाल वेशधारी परमेश्वर ने कई दिनों तक कुछ नहीं खाया-पीया। फिर ऋषि रामानन्द जी के बताए अनुसार तथा एक सन्त रूप में प्रकट शिव जी के अनुसार कँवारी गाय लाई गई। परमेश्वर कबीर जी के आशीर्वाद से उस कँवारी गाय (बछिया) ने दूध दिया। वह बालक कविर्देव ने पीया। वह बछिया प्रतिदिन दूध देने लगी। इस प्रकार बालक रूप में लीला कर रहे परमेश्वर की परवरिश की लीला हुई।

★ इन उपरोक्त वेद मंत्रों में स्पष्ट है कि परमेश्वर एक देशीय है, अर्थात् एक स्थान पर तीसरे मुक्ति धाम में अर्थात् द्यूलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है। वहाँ से गति करके आता है। जैसे व्यक्ति शुभ्र शरीर धारण करके आता है। परमेश्वर राजा के समान दर्शनीय भासमान शरीर धारण करता है। शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है। उस समय परमात्मा की परवरिश की लीला कंवारी गायों द्वारा होती है। उपदेश करने की इच्छा से अर्थात् तत्व ज्ञान देने के लिए स्वयं आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता हैं। वह परमात्मा नराकार अर्थात् मनुष्य सदृश है।

★ इन उपरोक्त वेद मंत्रों की फोटोकॉपियों में आप को स्पष्ट हुआ कि वेदों में परमेश्वर साकार है। वह राजा के समान दर्शनीय अर्थात् नराकार अर्थात् मनुष्य सदृश है, देखा जाने वाला है। अपने द्युलोक के तीसरे स्थान पर एक जगह विराजमान है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में समुल्लास 9 में लिखा है कि परमात्मा किसी एक स्थान पर विराजमान नहीं है। वह विभु है। जबकि वेद बताते हैं कि परमात्मा एक स्थान पर विराजमान है। एक देशीय है। इस से सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द का 'सत्यार्थ प्रकाश' वेद ज्ञान विरूद्ध कोरा अज्ञान है। करौंथा काण्ड का यही कारण था कि आर्य समाज के आचार्यों ने महर्षि दयानन्द के अनुयाइयों को भ्रमित किया कि रामपाल दास जी महाराज जनता में भ्रम फैला रहा है। महर्षि दयानन्द की छवि धूमिल कर रहा है। वह परमात्मा को साकार बता रहा जबकि वेदों में परमात्मा निराकार लिखा है।

अब इन आचार्यों को चूल्लू भर पानी में डूब कर मर जाना चाहिए या संत रामपाल दास जी महाराज के पास आकर अपना कल्याण करवाना चाहिए। जबकि वेदों में परमात्मा साकार है और इन्हीं के कर कमलों से वेदों का अनुवाद है। इसका परिणाम यह है कि महर्षि दयानन्द की हार हुई व इस दास (संत रामपाल जी महाराज) की जीत हुई।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटोकॉपी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मन्त्र 1

अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः ।
अपो वृणानः पवते कवीयन्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ।।१।।

पदार्थः—(सूर्य्ये) सूर्य के विषय में (न) जैसे (विशः) रश्मियां प्रकाशित करती हैं । उसी प्रकार (धियः) मनुष्यों की बुद्धियां (स्पर्धन्ते) अपनी-अपनी उत्कट शक्ति से विषय करती हैं । (अस्मिन् अधि) जिस परमात्मा में (वाजिनीव) सर्वोपरि बलों के समान (शुभः) शुभ बल है वह परमात्मा (अपोवृणानः) कर्मों का अध्यक्ष होता हुआ (पवते) सबको पवित्र करता हैं । (कवीयन्) कवियों की तरह आचरण करता हुआ (पशुवर्धनाय) सर्वद्रष्टृत्व पद के लिए (व्रजं, न) इन्द्रियों के अधिकरण मन के समान 'व्रजन्ति इन्द्रियाणि यस्मिन् तद्व्रजम्' (मन्म) जो अधिकरणरूप है वही श्रेय का धाम है ।।१।।

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मन्त्र 1 की फोटो कापी है। जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित हैं। इस मन्त्र के अनुवाद में ढेर सारी त्रुटियाँ हैं। फिर भी इन्हीं के जल में तुम्बा छुपाने के प्रयत्न के पश्चात् भी स्पष्ट है कि परमेश्वर (कवियन् न व्रजम्) कवियों के समान आचरण करता हुआ विचरता है। एक स्थान से दूसरे स्थान को तत्वज्ञान प्रचार हेतु जाता हैं। इस से परमेश्वर साकार, नराकार सिद्ध हुआ। अब कहाँ गया महर्षि दयानन्द का अज्ञान जो कहता था कि वेदों में परमेश्वर निराकार है। एक देशीय नहीं है। वेदों के प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द को वेदों का ज्ञान नहीं था इसलिए वह महर्षि भी नहीं था।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटोकॉपी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 18

ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम् ।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप् ।।१८।।

पदार्थः—(सोमः) सोमस्वरूप परमात्मा (सिसासन्) पालन की इच्छा करता हुआ (महिषः) जो महान् है वह परमात्मा (तृतीयं, धाम) देवयान और पितृयान इन दोनों से पृथक तीसरा जो मुक्तिधाम है । उसमें (विराजम) विराजमान जो ज्ञानयोगी है उसको (अनुराजति) प्रकाश करने वाला है और (स्तुप) स्तूयमान है । (कवीनाम्, पदवीः) जो क्रान्तदर्शियों की पदवी अर्थात् मुख्य स्थान है और (सहस्रनीथः) अनन्त प्रकार से स्तवनीय है, (ऋषिमनाः) सर्वज्ञान के साधनरूप मनवाला वह परमात्मा (यः) जो (ऋषिकृत) सब ज्ञानों का प्रदाता (स्वर्षाः) सूर्यादिकों को प्रकाशक है । वह जिज्ञासु के लिए उपासनीय है ।।१८।।

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18 की फोटो कापी है। इसका दयानन्द के भक्तों के द्वारा अनुवाद किया गया है। इस में स्पष्ट है कि परमेश्वर तीसरे मुक्ति धाम में विराजमान है। इसमें अनुवादकर्ता ने महर्षि दयानन्द के अज्ञान को आधार मान कर अर्थ को घुमा दिया है लिख दिया ''जो ज्ञान योगी''

विराजमान है। पाठक जन ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मंत्र 3 में कहा है कि परमात्मा सर्व लोकों के ऊपर के लोक में बैठा है। सूर्य की तरह तेजोमय शरीर वाला है।(पूरा मंत्र इसी पुस्तक के पष्ठ 42 पर है, वहाँ देखें।) ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 27 में दयानन्द के भक्तों द्वारा किए अनुवाद में पढ़ चुके हैं कि द्यूलोक के तीसरे भाग में परमात्मा विराजमान है यानि वहाँ बैठा है, ज्ञान योगी नहीं। यहाँ इस मंत्र 18 में ज्ञान योगी अपनी ओर से लिख डाला। यहाँ पर अनुवादकर्ताओं को दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश आड़े आ गया। इसलिए अनर्थ करने की कुचेष्टा की है जबकि मूल पाठ में ज्ञान योगी का सम्बन्ध नहीं है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मंत्र 3 तथा ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27 स्वयं अनुवाद में लिखा है कि परमेश्वर द्यूलोक के तीसरे पष्ठ (भाग) पर विराजमान है। यहाँ भी वेद मंत्र 18 में यही प्रमाण है।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18 का यथार्थ अनुवाद कप्या पढ़े संत रामपाल दास जी महाराज द्वारा किया गया।

ऋषिमना य ऋषिकत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम्।
ततीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप्।।18।।

ऋषिमना य ऋषिकत् स्वर्षाः सहस्राणीथः पदवीः कवीनाम्।
ततीयम् धाम महिषः सिषा सन्त् सोमः विराजमानु राजति स्टुप्।।

अनुवाद – वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि (य) जो पूर्ण परमात्मा विलक्षण बच्चे के रूप में आकर (कवीनाम्) प्रसिद्ध कवियों की (पदवीः) उपाधि प्राप्त करके अर्थात् एक संत या ऋषि की भूमिका करता है उस (ऋषिकत्) संत रूप में प्रकट हुए प्रभु द्वारा रची (सहस्राणीथः) हजारों वाणी (ऋषिमना) संत स्वभाव वाले व्यक्तियों अर्थात् भक्तों के लिए (स्वर्षाः) स्वर्ग तुल्य आनन्द दायक होती हैं। (सोम) वह अमर पुरुष अर्थात् सत्य पुरुष (ततीया) तीसरे (धाम) मुक्ति लोक अर्थात् सत्यलोक की (महिषः) सुदढ़ पथ्वी को (सिषा) स्थापित करके (अनु) पश्चात् (सन्त्) मानव सदश संत रूप में होता हुआ (स्टुप) गुबंद अर्थात् गुम्बज में उच्चे टिले रूपी सिंहासन पर (विराजमनु राजति) उज्जवल स्थूल आकार में अर्थात् मानव सदश तेजोमय शरीर में विराजमान है।

भावार्थ - ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 17 में कहा है कि कविर्देव शिशु रूप धारण कर लेता है। लीला करता हुआ बड़ा होता है। कविताओं द्वारा तत्वज्ञान वर्णन करने के कारण कवि की पदवी प्राप्त करता है अर्थात् उसे ऋषि, संत व कवि कहने लग जाते हैं, वास्तव में वह पूर्ण परमात्मा कविर् ही है। इसकी पुष्टि ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मंत्र 1 ने भी की है कि परमात्मा कवियों की तरह आचरण करता है। उसके द्वारा रची अमतवाणी कबीर वाणी (कविर्वाणी) कही जाती है, जो भक्तों के लिए स्वर्ग तुल्य सुखदाई होती है। वही परमात्मा तीसरे मुक्ति धाम अर्थात् सत्यलोक की स्थापना करके एक गुबंद अर्थात् गुम्बज में सिंहासन पर तेजोमय मानव सदश शरीर में आकार में विराजमान है।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18 में तीसरा धाम सतलोक को कहा है।

जैसे एक ब्रह्म का लोक जो इक्कीस ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, दूसरा परब्रह्म का लोक जो सात संख ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, तीसरा परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म का सतलोक है क्योंकि पूर्ण परमात्मा ने सत्यलोक में सत्यपुरूष रूप में विराजमान होकर नीचे के लोकों की रचना की है। इसलिए नीचे के लोकों की गणना की गई है।

यही आँखों देखा प्रमाण सन्त गरीब दास जी ने बताया है :-

अर्स कुर्स पर सफेद गुम्बज है जहाँ सतगुरु का डेरा।

भावार्थ यह है कि ऊपर आसमान के ऊपरी छोर पर कबीर परमेश्वर जी एक सफेद गुबंद (गुम्बज) में रहते हैं।

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मन्त्र 27 में अनुवाद परमेश्वर ने ठीक करा दिया। वहाँ स्पष्ट लिखा है ''परमात्मा द्यूलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है।'' एक देशीय है साकार है देखें फोटो कापी ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27 की, इसी पुस्तक के पृष्ठ 93 पर। ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मंत्र 3 में भी कहा है कि परमात्मा सर्व लोकों के ऊपर के लोक में बैठा है, मंत्र की फोटोकॉपी इसी पुस्तक के पृष्ठ 42 पर पढ़ें।

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मन्त्र 1 में स्पष्ट है कि परमात्मा राजा के समान दर्शनीय है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8 में तथा ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26 में स्पष्ट है कि पुरूष अर्थात् परमात्मा भासमान शरीर को प्राप्त होता है। इन ऋग्वेद मण्डलों के मन्त्रों के अनुवादकर्ता भी दयानन्द के भक्त ही हैं। परमेश्वर ने सच्चाई सामने ला दी।

वह अमर परमात्मा जो अपनी महिमा की अमृतवाणी को कवियों के समान बोलता है। उस कारण से वह प्रसिद्ध कवियों में से एक प्रसिद्ध कवि भी कहलाता है। परन्तु वह केवल कवि ही नहीं, वह कवि परमात्मा (जिसे वेदों में कविर्देव कहा है) होता है। यही उसका वास्तविक गुप्त श्रेष्ठ नाम है। कविर्देव जिसको सन्त भाषा में कबीर परमेश्वर कहते हैं। उस (ऋषिकृत्) कविर्देव द्वारा ऋषि या संत रूप में प्रकट होकर अपने मुख कमल से उच्चारण करके बनाई गई अमृत वाणी उस परमेश्वर के अनुयाइयों के लिए (स्वर्षाः) आनन्द दायक होती हैं। वह कविर्देव अर्थात् कविर परमेश्वर तीसरे मुक्ति धाम में विराजमान है। वह एक (स्तुप्) गुमंद में तेजोमय रूप में प्रकाशमान है। उस महान स्थान अर्थात् तेजोमय तीसरे धाम की बहुत बड़ी पृथ्वी को बनाकर उस पर विराजमान है।

कबीर जी ने बताया है कि हे धर्मदास! यही कारण है कि ऋषि, मुनियों ने व अन्य साधकों ने पूर्ण परमात्मा का ज्ञान वेदों में पढ़ा और उस सतलोक का सुख भी पढ़ा। उसे प्राप्त करने के लिए जी-जान से साधना की। शरीर पर दीमक भी चढ़ी, परंतु मेरी प्राप्ति नहीं हुई क्योंकि वेदों में काल ब्रह्म की साधना का वर्णन है। ॐ (ओम्) नाम जाप करने को कहा है जिससे काल लोक के एक ब्रह्माण्ड में बना ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में स्पष्ट है कि ब्रह्मलोक में गए

साधक भी जन्म-मरण के चक्र में हैं यानि पुनरावर्ती में रहते हैं। केवल सतनाम व सारनाम की साधना से सनातन परम धाम अर्थात् सतलोक प्राप्त होता है। वे मंत्र वेदों, गीता तथा पुराणों में नहीं हैं। वे गुप्त मंत्रों मैं स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर बताता हूँ। वेद भी यही बताते हैं। प्रमाण :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मंत्र 2 में स्पष्ट है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 95 मन्त्र 2)

हरिः सृजानः पथ्यामृतस्येयर्ति वाचमरितेव नावम् ।
देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे ।।२।।

पदार्थः—(हरिः) वह पूर्वोक्त परमात्मा (**सृजानः**) साक्षात्कार को प्राप्त हुआ (**ऋतस्य पथ्यां**) वाक् द्वारा मुक्ति मार्ग की (**इयर्ति**) प्रेरणा करता है। (**अरितेव नावम्**) जैसा कि नौका के पार लगाने के समय में नाविक प्रेरणा करता है और (**देवानां देवः**) सब देवों का देव (**गुह्यानि**) गुप्त (**नामाविष्कृणोति**) संज्ञाओं को प्रकट करता है (**बर्हिषि प्रवाचे**) वाणीरूप यज्ञ के लिए ।।२।।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त के 95 मन्त्र 2 का हिन्दी अनुवाद महर्षि दयानन्द के चेलों ने किया है जो बहुत ठीक किया है।

इसका भावार्थ है कि पूर्वोक्त परमात्मा अर्थात् जिस परमात्मा के विषय में पहले वाले मन्त्रों में ऊपर कहा गया है, वह परमात्मा (सृजानः) साक्षात् प्रकट होकर (ऋतस्य पथ्यां) सत्यभक्ति का मार्ग अर्थात् यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान अपनी अमृतमयी वाक् अर्थात् वाणी द्वारा मुक्ति मार्ग की प्रेरणा करता है।

★ वह मन्त्र ऐसा है जैसे (अरितेव नावम्) नाविक नौका में बैठाकर पार कर देता है, ऐसे ही परमात्मा सत्यभक्ति मार्ग रूपी नौका के द्वारा साधक को संसार रूपी दरिया के पार करता है। वह (देवानाम् देवः) सब देवों का देव अर्थात् सब प्रभुओं का प्रभु परमेश्वर (बर्हिषि प्रवाचे) वाणी रूपी ज्ञान यज्ञ के लिए (गुह्यानि) गुप्त (नामा आविष्कृणोति) नामों का अविष्कार करता है अर्थात् जैसे गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ऊँ तत् सत्'' में तत् तथा सत् ये गुप्त मन्त्र हैं जो उसी परमेश्वर ने मुझे (संत रामपाल दास) को बताऐ हैं। उनसे ही पूर्ण मोक्ष सम्भव है।

★ सूक्ष्मवेद में कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

''सोहं'' शब्द हम जग में लाए, सारशब्द हम गुप्त छिपाए।

भावार्थ :- परमेश्वर ने स्वयं ''सोहं'' शब्द भक्ति के लिए बताया है। यह सोहं मन्त्र किसी भी प्राचीन ग्रन्थ (वेद, गीता, कुर्आन, पुराण तथा बाईबल) में नहीं है। फिर सूक्ष्म वेद में कहा है कि :-

सोहं ऊपर और है, सत्य सुकृत एक नाम।
सब हंसो का जहाँ बास है, बस्ती है बिन ठाम।।

★ भावार्थ :- ''सोहं'' नाम तो परमात्मा ने प्रकट कर दिया, आविष्कार कर दिया परन्तु सार शब्द को गुप्त रखा था। अब मुझे (संत रामपाल को) बताया है जो

साधकों को दीक्षा के समय बताया जाता है। इसका गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहे ''ऊँ तत् सत्'' से सम्बन्ध है।

''काल की परिभाषा''

★ धर्मदास जी ने निवेदन किया आप सही कह रहे हो। किसी भी पुस्तक में आप जैसा ज्ञान नहीं है। हे परमात्मा कबीर जी! काल ब्रह्म की परिभाषा बताऐं। परमात्मा कबीर जी ने एक ही उदाहरण से काल की परिभाषा बताई। कहा कि जैसे कसाई बकरे-बकरी पालता है। उसके पीछे उसका स्वार्थ निहित होता है। वह उन बकरों-बकरियों के लिए चरागाह बनवाता है। पीने के पानी के कुण्ड बनवाता है। गर्मी-सर्दी-बारिश से बचने के लिए छप्पर (सैड) डलवाता है। हिंसक पशुओं से बचाने के लिए बाड़ा बनवाता है। इस सुविधा को देखकर बकरे उस कसाई मालिक को एक अच्छा इंसान मान बैठते हैं। जब वह उस बाड़े में आता है, उनको चारा डालता है तो बकरे उसे प्यार देने के लिए अगले पैर उठाकर उसके सीने पर अपना सीना लगाना चाहते हैं। वह उनके शरीर को छूकर देखता है कि इस बकरे में कितना माँस हो गया है। वह बकरा समझता है कि यह मालिक तेरे से कितना लगाव कर रहा है। यह तेरे से प्यार करता है। बकरा उस कसाई के हाथ चाटता है। बकरे-बकरी अपने-बच्चे उत्पन्न करते हैं। उनके बच्चों से वे बहुत प्यार करते हैं। यदि कोई दूसरी बकरी या बकरा एक के बच्चों को टक्कर मार देता है तो उसके साथ बकरे के बच्चे के माता-पिता लड़ने के लिए दौड़ते हैं। उसे वहाँ से भगाकर दम लेते हैं। कसाई ने तीन नौकर रखे होते हैं। एक नौकर नए बकरे-बकरी मोल लाकर बाड़े में छोड़ता है। दूसरा नौकर उन बकरों के चारे तथा पालन की व्यवस्था करता है। पानी पिलाता है। रक्षा करता है। तीसरा नौकर मालिक के आदेश से जितने बकरे काटने हैं, उनको बाड़े से निकालकर संहार कर देता है। उस समय वह नहीं देखता कि किस परिवार के कितने बकरे-बकरी काटने हैं। उनमें किसी के केवल बच्चे कट जाते हैं, किसी के माता-पिता, किसी का पूरा परिवार कट जाता है।

इसी प्रकार काल बह्म ने अपने तीनों पुत्रों ब्रह्मा रजगुण, विष्णु सतगुण तथा शंकर तमगुण के विभाग बाँटे हैं। ये काल कसाई के आदेश के अनुसार काल के पथ्वी रूपी बाड़े का संचालन कर रहे हैं। किसी का पूरा परिवार दुर्घटना में मारा जाता है। किसी का पिता, किसी की पत्नी, किसी की बेटी रोग या दुर्घटना से मारे जाते हैं। काल कसाई प्रतिदिन एक लाख मानव शरीरधारी प्राणियों को खाता है। हे धर्मदास! यह परिभाषा है काल ब्रह्म की।

यह उदाहरण सुनकर सन्त धर्मदास को कोई संशय नहीं बचा और इस काल लोक से घणा बन गई। सतलोक जाने की तड़प लगी। सत्य साधना परमात्मा कबीर जी से प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त किया।

★ जिस लोक में हम रह रहे हैं, इसका यथार्थ चित्रण परमात्मा कबीर जी ने इस

उदाहरण में किया है। हम समाचार पत्रों में पढ़ते हैं कि एक परिवार में 12 सदस्य थे। किसी शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करने व करवाने वाले संत के अनुयाई थे। अच्छा व्यवसाय था। रविवार के सत्संग में रात्रि की मस्त नाईट को देखने गए थे। पिता जी नहीं गया था। शेष ग्यारह सदस्य गए थे। वापिस आते समय दुर्घटना में ग्यारह के ग्यारह मर गए। अब क्या बचा उस वृद्ध के पास जो उनको सुखी देखने के लिए जीवित था। यह कसाई का लोक है। इसका नाम ज्योति निरंजन है। इसी को काल ब्रह्म कहा जाता है। ऋषि लोग इसे केवल ब्रह्म कहते हैं। इसी के तीन पुत्र ब्रह्मा रजगुण, विष्णु सतगुण तथा शिव तमगुण हैं। ये इसके खाने के लिए यह व्यवस्था कर रहे हैं। इसलिए कबीर परमात्मा जी बार-बार कह रहे हैं कि :-

चल हंसा सतलोक हमारे छोड़ो ये संसारा रे।
इस संसार का काल है राजा, जिसने माया जाल पसारा रे।

विचार करें :- काल द्वारा ये पंथ चला रखे हैं ताकि यह भोला मानव काल के माया जाल में फँसा रहे। यह परिवार निश्चिंत था कि हमने गुरू बना रखा है जिसके करोड़ों अनुयाई हैं। हमारा कल्याण अवश्य होगा। उनको तत्वज्ञान नहीं था। जिस कारण से भक्ति करके भी धोखा खाया। गीता अध्याय 16 श्लोक 23 में जो कहा है, वह शत प्रतिशत सत्य है। यह परिवार जो साधना कर रहा था, वह शास्त्र प्रमाणित नहीं है जिसका यह परिणाम हुआ।

पुस्तक ''गरिमा गीता की'' से कुछ अंश''

संत धर्मदास जी ने श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान विस्तार से सुनने की इच्छा व्यक्त की तथा परमात्मा कबीर जी ने संक्षिप्त में सब बता दिया। उस गीता ज्ञान को संत रामपाल जी ने गीता का यथार्थ अनुवाद करके पुस्तक ''गहरी नजर गीता में'' तथा ''गरिमा गीता की'' में विस्तार से बताया है। पुस्तक ''गरिमा गीता की'' से कुछ अंश यहाँ लिखते हैं।

पुस्तक ''गरिमा गीता की'' से कुछ ज्ञान''

''भूमिका''

इस पुस्तक में श्रीमद्भगवत गीता के सम्पूर्ण ज्ञान का यथार्थ प्रकाश किया गया है जो गीता से 18 अध्यायों के 700 श्लोकों का हिन्दी सारांश है। ऐसा आज तक किसी हिन्दू धर्म के गुरू ने तथा गीता के अनुवादकर्ता ने नहीं किया। सभी ने भोले हिन्दू समाज को भ्रमित करके उल्टा पाठ पढ़ाया है। मेरा मानव समाज से निवेदन है कि इन झूठे गुरूओं की मेरे साथ आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा करवाऐं। तब पता चलेगा ज्ञानी और अज्ञानी का। इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक दिल थामकर पढ़ें। आप स्वयं समझ जाओगे कि माजरा क्या है? इसी पुस्तक में लिखी सृष्टि रचना में तथा गीता के सारांश में आप जी को श्री ब्रह्मा, विष्णु, महेश जी के माता-पिता तथा

देवी दुर्गा के पति कौन हैं? आदि का ज्ञान भी होगा जिसे आज तक अपने धर्मगुरू नहीं बता पाए जो अपने ही ग्रन्थों में लिखे हैं।

श्रीमद्भगवत गीता चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) का संक्षिप्त रूप है। दूसरे शब्दों में गागर में सागर है। चारों वेदों में अठारह हजार (18000) श्लोक (मंत्र) हैं। उनको गीता में 574 श्लोकों में लिखा है। जिस कारण से गीता में सांकेतिक शब्द अधिक हैं। वैसे तो गीता में सात सौ (700) श्लोक हैं। जिनमें 574 काल ब्रह्म ने श्री कृष्ण के मुख से कहे हैं, शेष श्लोक संजय तथा अर्जुन के कहे हैं जो ज्ञान से संबंधित नहीं हैं।

गीता के सांकेतिक शब्दों को हिन्दू धर्म के धर्मगुरू समझ नहीं पाए। जिस कारण से शब्दों के अर्थों का अनर्थ किया है। उदाहरण के लिए गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में ''व्रज'' शब्द है। उसका अर्थ है जाना, जाओ, चले जाना, दूर जाना। सर्व गीता अनुवादकों ने व्रज का अर्थ ''आना'' किया है। आप प्रत्येक अनुवादक के किए अनुवाद में इस श्लोक को देखें। एस्कोन वालों ने तो कमाल कर रखा है। गीता अध्याय 18 श्लोक 66 के शब्दार्थ पहले लिखे हैं, नीचे अनुवाद किया है। शब्दार्थ में तो ''व्रज'' शब्द का अर्थ किया है ''जाओ'', परंतु अनुवाद में कर दिया ''मेरी शरण में आओ।''

देखें गीता अध्याय 18 श्लोक 66 के शब्दार्थ तथा अनुवाद की फोटोकॉपी जो भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट, हरे कृष्ण धाम जूहू, मुंबई-400049 द्वारा प्रकाशित है तथा ए.सी. भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभु द्वारा अनुवादित है जिसका पूरा नाम इस प्रकार है कृष्ण कृपा मूर्ति श्री ए.सी. भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद। संस्थापकाचार्यः- अन्तर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ ६६ ॥

सर्व-धर्मान्—समस्त प्रकार के धर्म; **परित्यज्य**—त्यागकर; **माम्**—मेरी; **एकम्**—एकमात्र; **शरणम्**—शरण में; **व्रज**—जाओ; **अहम्**—मैं; **त्वाम्**—तुमको; **सर्व**—समस्त; **पापेभ्यः**—पापों से; **मोक्षयिष्यामि**—उद्धार करूँगा; **मा**—मत; **शुचः**—चिन्ता करो।

समस्त प्रकार के धर्मों का परित्याग करो और मेरी शरण में आओ। मैं समस्त पापों से तुम्हारा उद्धार कर दूँगा। डरो मत।

यह फोटोकॉपी गीता अध्याय 18 श्लोक 66 की है। इसमें आप देख रहे हैं कि शब्दार्थ में ''व्रज = जाओ'' किया है, नीचे अनुवाद में लिखा है कि मेरी शरण में आओ।

विचार करें :- अंग्रेजी भाषा के शब्द Go का अर्थ जाना, जाओ है। इस शब्द का अर्थ आना, आओ करना मूर्खता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। इसी प्रकार गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित सर्व गीता अनुवादकों जैसे श्री जयदयाल

गोयन्दका, श्री रामसुख दास जी, महामण्डलेश्वर गीता मनीषी जैसी उपाधि प्राप्त श्री ज्ञानानंद जी, अड़गड़ानंद जी ने तथा अन्य महानुभावों ने गीता के गूढ़ तथा सांकेतिक शब्दों के गूढ़ रहस्य को न समझकर अर्थ न करके अनर्थ किए हैं, गलत अर्थ करके भोली जनता को भ्रमित किया है। इनके द्वारा किए गए गीता के अनुवाद वाली गीता पर प्रतिबंध लगना चाहिए। जिन्होंने गलत अनुवाद किए हैं, उन सबकी अनुवादित गीता से समाज में गीता की गरिमा को ठेस पहुँच रही है तथा गीता का यथार्थ संदेश जनता को नहीं मिल रहा।

जैसे गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में भी गीता ज्ञान बोलने वाला अपने से अन्य परमेश्वर की शरण में जाने के लिए कह रहा है। उसी से संबंधित प्रकरण गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में है जिसका अर्थ गलत करके गलत अनुवाद किया है। ऐसी-ऐसी अनेकों गलतियाँ गीता के अनुवाद में मेरे अतिरिक्त सबके द्वारा की गई हैं।

गीता के अनुवादक लिखते हैं कि श्री कृष्ण जी ने गीता का ज्ञान अर्जुन से कहा। श्री कृष्ण को विष्णु जी का अवतार यानि स्वयं विष्णु जी ही माता देवकी के गर्भ से उत्पन्न मानते हैं और श्री विष्णु जी उर्फ श्री कृष्ण जी को अविनाशी कहते हैं। जबकि गीता का ज्ञान कहने वाला गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 10 श्लोक 2 में अपने को नाशवान कहता है।

कहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे अनेकों जन्म हो चुके हैं। कृप्या देखें फोटोकॉपी गीता अध्याय 4 श्लोक 5 की जिसका अनुवाद भी हिन्दू धर्मगुरूओं ने किया है।

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप॥ ५॥

बहूनि, मे, व्यतीतानि, जन्मानि, तव, च, अर्जुन,
तानि, अहम्, वेद, सर्वाणि, न, त्वम्, वेत्थ, परन्तप॥ ५॥

इसपर श्रीभगवान् बोले—

परन्तप	= हे परन्तप	**व्यतीतानि**	= हो चुके हैं।
अर्जुन	= अर्जुन!	**तानि**	= उन
मे	= मेरे	**सर्वाणि**	= सबको
च	= और	**त्वम्**	= तू
		न	= नहीं
तव	= तेरे	**वेत्थ**	= जानता, (किंतु)
बहूनि	= बहुत-से	**अहम्**	= मैं
जन्मानि	= जन्म	**वेद**	= जानता हूँ।

अन्य प्रमाण :- श्री देवी महापुराण के तीसरे स्कंद के अध्याय 4-5 पष्ठ 138 की सम्बन्धित प्रकरण की फोटोकॉपी :-

१३८ * संक्षिप्त देवीभागवत * [तीसरा स्कन्ध

भगवान् शंकर बोले—'देवी! यदि महाभाग विष्णु तुम्हींसे प्रकट हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होनेवाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करनेवाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ—अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करनेवाली तुम्हीं हो। शिवे! सम्पूर्ण संसारकी सृष्टि करनेमें तुम बड़ी चतुर हो।

सूर्य जगत्को प्रकाशित करता है। तुम शुद्धस्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हींसे उद्भासित हो रहा है। मैं, ब्रह्मा और शंकर—हम सभी तुम्हारी कृपासे ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव और तिरोभाव हुआ करता है। केवल तुम्हीं नित्य हो, जगज्जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो।

यह फोटोकॉपी श्री देवी पुराण की है। इसमें श्री विष्णु जी स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि मेरा (विष्णु का) श्री ब्रह्मा का तथा श्री शिव का आविर्भाव यानि जन्म तथा तिरोभाव यानि मरण होता है। इसी फोटोकॉपी में यह भी प्रमाणित है कि इन तीनों को जन्म देने वाली भी देवी दुर्गा जी यानि अष्टांगी है। हिन्दू धर्म के अज्ञानी धर्मगुरू कहते हैं कि इनके कोई माता-पिता नहीं हैं। इस प्रकार की अनेक मिथ्या कथाऐं शास्त्रों के विपरित बताकर इन अज्ञानियों ने हिन्दू समाज का बेड़ा गरक कर रखा है।

हिन्दू धर्मगुरू कहते हैं कि श्री विष्णु जी सतगुण, श्री शिव जी तमगुण व अन्य देवी-देवताओं की पूजा करो जबकि गीता में अध्याय 7 श्लोक 12-15 तथा 20-23 में कहा है कि इनकी पूजा करने वाले राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख हैं।

हिन्दू धर्मगुरू श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी को ईश यानि सर्व के स्वामी बताते हैं जबकि श्री शिव महापुराण भाग-1 में विद्येश्वर संहिता पष्ठ 17-18 अध्याय 9-10 में स्पष्ट है कि सदाशिव यानि काल ब्रह्म श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा शिव जी के पिता जी हैं जो गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में कह रहा है कि मैं काल हूँ। उसने विद्येश्वर संहिता भाग-1 के पष्ठ 17 पर आपस में लड़ रहे श्री ब्रह्मा जी तथा श्री विष्णु जी के मध्य में तेजोमय स्तम्भ खड़ा करके उनका युद्ध बंद करवाकर कहा कि तुम अपने को संसार का ईश यानि स्वामी कह रहे हो, इस बात पर लड़ रहे हो। तुम ईश (प्रभु=भगवान) नहीं हो। यह सब मेरा है। मेरा एक ॐ (ओम्) मंत्र भक्ति का है जो पाँच अवयवों से एकीभूत होकर यानि अ,उ,म,नाद तथा बिंदु से मिलकर एक ॐ (ओम्) अक्षर बना है। गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में भी इसी ने श्री कष्ण में प्रेतवत् प्रवेश करके गीता ज्ञान कहा था। उसमें कहा है कि मुझ ब्रह्म का केवल एक ओम् (ॐ) अक्षर है उच्चारण करके स्मरण करने का।

श्री शिव पुराण का प्रकरण बताता हूँ :- शिवपुराण के विद्येश्वर संहिता भाग-1 पर काल ब्रह्म जो उस समय अपने पुत्र शिव के वेश में उपस्थित था, ने

बताया कि हे पुत्रो! मेरे पाँच कत्य हैं संष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव तथा अनुग्रह। हे पुत्रो ब्रह्मा, विष्णु! संष्टि की उत्पत्ति ब्रह्मा तेरे को तथा पालन करना विष्णु तेरे को मैंने तुम्हारे तप के प्रतिफल में दिए हैं। संहार (सामान्य प्राणियों को मारना) रूद्र को तथा तिरोभाव (भक्तों तथा देवताओं आदि को मारना) महेश को दिए, परंतु ''अनुग्रह'' कत्य को पाने में कोई भी समर्थ नहीं है।(1-12)

श्री शिव महापुराण के इस प्रकरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी ईश यानि संसार के स्वामी (प्रभु) नहीं हैं। इन तीनों का पिता काल ब्रह्म है तथा माता श्री देवी (दुर्गा) जी हैं जो श्री देवी भागवत पुराण यानि देवी पुराण में लिखा है। हिन्दू धर्मगुरूजन अपने शास्त्रों से ही परिचित नहीं हैं तो ये गुरू पद के योग्य नहीं हैं। इन्होंने हिन्दू धर्म के श्रद्धालुओं के मानव जीवन का नाश कर दिया। शास्त्रविधि विरूद्ध भक्ति साधना करवाकर भिखारी, चोर, डाकू, रिश्वतखोर, मिलावटखोर बनाकर छोड़ दिया। गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में स्पष्ट किया है कि जो साधक शास्त्रविधि त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है यानि जो भक्ति की साधना शास्त्रों में वर्णित नहीं है, उसे करता है तो उसे न तो सुख प्राप्त होता है, न उसे भक्ति की शक्ति यानि सिद्धि प्राप्त होती है तथा न उसकी गति यानि मुक्ति होती है। इसी कारण से सर्व साधक तन-मन-धन से झूठे गुरूओं द्वारा बताई शास्त्र विरूद्ध साधना, दान-धर्म भी करते हैं। फिर भी न तो घर-परिवार में सुख, न कारोबार में बरकत (लाभ) जिसके लिए प्रत्येक व्यक्ति भगवान की साधना से अपेक्षा करता है। साधना शास्त्रविरूद्ध होने से परमात्मा की और से कोई लाभ नहीं मिलता। जिसकी पूर्ति के लिए चोरी, हेराफेरी, रिश्वत, ठगी, मिलावट आदि अपराध करने लग जाते हैं। कुछ समय पश्चात् नास्तिक हो जाते हैं। ऐसे हिन्दू समाज का बेड़ा गरक शास्त्र ज्ञान से अपरिचित हिन्दू गुरूओं ने कर दिया। मेरे (लेखक-रामपाल दास के) पास शास्त्रों का यथार्थ ज्ञान है तथा शास्त्रोक्त साधना के यथार्थ स्मरण मंत्र हैं जो साधक को सुख यानि घर-परिवार में सुख, कषि व कारोबार में बरकत (लाभ), आध्यात्मिक शक्ति (सिद्धि) तथा पूर्ण मोक्ष प्रदान करते हैं। इस पुस्तक ''गरिमा गीता की'' में आप जी को उन शास्त्रों में वर्णित यथार्थ साधना के मंत्रों की जानकारी पढ़ने को मिलेगी। शास्त्रों के अध्याय, श्लोक तथा पष्ठ भी लिखे हैं जो आप अपनी संतुष्टि के लिए अपने शास्त्रों से मिलान करके जाँच सकते हो।

यदि कोई व्यक्ति (स्त्री-पुरूष) उन मंत्रों को इस पुस्तक में पढ़कर जाप करेगा तो उसे कोई लाभ नहीं होगा। उन मंत्रों को मेरे से या मेरे द्वारा बताई दीक्षा की DVD के माध्यम से दीक्षा लेकर आजीवन मर्यादा में रहकर साधना करने से सर्व लाभ तथा पूर्ण मोक्ष मिलेगा।

श्रीमद्भगवत गीता चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) का सारांश है तथा यह पुस्तक ''गरिमा गीता की'' श्रीमद्भगवत गीता का यथार्थ सारांश है। प्रत्येक अध्याय से मक्खन निकालकर फिर उसको शुद्ध करके गीता रूपी

गाय का घी बनाया है। आप जी इसे पढ़ें तथा गीता की गरिमा से यथार्थ रूप से परिचित होकर स्वयं तथा अपने परिवार को धन्य बनाऐं। मेरे से नाम दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त करें। विश्व के सर्व प्राणी एक परमेश्वर कबीर जी के बच्चे हैं यानि परमेश्वर द्वारा उत्पन्न आत्माऐं हैं जो काल ब्रह्म के लोक में जन्म-मरण तथा अनेकों कष्ट उठा रहे हैं। परमेश्वर कबीर जी चाहते हैं कि मेरी आत्माऐं मुझे अध्यात्म ज्ञान से पहचानें। फिर सत्य साधना करके सनातन परम धाम (सत्यलोक) में जाकर सदा सुखी जीवन जीऐं। उस परमेश्वर जी ने स्वयं यथार्थ भक्ति मंत्रों को बताया है जो सर्व शास्त्रों में प्रमाण मिला है। जिस कारण सत्य भक्ति की साधना की सार्थकता सिद्ध हुई है। मेरा निष्कर्ष है कि :-

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

आप जी इस पुस्तक ''गरिमा गीता की'' में पवित्र गीता के दिव्य सार को पढ़ें तथा अन्य को पढ़ाऐं। भूलों को राह बताऐं। इससे बड़ा पृथ्वी पर कोई पुण्य का कार्य नहीं है। मेरे अनुयाई तथ्यों को आँखों शास्त्रों में देखकर आश्चर्यचकित हुए थे। सत्य को स्वीकार करके तुरंत झूठी साधना त्यागकर सत्य साधना की दीक्षा मुझ दास (रामपाल दास) से लेकर जीवन धन्य कर रहे हैं। साथ-साथ इस अद्वितीय यथार्थ अध्यात्म ज्ञान का प्रचार करके भूले-भटकों को सत्य मार्ग बताकर पुण्य के भागी बन रहे हैं। झूठे गुरूओं से प्रभावित भोली जनता के द्वारा दी जा रही परेशानियों को झेलते हुए प्रचार में लगे हैं। ये आपको अपना भाई-बहन मानते हैं। आपके कल्याण का उद्देश्य रखते हैं। लेखक का उद्देश्य भी मानव समाज का कल्याण करना है। आप जी मेरे द्वारा बताया अध्यात्म ज्ञान समझें। पूर्ण रूप से जाँच करें। फिर हमसे जुड़ें। मर्यादा में रहकर भक्ति करें। तब देखना आपको प्रत्यक्ष लाभ होता महसूस होगा। आप अपने बीते मानव जीवन के समय का व्यर्थ साधना से नष्ट होने का बहुत पाश्चाताप् करोगे। सत्य भक्ति मार्ग मिलने से परमेश्वर कबीर जी की शरण में आने के पश्चात् उन भक्तों-भक्तमतियों, बहनों-माईयों का कोटि-कोटि धन्यवाद करोगे जिन्होंने आप जी को घर बैठों को परमात्मा का सत्य ज्ञान व सत्य भक्ति संदेश पुस्तकों के माध्यम से पहुँचाया। फिर आप ऐसा अनुभव करोगे जैसे कोई मौत के मुख से निकलने पर सुरक्षित परंतु भय-सा महसूस करता है। विचार करेंगे कि हे परमात्मा कबीर जी! हमारा ऐसा कौन-से जन्म का शुभ कर्म फला। जिस कारण से आपकी शरण मिली। यदि यह तत्वज्ञान पढ़ने-सुनने को नहीं मिलता तो लुट-पिट जाते। हमारा अनमोल मानव जीवन नष्ट हो जाता। इसलिए आप जी अविलंब अपने निकट वाले हमारे नामदान केन्द्र पर आऐं और दीक्षा लेकर अपना कल्याण करवाऐं।

प्रार्थी-लेखक
(संत) रामपाल दास (महाराज)
सतलोक आश्रम, बरवाला
जिला-हिसार, हरियाणा (भारत)।

''दो शब्द''

हिन्दुओं के शास्त्रों में पवित्र वेद व गीता विशेष हैं, उनके साथ-2 अठारह पुराणों को भी समान दष्टि से देखा जाता है। श्रीमद् भागवत सुधासागर, रामायण, महाभारत भी विशेष प्रमाणित शास्त्रों में से हैं। विशेष विचारणीय विषय यह है कि जिन पवित्र शास्त्रों को हिन्दुओं के शास्त्र कहा जाता है, जैसे पवित्र चारों वेद व पवित्र श्रीमद् भगवत गीता जी आदि, वास्तव में ये सद्शास्त्र केवल पवित्र हिन्दु धर्म के ही नहीं हैं। ये सर्व शास्त्र महर्षि व्यास जी द्वारा उस समय लिखे गए थे जब कोई अन्य धर्म नहीं था। इसलिए पवित्र वेद व पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी तथा पवित्र पुराणादि सर्व शास्त्र मानव मात्र के कल्याण के लिए हैं।

सर्व प्रथम पवित्र शास्त्र श्रीमद्भगवत गीता जी पर विचार करते हैं।

❖ इस पुस्तक में श्रीमद्भगवत गीता का सम्पूर्ण सारांश है जिसमें प्रत्येक अध्याय का भिन्न-भिन्न विश्लेषण किया गया है। विश्व में एकमात्र गीता का यथार्थ प्रकाश किया गया है। मुझ दास (रामपाल) के अतिरिक्त वर्तमान तक गीता के गूढ़ रहस्यों को कोई उजागर नहीं कर सका। सभी ने कुछ शब्दों के अर्थ भी गलत किए हैं तथा श्लोकों का भावार्थ ही बदल दिया।

उदाहरण के लिए गीता अध्याय 18 श्लोक 66 का भावार्थ है कि गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमेश्वर की शरण में जाने के लिए कहा है। व्रज का अर्थ जाना है, परंतु मेरे अतिरिक्त सर्व अनुवादकों ने ''व्रज'' का अर्थ आना किया है। आश्चर्य की बात तो यह है कि गीता अध्याय 18 के ही श्लोक 62 में स्पष्ट व ठीक अर्थ किया है कि गीता बोलने वाले काल ब्रह्म ने अपने से अन्य परम अक्षर ब्रह्म यानि परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है। वह परमेश्वर कौन है? इसका ज्ञान हिन्दू गुरूओं को नहीं है। जिस कारण से भोली जनता को भ्रमित करते रहे हैं कि श्री कष्ण ने गीता का ज्ञान बोला तथा अपनी ही शरण में आने के लिए कहा है। जबकि अनेकों अध्यायों के श्लोकों में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य उत्तम पुरूष यानि पुरूषोत्तम अविनाशी परमेश्वर के विषय में स्पष्ट कहा कि वही परमात्मा कहा जाता है। तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। प्रमाण - गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में।

इसके अतिरिक्त गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में उसे परम अक्षर ब्रह्म कहा है। इसी अध्याय के श्लोक 8, 9, 10 में उस दिव्य परमपुरूष की भक्ति करने से साधक उसी को प्राप्त होता है। इसी अध्याय 8 के श्लोक 20, 21, 22 में उसी अन्य अमर परमात्मा (सत्य पुरूष) की महिमा कही है जो इस पवित्र पुस्तक में पढ़ने को मिलेंगे। आप अपने को धन्य समझेंगे।

हिन्दू धर्मगुरूओं को यह भी ज्ञान नहीं है कि गीता का ज्ञान श्री कष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके काल ब्रह्म ने कहा था। जैसे प्रेत किसी के शरीर में प्रवेश करके बोलता है। पढ़ें प्रमाण सहित सत्य गीता सार।

"पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी का ज्ञान किसने कहा?"

पवित्र गीता जी के ज्ञान को उस समय बोला गया था जब महाभारत का युद्ध होने जा रहा था। अर्जुन ने युद्ध करने से इन्कार कर दिया था। युद्ध क्यों हो रहा था? इस युद्ध को धर्मयुद्ध की संज्ञा भी नहीं दी जा सकती क्योंकि दो परिवारों का सम्पत्ति वितरण का विषय था। कौरवों तथा पाण्डवों का सम्पत्ति बंटवारा नहीं हो रहा था। कौरवों ने पाण्डवों को आधा राज्य भी देने से मना कर दिया था। दोनों पक्षों का बीच-बचाव करने के लिए प्रभु श्री कष्ण जी तीन बार शान्ति दूत बन कर गए। परन्तु दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी जिद्द पर अटल थे। श्री कष्ण जी ने युद्ध से होने वाली हानि से भी परिचित कराते हुए कहा कि न जाने कितनी बहन विधवा होंगी? न जाने कितने बच्चे अनाथ होंगे? महापाप के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा। युद्ध में न जाने कौन मरे, कौन बचे? तीसरी बार जब श्री कष्ण जी समझौता करवाने गए तो दोनों पक्षों ने अपने-अपने पक्ष वाले राजाओं की सेना सहित सूची पत्र दिखाया तथा कहा कि इतने राजा हमारे पक्ष में हैं तथा इतने हमारे पक्ष में। जब श्री कष्ण जी ने देखा कि दोनों ही पक्ष टस से मस नहीं हो रहे हैं, युद्ध के लिए तैयार हो चुके हैं। तब श्री कष्ण जी ने सोचा कि एक दॉव और है वह भी आज लगा देता हूँ। श्री कष्ण जी ने सोचा कि कहीं पाण्डव मेरे सम्बन्धी होने के कारण अपनी जिद्द इसलिए न छोड़ रहे हों कि श्री कष्ण हमारे साथ हैं, विजय हमारी ही होगी(क्योंकि श्री कष्ण जी की बहन सुभद्रा जी का विवाह श्री अर्जुन जी से हुआ था)। श्री कष्ण जी ने कहा कि एक तरफ मेरी सर्व सेना होगी और दूसरी तरफ मैं होऊँगा और इसके साथ-साथ मैं वचनबद्ध भी होता हूँ कि मैं हथियार भी नहीं उठाऊँगा। इस घोषणा से पाण्डवों के पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई। उनको लगा कि अब हमारी पराजय निश्चित है। यह विचार कर पाँचों पाण्डव यह कह कर सभा से बाहर गए कि हम कुछ विचार कर लें। कुछ समय उपरान्त श्री कष्ण जी को सभा से बाहर आने की प्रार्थना की। श्री कष्ण जी के बाहर आने पर पाण्डवों ने कहा कि हे भगवन्! हमें पाँच गाँव दिलवा दो। हम युद्ध नहीं चाहते हैं। हमारी इज्जत भी रह जाएगी और आप चाहते हैं कि युद्ध न हो, यह भी टल जाएगा। श्री कष्ण से अपनी राय बताकर अपने घर चले गए।

पाण्डवों के इस फैसले से श्री कष्ण जी बहुत प्रसन्न हुए तथा सोचा कि बुरा समय टल गया। श्री कष्ण जी वापिस आए, सभा में केवल कौरव तथा उनके समर्थक शेष थे। श्री कष्ण जी ने कहा दुर्योधन युद्ध टल गया है। मेरी भी यह हार्दिक इच्छा थी। आप पाण्डवों को पाँच गाँव दे दो, वे कह रहे हैं कि हम युद्ध नहीं चाहते। दुर्योधन ने कहा कि पाण्डवों के लिए सुई की नोक तुल्य भी जमीन नहीं है। यदि उन्हें राज्य चाहिए तो युद्ध के लिए कुरुक्षेत्र के मैदान में आ जाऐं। इस बात से श्री कष्ण जी ने नाराज होकर कहा कि दुर्योधन तू इंसान नहीं शैतान है। कहाँ आधा राज्य और कहाँ पाँच गाँव? मेरी बात मान ले, पाँच गाँव दे दे। श्री

कष्ण से नाराज होकर दुर्योधन ने सभा में उपस्थित योद्धाओं को आज्ञा दी कि श्री कष्ण को पकड़ो तथा कारागार में डाल दो। आज्ञा मिलते ही योद्धाओं ने श्री कष्ण जी को चारों तरफ से घेर लिया। श्री कष्ण जी ने अपना विराट रूप दिखाया। जिस कारण सर्व योद्धा और कौरव डर कर कुर्सियों के नीचे घुस गए तथा शरीर के तेज प्रकाश से आँखें बंद हो गई। कष्ण जी वहाँ से निकल गए।

विचार करें :- उपरोक्त विराट रूप दिखाने का प्रमाण संक्षिप्त महाभारत गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित में प्रत्यक्ष है।

प्रमाण :- ''गीता ज्ञान श्री कष्ण ने नहीं कहा'' :-

❖ जब कुरुक्षेत्र के मैदान में पवित्र गीता जी का ज्ञान सुनाते समय अध्याय 11 श्लोक 32 में पवित्र गीता बोलने वाला प्रभु कह रहा है कि 'अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ। अब सर्व लोकों को खाने के लिए प्रकट हुआ हूँ।' जरा सोचें कि श्री कष्ण जी तो पहले से ही श्री अर्जुन जी के साथ थे। यदि पवित्र गीता जी के ज्ञान को श्री कष्ण जी बोल रहे होते तो यह नहीं कहते कि अब प्रवत्त हुआ हूँ। फिर अध्याय 11 श्लोक 21 व 46 में अर्जुन कह रहा है कि भगवन् ! आप तो ऋषियों, देवताओं तथा सिद्धों को भी खा रहे हो, जो आप का ही गुणगान पवित्र वेदों के मंत्रों द्वारा उच्चारण कर रहे हैं तथा अपने जीवन की रक्षा के लिए मंगल कामना कर रहे हैं। कुछ आपके दाढ़ों में लटक रहे हैं, कुछ आप के मुख में समा रहे हैं। हे सहस्त्र बाहु अर्थात् हजार भुजा वाले भगवान! आप अपने उसी चतुर्भुज रूप में आईये। मैं आपके विकराल रूप को देखकर धीरज नहीं रख पा रहा हूँ।

❖ गीता अध्याय 11 श्लोक 31 में अर्जुन ने पूछा कि हे महानुभाव! उग्र रूप वाले आप कौन हैं? मुझे बतलाईए।

❖ श्री कष्ण जी तो अर्जुन के साले थे। श्री कष्ण की बहन सुभद्रा का विवाह अर्जुन से हुआ था। क्या व्यक्ति अपने साले को भी नहीं जानता? इससे सिद्ध है कि गीता का ज्ञान श्री कष्ण ने नहीं कहा, काल ब्रह्म ने बोला था।

❖ अध्याय 11 श्लोक 47 में पवित्र गीता जी को बोलने वाले प्रभु काल ने कहा है कि 'हे अर्जुन! यह मेरा वास्तविक काल रूप है, जिसे तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा था।'

❖ उपरोक्त विवरण से एक तथ्य तो यह सिद्ध हुआ कि कौरवों की सभा में विराट रूप श्री कष्ण जी ने दिखाया था तथा कुरूक्षेत्र में युद्ध के मैदान में विराट रूप काल (श्री कष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके अपना विराट रूप काल) ने दिखाया था। नहीं तो यह नहीं कहता कि यह विराट रूप तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा है। क्योंकि श्री कष्ण जी अपना विराट रूप कौरवों की सभा में पहले ही दिखा चुके थे जो अनेकों ने देखा था।

❖ दूसरी यह बात सिद्ध हुई कि पवित्र गीता जी को बोलने वाला काल(ब्रह्म-ज्योति निरंजन) है, न कि श्री कष्ण जी। क्योंकि श्री कष्ण जी ने पहले कभी नहीं कहा कि मैं काल हूँ तथा बाद में कभी नहीं कहा कि मैं काल हूँ। श्री कष्ण जी काल

नहीं हो सकते। उनके दर्शन मात्र को तो दूर-दूर क्षेत्र के स्त्री तथा पुरुष तड़फा करते थे। पशु-पक्षी भी उनको प्यार करते थे। यही प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में है जिसमें गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि बुद्धिहीन जन समुदाय मेरे उस घटिया (अनुत्तम) अटल विधान को नहीं जानते कि मैं कभी भी मनुष्य की तरह किसी के सामने प्रकट नहीं होता। मैं अपनी योगमाया से छिपा रहता हूँ।

गीता अध्याय 4 श्लोक 9 में कहा है कि हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं। भावार्थ है कि काल ब्रह्म अन्य के शरीर में प्रवेश करके कार्य करता है। जैसे श्री कष्ण जी ने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि मैं महाभारत के युद्ध में किसी को मारने के लिए शस्त्र भी नहीं उठाऊँगा। श्री कष्ण में काल ब्रह्म ने प्रवेश होकर रथ का पहिया उठाकर अनेकों सैनिकों को मार डाला। पाप श्री कष्ण जी के जिम्मे कर दिए। प्रतिज्ञा भी समाप्त करके कलंकित किया।

जिस समय काल ब्रह्म ने श्री कष्ण जी के शरीर से बाहर निकालकर अपना विराट रूप दिखाया, वह बहुत प्रकाशमान था। अर्जुन भयभीत हो गया तथा श्री कष्ण उस विराट रूप के प्रकाश में ओझल हो गया था। इसलिए पूछ रहा था कि आप कौन हो? क्या अपने साले से भी यह पूछा जाता है कि आप कौन हो? इसलिए गीता का ज्ञान काल ब्रह्म ने श्री कष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके बोला था।

➢ उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता श्री कष्ण जी नहीं है क्योंकि श्री कष्ण जी तो सर्व समक्ष साक्षात् थे। श्री कष्ण नहीं कहते कि मैं अपनी योग माया से छिपा रहता हूँ। इसलिए गीता जी का ज्ञान श्री कष्ण जी के अन्दर प्रेतवत् प्रवेश करके काल ने बोला था।

विराट रूप क्या है?

विराट रूप : आप दिन के समय या चाँदनी रात्रि में जब आप के शरीर की छाया छोटी लगभग शरीर जितनी लम्बी हो या कुछ बड़ी हो, उस छाया के सीने वाले स्थान पर दो मिनट तक एक टक देखें, चाहे आँखों से पानी भी क्यों न गिरें। फिर सामने आकाश की तरफ देखें। आपको अपना ही विराट रूप दिखाई देगा, जो सफेद रंग का आसमान को छू रहा होगा। इसी प्रकार प्रत्येक मानव अपना विराट रूप रखता है। परन्तु जिनकी भक्ति शक्ति ज्यादा होती है, उनका उतना ही तेज अधिक होता जाता है।

इसी प्रकार श्री कष्ण जी भी पूर्व भक्ति शक्ति से सिद्धि युक्त थे, उन्होंने भी अपनी सिद्धि शक्ति से अपना विराट रूप प्रकट कर दिया, जो काल के तेजोमय शरीर(विराट) से कम तेजोमय था। तीसरी बात यह सिद्ध हुई कि पवित्र गीता जी बोलने वाला प्रभु काल सहस्त्रबाहु अर्थात् हजार भुजा युक्त है तथा श्री कष्ण जी तो श्री विष्णु जी के अवतार हैं जो चार भुजा युक्त हैं। श्री विष्णु जी सोलह कला युक्त हैं तथा श्री ज्योति निरंजन काल भगवान एक हजार कला युक्त है। जैसे एक बल्ब 60 वाट का होता है, एक बल्ब 100 वाट का होता है, एक बल्ब 1000 वाट का

होता है, रोशनी सर्व बल्बों की होती है, परन्तु बहुत अन्तर होता है। ठीक इसी प्रकार दोनों प्रभुओं की शक्ति तथा विराट रूप का तेज भिन्न-भिन्न था।

इस तत्वज्ञान के प्राप्त होने से पूर्व जो गीता जी के ज्ञान को समझाने वाले जो महात्मा जी थे, मैं उनसे प्रश्न किया करता कि पहले तो भगवान श्री कृष्ण जी शान्ति दूत बनकर गए थे तथा कहा था कि युद्ध करना महापाप है। जब श्री अर्जुन जी ने स्वयं युद्ध करने से मना करते हुए कहा कि हे देवकी नन्दन मैं युद्ध नहीं करना चाहता हूँ। सामने खड़े स्वजनों व नातियों तथा सैनिकों का होने वाला विनाश देख कर मैंने अटल फैसला कर लिया है कि मुझे तीन लोक का राज्य भी प्राप्त हो तो भी मैं युद्ध नहीं करूँगा। मैं तो चाहता हूँ कि मुझ निहत्थे को दुर्योधन आदि तीर से मार डालें, ताकि मेरी मृत्यु से युद्ध में होने वाला विनाश बच जाए। हे श्री कृष्ण! मैं युद्ध न करके भिक्षा का अन्न खाकर भी निर्वाह करना उचित समझता हूँ। हे कृष्ण ! स्वजनों को मारकर तो पाप को ही प्राप्त होंगे। मेरी बुद्धि काम करना बंद कर गई है। आप हमारे गुरु हो, मैं आपका शिष्य हूँ। आप जो हमारे हित में हो वही शिक्षा दीजिए। परंतु मैं नहीं मानता हूँ कि आपकी कोई भी राय मुझे युद्ध के लिए तैयार कर पायेगी अर्थात् मैं युद्ध नहीं करूँगा। (प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 1 श्लोक 31 से 39, 46 तथा अध्याय 2 श्लोक 5 से 8)

श्री कृष्ण जी में प्रवेश काल बार-बार कहने लगा कि अर्जुन कायर मत बन, युद्ध कर। या तो युद्ध में मारा जाकर स्वर्ग को प्राप्त होगा, या युद्ध जीत कर पृथ्वी के राज्य को भोगेगा, आदि-आदि कह कर ऐसा भयंकर विनाश करवा डाला जो आज तक के संत-महात्माओं तथा सभ्य लोगों के चरित्र में ढूंढने से भी नहीं मिलता है। तब वे अज्ञानी गुरु जी(नीम-हकीम) कहा करते थे कि अर्जुन क्षत्री धर्म को त्याग रहा था। इससे क्षत्रित्व को हानि तथा शूरवीरता का सदा के लिए विनाश हो जाता। अर्जुन को क्षत्री धर्म पालन करवाने के लिए यह महाभारत का युद्ध श्री कृष्ण जी ने करवाया था।

विश्लेषण :- भगवान श्री कृष्ण जी स्वयं क्षत्री थे। कंस के वध के उपरान्त श्री अग्रसैन जी ने मथुरा की बाग-डोर अपने दोहते श्री कृष्ण जी को संभलवा दी थी। एक दिन नारद जी ने श्री कृष्ण जी को बताया कि निकट ही एक गुफा में एक सिद्धि युक्त राक्षस राजा मुचकन्द सोया पड़ा है। वह छः महीने सोता है तथा छः महीने जागता है। जागने पर छः महीने युद्ध करता रहता है तथा छः महीने शयन के समय यदि कोई उसकी निन्द्रा भंग कर दे तो मुचकन्द की आँखों से अग्नि बाण छूटते हैं तथा सामने वाला तुरन्त मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, आप सावधान रहना। यह कह कर श्री नारद जी चले गए।

कुछ समय उपरान्त श्री कृष्ण जी को छोटी उम्र में मथुरा के सिंहासन पर बैठा देख कर कालयवन नामक राजा ने अपने दामाद कंस की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए अठारह करोड़ सेना लेकर मथुरा पर आक्रमण कर दिया। श्री कृष्ण जी ने देखा कि दुश्मन की सेना बहु संख्या में है तथा न जाने कितने सैनिक मृत्यु

को प्राप्त होंगे, क्यों न कालयवन का वध मुचकन्द से करवा दूँ। भगवान श्री कृष्ण जी ने कालयवन को युद्ध के लिए ललकारा तथा युद्ध छोड़ कर(क्षत्री धर्म को भूलकर विनाश टालना आवश्यक जानकर) भाग लिये और उस गुफा में प्रवेश किया जिसमें मुचकन्द सोया हुआ था। मुचकन्द के शरीर पर अपना पीताम्बर(पीली चद्दर) डाल कर श्री कृष्ण जी गुफा में गहरे जाकर छुप गए। पीछे-पीछे कालयवन भी उसी गुफा में प्रवेश कर गया। कालयवन ने मुचकन्द को श्री कृष्ण समझकर उसका पैर पकड़ कर घुमा दिया तथा कहा कि कायर तुझे छुपे हुए को थोड़े ही छोडूंगा। पीड़ा के कारण मुचकन्द की निंद्रा भंग हुई, नेत्रों से अग्नि बाण निकलें तथा कालयवन का वध हुआ। कालयवन के सैनिक तथा मंत्री अपने राजा के शव को लेकर वापिस चल पड़े। क्योंकि युद्ध में राजा की मृत्यु सैना की हार मानी जाती थी। जाते हुए कह गए कि हम नया राजा नियुक्त करके शीघ्र ही आयेंगे तथा श्री कृष्ण तुझे नहीं छोड़ेंगे।

श्री कृष्ण जी ने अपने मुख्य अभियन्ता (चीफ इन्जिनियर) श्री विश्वकर्मा जी को बुला कर कहा कि कोई ऐसा स्थान खोजो, जिसके तीन तरफ समुद्र हो तथा एक ही रास्ता(द्वार) हो। वहाँ पर अति शीघ्र एक द्वारिका(एक द्वार वाली) नगरी बना दो। हम शीर्घ ही यहाँ से प्रस्थान करेंगे। ये मूर्ख लोग यहाँ चैन से नहीं जीने देंगे। श्री कृष्ण जी इतने नेक आत्मा तथा युद्ध विरोधी थे कि अपने क्षत्रीत्व को भी दाव पर रख कर जुल्म को टाला। क्या फिर वही श्री कृष्ण जी अपने प्यारे साथी व बहनोई को ऐसी गलत राय दे सकते हैं? स्वयं युद्ध न करने का वचन करने वाले दूसरे को युद्ध की प्रेरणा दे सकते हैं? अर्थात् कभी नहीं। गीता अध्याय 18 श्लोक 43 में गीता ज्ञान दाता ने क्षत्री के स्वभाविक कर्मों का उल्लेख करते हुए कहा है कि ''युद्ध से न भागना'' आदि-२ क्षत्री के स्वभाविक कर्म है। इस से भी सिद्ध हुआ कि गीता जी का ज्ञान श्री कृष्ण जी ने नहीं बोला। क्योंकि श्री कृष्ण जी स्वयं क्षत्री होते हुए कालयवन के सामने से युद्ध से भाग गए थे। व्यक्ति स्वयं किए कर्म के विपरीत अन्य को राय नहीं देता। न उसकी राय श्रोता को ठीक जचेगी। वह उपहास का पात्र बनेगा। यह गीता ज्ञान ब्रह्म(काल) ने प्रेतवत् श्री कृष्ण जी में प्रवेश करके बोला था। भगवान श्री कृष्ण रूप में स्वयं श्री विष्णु जी ही अवतार धार कर आए थे।

एक समय श्री भृगु ऋषि ने आराम से बैठे भगवान श्री विष्णु जी(श्री कृष्ण जी) के सीने में लात घात किया। श्री विष्णु जी ने श्री भृगु ऋषि जी के पैर को सहलाते हुए कहा कि 'हे ऋषिवर! आपके कोमल पैर को कहीं चोट तो नहीं आई, क्योंकि मेरा सीना तो कठोर पत्थर जैसा है।' यदि श्री विष्णु जी(श्री कृष्ण जी) युद्ध प्रिय होते तो सुदर्शन चक्र से श्री भृगु जी के इतने टुकड़े कर सकते थे कि गिनती न होती।

वास्तविकता यह है कि काल भगवान जो इक्कीस ब्रह्मण्ड का प्रभु है, उसने प्रतिज्ञा की है कि मैं स्थूल शरीर में व्यक्त(मानव सदृश अपने वास्तविक) रूप में सबके सामने नहीं आऊँगा। उसी ने सूक्ष्म शरीर बनाकर प्रेत की तरह श्री कृष्ण

जी के शरीर में प्रवेश करके पवित्र गीता जी का ज्ञान तो सही(वेदों का सार) कहा, परन्तु युद्ध करवाने के लिए भी अटकल बाजी में कसर नहीं छोड़ी। काल(ब्रह्म) कौन है? यह जानने के लिए कृप्या पढ़िए सृष्टि रचना इसी पुस्तक के पृष्ठ नं. 206 पर।

अन्य प्रमाण :- ''गीता का ज्ञान श्री कृष्ण जी ने नहीं कहा'' :-

❖ जब तक महाभारत का युद्ध समाप्त नहीं हुआ तब तक ज्योति निरंजन (काल - ब्रह्म - क्षर पुरुष) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश रहा तथा युधिष्ठिर जी से झूठ बुलवाया कि कह दो कि अश्वत्थामा मर गया, श्री बबरु भान(खाटू श्याम जी) का शीश कटवाया तथा रथ के पहिए को हथियार रूप में उठाया, यह सर्व काल ही का किया-कराया उपद्रव था, प्रभु श्री कृष्ण जी का नहीं। महाभारत का युद्ध समाप्त होते ही काल भगवान श्री कृष्ण जी के शरीर से निकल गया। श्री कृष्ण जी ने श्री युधिष्ठिर जी को इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) की राजगद्दी पर बैठाकर द्वारिका जाने को कहा। तब अर्जुन आदि ने प्रार्थना की कि हे श्री कृष्ण जी! आप हमारे पूज्य गुरुदेव हो, हमें एक सतसंग सुना कर जाना, ताकि हम आपके सद्वचनों पर चल कर अपना आत्म-कल्याण कर सकें।

यह प्रार्थना स्वीकार करके श्री कृष्ण जी ने तिथि, समय तथा स्थान निहित कर दिया। निश्चित तिथि को श्री अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण जी से कहा कि प्रभु आज वही पवित्र गीता जी का ज्ञान ज्यों का त्यों सुनाना, क्योंकि मैं बुद्धि के दोष से भूल गया हूँ। तब श्री कृष्ण जी ने कहा कि हे अर्जुन तू निश्चय ही बड़ा श्रद्धाहीन है। तेरी बुद्धि अच्छी नहीं है। ऐसे पवित्र ज्ञान को तूं क्यों भूल गया ? फिर स्वयं कहा कि अब उस पूरे गीता ज्ञान को मैं नहीं कह सकता अर्थात् मुझे ज्ञान नहीं। कहा कि उस समय तो मैंने योग युक्त होकर बोला था। विचारणीय विषय है कि यदि भगवान श्री कृष्ण जी युद्ध के समय योग युक्त हुए होते तो शान्ति समय में योग युक्त होना कठीन नहीं था। जबकि श्री व्यास जी ने वही पवित्र गीता जी का ज्ञान वर्षों उपरान्त ज्यों का त्यों लिपिबद्ध कर दिया। उस समय वह ब्रह्म(काल-ज्योति निरंजन) ने श्री व्यास जी के शरीर में प्रवेश कर के पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी को लिपिबद्ध कराया, जो वर्तमान में आप के कर कमलों में है।

प्रमाण के लिए संक्षिप्त महाभारत भाग-2 के पृष्ठ 667 तथा पुराने के पृष्ठ नं. 1531 पर:-

न शक्यं तन्मया भूयस्तथा वक्तुमशेषतः।। परं हि ब्रह्म कथितं योगयुक्तेन तन्मया।

(महाभारत, आश्रवः 1612-13)

भगवान बोले - 'वह सब-का-सब उसी रूपमें फिर दुहरा देना। अब मेरे वश की बात नहीं है। उस समय मैंने योगयुक्त होकर परमात्मतत्वका वर्णन किया था।'

संक्षिप्त महाभारत द्वितीय भाग के पृष्ठ नं. 1531 से निम्न प्रकरण सहाभार :

('श्रीकृष्ण का अर्जुन से गीता का विषय पूछना सिद्ध महर्षि वैशम्पायन और काश्यप का संवाद') :- पाण्डुनन्दन अर्जुन श्रीकृष्ण के साथ रहकर बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने एक बार उस रमणीय सभा की ओर दृष्टि डालकर भगवान् से यह वचन कहा 'देवकीनन्दन! जब युद्ध का

अवसर उपस्थित था, उस समय मुझे आपके माहात्म्य का ज्ञान और <u>ईश्वरीय स्वरूप का दर्शन हुआ था,</u> किंतु केशव ! आपने स्नेहवश पहले मुझे जो ज्ञान का उपदेश किया था, वह सब इस समय बुद्धि के दोष से भूल गया है। उन विषयों को सुनने के लिये बारंबार मेरे मन में उत्कण्ठा होती है, इधर, आप जल्दी ही द्वारका जाने वाले हैं। अतः पुनः वह सब विषय मुझे सुना दीजिये।

वैशम्पायन जी कहते हैं --अर्जुनके ऐसा कहनेपर वक्ताओं में श्रेष्ठ महातेजस्वी भगवान् श्रीकष्णने उन्हें गलेसे लगाकर इस प्रकार उत्तर दिया।

श्रीकष्ण बोले - अर्जुन ! उस समय मैंने तुम्हें अत्यन्त गोपनीय विषयका श्रवण कराया था, अपने स्वरूपभूत धर्म सनातन पुरुषोत्तमतत्त्वका परिचय दिया था और (शुक्ल-कष्ण गतिका निरूपण करते हुए) नित्य लोकोंका भी वर्णन किया था। किंतु तुमने जो अपनी नासमझीके कारण उस उपदेशको याद नहीं रक्खा यह जानकर मुझे बड़ा खेद हुआ है। उन बातोंका अब पूरा-पूरा स्मरण होना सम्भव नहीं जान पड़ता। पाण्डुनन्दन ! निश्चय ही तुम बड़े श्रद्धाहीन हो, तुम्हारी बुद्धि अच्छी नहीं जान पड़ती। अब मेरे लिये उस उपदेशको ज्यों-का-त्यों दुहरा देना कठिन है, क्योंकि उस समय योगयुक्त होकर मैंने परमात्मतत्त्वका वर्णन किया था। (अधिक जानकारी के लिए पढ़ें - 'संक्षिप्त महाभारत द्वितीय भाग')

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री कष्ण जी ने श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान नहीं बोला, यह तो काल (ज्योति निरंजन अर्थात् ब्रह्म) ने बोला था।

❖ श्री कष्ण जी ने अर्जुन को अपने स्तर की गीता सुनाई जो महाभारत ग्रन्थ में इस प्रकरण के तुरंत पश्चात् यानि लगातार लिखी है जो श्री कष्ण जी ने अपने ज्ञान स्तर की गीता कही है जो एक ऋषि की कहानी है जिसमें जरा भी आध्यात्मिक ज्ञान इस श्रीमद्भगवत से मेल नहीं करता।

आश्चर्य की बात तो यह है कि वही गीता जो महाभारत के युद्ध के पूर्व काल ब्रह्म ने श्री कष्ण में प्रवेश करके बोली थी, श्री वेद व्यास ऋषि ने वर्षों उपरांत शब्दाशब्द लिखी जो सात सौ (700) श्लोकों में अपने को उपलब्ध है। श्री कष्ण जी को याद नहीं थी क्योंकि उनको पता ही नहीं कि क्या बोला था। काल ने वेदव्यास जी की दिव्य दष्टि खोल दी जिस कारण से वेद व्यास जी ने गीता लिखी थी।

अन्य प्रमाण :- (1) कुछ समय उपरान्त श्री युधिष्ठिर जी को भयंकर स्वपन आने लगे। श्री कष्ण जी से कारण तथा समाधान पूछा तो बताया कि तुमने युद्ध में जो पाप किए हैं वह नर संहार का दोष तुम्हें दुःख दाई हो रहा है। इसके लिए एक यज्ञ करो। श्री कष्ण जी के मुख कमल से यह वचन सुन कर श्री अर्जुन को बहुत दुःख हुआ तथा मन ही मन विचार करने लगा कि भगवान श्री कष्ण जी पवित्र गीता बोलते समय तो कह रहे थे कि अर्जुन तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा, तूं युद्ध कर ले(पवित्र गीता अध्याय 2 श्लोक 37-38)। यदि युद्ध में मारा भी गया तो स्वर्ग का सुख भोगेगा, अन्यथा युद्ध में जीत कर पथ्वी के राज्य का आनन्द लेगा। अर्जुन ने विचार किया कि जो समाधान दुःख निवारण का श्री कष्ण जी ने बताया है इसमें

करोड़ों रूपये व्यय होने हैं। जिससे बड़े भाई युधिष्ठिर का कष्ट निवारण होगा। यदि मैं श्री कष्ण जी से वाद-विवाद करूंगा कि आप पवित्र गीता जी का ज्ञान देते समय तो कह रहे थे कि तुम्हें पाप नहीं लगेगा। अब उसके विपरित कह रहे हो। इससे मेरा बड़ा भाई यह न सोच बैठे कि करोड़ों रूपये के खर्च को देख कर अर्जुन बौखला गया है तथा मेरे कष्ट निवार्ण से प्रसन्न नहीं है। इसलिए मौन रहना उचित जान कर सहर्ष स्वीकति दे दी कि जैसा आप कहोगे वैसा ही होगा। श्री कष्ण जी ने उस यज्ञ की तिथि निर्धारित कर दी। वह यज्ञ भी श्री सुदर्शन सुपच के भोजन खाने से सफल हुई।

कुछ समय उपरान्त ऋषि दुर्वासा जी के शापवश सर्व यादव कुल विनाश हो गया, श्री कष्ण भगवान के पैर के तलुवे में एक शिकारी (जो त्रेतायुग में सुग्रीव के भाई बाली की ही आत्मा थी) ने विषाक्त तीर मार दिया। तब पाँचों पाण्डवों के घटना स्थल पर पहुँच जाने के उपरान्त श्री कष्ण जी ने कहा कि आप मेरे शिष्य हो मैं आप का धार्मिक गुरु भी हूँ। इसलिए मेरी अन्तिम आज्ञा सुनो। एक तो यह है कि अर्जुन, द्वारिका की सर्व स्त्रियों को इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) ले जाना, क्योंकि यहाँ कोई नर नहीं बचा है तथा दूसरे आप सर्व पाण्डव राज्य त्याग कर हिमालय में साधना करके शरीर को गला देना। क्योंकि तुमने महाभारत के युद्ध के दौरान जो हत्याऐं की थी, तुम्हारे शीश पर वह पाप बहुत भयंकर है। उस समय अर्जुन अपने आप को नहीं रोक सका तथा कहा प्रभु वैसे तो आप ऐसी स्थिति में हैं कि मुझे ऐसी बातें नहीं करनी चाहिऐं, परन्तु प्रभु यदि आज मेरी शंका का समाधान नहीं हुआ तो मैं चैन से मर भी नहीं पाऊँगा। पूरा जीवन रोता रहूँगा। श्री कष्ण जी ने कहा अर्जुन पूछ ले जो कुछ पूछना है, मेरी अन्तिम घड़ियाँ हैं। श्री अर्जुन ने आँखों में आंसू भर कर कहा कि प्रभु बुरा न मानना। जब आपने पवित्र गीता जी का ज्ञान कहा था उस समय मैं युद्ध करने से मना कर रहा था। आपने कहा था कि अर्जुन तेरे दोनों हाथों में लड्डू हैं। यदि युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग को प्राप्त होगा और यदि विजयी हुआ तो पथ्वी का राज्य भोगेगा तथा तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा। हमने आप ही की देख-रेख व आज्ञानुसार युद्ध किया(प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 2 श्लोक 37-38)। हे भगवन! हमारे तो एक हाथ में भी लड्डू नहीं रहा। न तो युद्ध में मर कर स्वर्ग प्राप्ति हुई तथा अब राज्य त्यागने का आदेश आप दे रहे हैं, न ही पथ्वी के राज्य का आनन्द ही भोग पाए। ऐसा छल युक्त व्यवहार करने में आपका क्या हित था? अर्जुन के मुख से यह वचन सुन कर युधिष्ठिर जी ने कहा कि अर्जुन ऐसी स्थिति में जबकि भगवान अन्तिम श्वांस गिन रहे हैं। आपका शिष्टाचार रहित व्यवहार शोभा नहीं देता। श्री कष्ण जी ने कहा अर्जुन आज मैं अन्तिम स्थिति में हूँ, तुम मेरे अत्यन्त प्रिय हो, आज वास्तविकता बताता हूँ कि कोई खलनायक जैसी और शक्ति है जो अपने को यन्त्र की तरह नचाती रही, मुझे कुछ मालूम नहीं मैंने गीता में क्या बोला था। परन्तु अब मैं जो कह रहा हूँ वह तुम्हारे हित में है। श्री कष्ण जी यह वचन अश्रुयुक्त नेत्रों से कह कर प्राण त्याग

गए। उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि पवित्र गीता जी का ज्ञान श्री कृष्ण जी ने नहीं कहा। यह तो ब्रह्म(ज्योति निरंजन-काल) ने बोला है, जो इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी है। काल(ब्रह्म) कौन है? यह जानने के लिए सृष्टि रचना पढ़े।

श्री कृष्ण सहित सर्व यादवों का अन्तिम संस्कार कर अर्जुन को छोड़ कर चारों भाई इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) चले गए। पीछे से अर्जुन द्वारिका की स्त्रियों को लिए आ रहा था। रास्ते में जंगली लोगों ने सर्व गोपियों को लूटा तथा कुछेक को भगा ले गए तथा अर्जुन को पकड़ कर पीटा। अर्जुन के हाथ में वही गांडीव धनुष था जिससे महाभारत के युद्ध में अनगिन हत्याऐं कर डाली थी, वह भी नहीं चला। तब अर्जुन ने कहा कि यह श्री कृष्ण वास्तव में झूठा तथा कपटी था। जब युद्ध में पाप करवाना था तब तो मुझे शक्ति प्रदान कर दी, एक तीर से सैकड़ों योद्धाओं को मार गिराता था और आज वह शक्ति छीन ली, खड़ा-खड़ा पिट रहा हूँ। इसी विषय में पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब (कविर्देव) जी का कहना है कि श्री कृष्ण जी कपटी व झूठे नहीं थे। यह सर्व जुल्म काल(ज्योति निरंजन) कर रहा है। जब तक यह आत्मा कबीर परमेश्वर(सतपुरुष) की शरण में पूरे सन्त(तत्वदर्शी) के माध्यम से नहीं आ जाएगी, तब तक काल इसी तरह कष्ट पर कष्ट देता रहेगा। पूर्ण जानकारी तत्वज्ञान से होती है। इसीलिए काल कौन है? यह जानने के लिए पढ़ें सृष्टि रचना।

अन्य प्रमाण :-

(2) गीता अध्याय 10 श्लोक 9 से 11 में गीता ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि जो श्रद्धालु मुझ ब्रह्म का ही निरन्तर चिन्तन करते रहते हैं उनके अज्ञान को नष्ट करने के लिए मैं ही उनके अन्दर(आत्मभावस्थः) जीवात्मा की तरह बैठकर शास्त्रों का ज्ञान देता हूँ।

(3) श्री विष्णु पुराण(गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के चतुर्थ अंश अध्याय 2 श्लोक 21 से 26 में पृष्ठ 168 पर लिखा है कि देवताओं और राक्षसों के युद्ध में देवताओं की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने कहा है कि मैं राजर्षि शशाद के शरीर में कुछ समय प्रवेश करके असुरों का नाश करूँगा। ऐसा ही किया गया।

(4) श्री विष्णु पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के चतुर्थ अंश अध्याय 3 श्लोक 4 से 6 में पृष्ठ 173 पर लिखा है कि ''नागेश्वरों की प्रार्थना स्वीकार करके श्री विष्णु जी ने कहा कि मैं मान्धाता के पुत्र पुरूकुत्स के शरीर में प्रवेश करके गन्धर्वों का नाश करूंगा। वैसा ही किया गया। {यहाँ पर विष्णु रूप में काल(ब्रह्म) बोल रहा है}

विशेष विचार :- उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि इसी प्रकार श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान श्री कृष्ण ने नहीं बोला, श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश होकर ब्रह्म (काल अर्थात् ज्योति निरंजन) ने बोला था।

(5) श्री कृष्ण जी की बहन सुभद्रा का विवाह अर्जुन से हुआ था। श्री कृष्ण जी नाते में अर्जुन के साले लगते थे। गीता अध्याय 11 श्लोक 31 में अर्जुन ने पूछा कि हे उग्र रूप वाले! आप कौन हो? गीता अध्याय 11 के श्लोक 32 में गीता ज्ञान

दाता ने उत्तर दिया कि मैं काल हूँ। सर्व सेना का नाश करने के लिए अब प्रवत्त हुआ हूँ यानि आया हूँ।

विचारणीय विषय है कि क्या कोई अपने साले को नहीं जानता? अर्जुन को उस समय काल दिखाई दिया था जो श्री कष्ण के शरीर से निकलकर अपने वास्तविक रूप में प्रकट था। गीता अध्याय 11 श्लोक 47 में भी स्पष्ट किया है कि यह मेरा स्वरूप है जिसे तेरे अतिरिक्त न तो किसी ने पहले देखा था, न कोई भविष्य में देख सकेगा। इससे सिद्ध हुआ कि श्री कष्ण के शरीर में काल ने प्रवेश करके गीता का ज्ञान कहा था।

क्योंकि वह उपरोक्त नियम से किसी भी योग्य व्यक्ति में प्रेतवत् प्रवेश करके अपना कार्य सिद्ध करता है। पश्चात् निकल जाता है जैसे अर्जुन में प्रवेश करके विरोधी सेना मार डाली पश्चात् निकल गया। फिर अर्जुन को जंगली व्यक्तियों ने मारा-पीटा। अर्जुन में पूर्व वाली शक्ति नहीं रही।

"काल की परिभाषा"

पवित्र विष्णु पुराण (प्रथम अंश) अध्याय 2 श्लोक 15 में वर्णन है कि भगवान विष्णु (महाविष्णु रूप में काल) का प्रथम रूप तो पुरुष (प्रभु जैसा) है परन्तु उसका परम रूप 'काल' है। जब भगवान विष्णु (काल जो महाविष्णु रूप में ब्रह्मलोक में रहता है तथा प्रकति अर्थात् दुर्गा को अपनी पत्नी महालक्ष्मी रूप में रखता है) अपनी प्रकति (दुर्गा) से अलग हो जाता है तो काल रूप में प्रकट हो जाता है। (यह प्रकरण विष्णु पुराण प्रथम अंश अध्याय 2 पष्ठ 4-5 गीता प्रैस गोरख पुर से प्रकाशित है। अनुवादक हैं श्री मुनिलाल गुप्त।)

विशेष :- उपरोक्त विवरण का भावार्थ है कि यह महाविष्णु अर्थात् काल पुरुष प्रथम दष्टा रूप तो लगता है कि यह दयावान भगवान है। जैसे खाने के लिए अन्न, मेवा व फल आदि कितने स्वादिष्ट प्रदान किए हैं तथा पीने के लिए दूध, जल कितने स्वादिष्ट तथा प्राण दायक प्रदान किए हैं। कितनी अच्छी वायु जीने के लिए चला रखी है, कितनी विस्तत पथ्वी रहने तथा घूमने के लिए प्रदान की है, फिर पति-पत्नी का योग, पुत्रों व पुत्रियों की प्राप्ति से लगता है कि यह तो बड़ा दयावान प्रभु है। जिसके लोक में हम रह रहे हैं।

महाविष्णु का वास्तविक रूप काल कैसे है :- किसी के पुत्र की मत्यु, किसी की पुत्री की मत्यु, किसी के दोनों पुत्रों की मत्यु, किसी का पूरा परिवार दुर्घटना में मत्यु को प्राप्त हो जाता है। किसी क्षेत्र में बाढ़ आकर हजारों व्यक्तियों की परिवार सहित मत्यु, किसी क्षेत्र में भूकंप से लाखों व्यक्ति सपरिवार मत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। इस प्रकार इस विष्णु {(महाविष्णु रूप में ज्योति निरंजन) का वास्तविक रूप काल है। क्योंकि ज्योति निरंजन (काल ब्रह्म) शाप वश एक लाख मानव शरीरधारी प्राणियों का आहार करता है। इसलिए इसने अपने तीनों पुत्रों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी)} से उत्पत्ति, स्थिति व संहार

करवाता है।

उदाहरण :- अपने प्रिय सेवक श्री धर्मदास जी द्वारा काल की स्थिति पूछने पर पूर्ण ब्रह्म कविर्देव ने बताया कि जैसे कसाई बकरे पालता है। उन प्राणियों के चारे की व्यवस्था करता है, पानी का प्रबन्ध करता है, गर्मी व सर्दी से बचने के लिए कुछ मकान आदि का भी प्रबन्ध करता है, जिससे वे अबोध बकरे समझते हैं कि हमारा स्वामी बहुत नेक है। हमारा कितना ध्यान रखता है। जब कसाई उनके पास आता है तो वे नर व मादा बकरे उसे अपना सुखदाई मालिक जान कर उसको प्यार जताने के लिए आगे वाले पैर उठाकर कसाई के शरीर को स्पर्श करते हैं, कुछ उसके पैरों को चाटते हैं। कुछ को वह स्वयं छूकर कमर पर हाथ लगा कर दबा दबा कर देखता है तो वे बकरे समझते हैं कि हमें प्यार दे रहा है। परन्तु कसाई देख रहा होता है कि इस बकरे में कितने किलोग्राम मास हो चुका है। जब मास लेने के लिए ग्राहक आता है तो उस समय कसाई नहीं देखता कि किसका बाप मर रहा है, किसकी बेटी या पुत्र या सर्व परिवार मर रहा है। उनको सुविधा देने का उसका यही उद्देश्य था। ठीक इसी प्रकार सर्व प्राणी काल(ब्रह्म) साधना करके काल आहार ही बने हैं। इससे छूटने की विधि आपको इसी पुस्तक में विस्तृत मिलेगी। एक बहन ने मुझ दास का सतसंग सुना तथा बाद में अपनी दुःख भरी कथा सुनाई जो निम्न है :-

प्रत्यक्ष प्रमाण :- उस बहन ने कहा महाराज जी मैं विधवा हूँ। एक पुत्र की प्राप्ति होते ही मेरे पति की मृत्यु हो गई। मैंने अपने पुत्र की परवरिश बहुत ही चाव तथा प्यार के साथ इस दृष्टि कोण से की कि कहीं पुत्र को पिता का अभाव महसूस न हो जाए। उसने जो सम्भव वस्तु की प्रार्थना की मैंने दुःखी सुखी होकर उपलब्ध करवाई। जब वह ग्यारहवीं कक्षा में कॉलेज में जाने लगा तो मोटर साईकिल की जिद कर ली। दुर्घटना के भय से मैंने बहुत मना किया, परन्तु पुत्र ने खाना नहीं खाया। तब मैंने उसके प्यारवश होकर मोटर साईकिल जैसे-तैसे करके मोल लेकर दे दी। मैंने दूसरी शादी भी इसी उद्देश्य से नहीं करवाई की कि कहीं मेरे पुत्र को कष्ट न हो जाए। मैंने अपने पुत्र को गर्म-गर्म खाना खिलाया। वह प्रतिदिन की तरह अपने एक दोस्त को उसके घर से मोटर साईकिल पर बैठाकर कॉलेज जाने के लिए चला गया।

मैंने शेष भोजन बनाया तथा स्वयं खाने के लिए भोजन डाल कर प्रथम ग्रास ही तोड़ा था इतने में मेरे पुत्र का दोस्त दौड़ा हुआ आया, उसको कुछ चोट लगी हुई थी। उसने कहा कि चाची भईया को दुर्घटना में बहुत ज्यादा चोट आई है। इतना सुनते ही हाथ का ग्रास थाली में गिर गया। नंगे पैरों उस बच्चे के साथ पागलों की तरह रोती हुई दौड़ कर उस स्थान पर गई जहाँ मेरे पुत्र की दुर्घटना हुई थी। वहाँ पर केवल क्षति ग्रस्त मोटर साईकिल पड़ी थी। उपस्थित व्यक्तियों ने बताया कि आपके पुत्र को हस्पताल लेकर गये हैं। मैं हस्पताल पहुँची तो डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। मैंने हस्पताल की दीवार को टक्कर मारी, मेरा सिर फट

गया, सात टांके लगे, बेहोश हो गई, लगभग दो घंटे में होश आया।

उस दिन के बाद सर्व भगवानों के चित्र घर से बाहर फैंक दिए तथा स्वपन में भी किसी भगवान को याद नहीं करती। क्योंकि मैंने अपने पुत्र की कुशलता के लिए लोकवेद अनुसार सर्व साधनाऐं की, परन्तु कुछ भी काम नहीं आई। आज आप का सत्संग जो सष्टि रचना का प्रकरण आपने सुनाया तथा पवित्र गीता जी से भी बताया कि यह सर्व काल का जाल है, अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कसाई की तरह सर्व प्राणियों को विवश किए हुए है। मेरी तो आज आंखें खुल गई। अब फिर मन करता है कि आपका उपदेश लेकर काल जाल से निकल जाऊं। उस बहन ने उपदेश लिया तथा अपना कल्याण करवाया।

मैंने उस बहन से पूछा कि आप क्या साधना करते थे?

उस बहन ने उत्तर दिया :- एक सुप्रसिद्ध संत का नाम लेकर कहा कि उस मूर्ख से दस वर्ष से उपदेश भी ले रखा था। उसके बताए अनुसार नाम जाप घण्टों किया करती थी। श्री विष्णु जी का सहस्त्रनामा का जाप भी करती थी। गीता जी का नित पाठ, पितर पूजा (श्राद्ध निकालना) करती थी। गांव में परम्परागत बाबा श्याम जी की पूजा भी करती थी। अष्टमी तथा सोमवार का व्रत भी करती थी। निकटतम मन्दिर में प्रतिदिन जाती थी। वर्ष में दो बार वैष्णों देवी के दर्शन करने जाती थी। गुड़गांव वाली माता की पूजा भी करती थी। नवरात्रों का व्रत भी किया करती थी। एक बहन ने कहा बाबा गरीबदास जी की पूजा करने तथा वहाँ छुड़ानी धाम(जिला झज्जर) पर जाने से कोई आपत्ति नहीं आ सकती। वहाँ भी छठे महीने मेला भरता है जाया करती थी तथा संत गरीबदास जी की अमतवाणी का पाठ भी करवाती थी। और क्या बताऊँ? बाबा हरिदास जी झाड़ौदा वाले की भी पूजा करती थी। मुझे कोई लाभ नहीं हुआ। पहले तो लगता था कि मेरा परिवार सुखी है। जो उपरोक्त साधना का ही परिणाम है।

परन्तु अब आपके सत्संग से ज्ञान हुआ कि यह तो मेरा प्रारब्ध ही मिल रहा था। ये पूजायें पवित्र गीता जी में तथा पवित्र अमत वाणी गरीबदास जी के सद्ग्रन्थ में वर्णित न होने से शास्त्र विरुद्ध थी। जिस कारण से कोई लाभ होना ही नहीं था। हमारा क्या दोष है? जो गुरु जी ने साधना बताई मैं तो तन-मन-धन से कर रही थी। अब पता चला कि वे गुरु नहीं है, वे तो नीम हकीम हैं। मानव जीवन के सब से बड़े शत्रु हैं। यदि मुझे यह सत्य साधना मिल जाती तो मेरा पुत्र नहीं मरता। क्योंकि मैंने आपके सेवकों के सुखों को देखा है तथा उन पर आने वाली भयंकर आपत्तियों को टलते देखा है। तब मैं आपका सत्संग सुनने आई हूं तथा आप का लगातार चार दिन तक सत्संग सुनकर आज उपदेश लेने की इच्छा हुई है। मैंने उस बहन से कहा कि जिन साधनाओं को आप कर रही थी वे शास्त्र विधि अनुसार नहीं थी, जिस कारण आपको परमेश्वर से लाभ प्राप्त नहीं हुआ। यह तो आप ने स्वयं ही निर्णय लेकर बता दिया। क्योंकि आज तक आपको सत्संग ही प्राप्त नहीं हुआ था। जिसे आप सत्संग जानकर श्रवण करती थी, वह सत्संग नहीं लोक वेद

(सुना सुनाया शास्त्र विरुद्ध ज्ञान) था। जो आप किसी धाम पर जाती थी तथा पाठ करवाती थी। आदरणीय गरीबदास जी की पूजा करती थी। जब कि आदरणीय गरीबदास जी तो कहते हैं कि :-

सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्ध हैं तीर। दास गरीब सतपुरुष भजो, अविगत कला कबीर।।
अलल पंख अनुराग है, सुन्न मण्डल रहे थीर। दास गरीब उधारिया,सतगुरु मिलें कबीर।।
पूजें देई धाम को, शीश हलावें जो। गरीबदास साची कहैं, हद काफिर हैं सो।

उपरोक्त अमतवाणी में प्रमाण है कि आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि मेरा उद्धार भी परमेश्वर कबीर(कविर्देव) ने किया तथा तुम भी उसी सर्वशक्तिमान (कविरमितौजा) अनन्त शक्तियुक्त कबीर परमेश्वर की ही भक्ति करो।

{वेदों में कबीर परमेश्वर जी को ''कविरमितौजा'' लिखा है जिसका अर्थ है कविर्देव अनन्त शक्तिमान है। संस्कत भाषा के जानकार अपनी किताबी बुद्धि के अनुसार ''कविरमितौजा'' का अर्थ करते हैं कि कवि अनन्त शक्तिमान है। उसकी शक्ति का कोई वार-पार नहीं है। विचार करने की बात है कि कोई भी कवि अनन्त शक्तिमान नहीं हो सकता। वेदों के गूढ़ शब्दों को ठीक से न समझकर वेदों के अनुवादकों ने अर्थ ठीक नहीं किए हैं। वेदों में अनेकों स्थानों पर परमात्मा की महिमा की है। वहाँ पर ''कविर्देव'' लिखा है जिसका अर्थ अनुवादकों ने ''कवि परमेश्वर'' किया जबकि उसका अर्थ ''कविर् परमेश्वर'' बनता है। हम उसे कबीर (कबिर) साहेब कहते हैं। उन्हीं अनुवादकों ने यजुर्वेद में यजुः (यजुर्) का यजुर्वेद किया है क्योंकि उसमें प्रकरण यजुर्वेद का है और केवल ''यजुः'' शब्द लिखा है। इसी प्रकार प्रकरणवश कहीं पर ''कविः'' भी वेदों में लिखा है और महिमा परमात्मा की कही तो वहाँ पर ''कविर्देव'' लिखकर अनुवाद करना उचित है।

उदाहरण के लिए यजुर्वेद अध्याय 5 श्लोक 32 में लिखा है :- ''उशिक् असि कविरंघारि असि बंभारि असि सम्राट असि स्वर्ज्योति ऋतधामा असि'' **जिसका यथार्थ अनुवाद इस प्रकार है :-**

(उशिक असि) जो परमशांतिदायक है, वह (कविर् अंघ अरि) कविर्देव है जो पापों का शत्रु यानि पापनाशक (असि) है। (बंभारि) बंधनों का शत्रु यानि बंधन का नाश करने वाला बन्दी छोड़ (असि) है। (सम्राट असि) सर्व ब्रह्मण्डों का महाराज मालिक है। वह (स्वर्ज्योति) स्वप्रकाशित (ऋतधामा) सत्यलोक में रहने वाला (असि) है जबकि अन्य अनुवादकों ने इस वेद के मंत्र के अनुवाद में ''कविर'' का अर्थ सर्वज्ञ किया है जो अनर्थ है। कवि कोई सर्वज्ञ नहीं हो सकता। महिमा परमात्मा की है। मूल पाठ से स्पष्ट है कि ''कविर'' यानि कविर्देव ''अंघ अरि'' यानि पापों का शत्रु है। शब्द लिखा है कविरंघारि यानि कविर्देव की महिमा है, वह पापनाशक प्रभु है।}

उसके लिए कहा है कि पूर्ण संत जो कबीर परमेश्वर(कविर्देव) का कपा पात्र हो, उससे उपदेश लेकर अपना कल्याण करवाओ। झूठे गुरुओं के आश्रित रहने से जीवन व्यर्थ होता है। उस शास्त्र विरुद्ध साधना बताने वाले नकली गुरु को त्याग देना चाहिये। उसके तो दर्शन भी अशुभ होते हैं। आदरणीय गरीबदास जी अपनी

अमृतवाणी में कहते हैं कि :-

झूठे गुरु को लीतर लावैं, उसको निश्चय पीटे। उसके पीटे पाप नहीं है, घर से काढ़ घसीटे।।

उपरोक्त अमृतवाणी में आदरणीय गरीबदास साहेब जी शास्त्र विधि रहित साधना बताकर अनमोल मानव जन्म को नष्ट करने वाले नकली (झूठे) मार्ग दर्शकों (गुरुओं) के विषय में कह रहे हैं कि वे आप का जीवन नष्ट करने वाले हैं। उनसे तुरंत छुटकारा लेना चाहिये। घर में घुसने नहीं देना चाहिए। वे तो परमेश्वर कबीर (कविर्देव) के द्रोही हैं तथा काल के भेजे दूत हैं।

"अन् अधिकारी से यज्ञ व पाठ करवाना व्यर्थ है"

जिसको पूर्ण परमात्मा का मार्ग दर्शन करने का अधिकार नहीं है तथा उसके पास सत्य भक्ति तीन मंत्र की नहीं है, वह अन अधिकारी होता है। पूर्ण संत जो पूर्ण परमेश्वर की वास्तविक साधना बताता है उसे गुरु बना कर उसी के माध्यम से सर्व धार्मिक अनुष्ठान करवाना हितकर है।

कबीर गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो वेद पुराण।।
गुरु बिन यज्ञ हवन जो करही, निष्फल जाएं कबहुं नहीं फलहीं।

एक बार राजा परिक्षित को सातवें दिन सर्प ने डसना था। उस समय सर्व ऋषियों ने यह निर्णय लिया कि राजा को सात दिन तक श्रीमद्भागवद सुधासागर का पाठ सुनाया जाये, ताकि राजा का मोह संसार से हट जाए। कौन ऐसा कथा करने वाला ऋषि है जिसके पाठ करने से राजा का कल्याण हो सके ?

विचार करें :- सातवें दिन पता लग जाना था कि कथा (पाठ) करने वाला अधिकारी है या नहीं। इसलिए पृथ्वी पर उपस्थित सर्व ऋषियों व महर्षियों ने पाठ (कथा) करने का कार्य स्वीकार नहीं किया। क्योंकि वे महापुरुष प्रभु के संविधान से परिचित थे, इसलिए राजा परिक्षित के जीवन से खिलवाड़ नहीं किया तथा जो ढोंगी थे वे इस डर से सामने नहीं आए कि सातवें दिन पोल खुल जायेगी। उस समय स्वर्ग से महर्षि सुखदेव जी बुलाए गए जो विमान में बैठ कर आए। आते ही श्री सुखदेव जी ने राजा परिक्षित जी से कहा कि राजन आप मेरे से उपदेश प्राप्त करो अर्थात् मुझे गुरु बनाओ तब कथा (पाठ) करने का फल प्राप्त होगा। राजा परिक्षित ने श्री सुखदेव जी को गुरु बनाया तब सात दिन श्री भागवत सुधासागर (श्री विष्णु उर्फ श्री कृष्ण जी की लीला) की कथा सुनाई। राजा को सर्प ने डसा। राजा की मृत्यु हो गई। सूक्ष्म शरीर में राजा परिक्षित अपने गुरु श्री सुखदेव जी के साथ विमान में बैठ कर स्वर्ग गए। क्योंकि पहले राजा बहुत धार्मिक होते थे, पुण्य करते रहते थे।

राजा परिक्षित ने श्री कृष्ण जी से उपदेश भी प्राप्त था। उन्हीं के मार्ग दर्शन अनुसार बहुत धर्म किया था। परन्तु बाद में कलयुग के प्रभाव से ऋषि भिंडी के गले में सर्प डालने से तथा अन्य मर्यादा हीन कार्य करने से राजा परिक्षित का उपदेश खण्ड हो गया था। उस समय न तो किसी ऋषि जी ने राजा को उपदेश दे कर शिष्य बनाने की

हिम्मत की, क्योंकि वे गुरु बनने योग्य नहीं थे। उन्हें उपदेश देने का अधिकार नहीं था। केवल श्री कृष्ण जी ही उपदेश देते थे, जो पाण्डवों के भी गुरु जी थे तथा छप्पन (56) करोड़ यादवों के भी गुरु जी थे। राजा परिक्षित के पुण्यों के आधार से श्री सुखदेव जी गुरु बन कर उसको कथा सुनाकर संसार से आस्था हटवा कर केवल स्वर्ग ले गए। इतना लाभ राजा परिक्षित को हुआ। स्वर्ग का समय पूरा होने अर्थात् पुण्य क्षीण होने के उपरान्त राजा परिक्षित तथा सुखदेव जी भी नरक जायेंगे, फिर चौरासी लाख प्राणियों के शरीर में नाना कष्ट उठायेंगे। जन्म-मृत्यु समाप्त नहीं हुआ अर्थात् मुक्त नहीं हुए।

''गीता में दो प्रकार का ज्ञान है''

गीता का जो ज्ञान वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) तथा सूक्ष्म वेद जो सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् सत्य पुरूष ने अपने मुख कमल से तत्वज्ञान बोला है, उससे मेल नहीं करता है तो वह गलत ज्ञान है। वह गीता ज्ञान दाता का अपना मत है, वह स्वीकार्य नहीं है। गीता ज्ञान दाता ने कई श्लोकों में (गीता अध्याय 13 श्लोक 2, अध्याय 7 श्लोक 18, अध्याय 6 श्लोक 36, अध्याय 3 श्लोक 31 तथा अध्याय 18 श्लोक 70 में) कहा है कि ऐसा मेरा मत है, मेरा विचार है। श्रीमद्भगवत गीता में 95 प्रतिशत वेद ज्ञान है, 5 प्रतिशत गीता ज्ञान दाता का अपना मत है। यदि वह वेदों से मेल खाता है तो ठीक है, अन्यथा व्यर्थ है। उदाहरण के लिए गीता अध्याय 2 श्लोक 37-38 प्रर्याप्त है। इनमें विरोधाभास है। गीता अध्याय 2 श्लोक 37 में तो लाभ-हानि बता रहा है। कहा है कि या तो तू युद्ध में मरकर स्वर्ग को प्राप्त होगा अथवा युद्ध जीतकर पृथ्वी का राज भोगेगा। इसलिए हे अर्जुन! युद्ध के लिए खड़ा हो जा। (गीता अध्याय 2 श्लोक 37) फिर गीता अध्याय 2 श्लोक 38 में ही तुरन्त इसके विपरीत कहा है कि जय-पराजय अर्थात् हार-जीत, सुख-दुःख को समान समझकर युद्ध के लिए तैयार हो जा। इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को प्राप्त नहीं होगा। (गीता अध्याय 2 श्लोक 38)

गीता अध्याय 11 श्लोक 33 में भी स्पष्ट किया है कि "तू उठ, यश को प्राप्त कर। शत्रुओं को जीतकर धन-धान्य से सम्पन्न राज्य को भोग। मैनें तेरे सामने वाले योद्धाओं को पहले ही मार रखा है, तू केवल निमित मात्र बन जा।

लेखक
(सन्त) रामपाल (जी महाराज)

सातवां अध्याय

।।दिव्य सारांश।।

❖ विश्लेषण :- इस अध्याय 7 में श्लोक नं. 12-15 तथा 20-23 में तीनों गुणों यानि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव जी तथा अन्य देवी-देवताओं की भक्ति ईष्ट मानकर करना व्यर्थ कहा है। इनकी भक्ति करने वालों को राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है।

❖ अध्याय 7 श्लोक 16-18 में गीता ज्ञान दाता ने अपने भक्तों तथा अपनी साधना से होने वाली गति की जानकारी दी है। कहा है कि मेरी भक्ति चार प्रकार के भक्त करते हैं :- 1. आर्त 2. अर्थार्थी 3. जिज्ञासु 4. ज्ञानी। इनमें से ज्ञानी उत्तम है, मुझे प्रिय है क्योंकि वह अन्य देवताओं की भक्ति नहीं करता। केवल मुझ ब्रह्म की भक्ति करता है। परंतु तत्वज्ञान के अभाव से वे उदार ज्ञानी आत्मा भी मेरी अनुत्तम यानि घटिया गति (मोक्ष) में ही स्थित है क्योंकि गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 10 श्लोक 2 में कहा है कि मैं नाशवान हूँ क्योंकि मेरा भी जन्म-मरण होता है। जिस कारण से साधक का भी जन्म-मरण सदा रहेगा। इसलिए गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में अपने से अन्य परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है तथा कहा है कि उसी परमेश्वर की कृपा से तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम (शाश्वतम् स्थानम्) को प्राप्त होगा। विचार करें कि जब तक जन्म-मरण है, तब तक जीव को शांति नहीं हो सकती। कर्मों का कष्ट सदा बना रहेगा। जब जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाएगा, तब ही परम शांति प्राप्त होती है।

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 19 में कहा है कि उसी परमेश्वर यानि वासुदेव की भक्ति व महिमा बताने वाला संत मिलना अति दुर्लभ है। गीता के इसी अध्याय 7 के श्लोक 29 में गीता ज्ञान दाता ने उसी वासुदेव के विषय में बताया है। कहा है कि ''जो मेरे ज्ञान का आश्रय लेकर तत्वदर्शी संत से तत्वज्ञान समझकर केवल जरा यानि वृद्धावस्था तथा मरण यानि मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए परमात्मा की साधना कर रहे हैं, वे ''तत् ब्रह्म'' सम्पूर्ण अध्यात्म को तथा सम्पूर्ण कर्मों को जानते हैं। गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में अर्जुन ने अपनी शंका का समाधान करवाने के लिए गीता ज्ञान दाता से प्रश्न किया कि ''तत् ब्रह्म'' क्या है? इसका उत्तर गीता ज्ञान दाता ने अध्याय 8 के ही श्लोक 3, 8, 9, 10, 20, 21, 22 में बताया है कि वह ''परम अक्षर ब्रह्म'' है, वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है जिसने सर्व प्राणियों व जगत की उत्पत्ति की है जो सर्व प्राणियों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता। उसकी भक्ति करने वाला उसी को प्राप्त होता है।

।। इस ज्ञान को जानने के बाद कुछ भी जानना शेष नहीं।।

अध्याय 7 के श्लोक 1 से 11 में कहा है कि अर्जुन जो कोई मेरे (ब्रह्म) में पूर्णरूप से आसक्त होकर लगा हुआ है और जिस ज्ञान से मेरा परमभक्त पूर्ण ज्ञान युक्त

हो जाएगा। इस ज्ञान से उसे पता लग जाएगा कि कौन कितने पानी में है। श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी, ब्रह्म तथा परम अक्षर ब्रह्म तक की स्थिति से परिचित हो जाएगा तथा पूर्ण सन्त की खोज करके तत् ब्रह्म (पूर्ण परमात्मा) की भक्ति की चेष्टा करेगा। इस ज्ञान को समझने के उपरान्त फिर जानने के लिए कुछ भी शेष नहीं रहेगा। वह ज्ञान अब कहूँगा। हजारों साधको में कोई एक प्रभु प्राप्त करने का यत्न करता है जो मेरे से पूर्ण परीचित हैं कि मैं वास्तव में काल हूँ। फिर वह साधक जन्म-मत्यु से छूटने की भरसक कोशिश करता है। {गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री देवी भागवत महापुराण जिसके सम्पादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, चिमन लाल गोस्वामी, के पष्ठ 123 पर भी यह प्रमाण है। लिखा है कि भगवान शिव ने दुर्गा (प्रकति देवी) की महिमा करते हुए कहा, शिवे! सम्पूर्ण संसार की सष्टि करने में तुम बड़ी चतुर हो, मात! पथ्वी, जल, पवन, आकाश, अग्नि, ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, बुद्धि, मन और अहंकार ये सब तुम्हीं हो। इस संसार की सष्टि, स्थिति और संहार करने में तुम्हारे गुण सदा समर्थ हैं। उन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम (ब्रह्मा, विष्णु, शंकर) नियमानुसार कार्य करने में तत्पर रहते हैं।} गीता अध्याय 7 श्लोक 4 से 6 में स्पष्ट किया है कि मेरी आठ प्रकार की माया जो आठ भाग में विभाजित है पाँच तत्व तथा तीन (मन, बुद्धि, अहंकार) ये आठ भाग हैं। यह तो जड़ प्रकति है। सर्व प्राणियों को उत्पन्न करने में सहयोगी हैं, {जैसे मन के कारण प्राणी नाना इच्छाऐं करता है। इच्छा ही जन्म का कारण है।

पाँच तत्वों से स्थूल शरीर बनता है तथा मन, बुद्धि, अहंकार के सहयोग से सूक्ष्म शरीर बना है तथा इससे दूसरी चेतन प्रकति (दुर्गा)है। यही दुर्गा (प्रकति) ही अन्य तीन रूप महालक्ष्मी - महासावित्री - महागौरी आदि बनाकर काल (ब्रह्म) के साथ पति-पत्नी व्यवहार से तीनों पुत्रों रजगुण युक्त श्री ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त श्री विष्णु जी, तमगुण युक्त श्री शिव जी को उत्पन्न करती है। फिर भूल - भूलईयाँ करके तीन अन्य स्त्री रूप सावित्री, लक्ष्मी तथा गौरी बनाकर तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) से विवाह करके काल के जीव उत्पन्न करती है। जो चेतन प्रकति (शेराँवाली) है। इसके सहयोग से काल सर्व प्राणियों की उत्पत्ति करता है, (प्रमाण गीता अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 में।) गीता ज्ञान दाता काल कह रहा है कि मैं सारे संसार के जीवों के प्रलय तथा उत्पत्ति का कारण हूँ। (क्योंकि काल को एक लाख मानव शरीर धारी प्राणी प्रतिदिन खाने पड़ते हैं)। सातवें श्लोक में कहा है कि सर्व संसार मेरे (ब्रह्म) में जकड़ा है। कबीर साहेब जी महाराज कहते हैं कि :–

सुर नर मुनिजन तेतीस करोड़ी। बंधे सब ज्योति निरंजन डोरी।।

भावार्थ :- तेतीस करोड़ देवता, अठासी हजार मुनिजन तथा सर्व जीव काल की डोर यानि कर्म रूपी रस्सी के फांस में बँधे हैं।

विशेष :- गीता अध्याय 14 के श्लोक 3-5 में स्पष्ट है कि गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने कहा है कि :-

❖ **अध्याय 14 श्लोक 3 :- (मम ब्रह्म) मुझ ब्रह्म की (महत्) प्रकति यानि दुर्गा की**

योनि है। मैं (तस्मिन) उस (योनिः) योनि में गर्भ स्थापित करता हूँ। उससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है।(14/3)

❖ अध्याय 14 श्लोक 4 :- हे अर्जुन! सर्व योनियों में जितने भी शरीर धारी प्राणी उत्पन्न होते हैं। (तासाम) उन सबकी गर्भ धारण करने वाली माता (महत्) प्रकृति यानि दुर्गा है। (अहम् ब्रह्म) मैं ब्रह्म उनमें (बीज प्रदः) बीज डालने वाला (पिता) पिता हूँ।

❖ अध्याय 14 श्लोक 5 :- हे अर्जुन! रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव ये तीनों गुण यानि देवता (प्रकृति सम्भवाः) प्रकृति यानि दुर्गा अष्टांगी से उत्पन्न हुए हैं जो जीवात्माओं को कर्मों के फल अनुसार भिन्न-भिन्न प्राणियों के शरीर में उत्पन्न करके बाँधते हैं।(14/5)

इन श्लोकों से स्पष्ट है कि देवी दुर्गा व काल ब्रह्म भोग-विलास करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी को उत्पन्न करते हैं। श्री देवी महापुराण के तीसरे स्कंद में अध्याय 5 के श्लोक 12 में स्पष्ट है कि दुर्गा अपने पति काल ब्रह्म के साथ रमण (Sex) करती है। इसका प्रमाण आप जी आगे इसी अध्याय 7 के सारांश में पढ़ेंगे।

गीता अध्याय 7 श्लोक 7 से 11 तक ब्रह्म कहता है कि मैं जल का गुण रस हूँ, प्रकाश हूँ तथा वेदों में (प्रणव) ओंकार (ॐ) हूँ और सर्व तत्व का गुण भी मैं ही हूँ। मनुष्यों में श्रेष्ठ हूँ तथा मुझे ही सर्व प्राणियों (स्थूल शरीर व सूक्ष्म शरीर में जीव) का कारण जान। तेजस्वियों का तेज भी मेरे से ही है। बुद्धिमानों की बुद्धि (जब चाहे बुद्धि प्रदान कर देता हूँ जब चाहे बुद्धि भ्रष्ट कर देता हूँ), तपस्वियों का तप भी मैं (काल) ही हूँ। (चूंकि तपस्वियों को राज देता है वहाँ भी आनन्द मन (काल) ही लेता है।) मैं (काल) ही शक्तिशालियों का बल हूँ तथा सब प्राणियों में व्यवस्थित काम (Sex) हूँ। {(जैसे पहले अर्जुन को बल दे कर योद्धा बना दिया। युद्ध जीता, अर्जुन ने बड़े-2 योद्धा मार डाले फिर बल वापिस ले लिया। जब भगवान श्री कृष्ण जी का वध एक शिकारी ने कर दिया तो अर्जुन गोपियों (कृष्ण जी की 16000 (सोलह हजार) अवैध स्त्रियों) तथा सर्व यादवों की मृत्यु के पश्चात् विधवा हुई। यादवों की स्त्रियों को लाने द्वारिका से इन्द्रप्रस्थ अपनी राजधानी में ले जा रहा था। रास्ते में भीलों ने अर्जुन को पीटा तथा स्त्रियों को लूट ले गए तथा कुछ स्त्रियों को साथ भी ले गए। उस समय काल ब्रह्म ने अर्जुन को बल रहित कर दिया जिसके कारण अर्जुन से गांडिव धनुष भी नहीं चला।)}

दूसरा उदाहरण :- जिस समय लंका पति रावण ने सीता जी का अपहरण कर लिया था। उस समय सीता जी की खोज में श्री राम वन-2 भटक रहे थे। उन्हें पता नहीं था कि उनकी पत्नी सीता जी का कौन उठा ले गया है? कहां है? क्योंकि काल ब्रह्म ने उसकी बुद्धि को बंद कर रखा था। उसी समय पार्वती जी (पत्नी शिव जी) सीता जी का रूप धारण करके श्री रामचन्द्र जी की परिक्षा लेने आई तो श्री राम ने पहचान लिया की आप पार्वती हैं। उस समय काल ब्रह्म अर्थात् गीता ज्ञान दाता ने श्री रामचन्द्र(श्री विष्णु) की बुद्धि खोल दी। इसीलिए यहां श्लोक 10,11 में कहा है कि बलवानों का बल तथा बुद्धिमानों की बुद्धि मेरे हाथ में है।

''तीनों गुण क्या हैं? प्रमाण सहित''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पष्ठ सं. 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पौद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कप्या से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मत्यु) होता है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सष्टि-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्त्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कष्ण दास प्रकाश मुम्बई, इसमें संस्कत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पष्ठ 10, श्लोक 42 :-

ब्रह्मा - अहम् महेश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः, के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकतिः पुराणा (42)।

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकति तथा सनातनी देवी हो। (42)

पष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदां बिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः। (8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मत्यु रूपी कर्म में क्यों लगाया?

''देवी दुर्गा का पति है, का प्रमाण''

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास

(Sex) करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

तीसरा स्कंद पष्ठ 14, अध्याय 5 श्लोक 43 :- एकमेवा द्वितीयं यत् ब्रह्म वेदा वदंति वै। सा किं त्वम् वा प्यसौ वा किं संदेहं विनिवर्तय। (43)

अनुवाद :- जो कि वेदों में अद्वितीय केवल एक पूर्ण ब्रह्म कहा है क्या वह आप ही हैं या कोई और है? मेरी इस शंका का निवार्ण करें। ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर देवी ने कहा :-

देव्युवाच सदैकत्वं न भेदो स्ति सर्वदैव ममास्य च।। यो सौ सा हमहं यो सौ भेदो स्ति मतिविभ्रमात्।।2।। आवयोरंतरं सूक्ष्मं यो वेद मतिमान्हि सः।। विमुक्तः स तू संसारान्मुच्यते नात्र संश्यः।।3।।

अनुवाद - यह है सो मैं हूं, जो मैं हूं सो यह है, मति के विभ्रम होनेसे भेद भासता है।।2।। हम दोनों का जो सूक्ष्म अन्तर है इसको जो जानता है वही मतिमान अर्थात् तत्वदर्शी है, वह संसार से पथक् होकर मुक्त होता है, इसमें संदेह नहीं।।3।।

सुमरणाद्दर्शनं तुभ्यं दास्ये हं विषमे स्थिते।। स्वर्तव्या हं सदा देवाः परमात्मा सनातनः।।80।। उभयोः सुमरणादेव कार्यसिद्धिर संश्यम्।।ब्रह्मोवाच।। इत्युक्त्वा विससर्जास्मान्द त्त्वा शक्तीः सुसंस्कतान् ।।81।। विष्णवे थ महालक्ष्मी महाकालीं शिवाय च।। महासरस्वतीं मह्यं स्थानात्तस्माद्विसर्जिताः।।82।।

अनुवाद - संकट उपस्थित होने पर सुमरण से ही मैं तुमको दर्शन दूंगी, देवताओं! परमात्मा सनातन देवकी शक्तिरूपसे मेरा सदा सुमरण करना।।80।। दोनों के सुमरण से अवश्य कार्यसिद्धि होगी, ब्रह्माजी बोले इस प्रकार संस्कार कर शक्ति देकर हमको विदा किया।।81।। विष्णु के निमित्त महालक्ष्मी, शिव के निमित्त महाकाली, और हमको महासरस्वती देकर विदा किया।।82।।

मम चैव शरीरं वै सूत्रमित्याभिधीयते।। स्थूलं शरीरं वक्ष्यामि ब्रह्मणः परमात्मनः।।83।।

अनुवाद :- देवी ने कहा - मेरा शरीर सूत्ररूप कहा जाता है, परमात्मा ब्रह्म का स्थूल शरीर कहाता है।।83।।

❖ **मार्कण्डेय पुराण पष्ठ 123 पर लिखा है कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव तीन प्रधान शक्तियाँ हैं। ये ही तीन देवता हैं। ये ही तीन गुण हैं।**

❖ **निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि गीता के अध्याय 7 श्लोक 12-15 में त्रिगुण माया इन्हीं तीनों गुणों यानि तीनों देवताओं का वर्णन है जो केवल इन्हीं की भक्ति तक सीमित है। वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख हैं। वे मेरी यानि गीता ज्ञान दाता काल की भक्ति नहीं करवाते।**

गीता अध्याय 7 श्लोक 12-15 का सारांश :-

।। ब्रह्मा विष्णु शिव (त्रिगुण माया) जीव को मुक्त नहीं होने देते।।

गीता अध्याय 7 श्लोक 12-15 में कहा है कि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव रूपी त्रिगुण माया की भक्ति राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख व्यक्ति करते हैं।

गीता अध्याय 7 श्लोक 12 : तीनों गुणों से जो कुछ हो रहा है वह मुझ से ही हुआ जान। जैसे रजगुण (ब्रह्मा) से उत्पत्ति, सतगुण (विष्णु) से संस्कार अनुसार पालन-पोषण स्थिति तथा तमगुण (शिव) से प्रलय (संहार) का कारण काल भगवान ही है। फिर कहा है कि मैं इन में नहीं हूँ। क्योंकि काल बहुत दूर (इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में निज लोक में रहता है) है परंतु मन रूप में मौज काल ही मनाता है तथा रिमोट से सर्व प्राणियों तथा ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी को यन्त्र की तरह चलाता है।

मैं केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों में ही मालिक हूँ। {(गीता अ. 7 श्लोक 12 से 15 तक) तीनों गुणों से (रजगुण-ब्रह्मा से जीवों की उत्पत्ति, सतगुण-विष्णु जी से स्थिति तथा तमगुण-शिव जी से संहार)} जो कुछ भी हो रहा है उसका मुख्य कारण मैं (ब्रह्म/काल) ही हूँ। (क्योंकि काल को शाप लगा है कि एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के शरीर को मार कर मैल को खाने का) जो साधक मेरी (ब्रह्म की) साधना न करके त्रिगुणमयी माया (रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी) की साधना करके क्षणिक लाभ प्राप्त करते हैं, जिससे ज्यादा कष्ट उठाते रहते हैं, साथ में संकेत किया है कि इनसे ज्यादा लाभ मैं (ब्रह्म-काल) दे सकता हूँ, परन्तु ये मूर्ख साधक तत्वज्ञान के अभाव से इस त्रिगुण माया अर्थात् इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी) तक की साधना करते रहते हैं। इनकी बुद्धि इन्हीं तीनों प्रभुओं तक सीमित है। इसलिए ये राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले, मूर्ख मुझे (ब्रह्म को)नहीं भजते। यही प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 4 से 20 तक, अध्याय 17 श्लोक 2 से 14 तथा 19 व 20 में भी है। यही प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 20 से 23 में है।

❖ विचार करें :- रावण ने भगवान शिव जी को मत्युंजय, अजर-अमर, सर्वेश्वर मान कर भक्ति की, दस बार शीश काट कर समर्पित कर दिया, जिसके बदले में युद्ध के दौरान दस शीश रावण को प्राप्त हुए, परन्तु मुक्ति नहीं हुई, राक्षस कहलाया। यह दोष रावण के गुरुदेव का है जिस नादान (नीम-हकीम) ने वेदों को ठीक से न समझ कर अपनी सोच से तमोगुण युक्त भगवान शिव को ही पूर्ण परमात्मा बताया तथा भोली आत्मा रावण ने झूठे गुरुदेव पर विश्वास करके जीवन व अपने कुल का नाश किया।

❖ एक वकासुर का साधक था जो बाद में भस्मागिरी, फिर भस्मासुर नाम से कुख्यात हुआ जिसने शिव जी (तमोगुण) को ही इष्ट मान कर शीर्षासन (ऊपर को पैर नीचे को शीश) करके 12 वर्ष तक साधना की, वचन बद्ध करके भस्मकण्डा माँगकर ले लिया। भगवान शिव जी को ही मारने लगा। उद्देश्य यह था कि भस्मकण्डा प्राप्त करके भगवान शिव जी को मार कर पार्वती जी को पत्नी बनाऊँगा। भगवान श्री शिव जी डर के मारे भाग गए, फिर श्री विष्णु जी ने मोहिनी रूप धारण करके उस भस्मासुर को गंडहथ नाच नचा कर उसी भस्मकण्डे से भस्म किया। वह शिव जी (तमोगुण) का साधक राक्षस कहलाया। हिरण्यकशिपु ने भगवान ब्रह्मा जी (रजोगुण) की साधना की तथा राक्षस कहलाया।

❖ एक समय आज (सन् 2006) से लगभग 325 वर्ष पूर्व हरिद्वार में हर की पैड़ियों

पर (शास्त्र विधि रहित साधना करने वालों के) कुम्भ पर्व की प्रभी का संयोग हुआ। वहाँ पर सर्व (त्रिगुण उपासक) महात्मा जन स्नानार्थ पहुँचे। गिरी, पुरी, नाथ, नागा आदि भगवान श्री शिव जी (तमोगुण) के उपासक तथा वैष्णों भगवान श्री विष्णु जी (सतोगुण) के उपासक हैं। प्रथम स्नान करने के कारण नागा तथा वैष्णों साधुओं में घोर युद्ध हो गया। लगभग 25000 (पच्चीस हजार) त्रिगुण उपासक मत्यु को प्राप्त हुए। जो व्यक्ति जरा-सी बात पर कत्ले आम कर देता है वह साधु है या राक्षस स्वयं विचार करें। आम व्यक्ति भी कहीं स्नान कर रहे हों और कोई व्यक्ति आ कर कहे कि मुझे भी कुछ स्थान स्नान के लिए देने की कप्या करें। शिष्टाचार के नाते कहते हैं कि आओ आप भी स्नान कर लो। इधर-उधर हो कर आने वाले को स्थान दे देते हैं। इसलिए पवित्र गीता जी अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में कहा है कि जिनका मेरी त्रिगुणमयी माया(रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी) की पूजा के द्वारा ज्ञान हरा जा चुका है, वे केवल मान बड़ाई के भूखे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच अर्थात् आम व्यक्ति से भी पतित स्वभाव वाले, दुष्कर्म करने वाले मूर्ख मेरी भक्ति भी नहीं करते।

गीता अध्याय 7 श्लोक 16-18 का सारांश :-

''गीता ज्ञान देने वाले ने अपनी भक्ति से होने वाली गति को अनुत्तम यानि घटिया क्यों कहा?''

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 16 से 18 तक पवित्र गीता जी के बोलने वाले (ब्रह्म) काल प्रभु ने कहा कि मेरी भक्ति (ब्रह्म साधना) भी चार प्रकार के साधक करते हैं। एक तो अर्थार्थी (धन लाभ चाहने वाले) जो वेद मंत्रों से ही जंत्र-मंत्र, हवन आदि करते रहते हैं। दूसरे आर्त्त (संकट निवार्ण के लिए वेदों के मंत्रों का जंत्र-मंत्र हवन आदि करते रहते हैं) तीसरे जिज्ञासु जो परमात्मा के ज्ञान को जानने की इच्छा रखने वाले केवल ज्ञान संग्रह करके वक्ता बन जाते हैं तथा दूसरों में ज्ञानवान बनकर अभिमानवश भक्ति हीन हो जाते हैं, चौथे ज्ञानी। वे साधक जिनको यह ज्ञान हो गया कि मानव शरीर बार-बार नहीं मिलता, इससे प्रभु साधना नहीं की तो जीवन व्यर्थ हो जाएगा। उन्होंने वेदों को पढ़ा, जिनसे ज्ञान हुआ कि (ब्रह्मा-विष्णु-शिवजी) तीनों गुणों व ब्रह्म (क्षर पुरुष) तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) से ऊपर पूर्ण ब्रह्म की ही भक्ति करनी चाहिए, अन्य प्रभुओं की नहीं। उन ज्ञानी उदार आत्माओं को मैं (काल ब्रह्म) अच्छा लगता हूँ तथा मुझे वे इसलिए अच्छे लगते हैं कि वे तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिवजी) से ऊपर उठ कर मेरी (ब्रह्म) साधना तो करने लगे जो अन्य देवताओं से अच्छी है परन्तु वेदों में 'ओ३म्' नाम जो केवल ब्रह्म की साधना का मंत्र है। उन ज्ञानी आत्माओं ने उसी को आप ही विचार - विमर्श करके पूर्ण ब्रह्म का मंत्र जान कर वर्षों तक साधना करते रहे। प्रभु प्राप्ति हुई नहीं। अन्य सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। क्योंकि पवित्र गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 में वर्णित तत्वदर्शी संत नहीं मिला, जो पूर्ण ब्रह्म की साधना तीन मंत्र से बताता है। इसलिए

ज्ञानी भी ब्रह्म (काल) साधना करके जन्म-मत्यु के चक्र में ही रह गए क्योंकि गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में गीता ज्ञान देने वाले ने कहा कि मैं काल हूँ। श्लोक 47-48 में कहा कि यह मेरा वास्तविक रूप है जिसको तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा है। मैंने तेरे पर अनुग्रह करके दर्शन दिए हैं। मेरे इस स्वरूप का दर्शन यानि काल ब्रह्म की प्राप्ति न तो वेदों का अध्ययन करने से, न यज्ञ यानि धार्मिक अनुष्ठान करने से, न दान से, न अन्य आध्यात्मिक क्रियाओं से, न उग्र तपों से हो सकती है यानि मैं देखा नहीं जा सकता हूँ। तेरे अतिरिक्त किसी को किसी भी साधना से मेरे दर्शन नहीं हो सकते। भावार्थ है कि वेदों में वर्णित साधना से परमात्मा प्राप्ति नहीं होती।

यही कारण रहा कि ऋषियों ने वेदों अनुसार सर्व साधना की, परंतु काल ब्रह्म का दर्शन नहीं हुआ क्योंकि गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में स्पष्ट किया है कि मेरा यह अविनाशी अनुत्तम विधान है कि मैं कभी भी किसी के सामने अपने वास्तविक काल रूप में प्रत्यक्ष नहीं होता। प्रमाण आगे पढ़ें :-

उदाहरण :- एक ज्ञानी उदारात्मा महर्षि चुणक जी ने वेदों को पढ़ा तथा एक पूर्ण प्रभु की भक्ति का मंत्र ओ३म् जान कर इसी नाम के जाप से वर्षों तक साधना की। एक मान्धाता चक्रवर्ती राजा था। (चक्रवर्ती राजा उसे कहते हैं जिसका पूरी पथ्वी पर शासन हो।) उसने अपने अन्तर्गत राजाओं को युद्ध के लिए ललकारा, एक घोड़े के गले में पत्र बांध कर सारे राज्य में घुमाया। शर्त थी कि जिसे राजा मान्धाता की गुलामी (आधीनता) स्वीकार नहीं है। वह इस घोड़े को पकड़ कर बांध ले तथा युद्ध के लिए तैयार रहे। किसी ने घोड़ा नहीं पकड़ा। महर्षि चुणक जी को इस बात का पता चला कि राजा बहुत अभिमानी हो गया है। कहा कि मैं इस राजा के युद्ध को स्वीकार करता हूँ युद्ध शुरू हुआ। मान्धाता राजा के पास 72 क्षौणी सेना थी। उसके चार भाग करके एक भाग (18 क्षौणी) सेना से महर्षि चुणक पर आक्रमण कर दिया। दूसरी ओर महर्षि चुणक जी ने अपनी साधना की कमाई से चार पूतलियाँ (आध्यात्मिक बम्ब) बनाई तथा राजा की चारों भाग सेना का विनाश कर दिया।

विशेष :- श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्म व परब्रह्म की भक्ति से पाप तथा पुण्य दोनों का फल भोगना पड़ता है, पुण्य स्वर्ग में तथा पाप नरक में व चौरासी लाख प्राणियों के शरीर में भिन्न-2 यातनाऐं भोगनी पड़ती हैं। जैसे ज्ञानी आत्मा श्री चुणक जी ने जो ओ३म् नाम के जाप की कमाई की उससे कुछ तो सिद्धि शक्ति (चार पुतलियाँ बनाकर) में समाप्त कर दिया जिससे महर्षि कहलाया। कुछ साधना फल को महास्वर्ग में भोग कर फिर नरक में जाएगा तथा फिर चौरासी लाख प्राणियों के शरीर धारण करके कष्ट पर कष्ट सहन करेगा। जो 72 क्षौणी प्राणियों (सैनिकों) का संहार वचन से तैयार की गई पुतलियों से किया था, उसका भोग भी भोगना होगा। चाहे कोई हथियार से हत्या करे, चाहे वचन रूपी तलवार से उन दोनों को समान दण्ड प्रभु देता है। जब उस महर्षि चुणक जी का जीव कुत्ते के शरीर में होगा उसके सिर में जख्म होगा, उसमें कीड़े बनकर उन सैनिकों के जीव अपना प्रतिशोध लेंगे। कभी टांग टूटेगी, कभी पिछले पैरों से अर्धंग हो कर केवल अगले पैरों से घिसड़

कर चलेगा तथा गर्मी-सर्दी का कष्ट असहनीय पीड़ा नाना प्रकार से भोगनी ही पड़ेगी।

इसलिए पवित्र गीता जी बोलने वाला ब्रह्म (काल) गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में स्वयं कह रहा है कि ये सर्व ज्ञानी आत्माऐं हैं तो उदार (नेक)। परन्तु पूर्ण परमात्मा की तीन मंत्र की वास्तविक साधना बताने वाला तत्वदर्शी सन्त न मिलने के कारण ये सब मेरी ही (अनुत्तमाम्) अश्रेष्ठ मुक्ति (गती) की आस में ही आश्रित रहे अर्थात् मेरी साधना भी अश्रेष्ठ है। इसलिए पवित्र गीता जी अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! तू सर्व भाव से उस पूर्ण परमात्मा की शरण में जा। उस परमेश्वर की ही कृप्या से ही तू परम शान्ति तथा सनातन परम धाम (सत्यलोक) को प्राप्त होगा। पवित्र गीता जी को श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके ब्रह्म (काल) ने बोला, फिर कई वर्षों उपरांत पवित्र गीता जी तथा पवित्र चारों वेदों को महर्षि व्यास जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके स्वयं ब्रह्म (क्षर पुरुष) द्वारा लिपिबद्ध किए हैं। इनमें परमात्मा कैसा है, कैसे उसकी भक्ति करनी है तथा क्या उपलब्धि होगी, ज्ञान तो पूर्ण है परन्तु सांकेतिक है तथा पूजा की विधि केवल ब्रह्म (क्षर पुरुष) अर्थात् ज्योति निरंजन-काल तक की ही है।

पूर्ण ब्रह्म की भक्ति के लिए पवित्र गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में पवित्र गीता बोलने वाले (काल ब्रह्म) प्रभु ने स्वयं कहा है कि पूर्ण परमात्मा की भक्ति व प्राप्ति के लिए किसी तत्वज्ञानी सन्त की खोज कर फिर जैसे वह विधि बताएं वैसे कर। पवित्र गीता जी को बोलने वाले प्रभु ने स्पष्ट किया है कि पूर्ण परमात्मा का पूर्ण ज्ञान व भक्ति विधि मैं नहीं जानता। अपनी साधना के बारे में गीता अध्याय 8 के श्लोक 13 में कहा है कि मेरी भक्ति का तो केवल एक 'ओ३म्' (ओं) अक्षर है जिसका उच्चारण करके अन्तिम श्वांस (त्यजन् देहम्) तक जाप करने से मेरी वाली परमगति को प्राप्त होगा। फिर गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में कहा है कि वे उदारात्माऐं मेरे वाली (अनुत्तमाम्) अश्रेष्ठ परमगति में ही आश्रित हैं। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तक में कहा है कि यह उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष है, जिसकी ऊपर को मूल (जड़ें) तो पूर्ण ब्रह्म यानि परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् आदि पुरुष परमेश्वर है तथा नीचे को तीनों गुण (रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी) रूपी शाखाऐं हैं। इस सृष्टि रचना के पूर्ण ज्ञान को (श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश ब्रह्म कह रहा है कि) मैं नहीं जानता। इसलिए यहाँ विचार काल में अर्थात् इस गीता संवाद में मुझे पूर्ण जानकारी नहीं है। जो संत उपरोक्त संसार रूपी वृक्ष अर्थात् सृष्टि की रचना के विषय का पूर्ण ज्ञानी होगा, वह मूल, तना, डार तथा टहनियों का भिन्न-भिन्न वर्णन करेगा वह (वेदवित्) तत्वदर्शी है। फिर उस पूर्ण ज्ञानी (तत्वदर्शी) सन्त से उपदेश लेकर उस परम पद परमेश्वर को भली प्रकार खोजना चाहिए। जहाँ जाने के उपरान्त जन्म-मृत्यु कभी नहीं होती अर्थात् अनादि मोक्ष प्राप्त होता है। इसलिए दृढ़ विश्वास के साथ उसी पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) का ही सुमरण करना चाहिए।

पवित्र गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में गीता बोलने वाला प्रभु (ब्रह्म) ने कहा है कि हे अर्जुन! मेरे तथा तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं। गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में यही

प्रमाण है कहा है कि हे अर्जुन! तू मैं तथा यह सर्व सैनिक पहले भी जन्में थे, आगे भी जन्मेंगें। अध्याय 10 श्लोक 2 में कहा है कि मेरी उत्पत्ति को न ऋषिजन जानते हैं, न देवता क्योंकि इन सबकी उत्पत्ति मेरे से हुई है। {इससे स्पष्ट है कि ब्रह्म भी नाशवान प्रभु (क्षर पुरुष) है।} इसलिए गीता अ. 15 श्लोक 16-17 में तीन प्रभुओं की भिन्न-भिन्न व्याख्या है - दो प्रभु, क्षर पुरुष (नाशवान भगवान - ब्रह्म) तथा अक्षर पुरुष (अक्षर ब्रह्म) हैं, परन्तु वास्तव में अविनाशी तो इन दोनों से अन्य प्रभु है जो वास्तव में अविनाशी परमात्मा परमेश्वर कहलाता है। जैसे एक मिट्टी का सफेद प्याला जो बिल्कुल अस्थाई है, ऐसे ब्रह्म(क्षर पुरुष) तथा इसके इक्कीस ब्रह्मण्डों के प्राणी नाशवान हैं। दूसरा प्याला इस्पात (स्टील) का है। इस्पात को भी जंग लगता है और विनाश हो जाता है। सफेद मिट्टी के प्याले की तुलना में इस्पात का प्याला अधिक स्थाई परन्तु है नाशवान। इसलिए इतना अविनाशी इस्पात (स्टील) का प्याला है ऐसे अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तथा इसके सात शंख ब्रह्मण्डों के प्राणी अविनाशी जैसे लगते हुए भी नाशवान हैं अर्थात् वास्तव में अविनाशी नहीं हैं। तीसरा प्याला सोने (गोल्ड) का है जो वास्तव में अविनाशी धातु से बना है। जिसका अस्तित्व समाप्त नहीं होता। ऐसे पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) तथा उसके असंख ब्रह्मण्डों में रहने वाले हंसात्माऐं (देवा) वास्तव में अविनाशी हैं तथा वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का पालन-पोषण करता है। कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु ने अपने द्वारा रची सष्टि को स्वयं बताया है।

कबीर अक्षर पुरुष एक पेड़ है, ज्योति निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।
कबीर हम ही अलख अल्लाह हैं, मूल रूप करतार।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, मैं ही सिरजनहार।।

अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तो उलटे लटके पेड़ का तना है तथा मोटी डार ज्योति निरंजन (क्षर पुरुष-ब्रह्म) है तथा उस डार से आगे तीनों शाखाऐं तीनों गुण (रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी) हैं। परन्तु मूल (जड़) पूर्ण पुरुष (परम अक्षर ब्रह्म, सतपुरुष) है। पेड़ को जड़ (मूल) से अर्थात् पूर्ण ब्रह्म से आहार प्राप्त होता है। इसलिए कुल का पालनहार वही परम अक्षर ब्रह्म है जिसका प्रमाण गीता अ. 8 के श्लोक 1 व 3 में दिया है। अर्जुन ने पूछा - हे प्रभु! वह तत् ब्रह्म कौन है, जिसके विषय में आपने गीता अ. 7 श्लोक 29 में कहा है कि तत्ब्रह्म (उस पूर्ण परमात्मा) को तथा पूरे अध्यात्म ज्ञान (तत्वज्ञान) को जानने के बाद तो साधक जरा-मरण से छूटने का ही प्रयत्न करता है। पवित्र गीता बोलने वाले (ब्रह्म) ने गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में उत्तर दिया कि वह परम अक्षर ब्रह्म (पूर्ण ब्रह्म) है। गीता अ. 8 श्लोक 6, में कहा है कि यह विधान है कि अन्त समय में जो साधक जिस भी प्रभु (ब्रह्म, परब्रह्म, पूर्णब्रह्म) का स्मरण करता हुआ प्राण त्याग कर जाता है तो उसी को प्राप्त होता है।

प्रश्न :- आपने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 के अनुवाद में अर्थ का अनर्थ किया है

''अनुत्तमाम्'' का अर्थ अश्रेष्ठ किया है। जब कि समास में अनुत्तम का अर्थ अति उत्तम होता है जिस से उत्तम कोई और न हो उस के विषय में समास में अनुत्तम का अर्थ अति उत्तम होता है। अन्य गीता अनुवाद कर्त्ताओं ने सही अर्थ किया है अनुत्तम का अर्थ अति उत्तम किया है।

उत्तर :- मैं आपकी इस बात को सत्य मानकर आपसे प्रार्थना करता हूँ कि ''गीता ज्ञान दाता अपनी साधना के विषय में गीता अध्याय 7 श्लोक 16 से 18 में बता रहे हैं। गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अपनी साधना व गति को अनुत्तम कह रहे हैं जिसका भावार्थ आपके समास के अनुसार हुआ कि गीता ज्ञानदाता की गति से उत्तम अन्य कोई गति नहीं अर्थात् मोक्ष लाभ नहीं।

गीता ज्ञान दाता स्वयं गीता अध्याय 18 श्लोक 62 व अध्याय 15 श्लोक 4 में किसी अन्य परमेश्वर की शरण में जाने को कह रहे हैं। उसी की कंपा से परम शान्ति व शाश्वत स्थान सदा रहने वाला मोक्ष स्थल अर्थात् सत्यलोक प्राप्त होगा। अपने विषय में भी कहा है कि मैं भी जन्मता-मरता हँू, अविनाशी परमात्मा कोई अन्य है। उसी पूर्ण परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए तथा कहा है कि उस परमेश्वर के परमपद (सत्यलोक) को प्राप्त करना चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर इस संसार में कभी नहीं आते अर्थात् उनका जन्म मंत्यु सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

❖ अपने से अन्य परमात्मा के विषय में गीता अध्याय 18 श्लोक 46,61-62,64,66 अध्याय 15 श्लोक 4,16-17, अध्याय 13 श्लोक 12 से 17, 22 से 24, 27-28,30-31,34 अध्याय 5 श्लोक 6-10,13 से 21 तथा 24-25-26 अध्याय 6 श्लोक 7,19,20,25,26-27 अध्याय 4 श्लोक 31-32, अध्याय 8 श्लोक 3,8 से 10, 20 से 22, अध्याय 7 श्लोक 19 तथा 29, अध्याय 14 श्लोक 19 आदि-2 श्लोकों में कहा है। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता से श्रेष्ठ अर्थात् उत्तम परमात्मा तो अन्य है जैसे गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि उत्तम पुरूषः तु अन्यः जिसका अर्थ है उत्तम परमात्मा तो अन्य ही है। इसलिए उस उत्तम पुरूष अर्थात् सर्वश्रेष्ठ परमात्मा की गति अर्थात् उस से मिलने वाला मोक्ष भी अति उत्तम हुआ। इस से यह भी सिद्ध हुआ कि उस परमेश्वर अर्थात् पूर्ण परमात्मा की गति गीता ज्ञान दाता वाली गति से उत्तम हुई। इसलिए गीता ज्ञान दाता वाली गति सर्व श्रेष्ठ नहीं है। अर्थात् जिस से श्रेष्ठ कोई न हो क्योंकि जब गीता ज्ञान दाता से श्रेष्ठ कोई और परमेश्वर है तो उस की गति भी गीता ज्ञान दाता से श्रेष्ठ है। इससे सिद्ध हुआ कि गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अनुत्तम का अर्थ अश्रेष्ठ ही उचित है। अन्य गीता अनुवाद कर्त्ताओं ने अर्थ का अनर्थ किया है। जो अनुत्तम का अर्थ अति उत्तम कहा तथा किया है।

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 19 का सारांश : इस मंत्र में ब्रह्म (काल) कह रहा है कि मेरी साधना भी भाग्यवान व्यक्ति अनेक जन्मों के बाद कोई-कोई ही करता है, नहीं तो नीचे के श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा अन्य देवताओं, भूतों व पितरों तक की भक्ति से ऊपर बुद्धि नहीं उठती। परन्तु यह बताने वाला संत बहुत दुर्लभ है कि वासुदेव यानि पूर्ण परमात्मा ही पूजा के योग्य है। वह सर्व संष्टि रचनहार है। वही

सर्व का धारण-पोषण करने वाला सर्वशक्तिमान है, वही वास्तव में वासुदेव है। वासुदेव का अर्थ है सर्व का मालिक। जैसे श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी एक ब्रह्मण्ड में एक-एक विभाग के मंत्री(प्रभु) हैं। रजोगुण विभाग के श्री ब्रह्मा जी, सतोगुण विभाग के श्री विष्णु जी तथा तमोगुण विभाग के श्री शिव जी, सर्व के मालिक अर्थात् वासुदेव नहीं हैं। ब्रह्म इक्कीस ब्रह्मण्ड में मुख्य मंत्री (स्वामी) जानो जो काल के आधीन हैं, सर्व का मालिक अर्थात् वासुदेव नहीं है। ऐसे - ऐसे सात शंख ब्रह्मण्ड परब्रह्म (अक्षर पुरुष) के हैं, यह केवल सात शंख ब्रह्मण्ड का मालिक है। सर्व का मालिक अर्थात् वासुदेव नहीं है तथा असंख ब्रह्मण्ड पूर्णब्रह्म (परम अक्षर ब्रह्म/सतपुरुष) के हैं। वह सर्व प्रभुओं का प्रभु यानि परमेश्वर है। वास्तव में सर्व का मालिक अर्थात् वासुदेव पूर्णब्रह्म है। जैसे उलटे लटके वंक्ष की जड़ (पूर्णब्रह्म) है जिससे सर्व तना (अक्षर पुरुष) डार (काल-ब्रह्म) शाखा (तीनों रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिवजी) को भोजन मिलता है। इसलिए सर्व का पालनकर्ता भी पूर्ण ब्रह्म ही हुआ। यह व्याख्या करने वाला संत तो सुदुर्लभ है। उसके मिलने से ही पूर्ण मोक्ष होगा, अन्यथा काल जाल में ही प्राणी फँसे रहेंगे।

गीता अध्याय 7 श्लोक 20-23 का सारांश :-

।। अन्य देवताओं (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की पूजा बुद्धिहीन ही करते हैं।।

विशेष :- गीता के अध्याय 7 के श्लोक नं. 20-23 का संबंध इसी अध्याय के श्लोक नं. 12-15 से है। अध्याय 7 के श्लोक 20 में कहा है कि जिसका सम्बन्ध अध्याय 7 के श्लोक 15 से लगातार है - श्लोक 15 में कहा है कि त्रिगुण माया (जो रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी की पूजा तक सीमित हैं तथा इन्हीं से प्राप्त क्षणिक सुख) के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे असुर स्वभाव को धारण किए हुए नीच व्यक्ति दुष्कर्म करने वाले मूर्ख मुझे नहीं भजते। अध्याय 7 के श्लोक 20 में उन-उन भोगों की कामना के कारण जिनका ज्ञान हरा जा चुका है। वे अपने स्वभाववश प्रेरित होकर अज्ञान आश्रित अन्य देवताओं को पूजते हैं। अध्याय 7 के श्लोक 21 में कहा है कि जो-जो भक्त जिस-जिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहता है उस-उस भक्त की श्रद्धा को मैं उसी देवता के प्रति स्थिर करता हूँ।

अध्याय 7 के श्लोक 22 में कहा है कि वह जिस श्रद्धा से युक्त हो कर जिस देवता का पूजन करता है। उस देवता से मेरे द्वारा ही विधान किए हुए कुछ इच्छित भोगों को प्राप्त करते हैं। जैसे मुख्य मन्त्री कहे कि नीचे के अधिकारी मेरे ही नौकर हैं। मैंनें उनको कुछ अधिकार दे रखे हैं जो उनके (अधिकारियों के) ही आश्रित हैं वह लाभ भी मेरे द्वारा ही दिया जाता है, परंतु पूर्ण लाभ नहीं है। अध्याय 7 के श्लोक 23 में वर्णन है कि परंतु उन मंद बुद्धि वालों का वह फल नाशवान होता है। देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं। मेरे भक्त मुझको प्राप्त होते हैं अर्थात् काल के जाल से कोई बाहर नहीं है।

विशेष : अध्याय 7 के श्लोक 20 से 23 तक का सम्बन्ध इसी अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 से लगातार है। इन 20 से 23 में कहा है कि वे जो भी साधना किसी भी पित्र, भूत, देवी-देवता आदि की पूजा स्वभाव वश करते हैं। मैं (ब्रह्म-काल) ही उन मन्द बुद्धि लोगों (भक्तों) को उसी देवता के प्रति आसक्त करता हूँ। वे मूर्ख साधक देवताओं से जो लाभ पाते हैं, मैंने (काल ने) ही देवताओं को कुछ शक्ति दे रखी है। उसी के आधार पर उनके (देवताओं के) पूजारी देवताओं को प्राप्त हो जाएंगे। परंतु उन बुद्धिहीन साधकों की वह पूजा चौरासी लाख योनियों में शीघ्र ले जाने वाली है तथा जो मुझे (काल को) भजते हैं, वे मुझे प्राप्त होते हैं यानि मेरे ब्रह्म लोकों में चले जाते हैं जिसे महास्वर्ग कहा जाता है। गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्मलोक तक गए सबका पुनर्जन्म होता है।

भले ही महास्वर्ग में गए साधक का स्वर्ग समय एक कल्प होता है, परन्तु स्वर्ग तथा महास्वर्ग में शुभ कर्मों का मोक्ष का सुख भोगकर पुनः जन्म-मरण, नरक तथा अन्य प्राणियों के शरीर में भी कष्ट बना रहेगा, पूर्ण मोक्ष नहीं अर्थात् काल जाल से मुक्ति नहीं। श्री विष्णु पुराण में पष्ठ 51, प्रथम अंश-अध्याय 12 श्लोक 93 में लिखा है कि ध्रुव का मोक्ष समय एक कल्प है।

❖ एक कल्प का समय ब्रह्मा जी का एक दिन यानि एक हजार आठ चतुर्युग है। एक चतुर्युग में तिरतालिस लाख बीस हजार (43,20,000) मानव वर्ष होते हैं। गणित की रीति से चार अरब पैंतीस करोड़ पैंतीस लाख साठ हजार (4,35,35,60,000) वर्ष है। ध्रुव का इसके पश्चात् जन्म-मरण का क्रम शुरू हो जाएगा।

''ज्योति निरंजन (काल) कभी स्थूल शरीर आकार में सर्व के समक्ष नहीं आता''

अध्याय 7 के श्लोक 24 में ब्रह्म कह रहा है कि मूर्ख मेरे अति गन्दे अटल भाव (कालरूप) को नहीं जानते। मुझ (अव्यक्त) अदश्यमान अर्थात् योग माया से छिपे हुए को (व्यक्त) श्री कष्ण रूप में प्रकट हुआ मानते हैं अर्थात् मैं श्री कष्ण नहीं हूँ। अनुत्तम अविनाशी भाव को नहीं जानते का तात्पर्य है कि मेरा काल भाव जीवों को खाना, गधे, कुत्ते, सूअर आदि बनाना, नाना प्रकार से कष्ट पर कष्ट देना तथा पुण्यों के आधार पर स्वर्ग देना तथा काल ने प्रतिज्ञा की है कि मैं कभी भी अपने वास्तविक काल रूप में सर्व के समक्ष प्रकट नहीं होऊँगा। यह मेरा कभी समाप्त न होने वाला (अविनाशी) भाव है। मैं आकार में श्री कष्ण जी, श्री रामचन्द्र जी के रूप में कभी नहीं आता। यह मेरा घटिया अटल अविनाशी नियम है। यह तो माया के द्वारा बने शरीर के भगवान आते हैं जो मेरे द्वारा ही भेजे जाते हैं और मैं (काल) उनमें प्रवेश करके अपना सर्व कार्य करता रहता हूँ।

गरीब, अनन्त कोटि अवतार हैं, माया के गोविंद।
कर्त्ता हो-हो कर अवतरे, बहुर पड़े जम फन्द।।

❖ भावार्थ :- काल द्वारा माया यानि दुर्गा से उत्पन्न श्री विष्णु, श्री ब्रह्मा तथा शिव

जी रूपी गोविंद यानि प्रभु असँख्यों अवतार रूप में जन्म ले चुके हैं। पृथ्वी ऊपर भोले जीव उनको सर्व के कर्ता मानते हैं। परंतु वे अपना अवतार समय पूरा करके कर्मों के अनुसार जन्म-मरण चक्र में बँधकर जन्मते-मरते हैं।

अध्याय 7 के श्लोक 25 में गीता ज्ञान दाता (काल ब्रह्म) ने कहा है कि मैं अपनी (योगमाया) सिद्धि शक्ति से छुपा रहता हूँ अर्थात् अपने इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में सर्वोपरि निज स्थान पर रहता हूँ। इसलिए दृश्यमान नहीं हूँ। इसलिए कहा है कि मैं कभी भी जन्म नहीं लेता अर्थात् स्थूल शरीर में श्री कृष्ण जी की तरह माता से जन्म नहीं लेता। इस अविनाशी (अटल) नियम को यह मूर्ख संसार नहीं जानता अर्थात् यह मूर्ख प्राणी समुदाय मुझे कृष्ण मान रहा है, मैं कृष्ण नहीं हूँ तथा मैं अपनी योग माया से छिपा रहता हूँ। इससे स्पष्ट है कि काल ही श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके बोल रहा है। नहीं तो कृष्ण जी तो आकार में अर्जुन के समक्ष ही थे। श्री कृष्ण जी का यह कहना उचित नहीं होता कि मैं आकार में नहीं आता, श्री कृष्ण आदि की तरह दुर्गा (प्रकृति) के गर्भ से जन्म नहीं लेता क्योंकि दुर्गा तो ब्रह्म की पत्नी है।

काल अपनी शब्द शक्ति से अपने नाना रूप (महाब्रह्मा, महाविष्णु तथा महाशिव आदि) बना लेता है। फिर निर्धारित समय पर उस शरीर को त्याग देता है। इस प्रकार के जन्म व मृत्यु होती है। इसीलिए पवित्र गीता अध्याय 4 श्लोक 5 तथा गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में कहा है कि मेरे तथा तेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। ऐसा नहीं है कि मैं तथा तू तथा ये सैनिक पहले नहीं थे या आगे नहीं रहेंगे। गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में कहा है कि मेरी उत्पत्ति (जन्म) को देवता तथा ऋषिजन भी नहीं जानते क्योंकि ये सर्व मेरे से उत्पन्न हुए हैं।

गीता अध्याय 4 श्लोक 9 में कहा है कि मेरे जन्म और कर्म अलौकिक हैं। उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि ब्रह्म की भी उत्पत्ति हुई है। उसको तो पूर्ण परमात्मा ही बताता है क्योंकि पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) कविर्देव की शब्द शक्ति से अण्डे से काल (ब्रह्म) की उत्पत्ति हुई है, यही प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 3 श्लोक 14-15 में भी है कि ब्रह्म की उत्पत्ति अविनाशी परमात्मा से हुई जो काल ब्रह्म का जनक है। उसने काल ब्रह्म की उत्पत्ति बताई है। जैसे पिता की उत्पत्ति बच्चे नहीं जानते, परंतु दादा जी (पिता का पिता) ही बता सकता है। यहाँ यह संकेत है कि ब्रह्म कह रहा है कि मेरी उत्पत्ति भी है, परन्तु मेरे से उत्पन्न देवता (ब्रह्मा-विष्णु - शिव) भी नहीं जानते।

विशेष :- व्यक्त का भावार्थ है कि प्रत्यक्ष दिखाई देना अर्थात् साक्षात्कार होना। अव्यक्त का भावार्थ होता है कि कोई वस्तु है परन्तु अदृश्य है। जैसे आकाश में बादल छा जाते हैं तो सूर्य अव्यक्त (अदृश) हो जाता है। परन्तु बादलों के पार विद्यमान है। ऐसे सर्व प्रभु मानव सदृश शरीर में विद्यमान हैं। परन्तु हमारी दृष्टि से परे हैं। इसलिए अव्यक्त कहे जाते हैं।

एक अव्यक्त तो गीता ज्ञान दाता है जो गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में प्रमाण है यह ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष अव्यक्त हुआ। दूसरा अव्यक्त गीता अध्याय 8 श्लोक 18 में कहा है कि सर्व संसार दिन में अव्यक्त से उत्पन्न होता है यह परब्रह्म अर्थात् अक्षर

पुरूष अव्यक्त हुआ। तीसरा अव्यक्त गीता अध्याय 8 श्लोक 20-22 में कहा है कि उस (श्लोक 18 में वर्णित) अव्यक्त से दूसरा अव्यक्त कभी नष्ट नहीं होता। यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म हुआ। इस प्रकार तीनों परमात्मा साकार है परन्तु जीव की दष्टि से परे हैं इसलिए अव्यक्त कहलाते हैं।

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 26 से 29 का सारांश :-

अध्याय 7 के श्लोक 26 से 28 तक इन श्लोकों में गीता ज्ञान दाता भगवान कह रहा है कि मैं (ब्रह्म) भूत-भविष्य तथा वर्तमान में सर्व प्राणियों (जो मेरे इक्कीस ब्रह्मण्डों में मेरे आधीन हैं)की स्थिति से परीचित हूँ कि किसका जन्म किस योनी में होगा। परंतु मुझे कोई नहीं जान सकता। सब संसार राग, द्वेष, मोह से दुःखी है तथा अज्ञानी हो चुका है। जिनके राग-द्वेष व मोह दूर हो गया वे पाप रहित प्राणी ही मेरा भजन कर सकते हैं अन्यथा नहीं।

विचार करें : राग द्वेष व मोह और पाप रहित प्राणी ही प्रभु चिन्तन कर सकते हैं, अन्य नहीं। पाप रहित का भाव है कि जिनका संश्य मिट गया कि देवी-देवताओं और ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा माता की पूजा से तो ब्रह्म (काल) साधना अधिक लाभदायक है। फिर वह साधक निष्कपट (पाप रहित) भाव से भगवन चिंतन करता है। जो साधना पवित्र वेदों व पवित्र गीता में वर्णित है उससे साधक तीन लोक व इक्कीस ब्रह्मण्ड (काल लोक) में विकारों से रहित हो ही नहीं सकता। फिर आम भक्त कैसे पाप या कर्म मुक्त हो सकता है? राग-द्वेष, मोह आदि से भगवान विष्णु भी नहीं बचे, न ब्रह्मा जी न शिव जी। फिर आम व्यक्ति कैसे उम्मीद रख सकता है? यहाँ मुझ दास (रामपाल दास) अर्थात् अनुवाद कर्त्ता के कहने का भाव यह है कि वेदों व गीता में वर्णित भक्ति विधि से साधक पाप मुक्त नहीं होता अपितु ''जैसा कर्म वैसा भोग'' वाला सिद्धान्त ही प्राप्त होता है। जैसे भगवान विष्णु अवतार श्री रामचन्द्र जी ने बाली को धोखे से मारा था। उसका बदला श्री कष्ण रूप में देना पड़ा। पापनाशक परमात्मा पूर्ण ब्रह्म है वह विधि पांचवें वेद में अर्थात् स्वसम (सूक्ष्म) वेद में लिखी है। इसलिए तत्वदर्शी सन्त ही उस पाप नाशक साधना को बताता है जिससे साधक पाप रहित होकर पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता है।

❖ श्लोक 26 :- इस श्लोक में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मैं भूत-भविष्य की घटनाओं को जानता हूँ, परंतु मैं कभी किसी के सामने प्रत्यक्ष नहीं होता। जिस कारण से मुझ काल को कोई नहीं जानता।(7/26)

❖ श्लोक 27 :- तत्वज्ञान के अभाव से सम्पूर्ण प्राणी अज्ञान के कारण संसार में इच्छा और द्वेष करके सुख-दुःख को प्राप्त हो रहे हैं। वे ब्रह्म काल यानि गीता ज्ञान दाता तथा अन्य देवी-देवताओं की भक्ति करके भी कर्मों के फल अनुसार सुख-दुःख, जरा-मरण के चक्र में पड़े हैं।(7/27)

❖ श्लोक 28 :- परंतु जो पूर्व संस्कार के प्रभाव से पुण्य कर्म करने वाले पाप करने से बचकर राग-द्वेष जनित द्वन्द्व रूप मोह से मुक्त है, दढ़ निश्चयी मुझ को भजते हैं।(7/28)

।। काल के जाल से कौन छूटते हैं?।।

अध्याय 7 के श्लोक 29 का भावार्थ है कि काल ब्रह्म ने कहा है कि जो मेरे ज्ञान का आश्रय लेकर तत्वदर्शी संत की खोज कर तत्वज्ञान से परिचित हैं जो जरा यानि वंद्धावस्था तथा मरण यानि मंत्यु के कष्ट से मोक्ष (छुटकारा) प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील यानि भक्ति में लगे हैं। वे तत् ब्रह्म को, सम्पूर्ण अध्यात्म को तथा सम्पूर्ण कर्मों को जानते हैं।(7/29)

गीता अध्याय 7 श्लोक 30 :- इस श्लोक का भावार्थ है कि जिनको तत्वज्ञानी संत नहीं मिला, वे मुझे ही अधिभूत यानि सर्व प्राणियों का अधीक्षक यानि मालिक से अधिदैवम् यानि सर्व देवों अर्थात् प्रभुओं का अधीक्षक तथा साधियज्ञम् यानि सर्व यज्ञों अर्थात् सर्व धार्मिक अनुष्ठानों का अधीक्षक (यज्ञों में प्रतिष्ठित) मुझे ही जानते हैं। वे भक्ति में लगे (युक्त चतसा) मंत्यु समय भी मुझे ही सर्वेसवा जानते हैं। वे मेरे को ही प्राप्त होते हैं यानि काल जाल में ही रह जाते हैं।(7/30)

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा जो यज्ञों में प्रतिष्ठित (अधियज्ञ) है। अध्याय 3 के श्लोक 14,15 में पूर्ण विवरण है।

शंका-प्रभु प्रेमी पाठकों के मन में शंका उत्पन्न होगी कि जब ब्रह्म (काल) अपनी साधना को भी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ कह रहे हैं (गीता अध्याय 7 श्लोक 18) तो फिर अपनी साधना करने को क्यों कह रहे हैं तथा तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) की भक्ति करने वालों को हेय किसलिए कहा है? (गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15)

शंका समाधान :- शास्त्र अनुकूल भक्ति पवित्र वेदों व पवित्र गीता जी में वर्णित विधि (ओ३म् नाम का जाप उच्चारण करके स्मरण करने व धर्म, ध्यान, प्रणाम, हवन, ज्ञान ये पाँचों यज्ञ करने) से प्रारम्भ होती है। उससे ब्रह्मलोक में बने महास्वर्ग में एक कल्प या महाकल्प तक मोक्ष सुख प्राप्त होता है, परन्तु पाप कर्मों के दण्ड आधार से नरक तथा फिर चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में कष्ट भी उठाना ही पड़ेगा। एक मानव शरीर फिर प्राप्त होगा। वे पुण्यात्माऐं जब मानव शरीर में होंगी और उन्हें कोई तत्वदर्शी संत पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) का ज्ञान बताएगा तो वे शीघ्र ही उस साधना पर लग जाती हैं, क्योंकि उनमें पिछले भक्ति संस्कार विद्यमान होते हैं तथा सत्य साधना करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। अन्य देवताओं की पूजा से मोक्ष समय बहुत कम तथा नरक समय अधिक होता है तथा चौरासी लाख योनियों का कष्ट भी अधिक समय तक होता है। जैसे एक प्रकार के प्राणी (कुत्ते) के जन्म ही लगातार 20 हो जाऐं, फिर दूसरे प्राणी के भी अधिक होने के कारण अधिक कष्ट उठाते हैं। परन्तु मर्यादावत् ब्रह्म (काल) साधना करने वालों के प्रत्येक योनी के संस्कार वश कम जन्म होते हैं तथा चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों का शीघ्र-शीघ्र भोगा जाता है। जैसे कुत्ते की मंत्यु 10 वर्ष में होती है, एक माता के गर्भ से बाहर आते ही मर जाता है। जैसे ऋषि सुखदेव जी का जीव मादा तोते के अण्डे में ही था, अण्डा खराब हो कर

छूटकारा हो गया,नहीं तो तोतेकी आयु मनुष्य से भी अधिक होती है। इस प्रकार कष्टमय शरीरों से शीघ्र छुटकारा हो जाता है।

अन्य देवताओं के साधकों को जब कभी मानव शरीर प्राप्त होता है तो वे फिर अपने पिछले संस्कार स्वभाववश उन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव आदि अन्य देवताओं) की तथा भूत-भैरवों व पितरों की ही पूजा करते हैं, कहने से भी नहीं मानते।

जो साधक शास्त्र अनुकूल साधना पिछले जन्म में करते थे उनमें दो प्रकार के बताए हैं, एक तो ब्रह्म साधक जो ओ३म् नाम मंत्र जाप व पाँचों यज्ञ किया करते थे, वे तो महास्वर्ग, नरक व अन्य प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाते रहते हैं। उनके मानव जन्म भी लगातार एक से अधिक भी हो सकते हैं। यदि उन सर्व मानव जन्मों में भी पूर्ण (तत्वदर्शी) संत नहीं मिला फिर उपरोक्त सर्व स्थितियों से गुजरना पड़ता है। परन्तु सत्य साधना पर शीघ्र लग जाते हैं। दूसरी प्रकार के शास्त्र विधि अनुसार साधना करने वाले वे साधक हैं जो कभी किसी युग में पूर्ण परमात्मा की साधना पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) से प्राप्त करके किया करते थे। परन्तु मुक्त नहीं हो पाए। वे साधक एक ब्रह्मण्ड में बने सतगुरु कबीर लोक में चले जाते हैं। जहाँ पर उन साधकों की अपनी भक्ति कमाई समाप्त नहीं होती, क्योंकि परमपिता का भण्डारा मुफ्त (निःशुल्क) चलता रहता है। वहाँ अन्य कोई नहीं जा सकता। फिर उन साधकों को पूर्ण परमात्मा पुनर् मानव जन्म उस समय प्रदान करता है जब कोई (तत्वदर्शी) संत पूर्ण साधना बताने वाला आने वाला होता है। उस समय वे साधक उस सत्य साधना बताने वाले पूर्ण संत की वाणी पर (प्रवचनों पर) शीघ्र विश्वास कर लेते हैं तथा भक्ति प्रारम्भ कर देते हैं। उन्हीं में से कुछ आत्माऐं नकली सतलोक साधना का मिलता-जुलता ज्ञान बताने वाले नकली संतों को पूर्ण संत मान कर उसी पर आधारित हो जाती हैं तथा फिर कुऐं के मेंढक बन कर उसी ज्ञान को सुनते रहते हैं। सत्यज्ञान को सुन कर आँखों देखकर भी नहीं मानते दूसरी प्रकार के शास्त्र अनुकूल साधक जो किसी युग में सतनाम जाप वाली साधना किए हुए हैं वे पिछले शास्त्र अनुकूल साधक भी काल जाल में ही रह जाते हैं। यदि वे तत्वज्ञान को ध्यान से सुन व पढ़ लेंगे तो तुरन्त पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) की शरण में आ जाते हैं। जो पूर्ण संत की शरण में नहीं आते वे पिछले सत्यभक्ति साधना की कमाई अनुसार अनेकों मानव शरीर प्राप्त करते रहते हैं तथा पूर्ण संत के अभाव से फिर चौरासी लाख प्राणियों के शरीरों व नरक-स्वर्ग के चक्र में फंस जाते हैं।

विशेष :- अर्जुन को अध्याय 7 श्लोक 29 में शंका हुई कि ''तत् ब्रह्म'' तो गीता ज्ञान से अन्य है। उसकी जानकारी के लिए अगले अध्याय 8 के प्रथम श्लोक में ही प्रश्न किया है। आगे पढ़ें अध्याय में गीता ज्ञान दाता तथा तत् ब्रह्म यानि परम अक्षर ब्रह्म की भिन्न-भिन्न जानकारी :-



सातवें अध्याय के सर्व श्लोकों का हिन्दी अनुवाद

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 1 का अनुवाद : हे पार्थ! मुझ में आसक्त चित भाव से मेरे मत के परायण होकर योग में लगा हुआ तू जिस प्रकार से सम्पूर्ण रूप से मुझ को संशयरहित जानेगा उसको सुन।(1)

❖ श्लोक 2 का अनुवाद : मैं तेरे लिये इस विज्ञानसहित तत्वज्ञानको सम्पूर्णतया कहूँगा जिसको जानकर संसारमें फिर और कुछ भी जानेनेयोग्य शेष नहीं रह जाता।(2)

❖ श्लोक 3 का अनुवाद :हजारों मनुष्यों में कोई एक प्रभु प्राप्ति के लिये यत्न करता है। यत्न करने वाले योगियों में भी कोई एक मुझको तत्व से अर्थात् यथार्थ रूप से जानता है।(3)

❖ श्लोक 4-5 का अनुवाद : पथ्वी जल अग्नि वायु आकाश आदि से स्थूल शरीर बनता है। इसी प्रकार मन बुद्धि और अहंकार आदि से सूक्ष्म शरीर बनता है। इस प्रकार यह आठ प्रकार से विभाजित मेरी प्रकति है। ये तो अपरा अर्थात् जड़ प्रकति है। उपरोक्त दोनों शरीरों में इसी का परम योगदान है और हे महाबाहो! इससे दूसरी को जिससे यह सम्पूर्ण जगत् संभाला जाता है। मेरी जीवरूपा साकार चेतन प्रकति अर्थात् दुर्गा जान क्योंकि दुर्गा ही अन्य रूप बनाकर सागर में छुपी तथा लक्ष्मी-सावित्री व उमा रूप बनाकर तीनों देवों (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) से विवाह करके जीवों की उत्पत्ति की।(4-5)

❖ श्लोक 6 का अनुवाद : इस प्रकार भूल भूलईयां करके सम्पूर्ण प्राणी इन दोनों प्रकतियों से ही उत्पन्न होते हैं और मैं सम्पूर्ण जगत् का उत्पन्न तथा नाश हूँ।(6)

❖ श्लोक 7 का अनुवाद : हे धनंजय! उपरोक्त अर्थात् सिद्धान्त से दूसरा कोई भी परम कारण नहीं है। यह सम्पूर्ण जगत् सूत्र में मणियों के सदश मुझ में गुँथा हुआ है।(7)

❖ श्लोक 8 का अनुवाद : हे अर्जुन! मैं जल में रस हूँ चन्द्रमा और सूर्य में प्रकाश हूँ सम्पूर्ण वेदों में ओंकार हूँ आकाश में शब्द और मनुष्यों में पुरुषत्व हूँ।(8)

❖ श्लोक 9 का अनुवाद : पथ्वी में पवित्र गन्ध और अग्नि में तेज हूँ तथा सम्पूर्ण प्राणियों में उनका जीवन हूँ और तपस्वियों में तप हूँ।(9)

❖ श्लोक 10 का अनुवाद : हे अर्जुन! तू सम्पूर्ण प्राणियों का आदि कारण मुझको ही जान मैं बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज हूँ।(10)

❖ श्लोक 11 का अनुवाद : : हे भरतश्रेष्ठ! मैं बलवानों का आसक्ति और कामनाओं से रहित सामर्थ्य हूँ और मेरे अन्तर्गत सर्व प्राणियों में धर्म के अनुकूल अर्थात् शास्त्र के अनुकूल कर्म हूँ।(11)

''श्री ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव जी व अन्य देवताओं की साधना व्यर्थ है''

❖ श्लोक 12 का अनुवाद : और भी जो सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति भाव हैं और जो रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति तथा तमोगुण शिव से संहार हैं। उन सबको तू मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं ऐसा जान (तु) परंतु वास्तव में उनमें मैं और वे मुझमें नहीं हैं।(12)

❖ श्लोक 13 का अनुवाद : इन गुणोंके कार्यरूप सात्विक श्री विष्णु जी के प्रभाव से, राजस श्री ब्रह्मा जी के प्रभाव से और तामस श्री शिवजी के प्रभाव से तीनों प्रकार के भावों से यह सारा संसार - प्राणि समुदाय मुझ काल के ही जाल में मोहित हो रहा है अर्थात् फंसा है इसलिए पूर्ण अविनाशी को नहीं जानता।(13)

❖ श्लोक 14 का अनुवाद : क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भूत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है परंतु जो पुरुष केवल मुझको ही निरंन्तर भजते हैं। वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् तीनों गुणों रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी से ऊपर उठ जाते हैं।(14)

❖ श्लोक 15 का अनुवाद : माया के द्वारा अर्थात् रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव जी रूपी त्रिगुणमयी माया की साधना से होने वाला क्षणिक लाभ पर ही आश्रित हैं जिनका ज्ञान हरा जा चुका है जो मेरी अर्थात् ब्रह्म साधना भी नहीं करते, इन्हीं तीनों देवताओं तक सीमित रहते हैं। ऐसे आसुर स्वभाव को धारण किये हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख मुझको भी नहीं भजते अर्थात् वे तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की साधना ही करते रहते हैं।(15)

''गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म की भक्ति अनुत्तम (घटिया) है''

❖ श्लोक 16 का अनुवाद : हे भरत वंशियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन! उत्तम कर्म करनेवाले वेद मन्त्रों द्वारा धन लाभ के लिए अनुष्ठान करने वाला अर्थार्थी वेद मन्त्रों द्वारा संकट निवार्ण के लिए अनुष्ठान करने वाले आर्त परमात्मा के विषय में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा से ज्ञान ग्रहण करके वेदों के आधार से ज्ञानवान बनकर वक्ता बन जाता है वह जिज्ञासु और जिसे यह ज्ञान हो गया कि मनुष्य जन्म केवल परमात्मा प्राप्ति के लिए ही है। परमात्मा प्राप्ति भी केवल एक सर्वशक्तिमान परमात्मा की साधना अनन्य मन से करने से होती है वह ज्ञानी ऐसे चार प्रकार के भक्तजन मुझको भजते हैं।(16)

❖ श्लोक 17 का अनुवाद : उनमें नित्य स्थित एक परमात्मा की भक्तिवाला विद्वान अति उत्तम है क्योंकि ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझे अत्यन्त प्रिय है।(17)

❖ श्लोक 18 का अनुवाद : क्योंकि मेरे विचार में ये सभी ही ज्ञानी आत्मा उदार हैं परंतु वह मुझमें ही लीन आत्मा मेरी अति घटिया मुक्ति में ही आश्रित हैं।(18)

''वासुदेव यानि पूर्ण परमात्मा का ज्ञान बताने वाला महात्मा अति दुर्लभ है''

❖ श्लोक 19 का अनुवाद : बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में तत्वज्ञान को प्राप्त मुझको भजता है वासुदेव अर्थात् सर्वव्यापक पूर्ण ब्रह्म ही सब कुछ है इस प्रकार जो यह जानता है वह महात्मा अत्यन्त दुर्लभ है।(19)

''अन्य देवी-देवताओं की पूजा व्यर्थ है''

❖ श्लोक 20 का अनुवाद : उन-उन भोगों की कामनाद्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है वे लोग अपने स्वभाव से प्रेरित होकर उस अज्ञान रूप अंधकार वाले नियम के आश्रय से अन्य देवताओं को भजते हैं अर्थात् पूजते हैं।(20)

❖ श्लोक 21 का अनुवाद : जो-जो भक्त जिस-जिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहता है, उस उस भक्त की श्रद्धा को मैं उसी देवता के प्रति स्थिर करता हूँ।(21)

❖ श्लोक 22 का अनुवाद : वह भक्त उस श्रद्धा से युक्त होकर उस देवता का पूजन करता है और क्योंकि उस देवता से मेरे द्वारा ही विधान किये हुए उन इच्छित भोगों को प्राप्त करता है।(22)

❖ श्लोक 23 का अनुवाद : परंतु उन अल्प बुद्धिवालों का वह फल नाशवान् होता है देवताओं को पूजनेवाले देवताओं को प्राप्त होते हैं और मतावलम्बी अर्थात् मेरे द्वारा बताए भक्ति मार्ग से भी मुझको प्राप्त होते हैं।(23)

''काल की कभी दर्शन न देने की प्रतिज्ञा''

❖ श्लोक 24 का अनुवाद : बुद्धिहीन लोग मेरे अश्रेष्ठ अटल परम भाव को न जानते हुए छिपे हुए अर्थात् परोक्ष मुझ काल को मनुष्य की तरह आकार में कृष्ण अवतार प्राप्त हुआ मानते हैं अर्थात् मैं कृष्ण नहीं हूँ। (24)

❖ श्लोक 25 का अनुवाद : मैं योगमाया से छिपा हुआ सबके प्रत्यक्ष नहीं होता अर्थात् अदृश्य रहता हूँ इसलिये मुझ जन्म न लेने वाले अविनाशी अटल भाव को यह अज्ञानी जन समुदाय संसार नहीं जानता अर्थात् मुझको अवतार रूप में आया समझता है। क्योंकि ब्रह्म अपनी शब्द शक्ति से अपने नाना रूप बना लेता है, यह दुर्गा का पति है इसलिए इस श्लोक में कह रहा है कि मैं श्री कृष्ण आदि की तरह दुर्गा से जन्म नहीं लेता। (25)

''काल ब्रह्म अपने अंतर्गत प्राणियों की स्थिति से परिचित है''

❖ श्लोक 26 का अनुवाद : हे अर्जुन! पूर्व में व्यतीत हुए और वर्तमान में स्थित तथा आगे होने वाले सब प्राणियों को मैं जानता हूँ, परंतु मुझको कोई नहीं जानता। (क्योंकि काल कभी किसी को किसी भी साधना से दर्शन नहीं देता। इसलिए उसका ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा सर्व प्राणी जो इसके इक्कीस ब्रह्माण्डों में हैं, किसी को

जानकारी नहीं है।)(26)

❖ **श्लोक 27 का अनुवाद : हे भरतवंशी अर्जुन! संसार में इच्छा और द्वेष से उत्पन्न सुख-दुःखादि द्वन्द्वरूप मोह से सम्पूर्ण प्राणी अत्यन्त अज्ञानता को प्राप्त हो रहे हैं।(27)**

❖ **श्लोक 28 का अनुवाद : परंतु तत्वज्ञान के अभाव से पूर्व जन्म के शुभ संस्कार वाले निष्काम भाव से श्रेष्ठ कर्मों का आचरण करने वाले जो निष्पाप हैं, निष्कपट हैं। वे राग-द्वेषजनित द्वन्द्व रूप मोह से मुक्त दृढ़ निश्चयी भक्त मुझको सब प्रकार से भजते हैं।(28)**

''तत् ब्रह्म को कौन भजता है''

❖ **श्लोक 29 का अनुवाद : जो साधक मेरे द्वारा बताए ज्ञान का आश्रय लेकर तत्वदर्शी संत से ज्ञान समझकर वृद्धावस्था तथा मृत्यु से छुटकारा यानि मोक्ष के लिए प्रयत्न करते हैं। वे साधक तत् ब्रह्म को, सम्पूर्ण अध्यात्म को और सम्पूर्ण कर्मों को जानते हैं।(29)**

''काल ब्रह्म की भक्ति कौन करते हैं''

❖ **श्लोक 30 का अनुवाद : जिन्होंने तत्वदर्शी संत से तत्वज्ञान नहीं समझा। जिस कारण से जो साधक अधिभूत अधिदेव सहित तथा अधियज्ञ सहित मुझे जानते हैं और वे साधना में लगे साधक मृत्यु समय में भी मुझे ही जानते हैं यानि उनको काल ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य पूर्ण परमात्मा का ज्ञान नहीं है। जिस कारण से अंत समय में भी उन अज्ञानियों की आस्था काल ब्रह्म में ही रह जाती है। जिस कारण से वे काल जाल में ही रह जाते हैं।(30)**

विशेष :- गीता के इस अध्याय 7 के श्लोक 29 में ''तत् ब्रह्म'' यानि गीता ज्ञान देने वाले से अन्य ''परम अक्षर ब्रह्म'' की सांकेतिक जानकारी दी है। अर्जुन ने अपनी शंका निवारण करने के लिए अगले अध्याय 8 के श्लोक 1 में प्रश्न किया है कि ''तत् ब्रह्म'' क्या है? इसका उत्तर काल ब्रह्म यानि गीता बोलने वाले ने गीता अध्याय 8 के श्लोक 3, 8, 9, 10, 20, 21, 22 में दिया है जो आप जी आगे पढ़ेंगे।

(इति अध्याय सातवाँ)



आठवां अध्याय

।। दिव्य सारांश ।।

।। वह तत् ब्रह्म यानि पूर्णब्रह्म कौन है? ।।

अध्याय 8 के श्लोक 1 में अर्जुन ने गीता ज्ञान दाता से पूछा कि जो आपने गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में तत् ब्रह्म कहा है, वह तत्ब्रह्म कौन है? इसका उत्तर अध्याय 8 के श्लोक 3 में दिया है कि वह परम अक्षर ब्रह्म है अर्थात् पूर्णब्रह्म है।

विशेष :- अध्यात्म में तीन पुरूष (प्रभु) विशेष हैं।

1. क्षर पुरुष (ब्रह्म, ईश)

2. अक्षर पुरुष (परब्रह्म)

3. परम अक्षर पुरुष - यह पूर्ण ब्रह्म है। परम अक्षर ब्रह्म भी इसी को कहते हैं।

प्रमाण गीता जी के अध्याय 15 के श्लोक 16,17 में। जैसे क्षर पुरुष (नाशवान भगवान) तथा अक्षर पुरुष (अविनाशी भगवान) और वास्तव में अविनाशी (पूर्ण अविनाशी) तो उपरोक्त दोनों से उत्तम पुरूष तो अन्य ही है। जिसको पूर्ण अविनाशी परमात्मा कहा जाता है। वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण-पोषण करता है।

अध्याय 8 के श्लोक 4 में कहा है कि इस देहधारियों से श्रेष्ठ अर्थात् मानव शरीर में नाशवान भाव वाले प्राणियों का स्वामी अर्थात् अधिभूत और पूर्ण परमात्मा परम अक्षर ब्रह्म ही अधिदेव और अधियज्ञ है अर्थात् सर्व यज्ञों में प्रतिष्ठित है। इसी प्रकार मैं भी इन प्राणियों में हूँ। जैसे गीता अध्याय 15 श्लोक 15 में कहा है कि मैं सर्व प्राणियों के हृदय में स्थित हूँ।

भावार्थ :- अध्याय 15 के उपरोक्त श्लोक का भावार्थ है कि काल ब्रह्म केवल अपने इक्कीस ब्रह्माण्डों के प्राणियों के हृदय में स्थित है तथा परम अक्षर ब्रह्म काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों तथा अपने सर्व ब्रह्माण्डों के प्राणियों के हृदय में स्थित है क्योंकि परम अक्षर ब्रह्म ही सर्वव्यापक है यानि वासुदेव है।

प्रमाण :- गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में कहा है कि वह पूर्ण ब्रह्म ज्योतियों का भी ज्योति माया से अति परे कहा जाता है वह तत्वज्ञान द्वारा जानने योग्य है और सर्व प्राणियों के हृदय में विशेष रूप से स्थित है।

यही प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 61 में है। कहा है कि ''शरीर रूपी यन्त्र में आरूढ़ हुए प्राणियों को परमेश्वर अपनी माया से भ्रमण कराता हुआ सर्व प्राणियों के हृदय में स्थित है। फिर श्रद्धालुओं को भ्रमित करने के लिए अध्याय 9 का श्लोक 4-5 तथा अध्याय 7 के श्लोक 12 में कहा है कि ब्रह्म (काल) कह रहा है कि मैं प्राणियों में नहीं हूँ।

"गीता अध्याय 8 श्लोक 5 से 10 तक का सारांश"

।। काल ब्रह्म का उपासक काल ब्रह्म को तथा परम अक्षर ब्रह्म का उपासक परम अक्षर ब्रह्म को प्राप्त होता है।।

गीता अध्याय 8 श्लोक 6 में कहा है कि यह नियम है कि जो अन्त समय में जिस प्रभु में भाव करता है वह साधक उसी को प्राप्त होता है। अध्याय 8 के श्लोक 5 और 7 में काल भगवान कह रहा है जो अंत समय में मेरा ध्यान करता है वह मेरे (काल) को प्राप्त होता है। अंत समय में जो जिसका सुमरण करता है उसी को प्राप्त होता है। इसलिए मेरा (काल का) सुमरण कर और युद्ध भी कर। इससे मेरे को ही प्राप्त होगा।

"पूर्ण ब्रह्म का साधक उसी को प्राप्त होता है"

अध्याय 8 के श्लोक 8 से 10 में अपने से अन्य तत् ब्रह्म यानि उस परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करने को कहा जिसका वर्णन गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में है। कहा है कि हे अर्जुन! जो साधक पूर्ण मुक्ति चाहता है तो किसी और में चित्त न लगा कर केवल एक परम दिव्य पुरुष (पूर्ण परमात्मा-सतपुरुष) का सुमरण करता है। वह उसी को प्राप्त होता है। जो सनातन (आदि पुरुष) नियन्ता (सबको संभालने वाला) सूक्ष्म से अति सूक्ष्म सबका धारण पोषण करने वाला अचिन्त रूप (शांत पूर्ण ब्रह्म) सूर्य के समान प्रकाश रूप (स्वप्रकाशित) अज्ञान से अति परे, पूर्ण प्रभु सतपुरुष (कविम्) कविर्देव का स्मरण करता है, वह भक्ति युक्त अंत समय में भक्ति के बल (सच्चे नाम मंत्र की कमाई) से भकुटी के मध्य में प्राण को अच्छी तरह स्थापित करके निश्चल मन से सुमरण करता हुआ उस परम दिव्य पुरुष (पूर्णब्रह्म-सतपुरुष) को ही प्राप्त होता है।(8/8-10) इन तीनों श्लोकों में पूर्ण ब्रह्म परमात्मा (सतपुरुष) के बारे में ज्ञान दिया है। संकेत भी किया है कि उसका नाम (कविम्) कविर्देव है।

"गीता अध्याय 8 श्लोक 11 से 14 तक का भावार्थ"

गीता अध्याय 8 श्लोक 11-12 का सारांश :- उपरोक्त श्लोकों 8 से 10 में जिस दिव्य रूप परम पुरूष अर्थात् पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने वाला अंतिम समय तक उसी के चिन्तन में शरीर त्याग कर जाता है। वह उसी को प्राप्त होता है। उस पूर्ण परमात्मा की भक्ति विधि के विषय में गीता ज्ञान दाता कह रहा है श्लोक 11-12 में।

अध्याय 8 श्लोक 11 में कहा है कि वेद के जानने वाले विद्वान अर्थात् तत्वदर्शी सन्त जिस परमात्मा को अविनाशी कहते हैं तथा जिस भक्ति विधि द्वारा उस अविनाशी परमात्मा के परम पद चाहने वाले ब्रह्मचर्य अर्थात् सयंम करते हैं। (ब्रह्मचर्य का अर्थ यहाँ संयम है जैसे अहार-विचार-विलास विकारों में सयंम रखना ब्रह्मचर्य कहा जाता है) उस भक्ति विधि (पद) को तेरे से संक्षेप में कहूँगा।

अध्याय 8 श्लोक 12 में बताया है कि पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति के लिए विधि यह है "साधक मन को सर्व इन्द्रियों से हटाकर श्वांस के ऊपर स्थापित करके हृदय तथा

मस्तिक में परमेश्वर की योगधारणा अर्थात् भक्ति में स्थित होता।

विशेष :-- पूर्ण परमात्मा की भक्ति साधना सत्यनाम द्वारा करने का संकेत है। जैसे सत्यनाम में दो मन्त्र होते हैं। एक ओं (ॐ) दूसरा तत् (जो सांकेतिक है केवल शिष्य को ही बताया जाता है।) ॐ (ओं) मन्त्र ब्रह्म का जाप है ब्रह्म का सहंस्र कमल चक्र मस्तिक के पीछे है तथा तत् मन्त्र परब्रह्म का जाप है। इस जाप को सार्थक करने के लिए हृदय में विशेष रूप से (जैसे सूर्य घड़े के जल में रहता है) रह रहे पूर्ण परमात्मा का ध्यान करना होता है। इसलिए श्वांस के साथ मन्त्र के जाप पर मन, सुरति व निरति एकाग्र करके श्वांस-उश्वांस द्वारा-सुमरण अर्थात् अजपा जाप किया जाता है। जब श्वांस शरीर से बाहर जाता है तो नाम के साथ ब्रह्म के संहस्र कमल की ओर ध्यान जाता है। जब हृदय की ओर श्वांस जाता है तो नाम के साथ पूर्ण परमात्मा व परब्रह्म का ध्यान किया जाता है यह विधि उस दिव्य परम पुरूष अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को प्राप्त करने की है।

विचार करें :-- जिस समय मन, सुरति व निरति तथा श्वांस नाम के सुमरन में लीन हो जाता है तब अपने आप शरीर के सर्व द्वार निष्क्रिय हो जाते हैं। हठयोग करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उपरोक्त साधना को चलते-2 शारिरीक कार्य करते-2 खाते, पीते, जागते तथा सोते समय भी कर सकते हैं। सोते समय करने से अभिप्राय है कि जिस समय साधक का सुमरण का अभ्यास परिपक्व हो जाता है उस समय सोते समय रात्रि में भी स्वपन में सुमरण स्वतः चलता रहता है। गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में भी इसी का संकेत है।

विवेचन :-- गीता के अन्य अनुवाद कर्ताओं ने अपने अनुवाद में लिखा है कि सर्व इन्द्रियों के द्वारों को रोककर तथा मन को हृदय में स्थित करके प्राण को (श्वांस को) मस्तक में स्थापित करके परमात्मा की योग धारण में लीन होवें।

विचार करें :-- मन द्वारा ही साधना व ध्यान किया जाता है। यदि मन हृदय में स्थित है तो श्वांस मस्तक में रूक नहीं सकता। क्योंकि मन ही श्वांस को रोक सकता है। मन एक समय में दो स्थानों पर कार्य नहीं कर सकता। श्वांस मन के सहयोग बिना चल तो सकता है परन्तु रूक नहीं सकता। इसलिए अन्य अनुवाद कर्ताओं का टीका न्याय संगत नहीं है। जो मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा किया है वह उचित है।

गीता ज्ञान दाता प्रभु ने अपनी साधना के विषय में अध्याय 8 श्लोक 13 में कहा है जिस का सम्बन्ध गीता अध्याय 8 श्लोक 11-12 से है। जिनमें कहा है कि जो साधक उपरोक्त श्लोक 11 व 12 में बताए पूर्ण मोक्ष मार्ग के तीन मन्त्र का जाप बताया है जिसमें मुझ ब्रह्म का केवल एक ओं (ॐ) अक्षर है। इस प्रकार विधिवत् स्मरण करता हुआ शरीर त्याग कर जाता है परमगति अर्थात् ॐ के मंत्र से होने वाले मोक्ष को प्राप्त होता है।

गीता अध्याय 8 श्लोक 13-14 का भावार्थ :-- इन श्लोकों में कहा है कि ऊँ मन्त्र का जाप करने वाला भक्त वे भी अनन्य मन से अर्थात् एक ही इष्ट अर्थात् ब्रह्म में

आस्था रखने वाला, अन्य देवी-देवताओं, माई-मसानी, हनुमान, गणेश, ब्रह्मा-विष्णु-महेश आदि में भी नहीं ध्यान रहे अर्थात् तीन गुणों से भी परे मुझ (ब्रह्म) को निरन्तर सुमरण करता है उसको मैं सुलभ हूँ अर्थात् मेरा लाभ आसानी से प्राप्त कर सकता है। ''ओम्'' (ॐ) का जाप ब्रह्म का है और इसके स्मरण से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्मलोक में गए प्राणी भी पुनः जन्म-मरण के चक्र में रहते हैं।

{काल को प्राप्त यानि दर्शन नहीं कर सकते। क्योंकि गीता जी के अध्याय 11 के श्लोक 47 और 48 में स्पष्ट कहा है कि मैं किसी प्रकार की वेदों में वर्णित साधना से भी प्राप्य नहीं हूँ। हाँ, काल (ब्रह्म) का लाभ स्वर्ग-नरक-राजा और चौरासी लाख योनियों में चक्र लगाना ही है। इसलिए इस अपनी साधना से होने वाली गति यानि मुक्ति को अध्याय 7 के श्लोक 18 में अनुत्तम (अश्रेष्ठ) गतिम (मुक्ति) स्थिति स्वयं भगवान ने कहा है।}

।। ब्रह्म (काल) प्राप्त साधक का सुख क्षणिक है।।

अध्याय 8 के श्लोक 15 में काल (ज्योति निरंजन) ने अपनी साधना से होने वाले तथा पूर्ण परमात्मा की साधना से होने वाले परिणामों की जानकारी देते हुए कहा है कि मुझे प्राप्त साधक का सुख तो क्षण भंगुर हैं अर्थात् उनका जन्म-मरण बना रहेगा। परम सिद्धि को (पूर्णब्रह्म को) प्राप्त महात्मा दुःखोंके घर रूप जन्म-मरण (पुर्नजन्म) को प्राप्त नहीं होते अर्थात् वे पूर्ण मुक्त हो जाते हैं।

❖ अध्याय 8 के श्लोक 15 का अनुवाद :-गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि (माम उपेत्य) मुझे प्राप्त होने वाले का (पुनर्जन्म) पुनर्जन्म यानि जन्म-मरण बना रहेगा जो (दुःखालयम्) दुःखों का घर है। यहाँ का जीवन (अशाश्वतम्) क्षंण-भंगुर है। जो महात्मा परम सिद्धि को प्राप्त है, वे पुनर्जन्म को (न आप्नुवन्ति) प्राप्त नहीं होते।

❖ गीता अध्याय 8 श्लोक 16 का अनुवाद :- गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! (माम्) मुझे (उपेत्य) प्राप्त होकर (तू) तो (पुनर्जन्म) पुनर्जन्म होता है। मेरे साधक (न विद्यते) नहीं जानते कि (आब्रह्म लोक भुवनात्) ब्रह्मलोक तक सर्व लोक (पुनरावर्तिनः) पुनरावर्ती में हैं। पुनरावर्ती का भावार्थ है कि ब्रह्मलोक तक गए साधकों का पुनर्जन्म होता है। वे बार-बार स्वर्ग-नरक व अन्य शरीरों को प्राप्त होते हैं।(8/16)

❖ गीता अध्याय 8 श्लोक 17 :- इस श्लोक में अक्षर पुरूष यानि परब्रह्म के एक दिन-रात्रि की जानकारी है। उसको समझने के लिए पढ़ें :-

।। महाप्रलय में ब्रह्मण्ड में बना ब्रह्मलोक भी नष्ट हो जाता है।।

अध्याय 8 के श्लोक 16 में स्पष्ट है कि हे अर्जुन! ब्रह्म लोक से लेकर सबलोक बारम्बार उत्पत्ति व नाश वाले हैं। जो यह नहीं जानते वे मुझे प्राप्त होकर भी जन्म-मत्यु को ही प्राप्त होते है। पूर्ण मुक्त नहीं होते। अन्य अनुवाद कर्ताओं ने लिखा है कि मुझे प्राप्त करने का पुर्नजन्म नहीं होता। विचार करे यदि यह अनुवाद ठीक

माना जाए तो गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5-9, अध्याय 10 श्लोक 2 का अर्थ-निरर्थक हो जाता है। जिनमें गीता ज्ञान दाता कह रहा है कि अर्जुन तेरे तथा मेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। फिर अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि पूर्ण मोक्ष के लिए पूर्ण परमात्मा की भक्ति कर।

विशेष :-- इसमें ब्रह्म (काल) कह रहा है कि ब्रह्म लोक तक सर्व लोक नाशवान हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा इनके लोकों के प्राणी भी नहीं रहेंगे। फिर उनके उपासक कहाँ रहेंगे? देवी-देवता भी नहीं रहेंगे। फिर पूजारी कहाँ रहेंगे? अर्थात् कोई प्राणी मुक्त नहीं। न ब्रह्मा लोक में पहुँचे हुए, न विष्णु लोक में पहुँचे हुए, न शिव व ब्रह्म लोक में पहुँचे हुए। फिर मुझे प्राप्त (अर्थात् काल ब्रह्म को प्राप्त) का भी पुर्नजन्म है। क्योंकि ब्रह्म लोक भी नष्ट होवेगा। इसलिए ब्रह्म तक के कोई भी साधक मुक्त नहीं। इति सिद्धं।

प्रलय की जानकारी

❖ प्रलय का अर्थ है 'विनाश'। यह दो प्रकार की होती है - आंशिक प्रलय तथा महाप्रलय।

आंशिक प्रलय : यह दो प्रकार की होती है। एक तो चौथे युग (कलियुग) के अंत में पृथ्वी पर एक निःकलंक नामक दसवाँ अवतार आता है, जिसे कल्कि भी कहा है। वह उस समय (कलियुग) के सर्व भक्तिहीन मानव शरीर धारी प्राणियों को अपनी तलवार से मार कर समाप्त करेगा। उस समय मानव की उम्र 20 वर्ष की होगी तथा 5 वर्ष खण्ड (Less) होगी अर्थात् 15 वर्ष में सब बालक-जवान-वृद्ध होकर मर जाया करेंगे। पाँच वर्षीय लड़की बच्चों को जन्म दिया करेगी। मानव कद लगभग डेढ़ या अढ़ाई फुट का होगा। उस समय इतने भूकंप आया करेंगे कि पृथ्वी पर चार फुट ऊँचें भवन भी नहीं बना पाया करेंगे। सर्व प्राणी धरती में बिल खोद कर रहा करेंगे। पृथ्वी उपजाऊँ नहीं रहेगी। तीन हाथ (लगभग साढे चार फुट) नीचे तक जमीन का उपजाऊ तत्त्व समाप्त हो जाएगा। कोई फलदार वृक्ष नहीं होगा तथा पीपल के पेड़ को पत्ते नहीं लगेंगे। सर्व मनुष्य (स्त्री व पुरुष)मांसाहारी होंगे। आपसी व्यवहार बहुत घटिया होगा। रीछों की अस्वारी किया करेंगे। रीछ उस समय का अच्छा वाहन होगा। पर्यावरण दूषित होने से वर्षा होनी बंद हो जाऐंगी। जैसे ओस पड़ती है ऐसे वर्षा हुआ करेगी। गंगा-जमना आदि नदियाँ भी सूख जाएगी। यह कलियुग का अंत होगा। उस समय प्रलय (पृथ्वी पर पानी ही पानी होगा) होगी। एक दम इतनी वर्षा होगी की सारी पृथ्वी पर सैकड़ों फुट पानी हो जाएगा। अति ऊँचे स्थानों पर कुछ मानव शेष रहेंगे। यह पानी सैंकड़ों वर्षों में सूखेगा। फिर सारी पृथ्वी पर जंगल उग जाएगा। पृथ्वी फिर से उपजाऊ हो जाएगी। जंगल (वृक्षों) की अधिकता से पर्यावरण फिर शुद्ध हो जाएगा। कुछ व्यक्ति जो भक्ति युक्त होंगे ऊँचे स्थानों पर बचे रह जाएंगे। उनके

संतान होगी। वह बहुत ऊँचे कद की होगीं। चूंकि वायुमण्डल में वातावरण की शुद्धता होने से शरीर अधिक स्वस्थ हो जायेगा। मात-पिता छोटे कद के होंगे और बच्चे उँचे कद (शरीर)के होगें। कुछ समय पश्चात् माता-पिता और बच्चों का युवा अवस्था में कद समान हो जाएगा। उस समय वातावरण पूर्ण रूप से शुद्ध होगा। इस प्रकार यह सतयुग का प्रारम्भ होगा। यह पृथ्वी पर आंशिक प्रलय ज्योति निरंजन (काल) द्वारा की जाती है।

❖ दूसरी आंशिक प्रलय एक हजार चतुर्युग पश्चात् होती है। तब श्री ब्रह्मा जी का एक दिन समाप्त होता है। इतने ही चतुर्युग तक रात्रि होती है। एक रात्रि तक प्रलय रहती है। {वास्तव में श्री ब्रह्मा जी का एक दिन 1008 चतुर्युग होता है, एक ब्रह्मा जी के दिन में चौदह इन्द्रों का शासन काल पूरा होता है। एक इन्द्र का शासन काल बहतर चौकड़ी युग का होता है। एक चौकड़ी (चतुर्युगी) में चार युग होते हैं :- 1. सतयुग जो 1728000 वर्षों का होता है। 2.त्रेता युग जो 1296000 वर्षों का होता है। 3. द्वापर युग जो 864000 वर्षों का होता है। 4. कलयुग जो 432000 वर्षों का होता है। इसी को सीधा एक हजार चतुर्युग कहते हैं।}

जब ब्रह्मा का दिन समाप्त होता है तो पृथ्वी, पाताल व स्वर्ग (इन्द्र) लोक के सर्व प्राणी नाश को प्राप्त होते हैं। प्रलय में विनाश हुए प्राणी ब्रह्म अर्थात् काल जो ब्रह्म लोक में रहता है तथा व्यक्त रूप से किसी को दर्शन नहीं देता जिसे अव्यक्त मान लिया गया है उस अव्यक्त (ब्रह्म) के लोक में अचेत करके गुप्त डाल दिए जाते हैं। फिर एक हजार चतुर्युग (वास्तव में 1008 चतुर्युग की होती है) की ब्रह्मा की रात्रि समाप्त होने पर फिर इन तीनों लोकों (पाताल-पृथ्वी-स्वर्ग लोक) में उत्पत्ति कर्म प्रारम्भ हो जाता है। उस समय ब्रह्मा, विष्णु, शिव लोक के प्राणी और ब्रह्मलोक (महास्वर्ग) के प्राणी बचे रहते हैं। यह दूसरी प्रकार की आंशिक प्रलय हुई।

❖ महाप्रलय : यह तीन प्रकार की होती है। प्रथम महाप्रलय :- यह काल (ज्योति निरंजन) महाकल्प के अंत में करता है जिस समय ब्रह्मा जी की मृत्यु होती है। {ब्रह्मा की आयु = ब्रह्मा की रात्रि एक हजार चतुर्युग की होती है तथा इतना ही दिन होता है। तीस दिन-रात्रि का एक महिना, 12 महिनों का एक वर्ष, सौ वर्ष का एक ब्रह्मा का जीवन। यह एक महाकल्प कहलाता है।}

❖ दूसरी महा प्रलय :-- सात ब्रह्मा जी की मृत्यु के बाद एक विष्णु जी की मृत्यु होती है, सात विष्णु जी की मृत्यु के उपरान्त एक शिव की मृत्यु होती है। इसे दिव्य महाकल्प कहते हैं उसमें ब्रह्मा, विष्णु, शिव सहित इनके लोकों के प्राणी तथा स्वर्ग लोक, पाताल लोक, मृत्यु लोक आदि में अन्य रचना तथा उनके प्राणी नष्ट हो जाते हैं। उस समय केवल ब्रह्मलोक बचता है जिसमें यह काल भगवान (ज्योति निरंजन) तथा दुर्गा तीन रूपों महाब्रह्मा-महासावित्री, महाविष्णु-महालक्ष्मी और महाशंकर-महादेवी (पार्वती) के रूप, में तीन लोक बना कर रहता है। इसी ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बना है, उसमें चौथी मुक्ति प्राप्त प्राणी रहते हैं। {मार्कण्डेय, रूमी ऋषि जैसी आत्मा जो

चौथी मुक्ति प्राप्त हैं जिन्हें ब्रह्म लीन कहा जाता है। वे यहाँ के तीनों लोकों के साधकों की दिव्य दष्टि की क्षमता (रेंज) से बाहर होते हैं। स्वर्ग, मत्यु व पाताल लोकों के ऋषि उन्हें देख नहीं पाते। इसलिए ब्रह्म लीन मान लेते हैं। परन्तु वे ब्रह्मलोक में बने महास्वर्ग में चले जाते हैं।}

फिर दिव्य महाकल्प के आरम्भ में काल (ज्योति निरंजन) भगवान ब्रह्म लोक से नीचे की सष्टि फिर से रचता है। काल भगवान अपनी प्रकति (माया-आदि भवानी) महासावित्री, महालक्ष्मी व महादेवी (गौरी)के साथ रति कर्म से अपने तीन पुत्रों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) को उत्पन्न करता है। यह काल भगवान उन्हें अपनी शक्ति से अचेत अवस्था में कर देता है। फिर तीनों को भिन्न-2 स्थानों पर जैसे ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, विष्णु जी को समुद्र में शेष नाग की शैय्या पर, शिव जी को कैलाश पर्वत पर रखता है। तीनों को बारी-बारी सचेत कर देता है। उन्हें प्रकति (दुर्गा) के माध्यम से सागर मंथन का आदेश होता है। तब यह महामाया (मूल प्रकति/शेराँवाली) अपने तीन रूप बना कर सागर में छुपा देती है। तीन लड़कियों (जवान देवियों) को प्रकट करती है। तीनों बच्चे (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) इन्हीं तीनों देवियों से विवाह करते हैं। अपने तीनों पुत्रों को तीन विभाग - उत्पत्ति का कार्य ब्रह्मा जी को व स्थिति (पालन-पोषण) का कार्य विष्णु जी को तथा संहार (मारने) का कार्य शिव जी को देता है जिससे काल (ब्रह्म) की सष्टि फिर से शुरु हो जाती है। जिसका वर्णन पवित्र पुराणों में भी है जैसे शिव महापुराण, ब्रह्म महापुराण, विष्णु महापुराण, महाभारत, सुख सागर, देवी भागवद् महापुराण में विस्तत वर्णन किया गया है और गीता जी के चौदहवें अध्याय के श्लोक 3 से 5 में संक्षिप्त रूप से कहा गया है।

❖ तीसरी महाप्रलय :- एक ब्रह्मण्ड में 70000 वार त्रिलोकिय शिव (काल के तमोगुण पुत्र) की मत्यु हो जाती है तब एक ब्रह्मण्ड की प्रलय होती है तथा ब्रह्मलोक में तीनों स्थानों पर रहने वाला काल (महाशिव) अपना महाशिव वाला शरीर भी त्याग देता है। इस प्रकार यह एक ब्रह्मण्ड की प्रलय अर्थात् तीसरी महाप्रलय हुई तथा उस समय एक ब्रह्मलोकिय शिव (काल) की मत्यु हुई तथा 70000 (सतर हजार) त्रिलोकिय शिव (काल के पुत्र) की मत्यु हुई अर्थात् एक ब्रह्मण्ड में बने ब्रह्म लोक सहित सर्व लोकों के प्राणी विनाश में आते हैं। इस समय को परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष का एक युग कहते हैं। इस प्रकार गीता अध्याय 8 श्लोक 16 का भावार्थ समझना चाहिए।

''इस प्रकार तीन दिव्य महा प्रलय होती हैं'' :-

❖ ''प्रथम दिव्य महाप्रलय''

जब सौ (100) ब्रह्मलोकिय शिव (काल-ब्रह्म) की मत्यु हो जाती है तब चारों महाब्रह्मण्डों में बने 20 ब्रह्मण्डों के प्राणियों का विनाश हो जाता है।

तब चारों महाब्रह्मण्डों के शुभ कर्मी प्राणियों (हंसात्माओं) को इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में बने नकली सत्यलोक आदि लोकों में रख देता है तथा उसी लोक में निर्मित अन्य

चार गुप्त स्थानों पर अन्य प्राणियों को अचेत करके डाल देता है तथा तब उसी नकली सत्यलोक से प्राणियों को खाकर अपनी भूख मिटाता है तथा जो प्रतिदिन खाए प्राणियों को उसी इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में बने चार गुप्त मुकामों में अचेत करके डालता रहता है तथा वहाँ पर भी ज्योति निरंजन अपने तीन रूप (महाब्रह्मा, महाविष्णु तथा महाशिव) धारण कर लेता है तथा वहाँ पर बने शिव रूप में अपनी जन्म-मत्यु की लीला करता रहता है, जिससे समय निश्चित रखता है तथा सौ बार मत्यु को प्राप्त होता है, जिस कारण परब्रह्म के सौ युग का समय इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में पूरा हो जाता है। तत् पश्चात् चारों महाब्रह्मण्डों के अन्दर सष्टि रचना का कार्य प्रारम्भ करता है। {जिस एक सष्टि में सौ ब्रह्मलोकिय शिव (काल) की आयु अर्थात् परब्रह्म के सौ युग तक सष्टि रहती है तथा इतनी ही समय प्रलय रहती है अर्थात् परब्रह्म के दो सौ युग (क्योंकि परब्रह्म के एक युग में एक ब्रह्मलोकिय शिव अर्थात् काल की मत्यु होती है) में एक दिव्य महाप्रलय जो काल द्वारा की जाती है का क्रम पूरा होता है} यह काल अर्थात् ब्रह्म प्रथम अव्यक्त कहलाता है। (गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में)। दूसरा अव्यक्त परब्रह्म तथा इससे भी परे दूसरा सनातन अव्यक्त जो पूर्ण ब्रह्म है, गीता अध्याय 8 श्लोक 20 का भाव समझें।

❖ ''दूसरी दिव्य महाप्रलय''

इस उपरोक्त महाप्रलय के पाँच बार हो जाने के पश्चात् द्वितीय दिव्य महाप्रलय होती है। दूसरी दिव्य महाप्रलय परब्रह्म (अविगत पुरुष/अक्षर पुरुष) करता है। उसमें काल अर्थात् ब्रह्म (क्षर पुरूष) सहित सर्व 21 ब्रह्मण्डों का विनाश हो जाता है। जिसमें तीनों लोक (स्वर्गलोक-मत्युलोक-पाताल लोक), ब्रह्मा, विष्णु, शिव व काल (ज्योति निरंजन-ओंकार निरंजन) तथा इनके लोकों (ब्रह्म लोक) अर्थात् सर्व अन्य 21 ब्रह्मण्डों के प्राणी नष्ट हो जाते हैं।

विशेष :- सात त्रिलोकिय ब्रह्मा की मत्यु के बाद एक त्रिलोकिय विष्णु जी की मत्यु होती है तथा सात विष्णु की मत्यु के बाद एक त्रिलोकिय शिव की मत्यु होती है। 70000 (सतर हजार) त्रिलोकिय शिव की मत्यु के बाद एक ब्रह्मलोकिय शिव अर्थात् काल (ब्रह्म) की मत्यु परब्रह्म के एक युग के बाद होती है। ऐसे एक हजार युग का परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का एक दिन तथा इतनी ही रात्रि होती है। अक्षर पुरूष की रात्रि का समय शुरू होने पर प्रकति (दुर्गा) सहित काल (ज्योति निरंजन) अर्थात् ब्रह्म तथा इसके इक्कीस ब्रह्मण्डों के प्राणी नष्ट हो जाते हैं। तब परब्रह्म (दूसरे अव्यक्त) का एक हजार युग का दिन समाप्त होता है। इतनी ही रात्रि व्यतीत होने के उपरान्त ब्रह्म को फिर पूर्ण ब्रह्म प्रकट करता है। गीता अ. 8 श्लोक 17 का भाव ऐसे समझें। परन्तु ब्रह्मण्डों व महाब्रह्मण्डों व इनमें बने लोकों की सीमा (गोलाकार दिवार समझो) समाप्त नहीं होती। फिर इतने ही समय के बाद यह काल तथा माया (प्रकति देवी) को पूर्ण ब्रह्म (सत्यपुरूष) अपने द्वारा पूर्व निर्धारित सष्टि कर्म के आधार पर पुनः उत्पन्न करता

है तथा सर्व प्राणी जो काल के कैदी (बन्दी) हैं, को उनके कर्माधार पर शरीरों में संष्टि कर्म नियम से रचता है तथा लगता है कि परब्रह्म रच रहा है {यहाँ पर गीता अ. 15 का श्लोक 17 याद रखना चाहिए जिसमें कहा है कि उत्तम प्रभु तो कोई और ही है जो वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण–पोषण करता है तथा गीता अ. 18 के श्लोक 61 में कहा है कि अन्तर्यामी परमेश्वर सर्व प्राणियों को यन्त्र (मशीन) के सदंश कर्माधार पर घुमाता है तथा प्रत्येक प्राणी के हृदय में स्थित है।

गीता के पाठकों को फिर भ्रम होगा कि गीता अ. 15 के श्लोक 15 में काल (ब्रह्म) कहता है कि मैं सर्व प्राणियों के हृदय में स्थित हूँ तथा सर्व ज्ञान अपोहन व वेदों को प्रदान करने वाला हूँ।

हृदय कमल में काल भगवान महापार्वती (दुर्गा) सहित महाशिव रूप में रहता है तथा पूर्ण परमात्मा भी जीवात्मा के साथ अभेद रूप से रहता है जैसे वायु रहती है गंध के साथ। दोनों का अभेद सम्बन्ध है परन्तु कुछ गुणों का अन्तर है। गीता अ. 2 के श्लोक 17 से 21 में भी विस्तंत विवरण है। इस प्रकार पूर्ण ब्रह्म भी प्रत्येक प्राणी के हृदय में जीवात्मा के साथ रहता है जैसे सूर्य दूर स्थान पर होते हुए भी उसकी ऊष्णता व प्रकाश का प्रभाव प्रत्येक प्राणी से अभेद है तथा जीवात्मा का स्थान भी हृदय ही है।

विशेष :– एक महाब्रह्माण्ड का विनाश परब्रह्म के 100 वर्षों के उपरान्त होता है। इतने ही वर्षों तक एक महाब्रह्मण्ड में प्रलय रहती है।

काल अर्थात् ब्रह्म (ज्योति निरंजन) को तो ऐसा जानों जैसे गर्मियों के मौसम में राजस्थान–हरियाणा आदि क्षेत्रों में वायु का एक स्तम्भ जैसा (मिट्टी युक्त वायु) आसमान में बहुत ऊँचे तक दिखाई देता है तथा चक्र लगाता हुआ चलता है। जो अस्थाई होता है। परन्तु गंध तो वायु के साथ अभेद रूप में है। इसी प्रकार जीवात्मा तथा परमात्मा का सूक्ष्म सम्बन्ध समझे। ऐसे ही सर्व प्रलय तथा महाप्रलय के क्रम को पूर्ण परमात्मा (सत्यपुरूष, कविर्देव) से ही होना निश्चित समझे। एक हजार युग जो परब्रह्म की रात्रि है उसके समाप्त होने पर काल (ज्योति निरंजन) संष्टि फिर से सत्यपुरूष कविर्देव की शब्द शक्ति से बनाए समय के विधान अनुसार प्रारम्भ होती है। अक्षर पुरुष(परब्रह्म) पूर्ण ब्रह्म (सतपुरूष) के आदेश से काल (ज्योति निरंजन) व माया (प्रकंति अर्थात् दुर्गा) को सर्व प्राणियों सहित काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड में भेज देता है तथा पूर्ण ब्रह्म के बनाए विधान अनुसार सर्व ब्रह्मण्डों में अन्य रचना प्रभु कबीर जी की कंपा से हो जाती है। माया (प्रकंति) तथा काल (ज्योति निरंजन) के सूक्ष्म शरीर पर नूरी शरीर भी पूर्ण परमात्मा ही रचता है तथा शेष उत्पत्ति ब्रह्म(काल) अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकंति) के संयोग से करता है। शेष स्थान निरंजन पाँच तत्त्व के आधार से रचता है। फिर काल (ज्योति निरंजन अर्थात् ब्रह्म) की संष्टि प्रारम्भ होती है। इस प्रकार यह परब्रह्म दूसरा अव्यक्त कहलाता है।}

❖ ''तीसरी दिव्य महा प्रलय''

जैसा कि पूर्वोक्त विवरण में पढ़ा कि सत्तर हजार काल (ब्रह्म) के शिव रूपी पात्रों की मंत्यु के पश्चात् एक ब्रह्म (महाशिव) की मंत्यु होती है वह समय परब्रह्म का एक

युग होता है। इसी के विषय में गीता अध्याय 2 श्लोक 12 अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9 में अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि मेरी भी जन्म मत्यु होती है। बहुत से जन्म हो चुके हैं। जिनको देवता लोग (ब्रह्मा,विष्णु तथा शिव सहित) व महर्षि जन भी नहीं जानते क्योंकि वे सर्व मुझ से ही उत्पन्न हुए हैं। गीता अध्याय 4 श्लोक 9 में कहा है कि मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं। परब्रह्म के एक युग में काल भगवान सदा शिव वाला शरीर त्यागता है तथा पुनः अन्य ब्रह्मण्ड में अन्य तीन रूपों में विराजमान हो जाता है। यह लीला स्वयं करता है। परब्रह्म का एक दिन एक हजार युग का होता है इतनी ही रात्रि होती है। तीस दिन-रात का एक महिना, बारह महिनों का एक वर्ष तथा सौ वर्ष की परब्रह्म (द्वितीय अव्यक्त) की आयु होती है। उस समय परब्रह्म (अक्षर पुरूष) की मत्यु होती है। यह तीसरी दिव्य महाप्रलय कहलाती है।

तीसरी दिव्य महा प्रलय में सर्व ब्रह्मण्ड तथा अण्ड जिसमें ब्रह्म (काल) के इक्कीस ब्रह्मण्ड तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड व अन्य असंख्यों ब्रह्मण्ड नाश में आवेंगे। धूंधूकार का शंख बजेगा। सर्व अण्ड व ब्रह्मण्ड नाश में आवेंगे परंतु वह तीसरी दिव्य महा प्रलय बहुत समय प्रयान्त होवेगी। वह तीसरी (दिव्य) महा प्रलय सतपुरुष का पुत्र अचिंत अपने पिता पूर्ण ब्रह्म (सतपुरूष) की आज्ञा से सष्टि कर्म नियम से जो पूर्णब्रह्म ने निर्धारित किया हुआ है करेगा और फिर सष्टि रचना होगी। परंतु सतलोक में गए हंस दोबारा जन्म-मरण में नहीं आऐंगे। इस प्रकार न तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अमर है, न काल निरंजन (ब्रह्म) अमर है, न ब्रह्मा (रजगुण)-विष्णु (सतगुण)-शिव (तमगुण) अमर हैं। फिर इनके पूजारी (उपासक) कैसे पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं? अर्थात् कभी नहीं। इसलिए पूर्णब्रह्म की साधना करनी चाहिए जिसकी उपासना से जीव सतलोक (अमरलोक) में चला जाता है। फिर वह कभी नहीं मरता, पूर्ण मुक्त हो जाता है। वह पूर्ण ब्रह्म (कविर्देव) तीसरा सनातन अव्यक्त है। जो गीता अ. 8 के श्लोक 20,21 में वर्णन है।

''अमर करुं सतलोक पठाऊं, तातैं बन्दी छोड़ कहांउ''

उसी पूर्ण परमात्मा का प्रमाण गीता जी के अध्याय 2 के श्लोक 17 में, अध्याय 3 के श्लोक 14,15 में, अध्याय 7 के श्लोक 13 और 19 व 29 में, अध्याय 8 के श्लोक 3, 4, 8, 9, 10, 20, 21, 22 में, अध्याय 13 श्लोक 12 से 17 तथा 22 से 24,27 से 28,30-31 व 34 तथा अध्याय 4 श्लोक 31-32, अध्याय 5 श्लोक 14, 15, 16, 19, 20, 24-26 में, अध्याय 6 श्लोक 7 तथा 19-20, 25 से 27 में तथा अध्याय 18 श्लोक 46, 61, 62 तथा 66 में भी विशेष रूप से प्रमाण दिया गया है कि उस पूर्ण परमात्मा की शरण में जा कर जीव फिर कभी जन्म मरण में नहीं आता है।

{विशेष :– काल का जाल समझने के लिए यह विवरण ध्यान रखें कि त्रिलोक में एक शिव जी है। जो इस काल का पुत्र है जो 7 त्रिलोकिय विष्णु जी की मत्यु तथा 49 त्रिलोकिय ब्रह्मा जी की मत्यु के उपरान्त मत्यु को प्राप्त होता है। ऐसे ही काल भगवान एक ब्रह्मण्ड में बने ब्रह्मलोक में महाशिव रूप में भी रहता है। परमेश्वर द्वारा बनाए समय के

विद्यान अनुसार संष्टि क्रम का समय बनाए रखने के लिए यह ब्रह्मलोक वाला महाशिव (काल) भी मंत्यु को प्राप्त होता है। जब त्रिलोकिय 70000 (सतर हजार) ब्रह्म काल के पुत्र शिव मंत्यु को प्राप्त हो जाते हैं तब एक ब्रह्मलोकिय शिव (ब्रह्म/क्षर पुरुष) पूर्ण परमात्मा द्वारा बनाए समय के विधान अनुसार परवश हुआ मरता तथा जन्मता है। यह ब्रह्मलोकिय शिव (ब्रह्म/काल) की मंत्यु का समय परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का एक युग होता है। इसीलिए गीता जी के अ. 2 के श्लोक 12, गीता अ. 4 श्लोक 5, गीता अ. 10 श्लोक 2 में कहा है कि मेरे तथा तेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। मैं जानता हूँ तू नहीं जानता। मेरे जन्म अलौकिक (अद्‌भुत) होते हैं।}

अद्‌भुत उदाहरण :- आदरणीय गरीबदास साहेब जी सन् 1717 (संवत् 1774) में श्री बलराम जी के घर पर माता रानी जी के गर्भ से जन्म लेकर 61 वर्ष तक शरीर में गांव छुड़ानी जिला झज्जर में रहे तथा सन् 1778 (विक्रमी संवत् 1835) में शरीर त्याग गए। आज भी उनकी स्मंति में एक यादगार बनी है जहाँ पर शरीर को जमीन में सादर दबाया गया था। छः महीने के उपरान्त वैसा ही शरीर धारण करके आदरणीय गरीबदास साहेब जी 35 वर्ष तक अपने पूर्व शरीर के शिष्य श्री भक्त भूमड़ सैनी जी के पास शहर सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) में रह कर शरीर त्याग गए। वहाँ भी आज उनकी स्मंति में यादगार बनी है। स्थान है :- चिलकाना रोड़ से कलसिया रोड़ निकलता है, कलसिया रोड़ पर आधा किलोमीटर चल कर बाएँ तरफ यह अद्वितीय पवित्र यादगार विद्यमान है तथा उस पर एक शिलालेख भी लिखा है, जो प्रत्यक्ष साक्षी है। उसी के साथ में बाबा लालदास जी का बाड़ा भी बना है।

''सर्व प्रभुओं की आयु''

अध्याय 8 का श्लोक 17

सहस्त्रयुगपर्यन्तमहर्यद्‌ब्रह्मणो विदुः।
रात्रिं युगसहस्त्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः।१७।

सहस्त्रयुगपर्यन्तम्, अहः,यत्,ब्रह्मणः, विदुः,रात्रिम्,
युगसहस्त्रान्ताम्, ते, अहोरात्रविदः, जनाः।।17।।

अनुवाद : (ब्रह्मणः) परब्रह्म का (यत्) जो (अहः) एक दिन है उसको (सहस्त्रयुगपर्यन्तम्) एक हजार युग की अवधि वाला और (रात्रिम्) रात्रि को भी (युगसहस्त्रान्ताम्) एक हजार युग तक की अवधि वाली (विदुः) तत्व से जानते हैं (ते) वे (जनाः) तत्वदर्शी संत (अहोरात्रविदः) दिन-रात्रि के तत्व को जानने वाले हैं।(17)

केवल हिन्दी अनुवाद : परब्रह्म का जो एक दिन है उसको एक हजार युग की अवधिवाला और रात्रिको भी एक हजार युग तक की अवधि वाली तत्वसे जानते हैं। वे तत्वदर्शी संत दिन-रात्रि के तत्वको जानने वाले हैं।(17)

नोट :- गीता अध्याय 8 श्लोक 17 के अनुवाद में गीता जी के अन्य अनुवाद कर्ताओं ने ब्रह्मा का एक दिन एक हजार चतुर्युग का लिखा है जो उचित नहीं है। क्योंकि

मूल पाठ में सहंस्र युग लिखा है न की चतुर्युग। तथा ब्रह्मणः लिखा है न कि ब्रह्मा। इस श्लोक 17 में परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के विषय में कहा है न कि ब्रह्मा के विषय में अज्ञानियों ने तत्वज्ञान के अभाव से अर्थों का अनर्थ किया है।

विशेषः- सात त्रिलोकिय ब्रह्मा (काल के रजगुण पुत्र) की मत्यु के बाद एक त्रिलोकिय विष्णु जी की मत्यु होती है तथा सात त्रिलोकिय विष्णु (काल के सतगुण पुत्र) की मत्यु के बाद एक त्रिलोकिय शिव (ब्रह्म-काल के तमोगुण पुत्र) की मत्यु होती है। ऐसे 70000 (सतर हजार अर्थात् 0.7 लाख) त्रिलोकिय शिव की मत्यु के उपरान्त एक ब्रह्मलोकिय महा शिव (सदाशिव अर्थात् काल) की मत्यु होती है। एक ब्रह्मलोकिय महाशिव की आयु जितना एक युग परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का हुआ। ऐसे एक हजार युग अर्थात् एक हजार ब्रह्मलोकिय शिव (ब्रह्मलोक में स्वयं काल ही महाशिव रूप में रहता है) की मत्यु के बाद काल के इक्कीस ब्रह्मण्डों का विनाश हो जाता है। इसलिए यहाँ पर परब्रह्म के एक दिन जो एक हजार युग का होता है तथा इतनी ही रात्रि होती है, लिखा है।

(1) रजगुण ब्रह्मा की आयुः-ब्रह्मा का एक दिन एक हजार चतुर्युग का है तथा इतनी ही रात्रि है। एक चतुर्युग में 43,20,000 मनुष्यों वाले वर्ष होते हैं) एक महिना तीस दिन रात का है, एक वर्ष बारह महिनों का है तथा सौ वर्ष की ब्रह्मा जी की आयु है। जो सात करोड़ बीस लाख चतुर्युग की है।

(2) सतगुण विष्णु की आयुः-श्री ब्रह्मा जी की आयु से सात गुणा अधिक श्री विष्णु जी की आयु है अर्थात् पचास करोड़ चालीस लाख चतुर्युग की श्री विष्णु जी की आयु है।

(3) तमगुण शिव की आयुः-श्री विष्णु जी की आयु से श्री शिव जी की आयु सात गुणा अधिक है अर्थात् तीन अरब बावन करोड़ अस्सी लाख चतुर्युग की श्री शिव की आयु है।

(4) काल ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष की आयुः-सात त्रिलोकिय ब्रह्मा (काल के रजगुण पुत्र) की मत्यु के बाद एक त्रिलोकिय विष्णु जी की मत्यु होती है तथा सात त्रिलोकिय विष्णु (काल के सतगुण पुत्र) की मत्यु के बाद एक त्रिलोकिय शिव (ब्रह्म/काल के तमोगुण पुत्र) की मत्यु होती है। ऐसे 70000 (सतर हजार अर्थात् 0.7 लाख) त्रिलोकिय शिव की मत्यु के उपरान्त एक ब्रह्मलोकिय महा शिव (सदाशिव अर्थात् काल) की मत्यु होती है। एक ब्रह्मलोकिय महाशिव की आयु जितना एक युग परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का हुआ। ऐसे एक हजार युग का परब्रह्म का एक दिन होता है। परब्रह्म के एक दिन के समापन के पश्चात् काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों का विनाश हो जाता है तथा काल व प्रकति देवी(दुर्गा) की मत्यु होती है। परब्रह्म की रात्रि (जो एक हजार युग की होती है) के समाप्त होने पर दिन के प्रारम्भ में काल व दुर्गा का पुनर्जन्म होता है फिर ये एक ब्रह्मण्ड में पहले की भांति सष्टि प्रारम्भ करते हैं। इस प्रकार परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष का एक दिन एक हजार युग का होता है तथा इतनी ही रात्रि है।

अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म की आयु :- परब्रह्म का एक युग ब्रह्मलोकीय शिव अर्थात् महाशिव (काल ब्रह्म) की आयु के समान होता है। परब्रह्म का एक दिन एक हजार

युग का तथा इतनी ही रात्रि होती है। इस प्रकार परब्रह्म का एक दिन–रात दो हजार युग का हुआ। एक महिना 30 दिन का एक वर्ष 12 महिनों का तथा परब्रह्म की आयु सौ वर्ष की है। इस से सिद्ध है कि परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष भी नाश्वान है। इसलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 तथा अध्याय 8 श्लोक 20 से 22 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य पूर्ण परमात्मा के विषय में कहा है जो वास्तव में अविनाशी है।

अध्याय 8 के श्लोक 18-19 में वर्णन है कि सब प्राणी दिन के आरम्भ में अव्यक्त अर्थात् अदृश परब्रह्म से उत्पन्न होते हैं तथा रात्रि के समय उसी परब्रह्म अव्यक्त (अदृश) में ही लीन हो जाते हैं।

❖ ।। परब्रह्म (अक्षर पुरूष) से भी दूसरा सनातन अव्यक्त सतपुरुष (पूर्णब्रह्म) है।।

अध्याय 8 के श्लोक 20 में स्पष्ट है कि उस अव्यक्त (अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म) से परे दूसरा जो सनातन (आदि/सदा का अविनाशी) अव्यक्त अर्थात् अदृश पूर्णब्रह्म है वह सब भूतों (प्राणियों) के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता।

''तीन प्रभुओं का प्रमाण''

तीन प्रभु है :- (1) ब्रह्म इसे क्षर पुरूष भी कहते हैं। यह प्रथम अव्यक्त है।

गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में गीता ज्ञान दाता प्रभु अपने विषय में कह रहा है कि यह मूर्ख प्राणी समुदाय मुझ अव्यक्त को व्यक्त अर्थात् श्री कृष्ण रूप में प्रकट हुआ मान रहा है। मैं अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ। इसलिए किसी समक्ष प्रत्यक्ष नहीं होता।

(2) परब्रह्म इसे अक्षर पुरूष भी कहते हैं। यह दूसरा अव्यक्त है।

गीता अध्याय 8 श्लोक 18-19 में परब्रह्म का वर्णन है कि सर्व प्राणी दिन के आरम्भ में अव्यक्त से प्रकट होते हैं तथा रात्रि के आरम्भ में उसी अव्यक्त में लीन हो जाते हैं।

(3) पूर्ण ब्रह्म इसे परम अक्षर पुरूष भी कहते हैं। यह तीसरा अव्यक्त है।

गीता अध्याय 8 श्लोक 20 में कहा है कि श्लोक 18-19 में कहे अव्यक्त से भी परे दूसरा सनातन अव्यक्त भाव है। वह परम दिव्य पुरूष सब प्राणियों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता। यह तीसरा अव्यक्त हुआ।

यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में लिखा है ''क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष ये दो प्रभु इस लोक में जाने जाते हैं। परन्तु वास्तव में अविनाशी सर्वश्रेष्ठ परमात्मा तो इन दोनों से अन्य (दूसरा) है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है अविनाशी परमेश्वर कहा जाता है। यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में कहा है कि इस संसार रूपी वृक्ष की मूल तो परम दिव्य पुरूष हैं नीचे को तीनों गुण रूपी (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव रूपी)

शाखाऐं हैं। तत्व ज्ञानी सन्त द्वारा ही सर्व स्थिति बताई जाती है उस तत्वज्ञान द्वार समझ कर उस पूर्ण परमात्मा की खोज करनी चाहिए। जहाँ जाने के पश्चात् पुनः संसार में नहीं आते। उसी की पूजा करो। मैं भी उसी की शरण हूँ। इस अध्याय 15 श्लोक 1 में संसार की मूल पूर्ण परमात्मा कहा है। जड़ों से ही वृक्ष को आहार प्राप्त होता है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा तीसरा अव्यक्त सर्व लोकों का पालन कर्ता है। उपरोक्त विवरण से तीन प्रभु सिद्ध हुए।

।। ब्रह्म (काल) का परम धाम भी सतलोक।।

विशेष :- पवित्र गीता अध्याय 8 श्लोक 21 का भावार्थ है कि काल (ज्योति निरंजन) सतलोक से निष्कासित है। इसलिए कह रहा है कि मेरा भी परम धाम वही सत्यलोक स्थान है अर्थात् मैं (ब्रह्म-काल) भी उसी अमर धाम से आया हुआ हूँ। जैसे कोई व्यक्ति गाँव वाली सर्व सम्पति बेच कर किसी शहर में रह रहा हो। कभी उसी गाँव का व्यक्ति मिले तो चलती बात पर वह शहर वाला व्यक्ति कहता है कि मैं भी उसी गाँव का रहने वाला हूँ अर्थात् मेरा भी वही गाँव है। वास्तव में उस व्यक्ति का उस गाँव की सम्पति में भी अधिकार नहीं है। इसी प्रकार ब्रह्म अर्थात् गीता बोलने वाला काल भगवान कह रहा है कि मेरा भी परम धाम वही सत्यलोक है।

अध्याय 8 के श्लोक 21 में वर्णन है कि अविनाशी अदृश इस प्रकार कहा है कि उसको परम गति (पूर्ण मुक्ति) कहते हैं जिसको प्राप्त होकर फिर जन्म-मरण में नहीं आते अर्थात् वह पूर्णब्रह्म (सतपुरुष परमात्मा) अदृश है। उस परमगति को प्राप्त अर्थात् जन्म-मरण से रहित पूर्ण मुक्त होते हैं वह सतलोक मेरे लोक से श्रेष्ठ है तथा मेरा (काल ब्रह्म का) परम धाम है। चूंकि काल (ब्रह्म-ज्योति-निरंजन) भी वहीं (सतलोक) से आया है। इसलिए कहता है कि मेरा भी यह परम धाम है अर्थात् वास्तविक ठिकाना भी वही सतलोक है।

।। पूर्ण परमात्मा को अनन्य भक्ति से प्राप्त किया जा सकता है।।

अध्याय 8 के श्लोक 22 में परम अक्षर ब्रह्म का वर्णन है। कहा है कि हे पार्थ! जिस परमात्मा के अन्तर्गत सर्व प्राणी आते हैं जिस परमात्मा से यह समस्त जगत् परिपूर्ण है। वह परम पुरुष (पूर्ण परमात्मा-सतपुरुष) तो अनन्य {किसी और देवी-देवताओं या हनुमान माई मसानी आदि की भक्ति न कर के एक उसी उपास्य इष्ट पूर्णब्रह्म में अटूट श्रद्धा रखते हुए नाम जाप साधना करने वाले को अनन्य भक्त कहते हैं} भक्ति से ही प्राप्त होने योग्य है। कहने का अभिप्राय है कि पूर्ण परमात्मा की उपासना का लाभ एक परमेश्वर में आस्था करके शास्त्रानुकूल साधना से प्राप्त होता है।

अध्याय 8 के श्लोक 23 में कहा है कि जिस मूहूर्त (समय) में शरीर त्यागने वाले योगी (भक्त) पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होते तथा जिसमें मरने वाले पुनर्जन्म को प्राप्त होते हैं उसको कहता हूँ।

अध्याय 8 के श्लोक 24 से 26 में वर्णन है कि अग्नि तत्व के गुण प्रकाश से दिन बनता है जिसे शुक्ल पक्ष (प्रकाश के कारण) दिन कहा है। यह छः महीने का है। इसी प्रकार दूसरा कष्ण पक्ष है वह भी छः महीने का है। जो शुक्ल पक्ष में मरता है वह भक्त (योगी) पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होता। वह कुछ समय तक काल लोक (ब्रह्म लोक) में चला जाता है। फिर काफी समय के उपरांत जब प्रलय होती है। तब प्राणी रूप में आ जाते हैं। दूसरे जो भक्त कष्ण पक्ष (छः महीने का) में मरते हैं (शरीर छोड़ते हैं) वे स्वर्ग में कुछ समय अपनी पुण्य कमाई को समाप्त करके जल्दी वापिस आ जाते हैं। परंतु हैं दोनों ही मार्ग अश्रेष्ठ।

अध्याय 8 के श्लोक 27,28 में कहा है कि जो पूर्ण ज्ञानी है वे इन दोनों ही मार्गों (जो वेदों में वर्णित विधि अनुसार साधना) को मुझ सनातन काल में त्याग कर उस आदि नाम (सतनाम) का आश्रय लेकर {जो पुरातन (कभी का) मार्ग है} प्रथम बार ही परम स्थान (सतलोक) में चले जाते हैं अर्थात् जो साधक तत्वदर्शी संत से तीन मंत्र का उपदेश (जिसमें एक मंत्र ओ३म तथा तत्-सत् सांकेतिक) प्राप्त करके काल के सर्व भक्ति के धार्मिक कर्मों अर्थात् ओ३म नाम के जाप तथा पाँचों यज्ञों की कमाई को काल को ही त्याग कर सत्यलोक चला जाता है।

विशेष :- गीता अध्याय 8 श्लोक 27-28 का भावार्थ है कि जो दो प्रभुओं (ब्रह्म तथा पूर्ण ब्रह्म) के विषय में पूर्वोक्त श्लोक 1 से 26 में ज्ञान कहा है। उन दोनों प्रभुओं से होने वाले मोक्ष लाभ से परिचित होकर बुद्धिमान व्यक्ति मोहित नहीं होता अर्थात् काल उपासना करके धोखा नहीं खाता। इसलिए कहा है कि उस पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने का मन बना।

तत्वज्ञान को समझ कर उपरोक्त ज्ञान के रहस्य को जानकर साधक पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का ही प्रयत्न करता है तथा वेदों में वर्णित साधना से होने वाले लाभ पर ही आश्रित नहीं रहता वह चारों वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यर्जुवेद तथा अथर्ववेद) से आगे का लाभ (जो स्वसम वेद में वर्णित है) प्राप्त करता है। उस के लिए वेदों वाली साधना से {दान, तप (तप गीता अध्याय 17 श्लोक 14 से 16 में तीन प्रकार का कहा है)तथा यज्ञ द्वारा} जो पुण्य होता है उस से होने वाला संसारिक लाभ प्राप्त न करके पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति के लिए इसे ब्रह्म में त्याग कर पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता है। क्योंकि वेदों में वर्णित विधि से पुण्य के आधार से स्वर्ग प्राप्ति होती है। पुण्य क्षीण होने के पश्चात् पुनः पाप के आधार के कष्ट भोगने पड़ते हैं।

गीता अध्याय 9 श्लोक 20-21 में वेदों में वर्णित साधना से भी जन्म-मत्यु तथा स्वर्ग-नरक का चक्र समाप्त नहीं होता। गीता अध्याय 11 श्लोक 48 व 53 में कहा है कि वेदों में वर्णित साधना से मेरी प्राप्ति नहीं है। अध्याय 11 श्लोक 54 में काल ब्रह्म ने अपने में प्रवेश होने के लिए ही कहा है मोक्ष-मुक्ति के लिए नहीं जैसे गीता ज्ञान दाता प्रतिदिन एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को काल रूप में खाता है।

जैसा विवरण अध्याय 11 श्लोक 21 में अर्जुन आँखों देखा बता रहा है कि जो

ऋषियों व देवताओं का समूह आप का वेद मन्त्र द्वारा गुणगान कर रहा है आप उन्हें भी खा रहे हो। वे सर्व आप में प्रवेश कर रहे हैं। कोई आपकी दाढ़ों में लटक रहे हैं इसी के विषय में श्लोक 54 में कहा है। श्लोक 55 का भी यह भावार्थ है कि मेरे साधक मेरे को प्राप्त होते है। मेरे ही जाल में रह जाते हैं। उसके लिए गीता अध्याय 8 श्लोक 28 में कहा है कि पूर्ण सन्त (तत्वदर्शी सन्त) के बताए भक्ति मार्ग से साधक वेदों में वर्णित साधना का फल स्वर्ग आदि में जाकर नष्ट नहीं करता अपितु पूर्ण परमात्मा को पाने के लिए प्रयुक्त करता है। उस वेदों वाली कमाई (ओं नाम का जाप पाँचों यज्ञों का फल) को ब्रह्म में त्यागकर पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करता है जिस कारण से पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता है।

यही प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में कहा है कि हे अर्जुन मेरे स्तर की सर्व धाार्मिक पूजाऐं मेरे में त्याग कर तू उस एक (अद्वितीय) सर्वशक्तिमान परमश्ेवर की शरण में (व्रज) जा। फिर मैं तूझे सर्व पापों से मुक्त कर दूंगा। क्योंकि जिन पापों को भोगना था उस के प्रतिफल में सर्व पूण्य व नाम जाप की कमाई छोड़ देने से काल का ऋण समाप्त हो जाता है। इसलिए काल जाल से मुक्ति मिलती है।



आठवें अध्याय के सर्व श्लोकों का हिन्दी अनुवाद

विशेष :- गीता के इस अध्याय 8 में काल रूपी ब्रह्म यानि गीता ज्ञान देने वाले का तथा इससे अन्य सर्व के मालिक वासुदेव परम अक्षर ब्रह्म का भिन्न-भिन्न वर्णन है। अध्याय 8 के श्लोक 3 तथा 8-10 में तो परम अक्षर ब्रह्म की महिमा तथा स्थिति बताई है। श्लोक 5 तथा 7 में गीता ज्ञान दाता ने अपनी स्थिति बताई है। कहा है कि यदि मेरी भक्ति करेगा तो युद्ध भी करना होगा, मुझे ही प्राप्त होगा। जन्म-मरण तेरा और मेरा सदा बना रहेगा। यदि उस परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करेगा तो उसको प्राप्त होगा। फिर जन्म-मरण कभी नहीं होगा। परम शांति प्राप्त होगी तथा सनातन परम धाम यानि सत्यलोक प्राप्त होगा जिसका वर्णन गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में है। गीता ज्ञान दाता ने अपनी भक्ति का मंत्र अध्याय 8 के श्लोक 13 में बताया है कि (माम् ब्रह्म) मुझ ब्रह्म का केवल एक ओम् (ॐ) अक्षर है तथा उस परम अक्षर ब्रह्म (ब्रह्मणः) का भक्ति का मंत्र गीता अध्याय 17 के श्लोक 23 में ॐ-तत्-सत् बताया है।

गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में तीन पुरूषों (प्रभुओं) की जानकारी है। क्षर पुरूष और अक्षर तथा परम अक्षर पुरूष यानि परम अक्षर ब्रह्म जो ऊपर वाले दोनों से उत्तम पुरूष है, वही परमात्मा कहा जाता है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। गीता अध्याय 8 श्लोक 17 में अक्षर पुरूष का एक दिन एक हजार युग का बताया है। उसका विस्तार से वर्णन इसी अध्याय 8 के सारांश में कर दिया है।

''अर्जुन उवाच''

गीता अध्याय 8 श्लोक 1 का अनुवाद : हे पुरुषोत्तम! (अर्जुन ने गीता ज्ञान देने वाले से प्रश्न किया कि) आप जी ने अध्याय 7 के श्लोक 29 में जिस तत् ब्रह्म का वर्णन किया है। वह ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है? अधिभूत नाम से क्या कहा गया है और अधिदैव किसको कहते हैं?(1)

अध्याय 8 श्लोक 2 का अनुवाद : हे मधुसूदन! यहाँ अधियज्ञ कौन है और वह इस शरीर में कैसे है? तथा युक्त चित वाले पुरुषों द्वारा अन्त समय में किस प्रकार जानने में आते हैं।(2)

''गीता ज्ञान दाता उवाच''

अध्याय 8 श्लोक 3 का अनुवाद : गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने उत्तर दिया वह परम अक्षर ''ब्रह्म'' है। इस परम अक्षर ब्रह्म का स्वभाव यानि गुण तथा महिमा अध्यात्म कहा जाता है। भावार्थ है कि परमात्मा कैसा है? उसकी भक्ति से क्या लाभ है? उसकी कैसे प्राप्ति होती है? यह परमात्मा का स्वभाव यानि अध्यात्म ज्ञान है। इसे 'अध्यात्म' नाम से कहा जाता है तथा जीव भाव को उत्पन्न करने वाला कर्म विसर्ग यानि सष्टि कर्म कहा जाता है।(8/3)

अध्याय 8 श्लोक 4 का अनुवाद : इस देह धारियों में श्रेष्ठ अर्थात् मानव शरीर में नाश्वान स्वभाव वाले अधिभूत जीव का स्वामी और अधिदैव दैवी शक्ति का स्वामी यज्ञ का स्वामी अर्थात् यज्ञ में प्रतिष्ठित अधियज्ञ पूर्ण परमात्मा है इसी प्रकार इस मानव शरीर में मैं हूँ।(4)

विशेष :- गीता अध्याय 3 श्लोक 15 में स्पष्ट किया है कि ब्रह्म का उत्पत्तिकर्ता तथा यज्ञों में प्रतिष्ठित यानि अधियज्ञ सर्वगतम् परम अक्षर ब्रह्म है। उसी के विषय में इस श्लोक नं. 4 में है।

❖ गीता ज्ञान देने वाले ने अध्याय 8 श्लोक 5 व 7 में अपनी भक्ति करने को कहा है :-

अध्याय 8 श्लोक 5 का अनुवाद : जो अन्तकाल में भी मुझको ही सुमरण करता हुआ शरीर को त्यागकर जाता है, वह ब्रह्म तक की साधना के भाव को अर्थात् स्वभाव को प्राप्त होता है इसमें कुछ भी संशय नहीं है।(5)

''भक्ति का नियम''

अध्याय 8 श्लोक 6 का अनुवाद : हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! यह नियम है कि मनुष्य अन्तकाल में जिस-जिस भी भाव को सुमरण करता हुआ अर्थात् जिस भी देव की उपासना करता हुआ शरीर का त्याग करता है उस-उसको ही प्राप्त होता है क्योंकि वह सदा उसी के भक्ति भाव में भावित रहता है। इसलिए उसी को प्राप्त होता है।(6)

सूक्ष्मवेद में भी यही नियम बताया है :-

कबीर, जहाँ आशा तहाँ बासा होई। मन कर्म वचन सुमरियो सोई।।

अध्याय 8 श्लोक 7 का अनुवाद : इसलिये हे अर्जुन! तू सब समय में निरन्तर मेरा सुमरण कर और युद्ध भी कर इस प्रकार मुझ में अर्पण किये हुए मन-बुद्धिसे युक्त होकर तू निःसन्देह मुझको ही प्राप्त होगा अर्थात् जब कभी तेरा मनुष्य का जन्म होगा मेरी साधना पर लगेगा तथा मेरे पास ही रहेगा।(7)

❖ गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति को कहा है :-

अध्याय 8 श्लोक 8 का अनुवाद : हे पार्थ! परमेश्वर के नाम जाप के अभ्यास रूप योग से युक्त अर्थात् उस पूर्ण परमात्मा की पूजा में लीन दूसरी ओर न जाने वाले चित्त से निरन्तर चिन्तन करता हुआ भक्त परम दिव्य परमात्मा को अर्थात परम अक्षर ब्रह्म को ही प्राप्त होता है।(8)

अध्याय 8 श्लोक 9 का अनुवाद : कविर्देव, अर्थात् कबीर परमेश्वर जो कवि रूप से प्रसिद्ध होता है वह अनादि, सबके नियन्ता सूक्ष्मसे भी अति सूक्ष्म, सबके धारण-पोषण करने वाले अचिन्त्य-स्वरूप सूर्य के सदृश नित्य प्रकाशमान है। जो उस अज्ञानरूप अंधकार से अति परे सच्चिदानन्द घन परमेश्वर यानि परम अक्षर ब्रह्म का

सुमरण करता है।(9)

अध्याय 8 श्लोक 10 का अनुवाद : वह भक्तियुक्त साधक अन्तकाल में नाम के जाप की भक्ति की शक्ति के प्रभाव से भंकुटी के मध्य में प्राण को अच्छी प्रकार स्थापित करके फिर निश्चल मन से स्मरण करता हुआ उस दिव्यरूप परम भगवान को ही प्राप्त होता है।(10)

अध्याय 8 श्लोक 11 का अनुवादः उपरोक्त श्लोक 8 से 10 में वर्णित जिस सच्चिदानन्द घन परमेश्वर को वेद के जानने वाले अर्थात् तत्वदर्शी सन्त वास्तव में अविनाशी कहते हैं। जिसमें यत्नशील रागरहित साधक जन प्रवेश करते हैं अर्थात् प्राप्त करते हैं जिसे चाहने वाले ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं अर्थात् ब्रह्मचारी रहकर यानि प्रत्येक कार्य में संयम रखने वाले उस परमात्मा को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। उस पद अर्थात् पूर्ण परमात्मा को प्राप्त कराने वाली भक्ति पद्धति को (उस पूजा विधि को) तेरे लिए संक्षेप में अर्थात् सांकेतिक रूप से कहूँगा।

अध्याय 8 श्लोक 12 का अनुवाद :- जो भक्ति पद अर्थात् पद्यति बताने जा रहा हूँ उस में साधक सर्व इन्द्रियों के द्वारों को नियमित करके मन को हृदय देश में तथा श्वांसों को मस्तिक में स्थिर करके परमात्मा के स्मरण के ध्यान में मन को लगा करके योग स्थित करके यानि एक स्थान स्मरण पर टिकाकर साधना में स्थित होता है।

अध्याय 8 श्लोक 13 का अनुवाद : गीता ज्ञान दाता ब्रह्म कह रहा है कि उपरोक्त श्लोक 11-12 में जिस पूर्ण मोक्ष मार्ग के नाम जाप में तीन अक्षर का जाप कहा है उस में मुझ ब्रह्म का तो यह ओं/ऊँ एक अक्षर है उच्चारण करते हुए स्मरन करने अर्थात् साधना करने का जो शरीर त्यागकर जाता हुआ स्मरण करता है अर्थात् अंतिम समय में स्मरण करता हुआ मर जाता है वह यानि ओं (ॐ) के जाप से होने वाली परम गति को प्राप्त होता है। {अपनी गति को तो गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अनुत्तम कहा है।(13)}

अध्याय 8 श्लोक 14 का अनुवाद : हे अर्जुन! जो अनन्यचित होकर सदा ही निरन्तर मुझको सुमरण करता है उस नित्य निरन्तर युक्त हुए योगीके लिये मैं सुलभ हूँ।(14)

अध्याय 8 श्लोक 15 का अनुवाद : मुझको प्राप्त साधक तो क्षणभंगुर दुःख के घर बार-बार जन्म-मरण में हैं परम अर्थात् पूर्ण परमात्मा की साधना से होने वाली सिद्धि को प्राप्त महात्माजन जन्म-मरण को नहीं प्राप्त होते। यही प्रमाण गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5 व 9 तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 4 अध्याय 18 श्लोक 62 में है जिनमें कहा है कि मेरे तथा तेरे अनेकों जन्म व मंत्यु हो चुके हैं परन्तु उस परमेश्वर को प्राप्त करके ही साधक सदा के लिए जन्म मरण से मुक्त हो जाता है वह फिर लौट कर इस क्षण भंगुर लोक में नहीं आता।(15)

अध्याय 8 श्लोक 16 का अनुवाद : हे अर्जुन! ब्रह्मलोक से लेकर सब लोक बारम्बार उत्पत्ति नाश वाले हैं परन्तु हे कुन्ती पुत्र जो यह नहीं जानते वे मुझे प्राप्त होकर भी फिर जन्मते हैं।(16)

''दूसरे अव्यक्त यानि अक्षर पुरूष का ज्ञान''

अध्याय 8 श्लोक 17 का अनुवाद : अक्षर पुरूष यानि परब्रह्म का जो एक दिन है, उसको एक हजार युग की अवधिवाला और रात्रि को भी एक हजार युगतक की अवधिवाली तत्व से जानते हैं। वे तत्वदर्शी संत दिन-रात्रि के तत्व को जानने वाले हैं।(17) नोट :- इसका पूरा वर्णन सारांश में पढ़ें।

अध्याय 8 श्लोक 18 का अनुवाद : सम्पूर्ण प्रत्यक्ष आकार में आया संसार अक्षर पुरूष यानि परब्रह्म के दिन के प्रवेशकाल में अव्यक्त से अर्थात् अदृश अक्षर पुरूष से उत्पन्न होते हैं और रात्रि आने पर उस अदृश अर्थात् परोक्ष अक्षर पुरूष में ही लीन हो जाते हैं।(18)

अध्याय 8 श्लोक 19 का अनुवाद : हे पार्थ! यह प्राणी समुदाय उत्पन्न हो होकर संस्कार वश होकर रात्रि के प्रवेशकाल में लीन होता है और दिन के प्रवेशकाल में फिर उत्पन्न होता है।(19)

''तीसरे अव्यक्त यानि परम अक्षर ब्रह्म का ज्ञान''

विशेष :- श्लोक नं. 20 से 22 में परम अक्षर ब्रह्म की महिमा बताई है जो वास्तव में अविनाशी है। सर्व प्राणियों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता।

अध्याय 8 श्लोक 20 का अनुवाद : परंतु उस अव्यक्त अर्थात् गुप्त परब्रह्म से भी अति परे दूसरा जो आदि अव्यक्त अर्थात् परोक्ष भाव है वह परम दिव्य पुरुष यानि परम अक्षर ब्रह्म सब प्राणियों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता।(20)

अध्याय 8 श्लोक 21 का अनुवाद : अदृश अर्थात् परोक्ष अविनाशी इस नाम से कहा गया है अज्ञान के अंधकार में छुपे गुप्त स्थान को परमगति कहते हैं जिसे प्राप्त होकर मनुष्य वापस नहीं आते (तत् धाम परमम् मम) क्योंकि काल ब्रह्म भी सतलोक में रहता था। इसलिए अपना परम धाम कहता है। वह लोक मेरे लोक से श्रेष्ठ है।(21)

अध्याय 8 श्लोक 22 का अनुवाद : हे पार्थ! जिस परमात्मा के अन्तर्गत सर्व प्राणी हैं और जिस सच्चिदानन्दघन परमात्मा से यह समस्त जगत् परिपूर्ण है जिस के विषय में उपरोक्त श्लोक 20,21 में तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 1-4 तथा 17 में व अध्याय 18 श्लोक 46,61,62, तथा 66 में कहा है। वह श्रेष्ठ परमात्मा तो अनन्य भक्ति से ही प्राप्त होने योग्य है।(22)

अध्याय 8 श्लोक 23 का अनुवाद : हे अर्जुन! जिस काल में शरीर त्यागकर गये हुए योगीजन वापस न लौटने वाली गति को और जिस काल में गये हुए वापस लौटने वाली गति को ही प्राप्त होते हैं उस गुप्त काल को अर्थात् दोनों मार्गों को कहूँगा।(23)

अध्याय 8 श्लोक 24 का अनुवाद : प्रकाशमय अग्नि दिन का कर्ता है शुक्लपक्ष कहा है और उतरायण (जब सूर्य उत्तर की ओर रहता है) के छः महीनों का है उस मार्ग में मरकर गये हुए परमात्मा को तत्व से जानने वाले योगीजन परमात्मा को प्राप्त

होते हैं।(24)

अध्याय 8 श्लोक 25 का अनुवाद : अन्धकार रात्रि-का कर्ता है तथा कृष्णपक्ष है और दक्षिणायन के छः महीनों का है उस मार्ग में मरकर गया हुआ योगी चन्द्रमा की ज्योति को प्राप्त होकर स्वर्ग में अपने शुभ कर्मों का फल भोगकर वापस आता है।(25)

अध्याय 8 श्लोक 26 का अनुवाद : क्योंकि जगत्के ये दो प्रकार के शुक्ल और कृष्ण मोक्ष मार्ग सनातन माने गये हैं इनमें एक के द्वारा गया हुआ जिससे वापस नहीं लौटना पड़ता उस परमगति को प्राप्त होता है और दूसरे मार्ग द्वारा गया हुआ फिर वापस आता है अर्थात् जन्म-मरण को प्राप्त होता है।(26)

अध्याय 8 श्लोक 27 का अनुवाद : हे पार्थ! इस प्रकार इन दोनों मार्गों की भिन्नता को तत्व से जानकर कोई भी योगी मोहित नहीं होता इस कारण हे अर्जुन! तू सब कालमें समबुद्धिरूप योग से युक्त हो अर्थात् निरन्तर पूर्ण परमात्मा प्राप्ति के लिये साधन करने वाला हो।(27)

अध्याय 8 श्लोक 28 का अनुवाद : साधक इस पूर्वोक्त रहस्य को तत्व से जानकर वेदों के पढ़नें में तथा यज्ञ तप और दानादि के करने में जो पुण्यफल कहा है उस सबको निःसन्देह मुझ में त्याग कर वेदों से आगे वाला ज्ञान जानकर शास्त्र विधि अनुसार साधना करता है तथा अन्त समय में पूर्ण परमात्मा के उत्तम लोक (सतलोक) को प्राप्त होता है।(28)

विशेष :- पाठकजन भ्रम में न पड़ें कि कहीं हमारी मृत्यु उतरायण वाले शुक्ल पक्ष में न हो और हम परमात्मा को प्राप्त न हो सकें। सतगुरू का हंस सत्य साधना करता है। जिस कारण से उसकी मृत्यु अपने आप (Automatic) ही उतरायण वाले शुक्ल पक्ष में होती है। भक्ति का यही तो विशेष प्रभाव है।

उदाहरण :- जैसे भैंस या गाय गर्भ धारण करती है तो बच्चे के जन्म के समय योनि अपने आप नरम होकर फैल जाती है और बच्चा अपने आप बाहर आ जाता है। परंतु गोबर का गुदा द्वार है, गोबर उसी से बाहर आता है। उसमें कोई विशेष प्रक्रिया नहीं होती। परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करने वालों के लिए उतरायण शुक्ल पक्ष अपने आप प्राप्त होता है। जो भक्ति नहीं करते, वे गोबर तुल्य हैं। उनको अपने आप दक्षिणायन कृष्ण पक्ष प्राप्त होता है।

इसी तीन पुरूषों (प्रभुओं) का ज्ञान गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी है। उन्हीं का वर्णन गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25, अध्याय 9 श्लोक 4 में है तथा गीता अध्याय 8 श्लोक 18-22 में है।

1. प्रथम अव्यक्त काल ब्रह्म यानि गीता ज्ञान देने वाला है जिसका प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में है। 2. दूसरा अव्यक्त :- गीता अध्याय 8 श्लोक 18-19 में दूसरे अव्यक्त यानि अक्षर पुरूष का वर्णन है। 3. तीसरा अव्यक्त :- तीसरा अव्यक्त यानि परम अक्षर ब्रह्म का गीता अध्याय 8 श्लोक 20-22 में वर्णन है।



बारहवां अध्याय

।। सारांश।।

विशेष - अध्याय 12 पूरा ब्रह्म साधना से होने वाले लाभ का परिचय देता है तथा अध्याय 13 पूर्ण ब्रह्म की महिमा से परिचित करवाता है।

अध्याय 12 के श्लोक 1 में अर्जुन ने प्रश्न किया कि जो कोई आपको निरन्तर भजते हैं तथा जो अविनाशी अदृश परमेश्वर को अति उत्तम भाव से भजते हैं। उनमें योग वेता कौन हैं अर्थात् भक्ति मार्ग का जानने वाला कौन है?

।। सत्यनाम व सारनाम के बिना ब्रह्म के उपासक काल जाल में ही रहते हैं।।

अध्याय 12 के श्लोक 2 में काल भगवान कह रहा है कि जो मुझे भजते हैं वे मुझे अतिउत्तम मान्य हैं। अध्याय 12 के श्लोक 3, 4 में फिर कहा है कि जो कोई इन्द्रियों को भली-भाँति वश में करके मन बुद्धि से परे सर्वव्यापी, नित्य, अचल, अदृश, अविनाशी परमात्मा को शास्त्रों में दिए भक्ति के वास्तविक निर्देश को त्याग कर अर्थात् शास्त्रविधि को त्याग कर मन-माना आचरण (पूजा) करते हैं वे सम्पूर्ण प्राणियों का हित चाहने वाले सर्वत्र सम भाव वाले भी मुझको ही प्राप्त होते हैं। यही प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में है कि ज्ञानी आत्मा है तो उदार परन्तु तत्वज्ञान के अभाव के कारण मेरी अनुत्तम अर्थात् अश्रेष्ठ गति में ही आश्रित है।

विशेष :-- पवित्र वेदों व गीता जी में जानकारी तो उस अविनाशी अकथनीय अदृश (पूर्ण ब्रह्म सतपुरुष) की सही दे रखी है, परंतु पूजा विधि एक अक्षर ''ॐ'' मन्त्र, यज्ञ आदि केवल निराकार काल भगवान का ही वर्णन कर रखा है। इसलिए मार्कण्डेय जैसे निर्गुण उपासक ''ॐ'' मन्त्र का जाप करते हुए परमात्मा को निर्गुण-निराकार-अविनाशी मान कर साधना करते रहे अंत में पहुँचे महास्वर्ग में। इसलिए भगवान कह रहा है कि वे साधक भी मेरे जाल से बाहर नहीं हैं अर्थात् जो मेरे(कृष्ण रूप के व विष्णु रूप के) उपासक विष्णु लोक में आ जाएंगे। मुझे ही प्राप्त होकर अपने पुण्यों कर्मों की कमाई रूपी मलाई खा कर नरक में चले जाएंगे। इसलिए मेरे को (विष्णु रूप में) भजने वाले जल्दी उपलब्धि प्राप्त कर लेते हैं परंतु यह भी साधना नादानों की ही है, अच्छी नहीं क्योंकि गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में पूर्ण परमात्मा की यथार्थ साधना का निर्देश बताया है। उस पूर्ण परमात्मा की साधना का ॐ-तत्-सत् यह तीन मन्त्र के जाप का निर्देश है।

यहाँ गीता अध्याय 12 श्लोक 3-4 में कहा है कि जो साधक उस पूर्ण परमात्मा कि साधना अनिर्देश अर्थात् शास्त्रों के कथन विरुद्ध {शास्त्रविधि को त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा)}करते हैं वे उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त न करके ॐ नाम का जाप करके ब्रह्म लोक को प्राप्त करते हैं। इस प्रकार काल लोक में ही रह जाते हैं।

यही प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में है कि ये ज्ञानी आत्मा हैं तो उदार परन्तु तत्वज्ञान के अभाव के कारण मेरी अनुत्तम अर्थात् अश्रेष्ठ गति में ही आश्रित हैं।

अध्याय 12 के श्लोक 5 से 8 में कहा है कि जो निराकार मान कर साधना करते हैं वे शरीर को कष्ट दे कर कोशिश करते हैं यह दुःख पूर्वक होती है जिसको आम साधक नहीं कर सकता। इसलिए मेरी (विष्णु रूप की) पूजा अनन्य भक्ति से करते हैं उनका जल्दी उद्धार करके मंत लोक से पीछा (कुछ समय के लिए) छुड़वा दूंगा तथा वे मेरे को विष्णु मान कर पूजते हैं इसलिए विष्णु लोक में ही आ जाएंगे। वहाँ अपने पुण्यों को समाप्त करके फिर जल्दी ही नरक व चौरासी लाख जूनियों में चले जाते हैं। गीता जी के अध्याय 14 के श्लोक 6, 14, 18 ।

अध्याय 12 के श्लोक 9 से 18 तक में भगवान (ब्रह्म) कह रहा है कि मन को अचल करने (रोकने में) में सफल नहीं है तो अभ्यास योग(नाम जाप) कर। यदि अभ्यास योग में भी असमर्थ है तो शास्त्रानुकूल कर्म करता रहे। यदि ऐसा भी नहीं कर सकता तो मन-बुद्धि आदि पर विजय प्राप्त करने वाला होकर कर्म फलों को त्याग कर इससे (त्याग से) तुरंत शांति हो जाती है। जो भक्त राग-द्वेष रहित है वह मुझे अतिप्रिय है।

विशेष : काल ब्रह्म ने कहा है कि मन को रोक कर कर्मफल का त्याग कर दें। जब मन रूक गया तो मुक्ति निश्चित है। {मन तो न शिव से, न ब्रह्मा से, न विष्णु से तथा न ब्रह्म(काल) से रूक सका। अर्जुन मन कैसे रोक सकता है? मन स्वयं काल(ब्रह्म) है। एक हजार भुजाओं (कलाओं) वाले भगवान को तो परम अक्षर ब्रह्म(पूर्णब्रह्म सतपुरुष) के जाप से (जो असंख्य भुजाओं वाला है) रोका जा सकता है। उस परमात्मा के उपासक संत से नाम लेकर गुरु मर्यादा में रहते हुए नाम अभ्यास योग से युक्त भक्त ही मुक्त हो सकता है।} पाठक स्वयं विचार करें ब्रह्म साधना से मन रूक नहीं सकता। इसलिए पूर्ण मुक्ति नहीं है।

अध्याय 12 के श्लोक 19,20 में कहा है कि जो निन्दा स्तुति में समान समझने वाला मननशील, रूखे-सूखे भोजन में संतुष्ट, ममता रहित, स्थिर बुद्धि भक्ति सहित साधक मुझे बहुत प्रिय है और जो मैंने ऊपर विधान (मत) बताया है उसका आचरण (सेवन) करने वाला अतिशय प्रिय है। अर्थात् काम, क्रोध, राग-द्वेष, लोभ-मोह से रहित, निन्दा स्तुति में सम रहने वाला भक्त मुझे बहुत प्रिय है। पाठक स्वयं विचार करें।

ऐसी क्षमता तो तीनों भगवानों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) में भी नहीं है तो आम भक्त (साधक) ऐसा कैसे कर सकता? इसलिए वह काल (ब्रह्म) भगवान को प्रिय हो नहीं सकता और परमात्मा प्राप्ति भी नहीं हो सकती। इति सिद्धम् कि कर्म आधार पर स्वर्ग, नरक, चौरासी लाख जूनियाँ ही जीव को ब्रह्म साधना से अन्तिम उपलब्धि होती है।

विशेष :- अगले अध्याय 13 के श्लोक 12 से अन्तिम श्लोक 34 तक गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमेश्वर का ज्ञान करवाया है। श्लोक 29 तथा 32 में सामान्य

ज्ञान है। उसी पूर्ण परमात्मा के विषय में इस अध्याय 12 के श्लोक 20 में कहा है कि जो साधक मत परमाः यानि मेरे से श्रेष्ठ परमात्मा की भक्ति ऊपर बताए नियमों में रहकर करता है, वह मुझे अतिशय प्रिय है।

विवेचन :- ''मत्परमाः'' शब्द का अर्थ एस्कोन वाले अनुवादक ने ''मुझ परमेश्वर को सब कुछ मानते हुए'' किया है तथा अन्य अनुवादकों ने ''मत्परमाः'' शब्द का अर्थ मेरे परयाण होकर'' किया है जो अनुचित है। इसका अर्थ ''मेरे से श्रेष्ठ'' करना उचित है क्योंकि गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में एस्कोन वालों ने ''परमा'' का अर्थ ''परम'' किया है। परम का अर्थ श्रेष्ठ है। अन्य अनुवादकों ने भी इसी अध्याय 8 के श्लोक 13 में ''परमा'' का अर्थ ''परम'' किया है जो उचित है। यदि इस अध्याय 12 के श्लोक 20 में ''परमा'' का अर्थ ''परम'' कर दिया जाए तो ''मत् + परमाः'' का अर्थ मेरे से परम यानि श्रेष्ठ परमात्मा के भक्त मुझे अतिशय प्रिय हैं, सही अनुवाद बन जाता है जो आगे के अध्याय 13 के श्लोक 12-28 तथा 30, 32-34 तक से संबंधित है। वैसे तो अध्याय 13 सम्पूर्ण में गीता ज्ञान दाता से अन्य पूर्ण परमात्मा का ज्ञान है। अब आगे पढ़ेंगे, देखेंगे प्रत्यक्ष प्रमाण, परंतु लेखक का उद्देश्य यह है कि पाठकों को अन्य अनुवादकों के द्वारा किया गया अर्थों का अनर्थ भी दिखाऊँ। जैसे इस अध्याय 12 के श्लोक में ''परमा'' का अनर्थ कर रखा है। एस्कोन वालों ने मत् का अर्थ मुझे तो ठीक किया, ''परमा'' का अर्थ परमात्मा कर दिया, यह गलत है।

एस्कोन वालों ने गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में ''परमम्'' का अर्थ ''दिव्य'' किया है। यह ठीक है। इस प्रकार अर्थ करने से मत् परमाः का अर्थ मेरे से दिव्य परमात्मा को भजने वाला मुझे अतिशय प्रिय है क्योंकि प्रधानमंत्री के भक्त यानि फैन को प्रान्त के मंत्री विशेष सम्मान देते हैं जो मुख्यमंत्री के भक्त यानि प्रशंसक होते हैं। इसी प्रकार परम अक्षर ब्रह्म के भक्त को काल विशेष सम्मान देता है। इस अध्याय 12 श्लोक 20 में गीता ज्ञान दाता से अन्य का वर्णन है जिसके विषय में अगला अध्याय 13 भरा पड़ा है।



तेरहवां अध्याय

।। सारांश।।

पूर्ण परमात्मा की महिमा का वर्णन

विशेष :- श्रीमद्भगवत गीता का अध्याय 13 पूरा गीता ज्ञानदाता से अन्य समर्थ पूर्ण परमात्मा की महिमा से भरा है तथा अध्याय 12 में गीता ज्ञानदाता काल ब्रह्म ने अपनी महिमा बताई है।

।। क्षेत्र व क्षेत्रज्ञ की परिभाषा।।

गीता अध्याय 13 के श्लोक 1 से 6 तक वर्णन है कि शरीर तथा इस शरीर में विकारों (काम, क्रोध, लोभ-मोह, अहंकार आदि) तथा निराकार स्थिति में तथा दश इन्द्रियों तथा उनमें विद्यमान विषय शब्द-स्पर्श-रूप-रस व गंध आदि का विवरण है। जो इन सर्व कारणों को जानता है वह क्षेत्रज्ञ (पंडित) कहलाता है। गीता बोलने वाला कह रहा है कि क्षेत्रज्ञ भी मुझे जान।

पिंड का अर्थ है शरीर (क्षेत्र यहाँ शरीर को कहा है) तथा क्षेत्रज्ञ का अर्थ है शरीर के बारे में जानने वाला कि इसमें कमलों में कौन परमात्मा कहाँ-2 पर स्थित हैं तथा सुषमना द्वार कहाँ है? कमलों की जानकारी हो उसे क्षेत्रज्ञ अर्थात् शरीर को जानने वाला क्षेत्रज्ञ (पंडित) कहा है। इसका विवरण छन्दों (वेदों के मन्त्रों) में तथा बहुत से ऋषियों ने भी किया है।

।। आन उपासना को व्याभिचारिणी भक्ति बताना।।

गीता अध्याय 13 के श्लोक 7 से 11 तक कहा है कि जो कोई मान-सम्मान से दुःखी व सुखी न हो कर आडम्बर पूजा रहित, अहिंसा वादी, क्षमा स्वभाव युक्त गुरु जी की सेवा श्रद्धा भक्ति से करते हुए तथा शुद्धि पूर्वक अन्तःकरण में स्थित आत्मा को सही स्थिर करके तथा पूर्ण वैराग्य (प्रत्येक वस्तु से आसक्ति को हटा कर) होकर स्त्री-पुत्र-धन आदि में कोई आस्था न रहे और ममता, उपास्य देव व अनउपास्य देव की प्राप्ति या न प्राप्ति में ईश्वरिय रजा में अर्थात् इष्ट वादिता को छोड़ कर श्रेष्ठ ज्ञान के आश्रित समचित रह कर केवल मेरी अव्याभिचारिणी भक्ति {केवल एक इष्ट की उपासना, अन्य देवताओं की साधना को व्यभिचारिणी, वैश्या, जैसी बताई है जो एक पति पर स्थाई न होकर मन भटकाती है। वह कहीं आदर नहीं पाती} **ऐसे एक पूर्ण परमात्मा को न भज कर सब की पूजा को व्यभिचारिणी (वैश्या) जैसी भक्ति की संज्ञा दी है। आम व्यक्ति जो भक्ति भाव का न हो उनसे प्रेम न करना, आध्यात्म ज्ञान (भक्ति का ज्ञान) का नित्य चिंतन सर्व को तत्व ज्ञान रूप से देखना (समभाव रखना) यह तो श्रेष्ठ ज्ञान है। इसके विपरीत सब अज्ञान है। नशा करना, शराब, तम्बाखू, मांस, भांग प्रयोग करना, राग द्वेष रखना, आन उपासना (देवी-देताओं की पूजा, व्रत, तीर्थ, गंगा**

स्नान, गोवर्धन 'गिरीराज' की फेरी, मन्दिर में मूर्ति की पूजा) करना आदि अज्ञान कहा है तथा व्याभिचारिणी भक्ति कहा है।

।। पूर्ण परमात्मा ही जानने व भक्ति योग्य है।।

गीता अध्याय 13 के श्लोक 12 से 18 में भगवान (काल-ब्रह्म) कह रहा है कि जो जानने योग्य है जिसको जान कर परमानन्द (अमर पद) को प्राप्त होता है, उस पूर्ण परमात्मा के ज्ञान को भली भाँति कहूँगा। वह अनादि वाला (जिसकी उत्पत्ति न हो) परम अक्षर ब्रह्म (पूर्ण परमात्मा/सतपुरुष) न तो सत और न असत कहा जा सकता है। {सत का अर्थ अक्षर (अविनाशी) तथा असत का अर्थ क्षर (नाशवान) ही कहा जा सकता है। क्योंकि यह परमात्मा तो अन्य ही है। जैसा गीता जी के अध्याय 15 के श्लोक 16 में कहा है कि दो भगवान हैं- एक क्षर (असत/नाशवान) और दूसरा अक्षर (अविनाशी/सत)।

फिर अध्याय 15 के 17वें श्लोक में कहा है कि वास्तव में अविनाशी तो इनसे भी भिन्न अन्य ही है जिसे अविनाशी परमेश्वर इस नाम से कहा गया है जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। (कृप्या देखें गीता जी के अध्याय 15 के श्लोक 16 व 17 में)}

वह सब ओर हाथ-पैर, तथा सिर-नेत्र वाला, सब ओर कान वाला है का तात्पर्य है कि वह सर्वव्यापक है अर्थात् उसकी पहुँच से तथा दृष्टि से कोई बाहर नहीं है। वही सबको अपने में समाये हुए स्थित हैं गरीबदास जी महाराज कहते हैं कि -

जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सिरजन हार।।

भावार्थ :- संत गरीबदास जी ने परमात्मा के साथ ऊपर जाकर सर्व मण्डलों को देखा। परमात्मा की महिमा व लीला को देखा।

वही परमात्मा (पूर्णब्रह्म) सब इन्द्रियों के जानने वाला है। चूंकि उसी मालिक ने ब्रह्म (काल) को भी उत्पन्न किया। {गीता जी के अध्याय 3 के श्लोक 14,15 में कहा है कि सर्व प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न वर्षा से होता है, वर्षा यज्ञ से, यज्ञ शुभकर्मों से होती है, कर्म ब्रह्म (काल) से हुए। ब्रह्म (काल) अविनाशी (परम अक्षर) भगवान से उत्पन्न हुआ। वही परम अक्षर ब्रह्म (पूर्ण परमात्मा) सब यज्ञों में प्रतिष्ठित (विद्यमान है, पूज्य है, यज्ञों का फल देने वाला अधियज्ञ) है।} **वह इन्द्रियों से रहित आसक्ति रहित, सबका धारण पोषण करने वाला और सत्यलोक में रहते हुए तथा यहाँ अपनी निराकार शक्ति से सर्व का संचालक होते हुए गुणों को भोगने वाला, सर्व प्राणियों के अन्दर व बाहर और चर-अचर (सर्व का मूल कारण होने), निराकार शक्ति रूप में सूक्ष्म (अदृश्य) होने से न जाना जाने वाला (अविज्ञय) है अर्थात् उस अविनाशी परमात्मा (सतपुरुष) को कोई नहीं जान सकता। निराकार शक्ति से सर्व कार्य करने वाला होने से वह नजदीक से नजदीक सब प्राणियों के हृदय में (कार्य सिद्धि के लिए तुरन्त लाभ दे देता है, इसलिए**

दूर नहीं) और दूर सतलोक में भी है। {उस परमेश्वर (सतपुरुष) का भेद न होने से दूर भी है क्योंकि उसके दर्शन पूर्ण गुरु सतनाम व सारनाम दाता से नाम ले कर आजीवन गुरु मर्यादा में रह कर किए जा सकते हैं अन्यथा नहीं}

एक सर्व शक्तिमान होने के कारण (अविभक्तम् = विभागरहित) उस परमेश्वर की शक्ति सर्व प्राणियों (असंख ब्रह्मण्डों में सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक) में स्थित है। वही (परमात्मा) जानने योग्य है जो सर्व ब्रह्मण्डों, जिसमें काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड जिनमें श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु, श्री शिव के लोक सहित 14 लोक, स्वर्ग, मत्यु तथा पाताल लोक और परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों सहित का पालन कर्त्ता और उत्पन्न करने वाला वह परमात्मा माया धारी काल से अन्य कहा जाता है।

ज्ञान सागर अति उजागर, निर्विकार निरंजनम। ब्रह्म ज्ञानी महा ध्यानी, सत सुकत दुःख भंजनं।

आदरणीय गरीबदास जी महाराज अपनी अमत वाणी 'ब्रह्मवेदी' में उसी पूर्ण परमात्मा के विषय में कहा है। गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में कहा है कि वही पूर्ण परमात्मा सबके हृदय में विशेष रूप में स्थित है। जैसे सूर्य एक स्थान पर होते हुए भी सर्व प्राणियों को अपने साथ ही दिखाई देता है, परन्तु आँखे उसे देख सकती हैं इसलिए कह सकते हैं कि सूर्य आँखों में ही विशेष रूप से विद्यमान है क्योंकि आँखें ही प्रकाश देख सकती हैं। जो ऊष्णता (सूर्य) का विशेष रूप में गुण है। उसे केवल महसूस किया जा सकता है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा सत्यलोक में रह कर भी प्रत्येक प्राणी के हृदय कमल में जीव के साथ सूर्य की ऊष्णता की तरह अपनी निराकार शक्ति द्वारा अभेद भी रहता है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 18 में क्षेत्र (शरीर) तथा जानने योग्य (परमात्मा-पूर्णब्रह्म) उत्तम ज्ञान संक्षेप में कहा है। (मद्भक्त) - मतभक्त विचारों पर चलने वाला भक्त उसी विचारों वाला हो जाता है। यदि श्रीमद्भगवद् का सन्धि छेद करें तो श्री-मत-भगवत्-गीता। यहाँ 'श्रीमत' का अर्थ है कि अति उत्तम विचार (मत्) जो भगवान ने दिए, गीता का अर्थ ज्ञान है। इसलिए श्रीमद्भगवद् गीता का अर्थ है जो श्रेष्ठ विचार भगवान ने स्वयं दिए वह ज्ञान है। मद्भक्त का भावार्थ 'मत (विचार) भक्त (साधक)' बनता है अर्थात् ऊपर के ज्ञान (मत) विचारों को जान कर वह मद्भक्त उन्हीं विचारों (मत वाला) के भाव वाला हो जाता है। प्रकरण वश मत् का अर्थ मेरा भी होता है जो भगवत भक्त इस उत्तम ज्ञान को जान कर उन्हीं विचारों अनुरूप हो जाता है तथा काल (ब्रह्म) के जाल से निकल जाता है। यहां तक कि गीता जी के अध्याय 7 के श्लोक 24 में कहा है कि बुद्धिहीन मेरे अनुत्तम (गन्दे) अटल (अविनाशी) काल भाव कि मैं अदश्य हूँ कभी आकार में सर्व के समक्ष नहीं आता को नहीं जानते। इसलिए मुझे व्यक्ति (कष्ण) रूप में ही समझते हैं अर्थात् मैं व्यक्ति (आकार) रूप में कभी नहीं आता।

अन्य अनुवाद कर्त्ताओं ने इस श्लोक के टीका में जो अनुत्तम शब्द है का अर्थ किसी ने ज्यों का त्यों लिख दिया - अनुत्तम = अनुत्तम। किसी-किसी ने अनुत्तम = सर्व श्रेष्ठ किया है। उत्तम का अर्थ अच्छा (श्रेष्ठ) और अनुत्तम का अर्थ बुरा (गन्दा) अर्थात् अश्रेष्ठ हुआ।

विशेष :-- कुछ श्रद्धालु कहते हैं कि समास में अनुत्तम का अर्थ उत्तम ही होता है। यदि ऐसा माने तो गीता ज्ञान दाता ने पूर्ण शान्ति तथा स्थाई स्थान यानि अमर लोक की प्राप्ति के लिए किसी अन्य परमात्मा की शरण में जाने के लिए क्यों कहा प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 46, 62, 66 अध्याय 15 श्लोक 4 तथा अपने से अन्य परमात्मा के विषय में ज्ञान किसलिए बताया है। प्रमाण गीता अध्याय 13 श्लोक 12 से 17,22 से 24, 27-28,30-31-34 अध्याय 15 श्लोक 16-17 अध्याय 5 श्लोक 6,10,13 से 21 तथा 24-25-26 अध्याय 3 श्लोक 15-19 अध्याय 6 श्लोक 7,19-20-25-26-27 अध्याय 4 श्लोक 31-32 अध्याय 17 श्लोक 23-25-27 अध्याय 8 श्लोक 1-3,8 से 10,17 से 22

यह सब पूर्ण ज्ञान न होने के कारण तथा भावना वश इष्टवादिता वश होकर स्वयं भी अंधेरे में तथा पाठक भी अज्ञान को ही प्राप्त होते हैं। अर्थ का अनर्थ किया है। अनुत्तम का सर्वश्रेष्ठ अर्थ किया है। इसी प्रकार गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में व्रज का अर्थ आना किया है जबकि व्रज का अर्थ जाना होता है। ऐसे अन्य अनुवाद कर्त्ताओं ने अर्थ का अनर्थ किया है।

।। पूर्ण परमात्मा तथा राष्ट्री प्रकृति दोनों अनादि ।।

गीता अध्याय 13 श्लोक 19 में कहा है कि राष्ट्री प्रकृति (प्रथम माया अर्थात् जिसे राजेश्वरी शक्ति भी कहते हैं, जिससे परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों को ठहराया है) और पुरुष (पूर्ण परमात्मा) इन दोनों को ही अनादि (सदा रहने वाला और जिसकी उत्पत्ति न हुई हो) जान। चूंकि पुरुष (परमात्मा-पूर्णब्रह्म) पहले अनामी लोक में अकेला रहता था। सर्व आत्माऐं प्रभु के शरीर में समाई थी। बाद में कविर्देव पूर्ण परमात्मा ने नीचे के तीन लोक अगम लोक, अलख लोक तथा सतलोक की रचना अपनी शब्द शक्ति से की तथा स्वयं भी अपनी शब्द शक्ति से सतपुरुष सतलोक में स्वयं प्रकट हुआ, इसीलिए स्वयंभू कहलाता है तथा आदि माया (प्रकृति) को परम हंस से हंस शब्द शक्ति से बनाया तथा सर्व जीव प्रकृति में प्रवेश किए। इसलिए जब परब्रह्म (अक्षर पुरुष) महाप्रलय करता है उस समय ज्योति निरंजन औंकार को सर्व लोकों समेत समाप्त करेगा। उस समय प्रकृति को उसी रूप में सूक्ष्म बना कर परब्रह्म लोक में रखा जाता है और ब्रह्म (ज्योति निरंजन काल) बीज रूप में रखा जाता है तथा इसकी उत्पत्ति फिर होती है। यही प्रकृति लड़की रूप में इसके साथ होती है। काल (ब्रह्म) के नीचे के लोक रचे जाते हैं। तीन अच्छी आत्माओं (श्रेष्ठ आत्माओं) को ब्रह्म (ज्योति निरंजन) भगवान अपनी प्रकृति (अष्टंगी) से रति क्रिया करके उत्पन्न करता है उनको श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु, श्री महेश की उपाधी देता है। ये नई श्रेष्ठ आत्माएँ होती है। पहले वाले विष्णु, ब्रह्मा, शिव चौरासी लाख योनियों में चले जाते हैं।

क्योंकि यही काल भगवान ब्रह्म लोक में तीन रूपों (महाविष्णु- महाब्रह्मा-महाशिव) में रहता है। और वहां पर तीनों बच्चों की उत्पत्ति करके उन्हें चेतनाहीन रख कर पालन करता रहता है। जवान होने पर अलग-2 जगह पर रख देता है। जिससे इन्हें मालूम ही नहीं कि हम कहाँ से आए। इसलिए इसी अध्याय के श्लोक 19 में प्रकृति व

पूर्ण परमात्मा को अनादि कहा है और विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग-द्वेष) को, गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) को भी प्रकति (आदिमाया-प्रकति) से उत्पन्न जान।

गीता अध्याय 13 श्लोक 20 में कहा है कि जगत की उत्पत्ति का कारण तथा कर्म (कार्य) के लिए प्रकति ही मुख्य है तथा पुरुष (सतपुरुष) अपने भक्त का सुख-दुःख का कारण कहा जाता है क्योंकि पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान व सर्व जीवों में स्थित होते हुए भी उन जीवों के कष्ट को बिना नियमित साधना (पूर्ण गुरु जो सतनाम व सारनाम देता है। उससे दीक्षा लेकर साधना किए बिना) दूर नहीं कर सकता। जीव को शक्ति दे कर जीव स्थिति में चला रहा वही पूर्ण परमात्मा इस सुख-दुःख का कारण कहा है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 21 में कहा है कि ''परम अक्षर ब्रह्म'' (सतपुरुष) सूर्य की तरह सर्वव्यापक होने से प्रकति में भी स्थित है। प्रकति से उत्पन्न तीनों गुणों रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी की उपासना का भी भोग लगाने वाला मूल परमात्मा ही है। सर्व को कर्म आधार पर नियमानुसार फल देने वाला भी वही पूर्ण ब्रह्म ही है। इसलिए गुणों का भोक्ता कहा है। गुणों का संग (तीनों देवताओं की उपासना) करने से अच्छी-बुरी योनियों में (प्राणी) जन्म लेते हैं। गीता अध्याय 13 श्लोक 22 में कहा है कि यही सतपुरुष (पूर्ण परमात्मा) उपद्रष्टा (सब को बाहर-भीतर से देखने वाला) तथा अनुमन्ता (कर्म अनुसार कर्म की अनुमति देने वाला), धारण करने वाला और सर्वस्वा होने के कारण महेश्वर (पूर्णब्रह्म) है जो इस शरीर (क्षेत्र) में भी है। इसी को क्षेत्री व शरीरी भी कहा है। उसे परमात्मा (अकाल पुरुष) कहा गया है।

❖ अध्याय 13 श्लोक 23 में कहा है कि इस प्रकार जो कोई परमात्मा (पूर्णब्रह्म) तथा प्रकति (अष्टंगी) को गुणों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) सहित ठीक से जान लेता है। वह सब प्रकार से पूर्णब्रह्म की उपासना करके वर्तमान में भी फिर नहीं जन्मता अर्थात् उसी जीवन में अपनी भक्ति को सुचारू करके (पूर्ण गुरु तत्वदर्शी संत की तलाश करके) मुक्त हो जाता है।

''अन्य अनुवादकर्ताओं का गोल-माल''

गीता अध्याय 13 श्लोक 22 में मेरे से अन्य सब अनुवादकों ने गलत अनुवाद किया है। लिखा है कि देह यानि शरीर में स्थित यह आत्मा वास्तव में परमात्मा ही है। यही ब्रह्मादि का भी स्वामी होने से महेश्वर है। सबका धारण-पोषण करने वाला होने से भर्ता है, जीव रूप में भोक्ता है।

पाठकजन विचार करें :- अनुवादक ने आत्मा को ब्रह्मादिक यानि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव का भी स्वामी बताया है जो आध्यात्मिक ज्ञान का टोटा स्पष्ट दिखाई देता है। देखें इस अनुवादक जयदयाल गोयन्दका द्वारा अनुवादित गीता अध्याय 13 श्लोक 22 की फोटोकॉपी :-

॥ श्रीहरिः ॥ 17

श्रीमद्भगवद्गीता

पदच्छेद, अन्वय और

साधारण भाषाटीकासहित

सं० २०७१ इकहत्तरवाँ पुनर्मुद्रण १०,०००
कुल मुद्रण ९,२०,५००

प्रकाशक एवं मुद्रक—
गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)
फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स : (०५५१) २३३६९९७
e-mail : booksales@gitapress.org website : www.gitapress.org

अध्याय १३

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः॥ २२॥

उपद्रष्टा, अनुमन्ता, च, भर्ता, भोक्ता, महेश्वरः,
परमात्मा, इति, च, अपि, उक्तः, देहे, अस्मिन्, पुरुषः, परः ॥ २२॥

अस्मिन्	= इस
देहे (स्थितः) अपि	= देहमें स्थित
पुरुषः	= यह आत्मा (वास्तवमें)
परः (एव)	= परमात्मा[3] ही है। (वही)
उपद्रष्टा	= साक्षी होनेसे उपद्रष्य
च	= और
अनुमन्ता	= यथार्थ सम्मति देनेवाला होनेसे अनुमन्ता,
भर्ता	= सबका धारण-पोषण करनेवाला होनेसे भर्ता,
भोक्ता	= जीवरूपसे भोक्ता,
महेश्वरः	= ब्रह्मा आदिका भी स्वामी होनेसे महेश्वर
च	= और
परमात्मा	= शुद्ध सच्चिदानन्दघन होनेसे परमात्मा—
इति	= ऐसा
उक्तः	= कहा गया है।

यह फोटोकॉपी गीता अध्याय 13 श्लोक 22 की है जिसका अनुवाद जयदयाल गोयन्दका ने किया है तथा गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित है।

इसमें स्पष्ट है कि अनुवादक को तत्वज्ञान का अभाव रहा है। जिस कारण से गलत अनुवाद किया है कि इस देही (शरीर) में स्थित (पुरूषः) आत्मा वास्तव में परमात्मा ही है। यही सबका पालन-पोषण करने वाला ब्रह्मादिक (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) का भी स्वामी होने से महेश्वर तथा शुद्ध सच्चिदानंद होने से (परमात्मा) परमात्मा ऐसा कहा गया है। यह अनुवाद पूर्ण रूप से गलत है। कष्ण कपा मूर्ति श्री श्री मद् ए.सी. भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद द्वारा अनुवादित तथा भक्ति वेदान्त बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित में इस अध्याय 13 के श्लोक 22 का अनुवाद ठीक किया है। इन्होंने इस श्लोक की सँख्या 23 लिखी है, मूल पाठ वही है।

गीतोपनिषद्

श्रीमद्भगवद्गीता

यथारूप

कृष्णकृपामूर्ति

श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद

संस्थापकाचार्य : अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ

अध्याय १३ श्लोक २३ ४३७

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः॥ २३॥

उपद्रष्टा—साक्षी; **अनुमन्ता**—अनुमति देने वाला; **च**—भी; **भर्ता**—स्वामी; **भोक्ता**—परम भोक्ता; **महा-ईश्वरः**—परमेश्वर; **परम्-आत्मा**—परमात्मा; **इति**—भी; **च**—तथा; **अपि**—निस्सन्देह; **उक्तः**—कहा गया है; **देहे**—शरीर में; **अस्मिन्**—इस; **पुरुषः**—भोक्ता; **परः**—दिव्य।

तो भी इस शरीर में एक अन्य दिव्य भोक्ता है, जो ईश्वर है, परम स्वामी है और साक्षी तथा अनुमति देने वाले के रूप में विद्यमान है और जो परमात्मा कहलाता है।

यह फोटोकॉपी गीता अध्याय 13 श्लोक 22/23 की है। अनुवादक ने अनुवाद कुछ-कुछ ठीक किया है, कुछ गलत किया है। जो गलत किया है, उस पर प्रकाश डालता हूँ। अनुवाद में लिखा है कि इस शरीर में एक अन्य दिव्य भोक्ता है जो ईश्वर है। शब्दार्थ में ''पुरूषः'' का अर्थ भोक्ता किया है और ''परः'' का अर्थ दिव्य किया है जबकि ''पुरूषः'' का अर्थ परमात्मा है और परः का अर्थ अन्य यानि दूसरा है। अनुवाद में भी गलत किया है। अनुवाद में यह तो स्पष्ट है कि जीवात्मा से अन्य परमात्मा भी शरीर में है। यह दास (रामपाल दास यानि अनुवादक व लेखक) भी यही कहता है कि जीवात्मा के साथ परम अक्षर ब्रह्म की शक्ति अभेद है। परंतु अन्य अनुवादक तत्वज्ञान से परिचित नहीं हैं। जिस कारण से कोई न कोई गलती कर ही देते हैं। उदाहरण के लिए = जयदयाल गोयन्दका ने तो पूर्ण रूप से इस अध्याय 13 के श्लोक 22 का अनुवाद गलत किया है जो आप जी ने इस श्लोक के अनुवाद की फोटोकॉपी में देख लिया है। एस्कोन वाले ने भी शब्दों का अर्थ गलत किया है। जैसे मूल पाठ में स्पष्ट है कि शरीर में आत्मा के साथ अन्य परमात्मा है (अस्मिन देहे) इस शरीर में (परः पुरूषः) अन्य परमेश्वर है जो (उपद्रष्टः, अनुमन्ता, भर्ता, भोक्ता महेश्वरः परमात्मा इति च अपि उक्तः) जीवात्मा के प्रत्येक कार्य पर दष्टि रखने से उपदष्टा किसी भी कार्य करने के विचार के समय अपनी प्रेरणा से अनुमति देने वाला और सर्व का धारण-पोषण करने से भर्ता, धार्मिक अनुष्ठानों में भोग लगाने वाला होने से भोक्त और ब्रह्मादिक (ब्रह्मा, विष्णु, शिव को ब्रह्मादिक कहा जाता है जैसे ब्रह्मा के चारों पुत्रों को सनकादिक कहते हैं) तथा क्षर पुरूष यानि काल ब्रह्म तथा अक्षर पुरूष का भी स्वामी यानि ईश होने से महेश्वर तथा आत्मा से भी श्रेष्ठ होने से परमात्मा कहा गया है। यथार्थ अनुवाद यह है। एस्कोन वालों ने ''पुरूषः परः'' का अर्थ गलत किया है जो इस प्रकार है :- पुरूषः का अर्थ भोक्ता किया है, परः का अर्थ दिव्य किया है जो गलत है। अनुवाद में भी गलत लिखा है कि ''इस शरीर में एक अन्य दिव्य भोक्ता है जो ईश्वर है।'' जबकि यथार्थ अनुवाद ऊपर मेरे द्वारा किया गया है। इस प्रकार गीता का यथार्थ भावार्थ गीता पाठकों तक नहीं पहुँच पाया जिसकी पूर्ति पुस्तक ''गरिमा गीता की'' में की गई है।

।। मनमुखी साधना व्यर्थ।।

गीता अध्याय 13 के श्लोक 24 में कहा है कि आत्मतत्व में पहुँचने के लिए कुछ तो आत्मध्यान (मैडिटेशन) के द्वारा दूसरे कुछ ज्ञान योग (केवल कीर्तन व पाठ करके) से, दूसरे जो वे कर्मयोग से आत्म दर्शन करते हैं। क्योंकि परमात्मा पूर्णब्रह्म को पाने के लिए आत्म शुद्धि की जाती है। उसके तरीके ऊपर वर्णन किए हैं। आत्म शुद्धि तो समझो खेत (क्षेत्र) संवार दिया। यदि उसमें सत्यनाम बीज नहीं बोया तथा सारनाम रूपी कलम नहीं चढ़ाई तो भी केवल आत्म शुद्धि से भी बात नहीं बनेगी अर्थात् मुक्ति नहीं। इसलिए काल भगवान सत्यनाम की जानकारी नहीं देता। केवल एक अक्षर औंकार (ऊँ) मन्त्र का जाप बताता है। यह मन्त्र (बीज) है। इस मन्त्र से केवल

स्वर्ग-महास्वर्ग तथा फिर जन्म-मरण ही प्राप्त हो सकता है अर्थात् पूर्ण मुक्ति नहीं। यहाँ पर ज्ञान तो दे दिया कि आम के पौधे (पूर्णब्रह्म-पूर्णपुरुष) का परंतु बीज (मन्त्र-नाम) दे दिया बबूल (काल-ब्रह्म) का। इसलिए जीव आम का फल (पूर्ण मुक्ति) प्राप्त नहीं कर पाते तथा अंत में तप्त शिला पर काल भूनता है उस समय पछताते हैं। फिर क्या बने?

कबीर, करता था तो क्यों रह्या, अब कर क्यों पछताय।
बोवै पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय।।

विशेष :- गीता अध्याय 13 श्लोक 24 का भावार्थ है कि जो सांख्य योगी अर्थात् तत्वज्ञानी शिक्षित व्यक्ति हैं वे अपनी साधना तत्वज्ञान के आधार से दूध और पानी छानकर प्रारम्भ करते हैं। दूसरे कर्म योगी अर्थात् जो ज्ञानी व शिक्षित हैं। उनको शिक्षित व्यक्ति जैसी सलाह देता है वे उनके कहने पर कर्मयोग आधार से अर्थात् ज्ञान की कांट छांट न करके भक्ति कर्म में लग जाते हैं। वे कर्मयोगी कार्य करते-2 साधना करते हैं। गीता अध्याय 5 श्लोक 4-5 में कहा है कि दोनों प्रकार के साधक (सांख्य योगी व कर्मयोगी) समान भक्ति फल प्राप्त करते हैं।

।। भक्ति के लिए अक्षर ज्ञान आवश्यक नहीं ।।

गीता अध्याय 13 के श्लोक 25 में कहा है कि परंतु इनसे अन्य भक्त स्वयं विद्वान न होने से दूसरों से सुनकर उपासना करते हैं तथा वे सुन कर मार्ग पर लगने वाले (श्रुति परायणः) भी यदि उनकी भक्ति पूर्ण संत के अनुसार है (सतनाम व सारनाम की करते हैं) तो मत्यु (जन्म-मरण) से तर जाते हैं मुक्त हो जाते हैं, चाहे वे विद्वान भी न हों अर्थात् भक्ति मुक्ति के लिए पढ़ा लिखा अर्थात् विद्वान होना आवश्यक नहीं है। उसकी साधना शास्त्र विधि अनुसार होनी चाहिए।

गीता अध्याय 13 के श्लोक 26 में वर्णन है कि हे अर्जुन! जितने भी स्थावर जंगम जीव हैं वे क्षेत्र (शरीर रूप खेत) तथा क्षेत्रज्ञ (ब्रह्म) के संयोग से ही उत्पन्न समझ। क्योंकि इस मिट्टी आदि पांच तत्व के पुतले को पूर्ण पुरुष सतपुरुष की शक्ति ही चला रही है तथा काल अपनी प्रकति (दुर्गा) के संयोग से जीव उत्पन्न करता है।

।।पूर्ण ज्ञानी वही है जो केवल पूर्ण परमात्मा को अविनाशी मानता है।।

गीता अध्याय 13 के श्लोक 27 का भाव है कि परमात्मा (पूर्णब्रह्म) को जो अविनाशी रूप से जानता है वह (साधक) सही जानने वाला है कि जीव स्थूल शरीर में नष्ट होता नजर आता है परंतु सूक्ष्म शरीर में जीवित रहता है। वह भी परमात्मा की शक्ति से ही जीवित है। उसकी शक्ति के बिना जीव निष्क्रिय है। जैसे देवी भागवत् महापुराण में प्रकति देवी (अष्टंगी) कहती है कि हे ब्रह्मा, विष्णु, महेश! तुम और सर्व प्राणी मेरी शक्ति से चल रहे हो। यदि मैं अपनी शक्ति वापिस ले लूं तो तुम, जगत तथा सर्व प्राणी शुन्य (असहाय) हो जायेंगे। देखें देवी भागवद् महापुराण। फिर इस प्रकति (माया) को शक्ति सतपुरुष से ही प्राप्त है। इसलिए शक्ति का मूल श्रोत पूर्ण परमात्मा

होने का कारण कहा है कि उसी शक्ति से क्षेत्रज्ञ (काल) के द्वारा जीव उत्पन्न होते हैं।

गीता अध्याय 13 के श्लोक 28 में कहा है कि जो साधक उसी परमात्मा को समान भाव से सर्वत्र स्थित मानता है वह आत्मघात नहीं कर रहा है। (सूर्य दूर स्थान पर होते हुए भी उसकी ऊष्णता निराकार रूप में सर्वव्यापक है)सत्य ज्ञान होने से सही मार्ग पर लग कर पूर्ण गुरु (जो पूर्णब्रह्म के सतनाम व सारनाम का दाता है) से नाम ले कर मुक्त हो जाता है। इससे परमगति (पूर्ण मुक्ति) को प्राप्त होता है। क्योंकि पूर्ण परमात्मा सतपुरुष की भक्ति न करके तीन लोक (ब्रह्मा, विष्णु, शिव व माई-प्रकति व काल-ब्रह्म) की साधना से जीव की लख चौरासी जूनियों में भ्रमणा-भटकणा नहीं मिटती। इसलिए यह साधना व्यर्थ है। यह काल साधना तो सर्व जीव बहुत बार कर चुके हैं। इन्द्र, कुबेर, ईश (भगवान पद ब्रह्मा, विष्णु, शिव) जैसी अच्छी उपाधी काल (ब्रह्म) साधना से अनेकों बार प्राप्त की। परंतु पूर्ण संत न मिलने से पूर्ण परमात्मा (परमेश्वर) का ज्ञान नहीं हुआ। इसलिए उत्तम साधना नहीं मिली। पूर्ण मुक्ति (परमगति) नहीं हुई। अध्याय 13 में सारे अध्याय में पूर्ण परमात्मा की जानकारी दी है कि उस परमात्मा की भक्ति से जीव पूर्ण मोक्ष अर्थात् अनादि मोक्ष प्राप्त कर सकता है। परंतु गीता जी में पूर्ण पुरुष की भक्ति कैसे करें? यह जानकारी कहीं नहीं। वह जानकारी केवल पूर्ण संत (सतगुरु) अर्थात् तत्वदर्शी संत ही दे सकते हैं। जिसका विवरण गीता अध्याय 4 मंत्र 34 में है। इसलिए गीता जी के अध्याय 13 के श्लोक 28 में कहा है कि जिसको उस परमात्मा की वास्तविक स्थिति का ज्ञान हो गया वह (आत्मना आत्मानम्, न हिनस्ति) आत्म घात से बच गया। इसमें स्पष्ट है कि काल (ब्रह्म) स्वयं कहता है कि यदि मेरी भक्ति साधक करता है तो कुछ समय के लिए जन्म-मरण (कल्प अंत तक) मैं भी समाप्त कर सकता हूँ। मेरी भक्ति भी तीनों गुणों (ब्रह्मा-रजगुण, विष्णु-सतगुण, शिव-तमगुण) से ऊपर उठ कर (अर्थात् इन भगवानों की भक्ति को भी त्याग कर) केवल एक अक्षर ''ऊँ'' का जाप करें। परंतु पूर्ण मुक्ति के लिए उस परमात्मा (पूर्ण ब्रह्म) की भक्ति पूर्ण आचार्य (गुरु) से नाम मन्त्र लेकर उसकी सेवा श्रद्धा से करके प्राप्त कर सकते हैं। इससे स्वसिद्ध है कि जो पूर्णब्रह्म की भक्ति करता है वह आत्मघात (आत्म हत्या) से बच जाता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि इस भक्ति के अतिरिक्त जो आन देव (ब्रह्मा, विष्णु, शिव, देवी-देवताओं, जिनकी भक्ति तो पहले ही ब्रह्म साधना में भी बाधक है इससे आगे ब्रह्म-काल) की साधना करना भी आत्मघात के समान अर्थात् व्यर्थ है। इसी का प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 40 में भी है। कबीर साहेब कहते हैं :-

कबीर, जो यम (काल) को कर्त्ता (भगवान) भाखै (कहै)।
तजै सुधा (अमत) नर विष (जहर) को चाखै।।

इस वाणी का भावार्थ है कि जो कोई साधक ब्रह्म (काल/यम) को भगवान जान कर पूजता है तथा वह अमत (सतपुरुष) को छोड़ कर जहर (काल की साधना से जन्म-मरण, चौरासी लाख योनियों की पीड़ा रूपी जहर) को चाख रहा है। अर्थात् पूर्ण

परमात्मा के पूर्ण मोक्ष का आनन्द न मिल कर काल (ब्रह्म) साधना से होने वाले जन्म-मरण व अन्य प्राणियों के कष्टमय जीवन को आनन्द समझ रहा है। इसलिए उस परमात्मा (पूर्णब्रह्म) की साधना करो तथा सतलोक में जहाँ सुख का सागर है अर्थात् कोई कष्ट नाम की वस्तु नहीं है, न जन्म-मरण है, वहाँ चलो!

।। शब्द ।।

मन तू चलि रे सुख के सागर। जहां शब्द सिंध रत्नागर।।टेक।।
कोटि जन्म जुग भरमत हो गये, कुछ नहीं हाथि लग्या रे।
कूकर (कुत्ता) शुकर (सूअर) खर (गधा) भया बौरे, कौआ हंस बुगा रे।।1।।
कोटि जन्म जुग राजा किन्हा, मिटि न मन की आशा।
भिक्षुक होकर दर–दर हांढा, मिल्या न निरगुण रासा।।2।।
इन्द्र कुबेर ईश की पदवी, ब्रह्मा वरूण धर्मराया।
विष्णु नाथ के पुर कूं पहुँचा, बहुरि अपूठा आया।।3।।
असंख जन्म जुग मरते होय गये, जीवित क्यौं न मरै रे।
द्वादश मधि महल मठ बौरे, बहुरि न देह धरै रे।।4।।
दोजिख भिसति सबै तैं देखें, राज पाट के रसिया।
त्रिलोकी से त्रिपति नांहि, यौह मन भोगी खसिया।।5।।
सतगुरु मिलैं तो इच्छा मेटैं, पद मिलि पदह समाना।
चल हंसा उस देश पठाऊं, आदि अमर अस्थाना।।6।।
च्यारि मुक्ति जहां चंपी करि हैं, माया होय रही दासी।
दास गरीब अभै पद परसै, मिले राम अविनासी।।7।।

भावार्थ :- कृपया इस शब्द को ध्यान पूर्वक विचारें। इसमें आदरणीय गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि हे मन! तू सुख के सागर सतलोक चल। इस काल (ब्रह्म) लोक में असंखों जन्म मरते-जन्मते हो गए। अभी तक कुछ हाथ नहीं आया। चौरासी लाख योनियों का कष्ट करोड़ों बार उठाया। कुकर (कुत्ता) सुकर (सुअर) खर (गधा) जैसी कष्टमई योनियों में तंग पाया। आगे कहा कि ब्रह्म (काल) साधना करके ऊँ जाप, तप, यज्ञ, हवन, दान आदि करके राजा बना। इन्द्र (स्वर्ग का राजा) बना और ब्रह्मा-विष्णु-शिव के उत्तम पद पर भी रहा। कुबेर (धन का देवता) बना, वरुण (जल का देवता) भी बना और उत्तम लोक विष्णु जी के लोक में भी विष्णु (कृष्ण, राम आदि) की साधना करके कुछ समय पुण्य कर्मों के भोग को भोगकर वापिस जन्म-मरण, नरक के चक्र में गिर गया।

यदि तत्वदर्शी संत सतगुरू मिल जाता तो काल लोक को असार तथा सत्यलोक को सर्व सुखदायी का ज्ञान करवाकर काल ब्रह्म के लोक की सर्व नाशवान वस्तुओं की इच्छा समाप्त करता। स्वर्ग का राजा यानि देवराज इन्द्र भी मरता है। फिर गधा बनता है तो पृथ्वी के राज को प्राप्त करके भी राज भोगकर राजा गधा बनता है। इस प्रकार के ज्ञान से पूर्ण परमात्मा की भक्ति से साधक का मन काल ब्रह्म के लोक से

हटकर परम अक्षर ब्रह्म यानि सतपुरूष में तथा उसके सनातन परम धाम की प्राप्ति की हृदय से इच्छा करता है। इस कारण से ''जहाँ आशा तहाँ बासा होई, मन कर्म वचन सुमरियो सोई।''

भावार्थ है कि साधक की आस्था जिस प्रभु तथा लोक को प्राप्त करने की होती है तो उसी को प्राप्त करता है। उसी लोक को प्राप्त करने की साधना करके उसी में निवास करता है। इसलिए उसी का स्मरण मन-कर्म-वचन से करना चाहिए। तत्वज्ञान से साधक की आस्था सतपुरूष (परमेश्वर) तथा उसके सतलोक को प्राप्त करने की होती है। जिस कारण से अमर लोक प्राप्त होता है। फिर उस साधक की कभी मत्यु नहीं होती। वह परम अक्षर ब्रह्म यानि अविनाशी राम कबीर मिल जाता है। ऐसी सच्चाई तत्वदर्शी संत बताता है। सत्यलोक में जो चार मुक्तियों का सुख है। वह सदा बना रहता है। काल ब्रह्म के लोक में एक दिन समाप्त होता है। साधक नरक में भी जाता है। अन्य प्राणियों के शरीरों में भी कष्ट भोगता है। सतलोक में सदा सुखी रहता है।

।। देवी-देवताओं का राजा इन्द्र भी गधा बनता है।।

एक समय मार्कण्डेय ऋषि निरंकार ईश्वर मान कर ब्रह्म (काल) की कई वर्षो से साधना कर रहे थे। इन्द्र (जो स्वर्ग का राजा है) को चिंता बनी कि कहीं यह साधक अधिक तप करके इन्द्र की पदवी प्राप्त न करले। चूंकि इन्द्र की पदवी (पोस्ट) अधिक यज्ञ करके या अधिक तप करके प्राप्त की जाती है। उसका (इन्द्र का) शासन काल बहत्तर चौकड़ी (चतुर्युगी) युग का होता है। उसके शासन काल के दौरान यदि कोई साधक इन्द्र की पदवी पाने योग्य साधना कर लेता है तो उस वर्तमान इन्द्र (स्वर्ग के राजा) को बीच में ही पद से हटा कर नए साधक को इन्द्र पद दे दिया जाता है। इसलिए इन्द्र को यह चिंता बनी रहती है कि कोई तप या यज्ञ करके मेरे राज्य को न छीन ले। इसलिए वह उस साधक का तप या यज्ञ बीच में खण्ड करवा देता है।

इसी उद्देश्य से इन्द्र ने मार्कण्डेय ऋषि के पास एक उर्वशी स्वर्ग से भेजी। उर्वसी ने अपनी सिद्धि शक्ति से सुहावना मौसम बनाया तथा खूब नाची-गाई। अंत में निवस्त्र हो गई। तब मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि हे बहन! हे बेटी! हे माई! आप यहाँ किस लिए आई? इस पर उर्वसी ने कहा कि हे मार्कण्डेय गुसांई! आप जीत गए मैं हार गई। आप एक बार इन्द्र लोक में चलो नहीं तो मेरा मजाक करेंगे कि तू हारकर आई है। मार्कण्डेय बोले मैं जहाँ की साधना (महास्वर्ग-ब्रह्म लोक की साधना) कर रहा हूँ। वहाँ पर जो नाचने वाली तथा गाने वाली हैं उनके पैर धोने वाली तेरे जैसी सात-2 बान्दियाँ हैं। तेरे को क्या देखूं। तेरे से अगली कोई अधिक सुन्दर हो उसे भेज दे। इस पर उर्वशी ने कहा कि इन्द्र की पटरानी मैं ही हूँ अर्थात् मेरे से सुन्दर कोई नहीं है।

इस पर मार्कण्डेय गोंसाई बोले कि जब इन्द्र मरेगा तब क्या करेगी? उर्वशी बोली मैं चौदह इन्द्र वरूंगी अर्थात् मैं तो एक बनी रहूँगी मेरे सामने चौदह इन्द्र अपनी-2 इन्द्र पदवी भोग कर मर जाएंगे। मेरी आयु स्वर्ग की पटरानी के रूप में है।

(72 गुणा 14) 1008 चतुर्युग तक अर्थात् एक ब्रह्मा के दिन (एक कल्प) की आयु एक इन्द्र की पटरानी शची की है।

मार्कण्डेय ऋषि बोले चौदह इन्द्र भी मरेंगे तब क्या करेगी? उर्वसी बोली जितने इन्द्र मैं भोगुंगी वे गधे बनेंगे तथा मैं गधी बनूंगी। मार्कण्डेय ऋषि बोले, हे सुंदरी! जिस लोक का राजा तो गधा बनेगा और रानी गधी बनेगी, ऐसे लोक में चलने के लिए क्यों कह रही है?

उर्वशी बोली, मेरी इज्जत रखने के लिए। वहाँ मेरा उपहास करेंगे कि तू तो हारकर आई है। मार्कण्डेय ऋषि बोले कि गधियों की कैसी इज्जत? तू आज भी गधी है क्योंकि तू चौदह खसम करेगी यानि चौदह पुरूषों को पति बनाएगी। मरने के पश्चात् तो गधी बनेगी ही। उर्वशी शर्मिन्दा होकर चली गई।

इस प्रसंग से यह भी सिद्ध हुआ है कि काल ब्रह्म के लोक में तथा अक्षर पुरूष यानि परब्रह्म के लोक में कितनी ही लंबी आयु हो, अंत अवश्य है। मत्यु निश्चित है, परंतु सत्यलोक में ऐसा नहीं है। संत गरीबदास जी ने बताया है कि इतनी लंबी आयु के बाद भी यहाँ मत्यु होगी। आपको सत्यपुरूष की भक्ति बताने वाला तत्वदर्शी संत नहीं मिला। जिस कारण से जन्म-मत्यु का कष्ट झेल रहे हो।

गरीब, एती उम्र, बुलंद मरेगा अंत रे। सतगुरु लगे न कान, न भेटैं संत रे।।

स्वर्ग लोक से इन्द्र आया तथा कहने लगा कि हे बन्द निवाज! आप जीत गए हम हार गए। चलो इन्द्र की गद्दी प्राप्त करो। इस पर मार्कण्डेय ऋषि बोले- रे-रे इन्द्र क्या कह रहा है? इन्द्र का राज मेरे किस काम का। मैं तो ब्रह्म लोक की साधना कर रहा हूँ। वहाँ पर तेरे जैसे इन्द्र अलिलों (नील संख्या) में हैं उन्होंने मेरे चरण छुए। तू भी अनन्य मन से (नीचे की साधना - ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा देवी-देवताओं की आस्था त्यागकर एक प्रभु में आस्था को अनन्य मन कहते हैं) ब्रह्म की साधना कर ले। ब्रह्म लोक में साधक कल्पों तक मुक्त हो जाता है।

इन्द्र ने कहा ऋषि जी, फिर कभी देखेंगे। अब तो आनन्द करने दो। यहाँ विशेष विचारने की बात है कि इन्द्र जी को मालूम है कि इस क्षणिक स्वर्ग के राज का सुख भोग कर गधा बनुंगा। फिर भी मन व इन्द्रियों के वश हुआ विकारों के आनन्द को नहीं त्यागना चाहता। इसी प्रकार जो शराब पीता है उसे उत्तम मान कर त्यागना नहीं चाहता। इसी प्रकार ब्रह्मा, विष्णु, शिव भी अपनी पदवी को भोग कर मर जाएंगे और फिर चौरासी लाख योनियों को प्राप्त होगें। नई श्रेष्ठ आत्मा काल निरंजन के घर प्रकति (अष्टंगी) के उदर से जन्म लेती है तथा उन्हें फिर तीन लोक का राज्य दे देता है- ब्रह्मा को शरीर बनाना, विष्णु को स्थिति और शिव को संहार (प्रलय)। चूंकि काल (ब्रह्म) शापवश प्रतिदिन एक लाख (मनुष्य-देव-ऋषि) शरीर धारी प्राणी खाता है। उसके लिए इसके तीनों पुत्र व्यवस्था बनाए रखते हैं।

आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि हे मूर्ख मन! असंख्यों जन्म हो गए इस काल लोक में कष्ट उठाते। अब जीवित मर ले। जीवित मरना है - न पथ्वी के राज की चाह, न स्वर्ग के राज की, न ब्रह्मा-विष्णु-शिव बनने की चाह, न शराब-तम्बाखू-सुल्फा,

न अफीम, न माँस प्रयोग की इच्छा तथा तीन लोक व ब्रह्म लोक की साधना को त्याग कर उस पूर्ण परमात्मा (पूर्णब्रह्म सतपुरुष) की साधना अनन्य (अव्याभिचारिणी) भक्ति करके सतलोक (सच्चखण्ड) चला जा। फिर तेरा जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाएगा। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण पवित्र गीता जी के अध्याय 13 में तथा रह-रह कर प्रत्येक अध्याय में दिया है।

फिर कहा है कि कोई पूर्ण संत (सतगुरु) मिले तो सही ज्ञान (जो गीता जी के अध्याय 13 पूरे में है) बता कर उत्तम साधना सतनाम तथा सारनाम दे कर पार करे। जहाँ (सतलोक में) चार मुक्ति जो ब्रह्म साधना की अंतिम उपलब्धि है वहाँ (सतलोक के) के स्थाई सुख के सामने तुच्छ है तथा माया (सर्व सुविधा देने वाली) वहाँ आम भक्त (हंस) की सेवक है। अर्थात् हर सुविधा तथा सुख चरणों में पड़ा रहता है। इन्द्र का स्वर्ग राज, सतलोक की तुलना में कौवे की बीट (टटी) के समान है। तथा मिले राम अविनाशी (परम अक्षर ब्रह्म) की प्राप्ति हो जाएगी। उसको प्राप्त करके पूर्ण मुक्त (परम गति को प्राप्त) हो जाएगा।

।। क्षेत्र (शरीर) क्षेत्रज्ञ (ब्रह्म) तथा क्षेत्री (परमात्मा-आत्मा सहित) को जानकर भक्त काल-जाल से मुक्त हो जाता है।।

अध्याय 13 के श्लोक 29 में कहा है कि जो कोई साधक सम्पूर्ण कर्मों को प्रकृति के वश होकर किए जा रहे हैं ऐसे समझ लेता है व इस जीव को निर्दोष जानता है। फिर पूर्ण परमात्मा की साधना पूर्ण गुरु रूपी वकील करके मुकदमा लड़ कर पार होने की चेष्टा करता है।

अध्याय 13 के श्लोक 30 में कहा है कि जब (कोई साधक) सम्पूर्ण प्राणियों के भिन्न-2 भाव को तथा विस्तार (उत्पत्ति) को एक ही में स्थित देखता है तब वह उस पूर्ण परमात्मा (ततः ब्रह्म) को प्राप्त हो जाता है। देखने का भाव है कि ज्ञान रूपी आँखों से मूल ज्ञान के आधार पर अपनी साधना बदल कर पूर्ण संत (गुरु) की शरण जा कर पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर जाता है। क्योंकि उसे काल (ब्रह्म) के जाल की पूर्ण जानकारी हो जाती है।

अध्याय 13 के श्लोक 31 में कहा है कि हे अर्जुन! अनादि (सदा एक रस तथा जिसकी उत्पत्ति कभी नहीं होती) होने से तथा निर्गुण होने से यह अविनाशी परमात्मा पूर्णब्रह्म शरीर में रहता हुआ भी न कुछ करता है तथा न लिप्त ही होता है। जैसे सूर्य का प्रकाश सर्व अच्छे बुरे पदार्थों पर पड़ता है, परन्तु लिप्त नहीं होता, इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा अपनी निराकार शक्ति से सर्व कार्य करता हुआ स्वयं कुछ करता नजर नहीं आता।

अध्याय 13 श्लोक 31 का भाव है कि जैसे सूर्य दूरस्थ होने से भी जल के घड़े में दृष्टिगोचर होता है तथा निर्गुण शक्ति अर्थात् ताप प्रभावित करता रहता है, इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा अपने सत्यलोक में रहते हुए भी प्रत्येक आत्मा में प्रतिबिम्ब रूप से

रहता है। जैसे अवतल लैंस पर सूर्य की किरणें अधिक ताप पैदा कर देती हैं तथा उत्तल लैंस पर अपना स्वाभाविक प्रभाव ही रखती हैं। इसी प्रकार शास्त्र विधि अनुसार साधक अवतल लैंस बन जाता है। जिससे ईश्वरीय शक्ति का अधिक लाभ प्राप्त करता है तथा शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण करने वाला साधक केवल कर्म संस्कार ही प्राप्त करता है।

अध्याय 13 के श्लोक 32 में कहा है कि जैसे प्रकाश सब जगह पर व्याप्त है। फिर भी सूक्ष्म होने के कारण निर्लेप है। ऐसे ही शरीर में जीव आत्मा भी निर्लेप है। चूंकि परमात्मा में आत्मा ऐसे रहती है जैसे वायु में गंध। इसलिए दोनों ही शरीर में विद्यमान रहते हैं तथा आत्मा का गुण भी परमात्मा से मिलता जुलता है। शरीर में आत्मा जीव संज्ञा में है परंतु परमात्मा निर्लेप अर्थात् अविनाशी है।

अध्याय 13 के श्लोक 33 में कहा है कि हे अर्जुन! जिस प्रकार एक सूर्य इस सम्पूर्ण लोक (ब्रह्मण्ड) को प्रकाशित करता है उसी प्रकार एक ही पूर्ण परमात्मा (पूर्णब्रह्म) सम्पूर्ण क्षेत्र (ब्रह्मण्ड-पिंड) को प्रकाशित (शक्ति युक्त बनाता है जिससे यह पुतला चलता रहता है) करता है क्योंकि पिंड (शरीर/क्षेत्र) तथा ब्रह्मण्ड की रचना समान है जैसे एक आत्मा सर्व शरीर को शक्ति देती है ऐसे पूर्ण परमात्मा ब्रह्मण्ड को शक्ति देता है।

अध्याय 13 के श्लोक 34 में कहा है कि इस प्रकार क्षेत्र (शरीर) तथा क्षेत्रज्ञ (ब्रह्म) के भेद को तत्व ज्ञान रूपी आँखों से अच्छी तरह जान लेता है। वे प्राणी प्रकृति (काल की शक्ति सहयोगिनी-माया-अष्टंगी) से मुक्त होकर पूर्ण ब्रह्म को प्राप्त हो जाते हैं अर्थात् काल जाल से निकल जाते हैं। परम शांति (पूर्ण मुक्ति) को प्राप्त हो जाता है। गीता जी के अध्याय 13 के श्लोक 1,2 में स्पष्ट है कि जो क्षेत्र (शरीर-पिण्ड) को जानता है वह क्षेत्रज्ञ कहलाता है तथा वह क्षेत्रज्ञ भी मुझे (काल को) ही जान। इसलिए अध्याय 13 के श्लोक 34 का भावार्थ है कि जो क्षेत्र (शरीर) तथा क्षेत्रज्ञ (काल) को जान लेता है वह पूर्ण परमात्मा को प्राप्त हो जाता है अर्थात् काल साधना त्याग कर पूर्ण परमात्मा की साधना करके माया व काल के जाल से मुक्त हो जाते हैं।



पंद्रहवां अध्याय

।। सारांश।।

''गीता अध्याय 15 श्लोक 1-4 का सारांश''

।। संष्टि रूपी वंक्ष का वर्णन।।

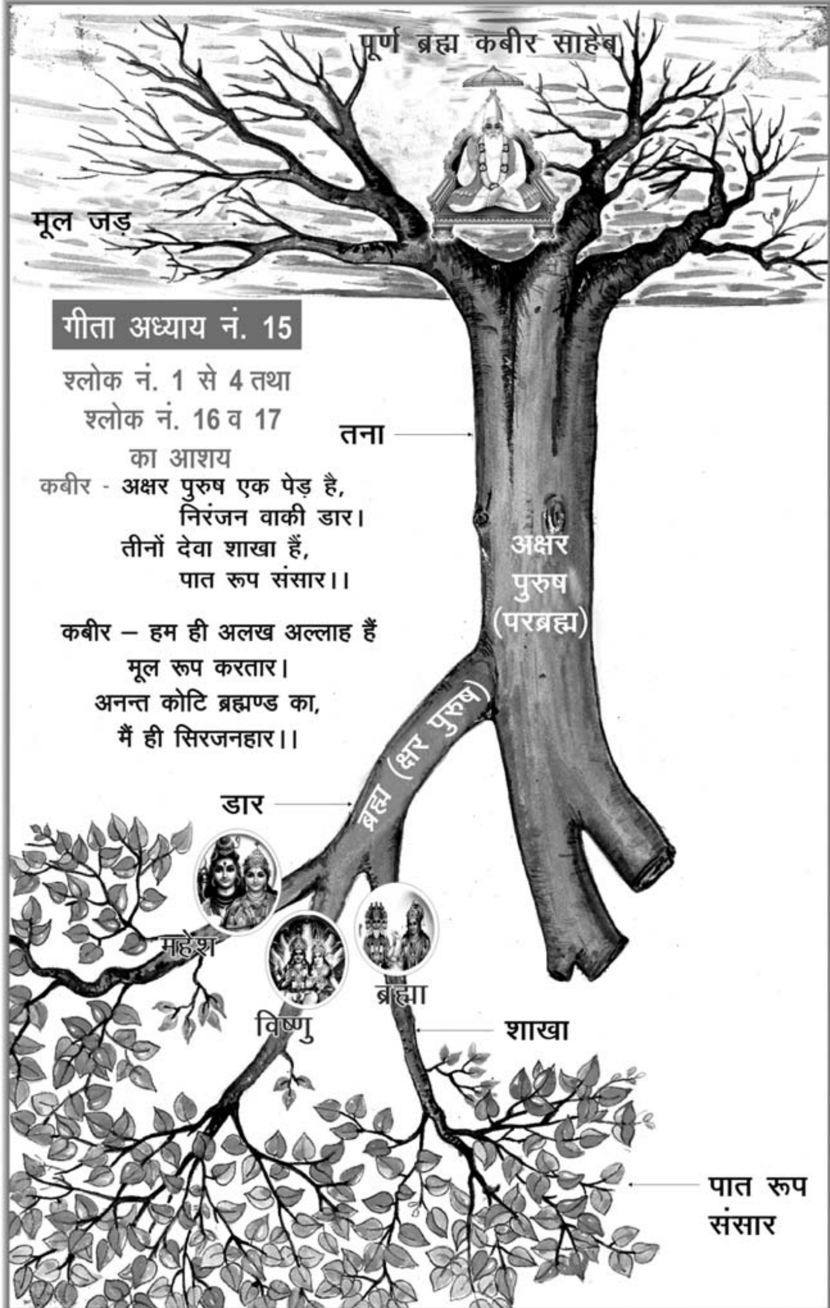
अध्याय 15 के श्लोक 1 में कहा है कि ऊपर को पूर्ण परमात्मा रूपी जड़ वाला नीचे को तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिवजी) रूपी शाखा वाला संसार रूपी एक अविनाशी विस्तंत वंक्ष है। जैसे पीपल का वंक्ष है। उसकी डार व साखाएँ होती हैं। जिसके छोटे-छोटे हिस्से (टहनियाँ) पते आदि हैं। जो संसार रूपी वंक्ष के सर्वांग जानता है, वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी संत है। कबीर परमेश्वर जी कहते हैं :--

कबीर, अक्षर पुरुष एक पेड़ है, निरंजन (ब्रह्म) वाकि डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।
कबीर, हम ही अलख अल्लाह हैं, मूल रूप करतार।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, मैं ही सिरजनहार।।

यह उल्टा लटका हुए संसार रूपी वंक्ष है। ऊपर को जड़ें (पूर्णब्रह्म परमात्मा-परम अक्षर पुरुष) सतपुरुष है, अक्षर पुरुष (परब्रह्म) जमीन से बाहर दिखाई देने वाला तना है तथा ज्योति निरंजन (ब्रह्म/क्षर) डार है और तीनों देवा (ब्रह्मा-विष्णु-महेश) शाखा हैं। छोटी टहनियाँ और पत्ते देवी-देवता व आम जीव जानों।

❖ **अध्याय 15 के श्लोक 2 में कहा है कि उस (अक्षर पुरुष रूपी) वंक्ष की नीचे और ऊपर गुणों (ब्रह्मा-रजगुण, विष्णु-सतगुण, शिव-तमगुण) रूपी फैली हुई विषय विकार (काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार) रूपी कोपलें व डाली (ब्रह्मा-विष्णु-शिव) रूपी। इस जीवात्मा को कर्मों के अनुसार बाँधने का मुख्य कारण है तथा नीचे पाताल लोक में, ऊपर स्वर्ग लोक में व्यवस्थित किए हुए हैं।** (गीता जी के अध्याय 14 के श्लोक 5 में प्रमाण है कि – हे महाबाहो (अर्जुन)! सतगुण, रजगुण, तथा तमगुण जो प्रकंति (माया) से उत्पन्न हुए हैं। ये तीनों गुण जीवात्मा को शरीर में बाँधते हैं।)

❖ **अध्याय 15 के श्लोक 3 में गीता बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि इस (रचना) का न तो शुरु का ज्ञान, न अंत का और न ही वैसा स्वरूप (जैसा दिखाई देता है) पाया जाता है तथा यहाँ विचार काल में अर्थात् तेरे मेरे इस गीता ज्ञान संवाद में मुझे भी इसकी अच्छी तरह स्थिति का ज्ञान नहीं है। इस स्थाई स्थिति वाले मजबूत संसार रूपी वंक्ष अर्थात् संष्टि रचना को पूर्ण ज्ञान रूप (सूक्ष्म वेद के ज्ञान से) शस्त्र से काट कर अर्थात् अच्छी तरह जान कर काल (ब्रह्म) व ब्रह्मा-विष्णु-शिव तीनों गुणों व पित्रों-भूतों- देवी- देवताओं, भैरों, गूगा पीर आदि से मन हट जाता है। इसलिए इस संसार रूपी वंक्ष को काटना कहा है।**



ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष का चित्र

अध्याय 15 के श्लोक 4 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि उपरोक्त तत्वदर्शी संत जिसका गीता अध्याय 15 श्लोक 1 व अध्याय 4 श्लोक 34 में भी वर्णन है मिलने के पश्चात उस स्थान (सतलोक-सच्चखण्ड) की खोज करनी चाहिए जिसमें गए हुए साधक फिर लौट कर (जन्म-मरण में) इस संसार में नहीं आते अर्थात् अनादि मोक्ष प्राप्त करते हैं और जिस परमात्मा से आदि समय से चली आ रही संष्टि उत्पन्न हुई है। मैं काल ब्रह्म भी उसी अविगत पूर्ण परमात्मा की शरण में हूँ। उसी पूर्ण परमात्मा की ही भक्ति पूर्ण निश्चय के साथ करनी चाहिए, अन्य की नहीं।

इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 18 मंत्र 46, 61, 62, 66 में भी है कि गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमेश्वर बताया है। उसी की शरण में जाने को कहा है तथा अपना इष्ट देव यानि पूज्यदेव भी उसी को बताया है कि मैं उसी की शरण हूँ।

अन्य प्रमाण :- गीता अध्याय 18 श्लोक 64 में यह भी प्रमाण है कि गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि सब गोपनीय से भी अति गोपनीय वचन सुन जो तेरे हित में कहूँगा कि जिस परमेश्वर का मैंने इसी अध्याय 18 श्लोक 61, 62 में किया है, उसकी शरण में तेरे को जाने को कहा है। (इति) यह (मे) मेरा (दंढ़म् इष्टः) पक्के तौर पर पूज्य देव है।

विशेष :- अन्य अनुवादकों ने अध्याय 18 के इस श्लोक 64 में ''इष्टः'' शब्द का अर्थ प्रिय किया है जो उचित नहीं है। गीता अध्याय 9 श्लोक 20 में ''इष्टवा'' शब्द का अर्थ ''पूजा करके'' किया तथा इसी अध्याय 18 के श्लोक 70 में ''इष्टः'' शब्द का अर्थ ''पूजित'' किया है। यदि श्लोक 64 में भी ''पूजित'' कर दिया जाता तो सब ठीक हो जाता। गीता अध्याय 18 के श्लोक 63 में स्पष्ट कर दिया कि गोपनीय से भी अति गोपनीय ज्ञान मेरे द्वारा इस गीता शास्त्र में तुझे कह दिया है। जैसे उचित लगे, कर। गीता अध्याय 8 श्लोक 5 तथा 7 में अपनी भक्ति करने से अपनी प्राप्ति कही है। श्लोक 8, 9, 10 में श्लोक 3 वाले परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति कही है। उसकी भक्ति करने वाला उसको प्राप्त होगा। इस अध्याय 18 के श्लोक 64 में भी इसी को अपना इष्ट देव यानि पूजित देव बताया है।

❖ ''तत्वदर्शी सन्त की पहचान'' :-- उपरोक्त गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में कहा है कि जो सन्त संसार रूपी वंक्ष के सर्व भागों को भिन्न-2 बताए, वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला यानि तत्वदर्शी सन्त है। जो आप जी ने ऊपर पढ़ा कि संसार रूपी वंक्ष की जड़े (मूल)तो परम अक्षर ब्रह्म है, तना अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म है, डार क्षरपुरूष अर्थात् ब्रह्म (काल) है तथा तीनों शाखाऐं रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी है तथा पत्ते रूपी प्राणी हैं।

दूसरी पहचान :-- गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्मलोक से लेकर सर्व लोक नाश्वान हैं। गीता अध्याय 8 श्लोक 17 में कहा है कि परब्रह्म का एक दिन एक हजार युग का होता है इतनी ही रात्रि होती है। जो इस अवधी को जानता है व काल को तत्व से जानने वाला है अर्थात् तत्वदर्शी सन्त है। कंप्या देखें गीता अध्याय 8 श्लोक 17 के अनुवाद में।

❖ गीता अध्याय 15 के श्लोक 5-15 तक का सारांश :-

।। पूर्ण परमात्मा की जानकारी।।

गीता अध्याय 15 श्लोक 5-6 का सारांश :-

अध्याय 15 के श्लोक 5 में कहा है कि जिनकी आसक्ति प्रत्येक वस्तु से हटकर प्रभु प्राप्ति में लग गई वही साधक उस अविनाशी परमेश्वर के अविनाशी पद को प्राप्त करते हैं तथा श्लोक 6 में कहा है कि स्वयं काल भगवान कह रहा है कि जिस सतलोक में गए साधक लौट कर संसार में नहीं आते उस सतलोक को न सूर्य, न अग्नि और न चन्द्रमा प्रकाशित कर सकते हैं। वह सत्यलोक मेरे लोक से श्रेष्ठ है तथा मेरा परम धाम है। क्योंकि काल (ब्रह्म) भी उसी सतलोक से निष्कासित है। इसलिए कहता है कि मेरा परम धाम (वास्तविक ठिकाना) भी वही सतलोक है।

अध्याय 15 के श्लोक 7 में कहा है कि मेरे इस जीव लोक यानि काल लोक में आदि परमात्मा की अंश जीवात्मा ही प्रकृति में स्थित मन (काल का दूसरा स्वरूप मन है) इन्द्रियों सहित ये छःओं द्वारा आकर्षित जाती हैं।

❖ अध्याय 15 के श्लोक 8 में कहा है कि जैसे गन्ध का मालिक वायु गन्ध को साथ रखती है (ले जाती है)। ऐसे ही पूर्ण परमात्मा अपनी जीवात्मा का स्वामी होने के कारण उसे एक शरीर से दूसरे शरीर में जो उसे (जीवात्मा को) प्राप्त हुआ है, में निराकार शक्ति द्वारा ले जाता है अर्थात् अलग नहीं होता।

❖ अध्याय 15 श्लोक 9 में कहा है कि यह परमात्मा (जो आत्मा के साथ है) कान-आँख व त्वचा, जिह्वा, नाक और मन के माध्यम से ही विषयों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) का सेवन करता है।

❖ अध्याय 15 के श्लोक 10 में कहा है कि मूर्ख व्यक्ति (इसी परमात्मा सहित आत्मा) को शरीर छोड़ कर जाते हुए तथा शरीर में स्थित तथा गुणों के भोगता (आनन्द लेने वाले) को नहीं जानते। जिनको सृष्टि रूपी वृक्ष का पूर्ण ज्ञान हो गया उन्हें ज्ञान नेत्रों वाले अर्थात् पूर्ण ज्ञानी कहते हैं। वे ही जानते हैं। विशेष प्रमाण के लिए देखें गीता जी के अध्याय 13 के श्लोक 22 से 27 में जिसमें कहा है कि तत्वदर्शी संत सही जानता है कि अविनाशी परमेश्वर जीवों को नष्ट यानि मृत्यु के पश्चात् समभाव स्थित रहता है यानि मृत्यु के पश्चात् अन्य शरीर में जाने से पहले तथा अन्य शरीर में प्रवेश के पश्चात् भी भिन्न नहीं होता यानि उस परमेश्वर की शक्ति अदृश्य रूप में सबको प्रभावित रखती है।

❖ अध्याय 15 के श्लोक 11 में कहा है कि भगवत् प्राप्ति का यत्न करने वाले (प्रयत्नशील) योगी (साधक) अपनी आत्मा में स्थित परमात्मा को सही प्रकार से जानते हैं (देखते हैं) और जिनके अन्तःकरण शुद्ध नहीं हैं वे अज्ञानीजन यत्न करने पर भी इस परमात्मा को सही नहीं जानते (देखते)। पूर्ण ज्ञान होने पर प्रतिदिन महसूस होता है कि उस पूर्ण परमात्मा की आज्ञा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता अर्थात् सर्व प्राणियों का आधार परमेश्वर ही है। जो नादान हैं वे सोचते हैं कि मैं कर

रहा हूँ। जब यह प्राणी पूर्ण परमात्मा की शरण में आ जाता है तब पूर्ण ब्रह्म (पूर्ण परमात्मा कविर्देव) उस प्यारे भक्त के सर्व सम्भव तथा असम्भव कार्य करता है। नादान भक्तों को ज्ञान नहीं होता, जो ज्ञानवान हैं उन्हें पता होता है कि यह सर्व कार्य पूर्णब्रह्म समर्थ ही कर सकता है, जीव के वश में नहीं है। जैसे एक छोटा-सा बच्चा दीवार के साथ खड़े मूसल (काष्ठ का भारी गोल कड़ी जैसा होता है) को उठाने की चेष्टा करता है। पिता जी मना करता है तो रोने लगता है। फिर उस बच्चे को प्रसन्न करने के लिए उस मूसल को ऊपर से पकड़ कर पिता जी स्वयं उठा लेता है तथा वह अबोध बालक केवल हाथों से पकड़ कर चल देता है। पिता जी कहता है कि देखो मेरे पुत्र ने मूसल उठा लिया। फिर वह बच्चा गर्व से हँसता हुआ चलता है। मान रहा है कि मैंने मूसल उठा लिया। परंतु समझदार व्यक्ति जान जाता है कि मूसल उठाना बच्चे के वश से बाहर की बात है।

❖ अध्याय 15 के श्लोक 12,13 में कहा है कि जो सूर्य चन्द्रमा-अग्नि आदि में प्रकाश है। यह मेरा ही समझ और मैं (काल उस परमात्मा के नौकर की तरह) पृथ्वी में प्रवेश करके उसी परमात्मा की शक्ति से सब प्राणियों को धारण करता हूँ। चन्द्रमा होकर औषधियों में रस (गुण) को प्रवेश करता हूँ (पुष्ट करता हूँ)। आदरणीय गरीबदास जी महाराज (साहेब कबीर जी के शिष्य) कहते हैं कि :-

गरीब, काल (ब्रह्म) तो पीसे पीसना, जौरा है पनिहार।
ये दो असल मजूर (नौकर) हैं, मेरे सतगुरु (अर्थात् कबीर) के दरबार।।

भावार्थ :- ब्रह्म भगवान तो पूर्ण ब्रह्म का आटा पीसता है और जौरा (मौत) पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब का पानी भरती है अर्थात् ये दोनों मेरे कबीर सतगुरु (पूर्णब्रह्म) के नौकर (मजदूर) हैं। इन्हीं के आदेशानुसार चलते हैं।

विशेष : स्वयं काल (ब्रह्म) कह रहा है कि अध्याय 15 के श्लोक 4 में कहा है कि मैं (ब्रह्म-काल) उसी परमात्मा की शरण हूँ, आश्रित हूँ। अध्याय 18 श्लोक 64 में अपना इष्टदेव भी इसी को बताया है।

❖ अध्याय 15 के श्लोक 14 में कहा है कि मैं (ब्रह्म) सब प्राणियों के शरीर में शरण (आश्रितः) लेकर महाब्रह्मा-महाविष्णु-महाशिव रूप से सर्व कमलों में निवास करके नौकर की तरह प्राण व अपान (वायु) के आधार से संयुक्त जठराग्नि हो कर चार प्रकार से अन्न को पचाता हूँ।

❖ अध्याय 15 के श्लोक 15 का अनुवाद है कि मैं सब प्राणियों के हृदय में अंतर्यामी रूप से रहता हूँ और जीव को शास्त्रानुकूल विचार (मत) स्थित करता हूँ। मैं ही स्मृति, ज्ञान और अपोहन (संश्य निवारण कर्त्ता) और वेदान्त कर्त्ता अर्थात् चारों वेदों को मैं ही प्रकाशित करता हूँ। भावार्थ है कि काल ब्रह्म कह रहा है कि वेद ज्ञान का दाता भी मैं ही हूँ और वेदों को जानने वाला मैं ही सब वेदों द्वारा जानने योग्य हूँ।

इस श्लोक में ब्रह्म भगवान ने कहा है कि मैं प्राणियों के हृदय में अपना शास्त्रानुकूल ज्ञान स्थापित करता हूँ तथा उन सर्व शास्त्रों, वेद ज्ञान, स्मृति आदि को मैं (ब्रह्म) जानता हूँ तथा उनमें मेरा ही विशेष ज्ञान है। इसलिए लोक व वेद में मुझको

ही श्रेष्ठ भगवान जानने योग्य मानते हैं।

विशेष :- सूक्ष्मवेद में कहा है कि प्रत्येक प्राणी के अंतःकरण (हृदय) में काल ब्रह्म तथा पूर्ण ब्रह्म यानि परम अक्षर ब्रह्म प्रतिबिंब की तरह विद्यमान है जैसे एक प्रसारण केन्द्र से एक प्रोग्राम करोड़ों टैलीविजनों में विद्यमान रहता है। जब तक जीव को मानव शरीर में तत्वदर्शी संत से दीक्षा नहीं मिलती, तब तक उस प्राणी पर काल ब्रह्म अपना अधिकार रखता है। पूर्ण संत से दीक्षा के पश्चात् काल ब्रह्म मैदान छोड़ जाता है। पूर्ण परमात्मा सर्व प्राणियों के कर्मानुसार भ्रमण करता है। सत्य भक्ति करने वालों को सत्यलोक यानि सनातन परम धाम में ले जाता है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा सर्व प्राणियों के हृदय में विशेष रूप से स्थित है। यही प्रमाण अध्याय 18 श्लोक 61 में है। इससे सिद्ध है कि सर्व प्रभु (ब्रह्मा,विष्णु, शिव व ब्रह्म तथा पूर्ण ब्रह्म) शरीर में भिन्न-2 स्थानों पर दिखाई देते हैं जबकि सर्व प्रभु जीव के शरीर से बाहर हैं, परंतु सर्व समर्थ होने से परम अक्षर ब्रह्म की शक्ति से ही सर्व कार्य होते हैं।

''तीन पुरूषों (प्रभुओं) का वर्णन''

❖ गीता अध्याय 15 के श्लोक 16-20 का सारांश :-

।। ब्रह्म (काल) नाशवान है।।

अध्याय 15 के श्लोक 16 का भाव है कि इस पृथ्वी वाले लोक (ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड तथा परब्रह्म के सात शंख ब्रह्मण्ड दोनों ही पृथ्वी वाला लोक कहलाता है, जैसे मिट्टी के चाहे प्याले, प्लेट, घड़े आदि बने हो, कहलाते हैं मिट्टी वाले ही) में दो प्रकार के प्रभु (पुरुष) हैं :-

1. क्षर - नाशवान भगवान (ब्रह्म-काल) है।

2. अक्षर - परब्रह्म अविनाशी है तथा इन दोनों प्रभुओं के लोकों में दो ही स्थिति जीव की है। जो पंच भौतिक स्थूल शरीर है यह नाशवान है। उसमें जीव आत्मा को अविनाशी कहा है।

।। वास्तव में अविनाशी पूर्ण परमात्मा।।

क्षर पुरुष (ब्रह्म-काल) की तथा इसके इक्कीस ब्रह्मण्डों में प्राणियों की स्थिति ऐसी जानों जैसे सफेद प्याला चाय पीने वाला, वह तो स्पष्ट नाशवान दिखाई देता है। हाथ से छूटते ही जमीन पर गिरते ही टुकड़े-टुकडे हो जाता है।

दूसरा अक्षर पुरुष (कुछ अविनाशी परब्रह्म) है। जैसे स्टील (इस्पात) का बना कप हो जो अविनाशी (स्थाई) नजर आता है। कितनी बार गिरे टुकड़े-2 नहीं होता, इसलिए स्थाई धातु माना जाता है। परन्तु वास्तव में अविनाशी धातु इस्पात भी नहीं है। बहुत समय उपरान्त स्टील को जंग लगेगा तथा विनाश को प्राप्त होगा। इस प्रकार अक्षर पुरुष (परब्रह्म) को अविनाशी भी कहा है क्योंकि एक हजार बार ब्रह्म की मृत्यु हो जाएगी तब एक दिन परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का पूरा होगा। फिर इतनी ही

रात्रि। इस पर तीस दिन-रात का एक महीना तथा 12 महीने का एक वर्ष तथा 100 वर्ष की आयु परब्रह्म (अक्षर पुरुष) की है। इसलिए परब्रह्म को अक्षर पुरुष कहा है, परन्तु सौ वर्ष पूरे होने पर इसकी मत्यु होगी तथा सर्व ब्रह्मण्डों का विनाश होगा। फिर नए सिरे से परब्रह्म (अक्षर पुरुष) तथा ब्रह्म (काल) के सर्व ब्रह्मण्डों की रचना पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही कर देगा।

तीसरी धातु सोना (स्वर्ण) है, जिसको जंग नहीं लगता। वास्तव में स्थाई (अविनाशी) धातु इन उपरोक्त दोनों मिट्टी तथा इस्पात से अन्य है। इसी प्रकार गीता अध्याय 15 मंत्र 17 में कहा है कि वास्तव में अविनाशी परमात्मा तो उपरोक्त दोनों पुरुषों (प्रभुओं) क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) से भी अन्य ही है जो वास्तव में अविनाशी परमात्मा परमेश्वर कहा जाता है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण-पोषण करता है।

❖ **अध्याय 15 के श्लोक 17 का भाव है कि श्रेष्ठ परमात्मा (पुरूषोत्तम) तो क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से कोई और ही है जो अविनाशी परमेश्वर(पूर्ण ब्रह्म) नाम से जाना जाता है तथा तीनों लोकों में प्रवेश करके सब का धारण व पालन पोषण भी वही करता है। जैसे कबीर साहेब कहते हैं कि :-**

कबीर, अक्षर पुरुष (परब्रह्म) एक पेड़ है, निरंजन (ब्रह्म) वाकि डार।
तीनों देवा (ब्रह्मा–विष्णु–महेश) शाखा हैं, पात रूप संसार।।
कबीर, हम ही अलख अल्लाह हैं, मूल रूप करतार।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, मैं ही सिरजनहार।।

इसमें स्पष्ट है कि अक्षर पुरुष तो पेड़ (तना) जो जमीन से ऊपर नजर आता है फिर उसके कोई मोटी डाली (डार) क्षर (काल-ब्रह्म) जानों। तीनों देवता ब्रह्मा-विष्णु-शंकर शाखा और छोटी टहनियाँ हैं तथा पत्ते रूप में सर्व संसार है।

यहां पर मूल (जड़) निःअक्षर (अविनाशी परमात्मा पूर्ण ब्रह्म जो दिखाई नहीं देता) है। इसलिए आगे कबीर साहेब कहते हैं :--

कबीर, एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाय। माली सीचैं मूल को, फूलै–फलै अघाय।।

इस वाणी का भाव है कि एक जड़ (मूल) रूपी पूर्णब्रह्म की सेवा साधना से सर्व वक्ष प्रफूलित (हरा-भरा)रहता है। तना (परब्रह्म-अक्षर) व डार (ब्रह्म) साखा (ब्रह्मा-विष्णु-महेश) की पूजा से (पानी डालने से) वह सारा पौधा सूख जाएगा अर्थात् साधना व्यर्थ जाएगी। आदरणीय गरीबदास जी महाराज कहते हैं कि :-

कर्म भ्रम भारी लगे, संसा सूल बंबूल। डाली पानों डोलते, परसत नाहीं मूल।।

इसलिए एक ही परमेश्वर (सतपुरुष, कबीर साहेब) की शरण लेकर पूर्ण मुक्त हो सकते हैं व काल जाल से बच सकते हैं।

इसी का प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में वक्ष का उदाहरण देकर कहा है।

अध्याय 15 के श्लोक 16,17 का भावार्थ जानने के लिए यह उपरोक्त उदाहरण ध्यान से पढ़ें, फिर सोचें। क्योंकि काल, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर व माई से ज्यादा शक्तिशाली (एक हजार भुजाओं का) है इसलिए तीन लोक के प्राणी इसे (काल को)

ही पुरुषोत्तम मानते हैं। केवल इसी लिए श्लोक 18 में पुरुषोत्तम कहा है।

अध्याय 15 के श्लोक 18 का भाव है कि काल (ब्रह्म) कह रहा है कि मैं पंच भौतिक स्थूल शरीर में जो नाशवान (क्षर) प्राणि है उनसे तथा जीवात्मा (जो अविनाशी है) से शक्तिशाली हूँ। इसलिए मुझ (काल-ब्रह्म) को ही श्रेष्ठ (पुरुषोत्तम) भगवान जानते हैं। वास्तव में पूर्ण अविनाशी व उत्तम पुरुष तो अन्य ही है। जिसका वर्णन उपरोक्त श्लोक 17 में है।

मेरे इक्कीस ब्रह्मण्डों में सर्व प्राणियों से शक्तिशाली हूँ। वे चाहे स्थूल शरीर में नाशवान गुणों वाले हैं तथा चाहे जीवात्मा में अविनाशी गुणों युक्त हैं। इन सर्व का मालिक हूँ, इसलिए लोक वेद के आधार पर मुझे पुरुषोत्तम मानते हैं। परन्तु वास्तव में पुरुषोत्तम तो कोई और ही है। जिसका वर्णन उपरोक्त श्लोक 17 में है।

लोक वेद :- लोकवेद क्षेत्रीय सुने सुनाए शास्त्र विरुद्ध ज्ञान को कहते हैं। जैसे किसी क्षेत्र में दुर्गा जी की पूजा का महत्व ज्यादा है। किसी क्षेत्र में श्री हनुमान जी की, किसी क्षेत्र में श्री गणेश जी की, किसी क्षेत्र में श्री खाटू श्याम जी की, किसी में श्री राम और किसी में श्री कृष्ण जी की पूजा का जोर केवल लोकवेद के आधार पर होता है। जैसे अभी तक एक ब्रह्मण्ड का भी ज्ञान पूर्ण नहीं था। न ब्रह्मा जी को, न श्री विष्णु जी को व न श्री शिव जी को एक ब्रह्म की भी पूर्ण जानकारी नहीं थी। श्री देवीभागवत महापुराण के तीसरे स्कंद में अपने पुत्र श्री नारद जी के पूछने पर कि एक ब्रह्मण्ड की उत्पत्ति कैसे हुए, श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद मुझे नहीं मालूम मैं कमल के फूल पर कैसे उत्पन्न हुआ? मुझे पैदा करने वाला कौन है? फिर तीनों ब्रह्मा - विष्णु - शिव जी को दुर्गा ने एक विमान में बैठाकर ब्रह्मलोक में भेजा। वहाँ एक-एक ब्रह्मा - विष्णु - शिव और देखकर आश्चर्य में पड़ गए। फिर देवी के पास जाकर ब्रह्मा जी - विष्णु जी - शिव जी स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि हम तो जन्म तथा मृत्यु में नाशवान हैं, हम अविनाशी नहीं हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होता है। इसके विपरित लोक वेद के आधार पर इन्हीं तीनों प्रभुओं को अजर-अमर, सर्वेश्वर, महेश्वर, अजन्मा, वासुदेव, इनके माता-पिता नहीं आदि उपमा से जानते थे। इन्हीं की पूजा को अन्तिम मान रखा था। जबकि पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तक तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव जी) की पूजा करने वालों को मूर्ख - राक्षस स्वभाव वाले, मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले कहा है। लोक वेद (क्षेत्रीय शास्त्र विरुद्ध ज्ञान) के आधार पर वेदों को पढ़ने वाले ऋषि जिनको तत्वदर्शी संत नहीं मिला स्वयं ही निष्कर्ष निकाल कर ब्रह्म (काल) को पुरुषोत्तम कहते रहे। पूर्ण परमात्मा कविर् देव स्वयं ही अपनी महिमा बताते हैं तथा सत्य ज्ञान (स्वस्थ ज्ञान) को स्वयं संदेशवाहक बन कर लाते हैं। (यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25 में प्रमाण है।) तब स्वयं ही साधक, प्रभु तथा सतगुरु की भूमिका अदा करते हैं। दोहा :

कबीर पीछे लागा जाऊँ था, लोक वेद के साथ। रास्ते में सतगुरु मिलें, दीपक दे दिया हाथ।।

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है :- यह दास पहले श्री हनुमान जी, श्री खाटू श्याम जी तथा श्री विष्णु जी अर्थात् श्री कृष्ण जी, श्री रामचन्द्र जी आदि का पक्का

पूजारी था। व्रत रखना आदि सर्व शास्त्र विधि रहित साधना कर रहा था। 17 फरवरी सन् 1988 के शुभ दिन तत्वदर्शी परम संत पूज्य गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज ने यह तत्वज्ञान रूपी दीपक प्रदान कर दिया जिसकी रोशनी से पता चला कि गलत मार्ग जा रहा था। सर्व पूजा अपने ही पवित्र शास्त्रों (पवित्र गीता जी व पवित्र चारों वेदों) के विपरित कर रहा था जो लोक वेद के आधार पर ही कर रहा था। इसलिए उपरोक्त अमतवाणी में प्रभु कबीर साहेब जी हमें समझाने के लिए कह रहे हैं कि तुम लोकवेद के आधार पर शास्त्रविरुद्ध साधना कर रहे हो, अब इस तत्वज्ञान के आधार पर शास्त्र विधि अनुसार पूर्ण संत से उपदेश प्राप्त करके अपना कल्याण करवाओ। व्यर्थ साधना मत करो।

पूर्ण परमात्मा एक भोले - भाले साधक की भूमिका करके कह रहे हैं कि मैं पहले लोकवेद (शास्त्र विरुद्ध सुना सुनाया ज्ञान) के आधार से साधना कर रहा था, पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) मिले, जिन्होंने वास्तविक पूजा विधि तथा तत्वज्ञान रूपी दीपक प्रदान कर दिया। अब तत्वज्ञान के प्रकाश में मार्ग नहीं भूलेंगे।

गीता अध्याय 15 श्लोक 19 का भावार्थ है कि हे अर्जुन जो ज्ञानी आत्मा तत्वदर्शी सन्त के अभाव से मुझे श्लोक 18 के आधार से पुरूषोत्तम जानता है वह मुझे ही पूर्ण प्रभु, जानकर भजता है। इसलिए गीता ज्ञान दाता प्रभु ने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में कहा है कि ये सर्व ज्ञानी आत्मा है तो उद्धार परन्तु तत्वदर्शी सन्त के अभाव से मुझे पूर्ण परमात्मा जानकर भजते हैं। जिस कारण से मेरी अनुत्तम भक्ति अर्थात् अश्रेष्ठ मोक्ष में ही लीन हैं।

।। गीता एक शास्त्र है ।।

अध्याय 15 के श्लोक 20 में कहा है कि हे निष्पाप अर्जुन! यह अति रहस्ययुक्त गोपनीय शास्त्र मेरे द्वारा कहा गया है। इसको सही तरीके से जो जान लेता है वह तत्वदर्शी सन्त के पास जाकर ज्ञानवान (पूर्ण ज्ञानी) हो जाएगा तथा (काल-जाल से निकल जाएगा) धन्य-धन्य हो जाता है।

वह गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में वर्णित तत्वदर्शी सन्त की खोज करके धन्य हो जाएगा। पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) को प्राप्त करने की विधि काल भगवान ने कहीं पर नहीं कही है। जो यज्ञों व ऊँ मन्त्र के जाप का वर्णन है वह केवल स्वर्ग प्राप्ति तथा महास्वर्ग प्राप्ति का है न कि पूर्णब्रह्म व पूर्ण मुक्ति का। इसलिए वह ज्ञानी पुरुष जो यह जान भी लेगा कि कोई पालनकर्त्ता तथा दयालु भगवान तो अन्य ही है। लेकिन पहुँच से बाहर होने के कारण फिर काल साधना करता हुआ काल के जाल में ही रहेगा। उस पूर्ण परमात्मा की भक्ति विधि व पूर्ण ज्ञान को प्राप्त करने के लिए गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में।

<u>प्रश्न</u> : एक भक्त ने कहा कि फल तो टहनियों से ही मिलता है, जड़ (मूल) से नहीं?

<u>उत्तर</u> : फल तो टहनियों ने ही देने हैं परंतु सेवा (पूजा) जड़ (मूल) की ही करनी पड़ेगी। यदि जड़ में पानी नहीं डालेंगे तो भक्ति रूपी पौधा सूख जाएगा। इसलिए जड़

में खाद-पानी डालने से टहनियाँ अपने आप फल देंगी।

नोट :- कपा देखें भक्ति रूपी पौधे का चित्र सोलहवें अध्याय में इसी पुस्तक के पष्ठ 204 पर।

तत्वज्ञान के अभाव से सर्व श्रद्धालुओं ने भक्ति रूपी पौधे को टहनियों की तरफ से जमीन में लगा रखा था। मूल (जड़) ऊपर को कर रखी थी। इसलिए संकेत किया है कि भक्ति रूपी पौधे को सीधा लगाओ। जड़ (मूल) अर्थात् पूर्ण परमात्मा की पूजा करो जिससे खुराक तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा - सतगुण - विष्णु - तमगुण - शिव) रूपी टहनियों तक पहुँचेगी, फिर भक्ति रूपी फल लगेगा। बिना मांगे ही तीनों प्रभु आप को कर्माधार पर सर्व सुविधा प्रदान करेंगे। इसी का प्रमाण गीता अध्याय 3 श्लोक 10 से 15 तक है कहा है कि परमात्मा सष्टि उत्पन्न करके सब को यज्ञ (शास्त्रानुसार भक्ति कर्म) करने को कहा था तथा कहा था कि शास्त्रानुकूल साधना पूर्ण परमात्मा की करो जो यज्ञों में प्रतिष्ठित है जिस से ब्रह्म की उत्पति हुई। इस प्रकार इन देवताओं को उन्नत करो। वे उन्नत हुए देवता तुम्हे बिना मांगे ही सर्व सुख प्रदान करेंगे।

दूसरा उदाहरण :- मान लिजिए आपको सरकारी नौकरी चाहिए। आप अपने राजा (मुख्यमंत्री) की पूजा करोगे अर्थात् प्रार्थना-पत्र लिखोगे। फिर आप की प्रार्थना (पूजा) स्वीकार करके मुख्यमंत्री जी आपकी नौकरी किसी विभाग में लगा देगा। फिर भी पूजा - नौकरी (सेवा) मुख्यमंत्री जी की (सरकार की) ही करते रहोगे। परन्तु आप को मुख्यमंत्री जी द्वारा निर्धारित मेहनताना (आय) अधिकारी देंगे। वे भी उसी मालिक के उच्च नौकर होते हैं। यदि आप उन उच्च अधिकारियों की ही पूजा करते रहते तो वे आपको केवल चाय-पानी पिला सकते थे। जिससे आप का निर्वाह नहीं चलता। परन्तु साकार की पूजा (नौकरी)करने पर वे आप के जान-पहचान वाले अधिकारीगण आप को सर्व सुविधा प्रदान करेंगे, इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की पूजा करने से तीनों देवता श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी आपको आपका केवल मेहनताना (किया कर्म) देते रहेंगे। यदि आपने पूर्ण परमात्मा की पूजा (नौकरी) त्याग दी तो सर्व सुविधाऐं बन्द हो जायेंगी।

इसलिए पूर्णब्रह्म सतपुरुष ही पूजा के योग्य है। सर्व यज्ञों में प्रतिष्ठित अर्थात् सर्व धार्मिक कार्यों में उसी को मुख्य रख कर सर्वयज्ञ करनी चाहिये। फिर वही परमात्मा आपको सर्व सुविधाऐं प्रदान अपने अन्य प्रभुओं द्वारा करवाएगा। वह पूर्ण परमात्मा भाग्य से ज्यादा भी दे देता है। परन्तु अन्य प्रभु केवल कर्माधार ही प्रदान कर सकते हैं। जैसे अपने कर्मचारी को मुख्यमंत्री जी निर्धारित मेहनताना (आय) से अतिरिक्त बोनस भी दे देता है। परन्तु अधिकारी केवल निर्धारित तनख्वाह (आय) ही दे सकते हैं। ठीक इसी प्रकार तत्वज्ञान को जानकर पूर्ण संत की तलाश करके उपदेश प्राप्त करके आत्म कल्याण अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करें।

❑❑❑

पंद्रहवें अध्याय के सर्व श्लोकों का हिन्दी अनुवाद

❖ अध्याय 15 के श्लोक 1 का अनुवाद :- ऊपर को पूर्ण परमात्मा यानि आदि पुरूष परमेश्वर रूपी जड़ वाला, नीचे को तीनों गुणों अर्थात् रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु व तमगुण शिव रूपी शाखा वाला अविनाशी विस्तारित पीपल का वृक्ष है जिसके जैसे वेद छन्द हैं, ऐसे संसार रूपी वृक्ष के भी छोटे-छोटे विभाग छोटे-छोटे हिस्से टहनियाँ तथा पत्ते कहे हैं। उस संसार वृक्ष को जो व्यक्ति विस्तार से जानता है यानि सर्व विभागों को जानता है, वह व्यक्ति वेद वित है यानि वेद के तात्पर्य को जानने वाला अर्थात् तत्वदर्शी संत है।(15/1)

भावार्थ :- गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि हे अर्जुन! पूर्ण परमात्मा के ज्ञान को जानने वाले तत्वदर्शी संतों के पास जाकर उनसे तत्वज्ञान समझ। मैं उस परम अक्षर ब्रह्म की प्राप्ति का मार्ग नहीं जानता। इसी अध्याय 15 के श्लोक 3 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि इस संसार रूपी वृक्ष के विस्तार को मैं नहीं जानता अर्थात् इसकी रचना कब हुई और कब अंत होगा। इसके विषय में इसी गीता के ज्ञान के विचार जो तेरे को बता रहा हूँ, तुझे संसार की रचना व अंत को नहीं बता सकता क्योंकि मुझे इसकी स्थिति का ज्ञान नहीं है। इसको तत्वदर्शी संत जानते हैं। तत्वदर्शी संत की पहचान इस अध्याय 15 के श्लोक 1 में बताई है कि जो संत संसार रूप वृक्ष के सर्वांग भिन्न-भिन्न बताए, वह तत्वदर्शी संत है। परमेश्वर कबीर जी ने तत्वदर्शी संत की भूमिका करके अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान स्वयं बताया है कि :-

कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, क्षर पुरूष वाकि डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।
कबीर, हम ही अलख अल्लाह हैं, मूल रूप करतार।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, मैं ही सृजनहार।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि अक्षर पुरूष को वृक्ष जानो। क्षर पुरूष यानि ज्योति निरंजन को वृक्ष की मोटी डार समझें। तीनों देवताओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) को डार पर लगी शाखा जानों। इन शाखाओं को लगे पत्ते जीव-जंतु यानि प्राणी जानो। मुझे यानि परम अक्षर ब्रह्म कबीर जी को मूल (जड़) जानो। अनन्त करोड़ ब्रह्माण्डों वाले संसार की रचना मैंने की है। मैं ही अलख अल्लाह यानि अव्यक्त परमात्मा हूँ। परम अक्षर ब्रह्म हूँ। पाठक कृपा देखें संसार रूपी वृक्ष का चित्र इसी पुस्तक के पृष्ठ 187 पर।

जैसा कि अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा अपने मुख से वाणी बोलकर सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान यानि तत्वज्ञान विस्तार से बताते हैं। तत्वदर्शी संत उसका प्रचार करते हैं। वह तत्वदर्शी संत वर्तमान में मेरे (रामपाल दास के) अतिरिक्त कोई नहीं है।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 2 का अनुवाद :- उस संसार रूपी वृक्ष की नीचे पाताल लोक, ऊपर स्वर्ग लोक में भी तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव)

रूपी शाखाऐं फैली हुई हैं। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार रूपी कोपल हैं। ये तीनों देवता रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव सब प्राणियों को कर्मों के अनुसार बाँधे रखने की मूल कारण हैं जो नरक-स्वर्ग ऊपर,पृथ्वी लोक पर यह ज्ञान बताया गया है। नीचे पाताल लोक आदि-आदि व्यवस्थित किए हुए हैं।(15/2)

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 3 का अनुवाद :- गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि संसार की रचना का न आदि यानि प्रारम्भ है तथा न अंत है। और न वैसा इसका वास्तविक स्वरूप पाया जाता है। और यहाँ विचार काल में अर्थात् तेरे मेरे इस गीता ज्ञान के विचार-विमर्श में नहीं पाया जाता यानि सर्व ब्रह्माण्डों की यथास्थिति से मैं परिचित नहीं हूँ।

इस दृढ़ मूल वाले पीपल के वृक्ष की सम्पूर्ण स्थिति को समझने के लिए तत्वज्ञान को जानें। उस तत्वज्ञान रूपी शस्त्र से अज्ञान को काटकर।(15/3)

विशेष :- सुविरूढ़मूलम् का भावार्थ है कि संसार रूपी वृक्ष की जड़ यानि पूर्ण परमात्मा अविनाशी है। उसको जानने के लिए तत्वज्ञान दृढ़ शस्त्र है क्योंकि यदि सूखी लकड़ी को काटना है तो लोहे की दृढ़ ऑरी या कुल्हाड़ी का प्रयोग करना पड़ेगा। इसी प्रकार तत्वज्ञान में ही संसार की रचना का विस्तृत ज्ञान स्वयं परमेश्वर जी ने बताया है। उसी से तत्वज्ञान समझकर ......(शेष श्लोक 4 में)

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 4 का अनुवाद :- तत्वज्ञान समझने के पश्चात् उस मूल रूप परमेश्वर के परम पद यानि सतलोक की खोज करनी चाहिए जिसमें गए हुए साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते ओर जिस परमेश्वर यानि परम अक्षर पुरूष से पुरानी यानि आदि वाली सृष्टि उत्पन्न हुई है। उस सनातन पूर्ण परमात्मा की ही शरण में मैं हूँ यानि मेरा पूज्य परमेश्वर (इष्ट देव) भी वही है। पूर्ण निश्चय के साथ उसी परमात्मा की भक्ति (पूजा) करनी चाहिए।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 5 का अनुवाद :- तत्वज्ञान को प्राप्त साधक काल लोक यानि इस संसार की सर्व वस्तुओं से आसक्ति हटा लेता है। किसी पद की इच्छा नहीं करता। वह पृथ्वी के राज की इच्छा तो करता ही नहीं। स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा तो क्या करेंगे, स्वर्ग के राजा इन्द्र की पदवी भी नहीं चाहता क्योंकि सूक्ष्मवेद यानि तत्वज्ञान में परमेश्वर जी ने बताया है कि :-

इन्द्र का राज काग दा बिस्टा (बींट), ना चाहे इन्द्राणी नूँ।
विषवासन त्याग देत है, जाका ध्यान लगा निर्बाणी नूँ।।

भावार्थ :- तत्वज्ञान में बताया है कि काल ब्रह्म तक की पूजा साधना करके साधक यदि स्वर्ग के राजा इन्द्र की पदवी भी प्राप्त कर लेता है तो उस पद को भोगकर इन्द्र की मृत्यु हो जाती है। वह पुनरावर्ती में आता है। गधे का शरीर प्राप्त करता है। फिर अन्य प्राणियों के शरीरों में भी कष्ट भोगता है क्योंकि काल ब्रह्म का सिद्धांत है कि जैसे कर्म प्राणी करता है, उन सबका भोग भोगता है। पुण्य कर्मों का भोग स्वर्ग में व पृथ्वी पर राज पद प्राप्त करके या धनी व्यक्ति बनकर भोगता है। पाप कर्म नरक में तथा पृथ्वी पर निर्धन, घसीयारा बनकर तथा अन्य प्राणियों के शरीरों में

भोगते हैं। परंतु सनातन परम धाम यानि सतलोक गए साधक फिर लौटकर संसार में नहीं आते। सत्यलोक का स्वर्ग सुख काल लोक के सर्वोत्तम स्वर्ग यानि ब्रह्म लोक के सुख से असँख्यों गुणा अधिक सुख है। सतलोक में गए साधक का वह सुख शाश्वत् यानि कभी न समाप्त होने वाला है क्योंकि सतलोक परमेश्वर का वह परम पद है जिसमें गए साधक कभी लौटकर संसार में नहीं आते। इसलिए तत्वज्ञान प्राप्त विद्वान उस अविनाशी पद यानि सतलोक स्थान को चले जाते हैं।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 6 का अनुवाद :- इस श्लोक 6 में सतलोक की महिमा बताई है। कहा है कि परमेश्वर के जिस परम पद को प्राप्त होकर साधक लौटकर संसार में नहीं आते, वह स्वयं प्रकाशित परम पद है। उस स्वप्रकाशित सतलोक को न सूर्य प्रकाशित कर सकता है क्योंकि उस स्थान का अपना प्रकाश असँख्यों सूर्यों के प्रकाश से भी अधिक है। न चन्द्रमा, न अग्नि ही प्रकाशित कर सकते हैं। (तत्) वह (धाम) सतलोक (मम) मेरे धाम से (परमम्) श्रेष्ठ है।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 7 का अनुवाद :- मतलोक में सनातन परमात्मा का अंश जीवात्मा ही प्रकति स्थित मेरे द्वारा मन (काल का सूक्ष्म रूप मन है) तथा पाँचों ज्ञान इन्द्रियों सहित इन छःओं के माध्यम से आकर्षित की जाती है।(15/7)

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 8 का अनुवाद :- जैसे हवा गंध को इधर-उधर ले जाती है क्योंकि गंध की मालिक वायु है। इसी प्रकार (ईश्वरः) सब ईशों में श्रेष्ठ प्रभु यानि परमेश्वर भी इस जीवात्मा को इन पाँचों इन्द्रियों तथा मन सहित सूक्ष्म शरीर ग्रहण करके जीवात्मा जिस पुराने शरीर को त्यागकर और जिस नए शरीर को प्राप्त होता है, उसके संस्कारवश ले जाता है। गीता अध्याय 18 श्लोक 61 में भी यह वर्णन है कि शरीर रूप यंत्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को (ईश्वरः) अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया उनके कर्मों के अनुसार भ्रमण करता हुआ सब प्राणियों के हृदय में (तिष्ठति) विद्यमान है यानि बैठा है। जैसे टी.वी. पर कार्यक्रम प्रसारण केन्द्र पर मूल रूप में होता है। वहाँ से सर्व टेलीविजनों में भी विद्यमान होता है। वास्तव एंकर (समाचार सुनाने वाला कर्मचारी) प्रसारण केन्द्र में विद्यमान रहता है। वही सब टैलिविजनों में भी बैठा होता है। ऐसे ही परमेश्वर भी सब प्राणियों के हृदय में दिखाई देता है। मूल रूप से सतलोक में रहता है।(15/8)

विशेष विवेचन :- गीता के इस अध्याय 15 के श्लोक 8 में मेरे (रामपाल दास के) अतिरिक्त गीता के अन्य अनुवादकों ने फिर गलती कर रखी है। इस श्लोक के मूल पाठ में ''ईश्वरः'' शब्द है। इसका अर्थ जीवात्मा किया है जो गलत है। इससे तो यह सिद्ध कर दिया कि जीव ही परमात्मा है जो उचित नहीं है।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 9 का अनुवाद :- यह परमात्मा का अंश जीवात्मा जब तक तत्वदर्शी संत से दीक्षा लेकर साधना नहीं करता, तब भी परमात्मा की शक्ति उसके साथ रहती है, परंतु परमात्मा उसके कर्म भोग में भागी नहीं होता। जो भी पाँचों ज्ञान इन्द्रियों व पाँचों कर्म इन्द्रियों द्वारा किए कर्म का फल कर्मों के अनुसार जीवात्मा ही भोगता है, परंतु आनंद भी जीवात्मा ही लेता है।(15/9)

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 10 का अनुवाद :- अज्ञानीजन इस परमात्मा तथा आत्मा के अभेद सम्बन्ध को नहीं जानते, ज्ञानीजन जानते हैं।(15/10)

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 11-15 का अनुवाद :- श्लोक 11 से 15 तक गीता ज्ञान दाता क्षर पुरूष अपनी स्थिति बता रहा है कि मेरे इक्कीस ब्रह्मण्डों में मेरे आधीन सर्व प्राणियों का आधार मैं हूँ। इन ब्रह्मण्डों में जितने भी प्रकाश स्रोत हैं, उन्हें मेरे ही जान। इन सबको मैं ही रचता हूँ। मैं ही महाप्रलय में इनको नष्ट कर देता हूँ। मैं ही वेदों को बोलने वाला ब्रह्म हूँ। वेदों के मत वेदान्त का कर्ता मैं ही हूँ। चारों वेदों को मैं ही ठीक से जानता हूँ अर्थात् चारों वेदों में मेरी ही भक्ति विधि का ज्ञान है।

विचार करें :- जैसे इसी अध्याय 15 के पूर्व के श्लोकों में उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष कहा है। उसकी मूल रूप परमेश्वर यानि परम अक्षर पुरूष है। उसका तना अक्षर पुरूष है तथा डार क्षर पुरूष यानि काल ब्रह्म है जो गीता का ज्ञान दे रहा है। तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव जी) शाखाऐं हैं तथा इन शाखाओं को लगे टहनियाँ और पत्ते काल ब्रह्म का संसार है। सर्व प्राणी हैं। वृक्ष को आहार जड़ से मिलता है। जड़ (मूल) रूप परम पुरूष है। वही आहार तना रूप अक्षर पुरूष को प्राप्त होता है। वही आहार मोटी डार रूप क्षर पुरूष को प्राप्त होता है। वही आहार तीनों देवताओं रूप शाखाओं को प्राप्त होता है। फिर टहनियों और पत्तों रूप प्राणियों तक जाता है।

पाठकजन इस उदाहरण से आसानी से क्षर पुरूष यानि गीता ज्ञान दाता की स्थिति को समझ जाऐंगे कि वास्तव में सर्व का धारण करने वाला तथा पोषण करने वाला परम अक्षर पुरूष है जिसका वर्णन अध्याय 8 के श्लोक 3, 8-10, 20-22 में भी है। इस अध्याय 15 के श्लोक 15 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मैं सब प्राणियों के हृदय में स्थित हूँ। यह काल ब्रह्म भी इस काल लोक के प्राणियों के हृदय में महाशिव रूप में दिखाई देता है। गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में स्पष्ट है कि वह पूर्ण परमात्मा सर्व प्राणियों के हृदय में (विष्ठितम्) विशेष रूप से स्थित है। गीता अध्याय 18 श्लोक 61 में भी यही प्रमाण है जिसका वर्णन पहले इसी अध्याय 15 के श्लोकों में किया गया है। जैसे एक प्रान्त के मुख्यमंत्री की अपने प्रान्त में ही सत्ता है। देश के प्रधानमंत्री की सर्व प्रान्तों में सत्ता है। इसी प्रकार काल ब्रह्म और परम अक्षर ब्रह्म दोनों ही काल लोक के प्राणियों के हृदय में दिखाई देते हैं।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 16-20 का सारांश इसी अध्याय के सारांश में कर रखा है, वहाँ पढ़ें।

❑❑❑

सोलहवां अध्याय

(दिव्य सारांश)

।। श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 16 का सारांश।।

।। सुर व असुर स्वभाव के व्यक्तियों का वर्णन।।

विशेष :- अध्याय 16 के श्लोक 1 से 3 तक उन पुण्यात्माओं के लक्षण वर्णित हैं जो पिछले जन्मों में वेदों अनुसार अर्थात् शास्त्र अनुकूल ब्रह्म साधना ओ३म् नाम से किया करते थे। जिसके कारण ब्रह्मलोक में कुछ समय सुख भोगकर जब पुनः मानव जन्म मिलता है तथा पूर्ण परमात्मा की भक्ति तत्वदर्शी संत से प्राप्त करके करते थे जो पार नहीं हो सके, जब कभी मानव जन्म प्राप्त होता है तो वे निम्न लक्षणों वाले होते हैं।

❖ **गीता अध्याय 16 के श्लोक 1 से 3 तक में काल ब्रह्म ने दैवी स्वभाव (उदार आत्माओं) का वर्णन किया है कि वे निर्भय, निर्वैरी, धार्मिक अनुष्ठान करने वाले मंदुभाषी, किसी की निन्दा नहीं करते, कामी (सैक्सी), क्रोधी, लोभी, लालची, अहंकारी नहीं होते। वे किसी से भी अपना सम्मान नहीं करवाते। वे लाज (शर्म) वाले होते हैं। ये दान, स्वाध्यायः यज्ञ आदि करते हैं। ये पिछले जन्मों से भक्ति करते हुए आ रहे हैं। इसीलिए उनके स्वभाव देव पुरुषों अर्थात् संतों जैसे होते हैं।**

विशेष :- इस श्लोक नं. 1 में मूल पाठ में ''तप'' शब्द का तात्पर्य कठोर तप से नहीं है। शास्त्रानुकूल साधना करने में जो कष्ट होता है, उसे तप कहा है। जैसे शास्त्र विधि अनुसार साधक को पूर्व शास्त्रविरूद्ध साधना त्यागनी होती है। जिस समाज में साधक रह रहा होता है, उस समाज के व्यक्ति उसका घोर विरोध करते हैं। उस विरोध का सामना स्वधर्म पालन में करना यहाँ ''तप'' कहा है।

❖ **गीता अध्याय 16 के श्लोक 4 में कहा है कि जिन व्यक्तियों में पाखण्ड, अभिमान, क्रोध, कठोरता, अज्ञान है वे राक्षस वंति (स्वभाव) के हैं जो इन राक्षसी वंति को साथ लिए हुए उत्पन्न हुए हैं अर्थात् इन आत्माओं को पिछले जन्म में संतों का संग नहीं मिला। जो शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण करते रहे अर्थात् आन उपासना (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव की तथा भूत-पितर, देवी व भैरवों आदि की) करते रहे। जब कभी उन्हें मानव शरीर प्राप्त होता है तो भी साधना उसी पूर्व स्वभाववश ही करते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप वे उच्च विचारों (मत) वाले नहीं हुए।**

❖ **अध्याय 16 के श्लोक 5 में कहा है कि जो व्यक्ति संत स्वभाव वाले हैं वे भक्ति करके मुक्ति प्राप्ति के लिए जन्में हैं। यदि पूर्ण संत गुरु मिल गया तो मुक्ति है यदि पूरा गुरु (सतनाम व सारनाम देने वाला) नहीं मिला तो गलत साधना से जीवन व्यर्थ हो जाएगा, और जो राक्षसी स्वभाव के व्यक्ति हैं वे भक्ति नहीं करते, यदि भक्ति करते भी हैं तो शास्त्र विधि रहित व पाखण्ड युक्त लोकवेद अनुसार, साथ में विकार (तम्बाखु**

सेवन, मांस, मदिरा सेवन) भी करते रहते हैं, जो विकार नहीं करते तो भी स्वभाव वश आन-उपासना पर ही आरूढ़ रहते हैं। कोई समझाने की कोशिश करता है तो नाराज हो जाते हैं। वे अशुभ कर्मों के बन्धन में बंध जाते हैं अर्थात् चौरासी लाख जूनियों के बन्धन में जकड़े जाते हैं। अर्जुन आप (दैवी) साधु स्वभाव के साथ उत्पन्न हुए हो। इसलिए चिंता मत कर।

गीता अध्याय 16 के श्लोक 6 में कहा है कि इस संसार में दो प्रकार के व्यक्तियों का समुह है। एक संत स्वभाव के दूसरे राक्षस स्वभाव के। साधु स्वभाव वालों के लक्षण तो ऊपर (1,2,3 श्लोकों में) विस्तार से बताए हैं। अब राक्षसी स्वभाव वाले व्यक्तियों के लक्षण विस्तार से सुन।

❖ गीता अध्याय 16 के श्लोक 7 में कहा है कि राक्षस स्वभाव के व्यक्ति प्रवति व निवति को भी नहीं जानते। उनमें न तो शुद्धि है, न आचरण ठीक है,सच्चाई भी नहीं जानते हैं।

❖ गीता अध्याय 16 के श्लोक 8 में कहा है कि वे राक्षस स्वभाव वाले कहा करते हैं कि संसार निराधार है। असत्य तथा बिना भगवान के है अपने आप (नर-मादा के संयोग से) उत्पन्न है। केवल काम (सैक्स) ही इसका कारण है।

❖ गीता अध्याय 16 के श्लोक 9 में कहा है कि राक्षस वति के व्यक्ति मिथ्या ज्ञान का अनुसरण करके ये नष्ट आत्मा (गिरी हुई आत्मा) मंद बुद्धि हैं। वे अपकार (बुरा) करने वाले क्रूरकर्मी (भयंकर कर्म करने वाले) जगत के नाश के लिए ही उत्पन्न होते हैं।

❖ गीता अध्याय 16 का श्लोक 10 - राक्षस वति के व्यक्ति पाखण्ड, मान, मद्य युक्त, मुश्किल से पूर्ण होने वाली इच्छाओं का आश्रय लेकर मोह (अज्ञान) वश मिथ्या सिद्धांतों को ग्रहण करके भ्रष्ट आचरणों को धारण किए हुए घूमा करते हैं।

❖ गीता अध्याय 16 के श्लोक 11 में कहा है कि उन राक्षस स्वभाव के व्यक्तियों का मरने के बाद भी यह स्वभाव समाप्त नहीं होता। असंख्य चिंताओं के आधारित, विषय भोगों में तत्पर रहने वाले इसी को सुख मान कर निश्चय करने वाले होते हैं।

❖ गीता अध्याय 16 के श्लोक 12 में कहा है कि वे राक्षस स्वभाव वाले चाहे वे संत कहलाते हैं, चाहे उनके उपासक या स्वयं ही शास्त्र विधि रहित साधना करने वाले व्यक्ति आशाओं की सैकड़ों फांसियों से बन्धे हुए काम-क्रोध के आश्रित हो कर विषय भोगों के लिए अन्याय पूर्वक धन इक्कट्ठा करने की कोशिश करते हैं तथा भक्ति भी शास्त्र विधि रहित ही करते हैं।

उदाहरणः-- एक समय यह दास (संत रामपाल दास) गुजराज प्रान्त के शहर अहमदाबाद में सत्संग कर रहा था। वहाँ एक व्यक्ति ने सत्संग सुना उस के पश्चात् मुझ दास से दीक्षा प्राप्त की उसने बताया कि यहाँ एक सुप्रसिद्ध सन्त जी का आश्रम है। उस सन्त का शिष्य मेरा रिश्तेदार बना। उस रिश्तेदार को सन्त जी ने कई प्रकार की दवाईयाँ बनाने को कहा। उसने गुरू जी के आदेश से अच्छे वैद्यों की देख-रेख में दवाईयाँ तैयार की। एक प्रकार की दवाई के पैकेट पर 9 रूपये खर्च आए। सन्त जी ने

कहा आप मुझे 5 रूपये प्रति पैकेट दो। मैं इन दवाईयों को परमार्थ में मुफ्त वितरित करूंगा। उस रिश्तेदार ने गुरूदेव की आज्ञा जान कर स्वीकार कर लिया। उस सन्त जी ने उस दवाई का पैकेट 15 रूपये में भक्तों को बेचना शुरू कर दिया। उस दवाई बेचने का कार्य अपने एक निजी सेवक को दिया। जब मेरे रिश्तेदार को पता चला तो सन्त जी के समक्ष विरोध किया तथा कहा तेरे इस अन्याय का भाण्डा फोड़ करूंगा। मेरा तो लाखों का नुक्सान हो गया। आप मालामाल हो रहे हो। उस सन्त ने उसे धमका दिया तथा कहा कि कहीं जुबान खोल दी तो खैर नहीं है। उस के पीछे गुन्डें लगा दिए। हरिद्वार में उस रिश्तेदार पर जानलेवा हमला किया। श्वांस थे, बच गया।

❖ गीता अध्याय 16 के श्लोक 13 का भाव है कि राक्षस स्वभाव वाले कहा करते हैं कि मैंने आज ज्यादा धन प्राप्त किया है। मैं ये कर दूंगा, वह प्राप्त कर लूंगा, मेरे पास इतना धन है, फिर भविष्य में इतना और हो जाएगा।

❖ अध्याय 16 के श्लोक 14 का अर्थ है कि वे राक्षस वति के व्यक्ति कहा करते हैं कि वे शत्रु मेरे द्वारा मार दिए गए हैं। उन दूसरे शत्रुओं को भी मैं मार डालूंगा। मैं भगवान हूँ - मैं सिद्ध, बलवान व सुखी हूँ।

❖ गीता अध्याय 16 का श्लोक 15, 16 :- वे राक्षस स्वभाव के कहा करते हैं कि मैं बड़ा धनी और बड़े कुटुम्ब वाला हूँ। मेरे समान दूसरा कौन है? यज्ञ करूंगा, दान दूंगा, मस्ती करूँगा। इस प्रकार अज्ञान से मोहित अनेक प्रकार से चित वाले मोह जाल में फंसे विषयों में विशेष आसक्त (राक्षस लोग) घोर गंदे नरक में गिरते हैं।

❖ गीता अध्याय 16 श्लोक 17 से 20 तक का भावार्थ है कि जो शास्त्र विधि रहित मनमानी पूजा {तीनों गुणों रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिवजी तथा अन्य निम्न देवों की पूजा करना, पितर पूजना (श्राद्ध निकालना) भूत पूजना (पिण्ड भरवाना, तेरहवीं–सतरहवीं करना), फूल (अस्थियाँ) उठा कर क्रिया कर्म करवाने ले जाना आदि शास्त्र विधि रहित पूजा है, प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तथा 20 से 23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 22 से 25 तक में है} **करने वाले पापियों, घमण्डियों, एक दूसरे की निंदा करने वालों को जो मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने वालों क्रुरकर्मी नीच व्यक्तियों को मैं (ब्रह्म) बार-बार असुर योनियों में डालता हूँ। वे मूर्ख मुझे न प्राप्त होकर अर्थात् मेरे महास्वर्ग में (जो ब्रह्मलोक में बना है) न जाकर क्षणिक सुख स्वर्गादि में भोग कर अति नीच गति को प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर नरक में गिरते हैं। फिर इसी से सम्बन्धित गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में है कि जो व्यक्ति शास्त्र विधि को त्याग कर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण (पूजा) करते हैं वह न तो सुख प्राप्त करता है, न कोई कार्य सिद्ध होता है तथा न ही परमगति को प्राप्त होता है। इसलिए अर्जुन जो भक्ति करने तथा न करने योग्य पूजा विधि है, उनके लिए तो शास्त्र ही प्रमाण हैं। अन्य किसी व्यक्ति विशेष या संत,ऋषि विशेष के द्वारा दिए भक्ति मार्ग को स्वीकार नहीं करना चाहिए, जो शास्त्र विरुद्ध हो।**

।। विकारी प्राणी भक्ति नहीं कर सकते।।

अध्याय 16 के श्लोक 21,22 का भाव है कि काम,क्रोध, लोभ जीव को नरक के द्वार में डालने वाले हैं। जो इनसे रहित है केवल वही परमगति (पूर्णमुक्ति) को प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा नहीं। कबीर साहेब भी प्रमाण देते हैं -

कबीर, कामी क्रोधी लालची, इन से भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा, जाति वर्ण कुल खोय।।

।। शास्त्र विरूद्ध पूजा व्यर्थ ।।

अध्याय 16 के श्लोक 23,24 में कहा है कि जो व्यक्ति शास्त्र विधि को छोड़कर अपनी मन मर्जी से {रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिवजी तथा अन्य देवी-देवों की पूजा, मूर्ती पूजा, पितर पूजा, भूत पूजा, श्राद्ध निकालना, पिण्ड भरवाना, धाम पूजा, गोवर्धन की परिक्रमा करना, तीर्थों के चक्कर लगाना, तप करना, पीपल-जाँटी-तुलसी की पूजा, बिना गुरु के नाम जाप, यज्ञ, दान करना, गुड़गांवा वाली देवी, बेरी वाली, कलकते वाली, सींक पाथरी वाली माता की पूजा, समाध की पूजा, गुगा पीर, जोहड़ वाला बाबा, तिथि पूजा (किसी भी प्रकार का व्रत करना), बाबा श्यामजी की पूजा, हनुमान आदि की पूजा शास्त्र विरूद्ध कहलाती हैं।} पूजा करते हैं, वे न तो सुखी हो सकते, उनको न सिद्धि यानि आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है और न ही उनको मुक्ति प्राप्त होती। इसलिए अर्जुन शास्त्र विधि से करने योग्य कर्म कर जो तेरे लिए शास्त्र ही प्रमाण हैं कि गलत साधना लाभ के स्थान पर हानिकारक होती है।

नोट :- कृपा देखें सीधा तथा उल्टा रोपा गया भक्ति रूपी पौधे का चित्र जिससे शीघ्र संशय समाप्त हो जाएगा। कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
माली सींचे मूल कूँ, फलै फूलै अघाय।।



ब्रह्मा

शिव

विष्णु

गीता अध्याय नं. 15

श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय

डार ब्रह्म
(क्षर पुरुष)

कबीर – अक्षर पुरूष एक पेड़ है
क्षर पुरूष (निरंजन) वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

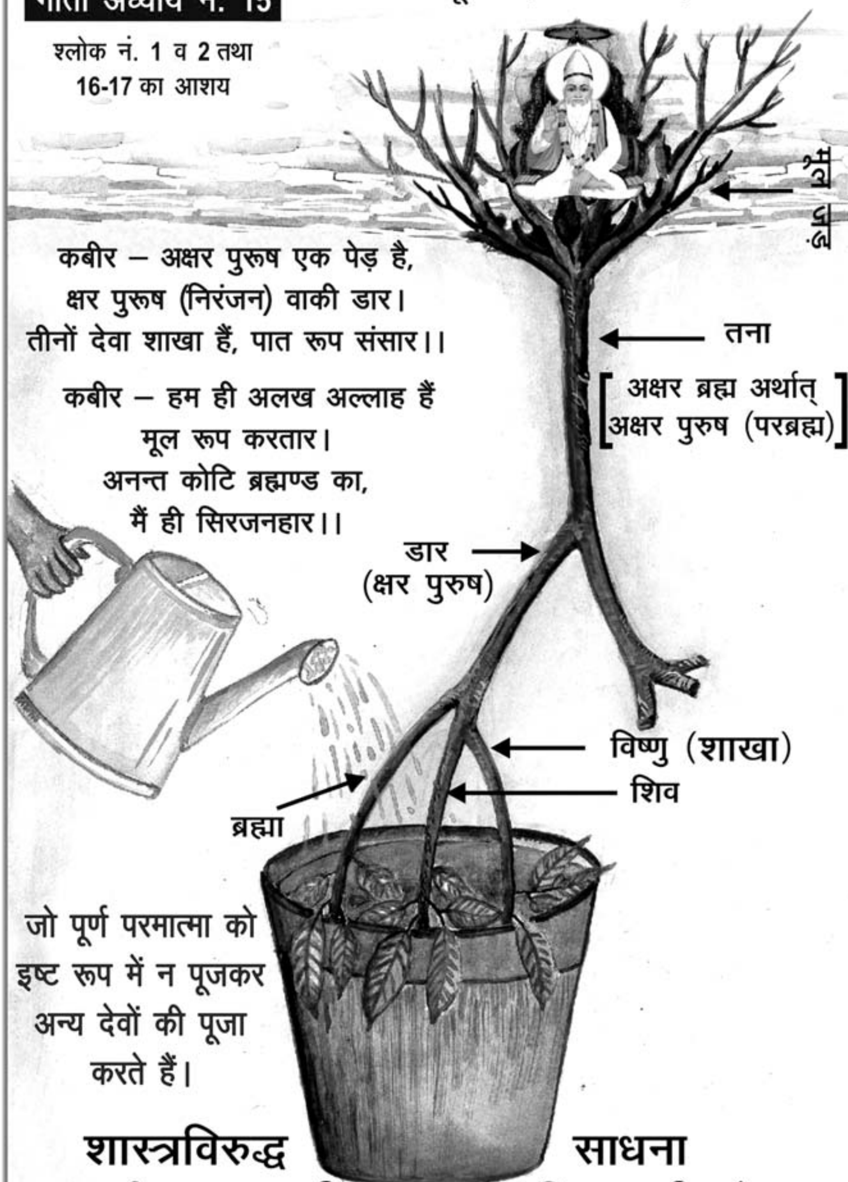
तना
(अक्षर पुरुष परब्रह्म)

कबीर साहेब
(मूल जड़)

कबीर–एकै साधै सब सधै
सब साधै सब जाय।
माली सींचे मूल
कूँ फलै फूलै अघाय।।

शास्त्रानुकूल साधना

अर्थात सीधा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा



गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 व 2 तथा 16-17 का आशय
पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब
मूल जड़
कबीर – अक्षर पुरूष एक पेड़ है,
क्षर पुरूष (निरंजन) वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।
कबीर – हम ही अलख अल्लाह हैं
मूल रूप करतार।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का,
मैं ही सिरजनहार।।
तना
अक्षर ब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष (परब्रह्म)
डार (क्षर पुरुष)
विष्णु (शाखा)
शिव
ब्रह्मा
जो पूर्ण परमात्मा को इष्ट रूप में न पूजकर अन्य देवों की पूजा करते हैं।
शास्त्रविरुद्ध साधना
अर्थात उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा

★ हम संत रामपाल दास जी के सर्व अनुयाई विश्व के मानव को परमात्मा कबीर जी का ज्ञान जो हमारे सतगुरू रामपाल दास जी ने परमात्मा कबीर जी की वाणी से सरल करके व सर्व प्रमाणित ग्रन्थों से प्रमाणित करके बताया है जो पुस्तकों व D.V.D. के माध्यम से बताना चाहते हैं, हम मुफ्त प्रचार सेवा करते हैं। हमारा उद्देश्य परमार्थ है। पुस्तकें व D.V.D. सस्ते दामों में देते हैं जो लागत से आधा होता है। कुछ पुस्तकें मुफ्त भी देते हैं ताकि निर्धन व्यक्ति भी अपना कल्याण करवा सकें।

अब आप कृपया पढ़ें सृष्टि रचना जो परमात्मा कबीर जी ने स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर अपने प्रिय भक्त धर्मदास जी को बताई है। संत रामपाल जी ने सर्व ग्रन्थों से प्रमाणित की है। उन सद्ग्रन्थों से मेल किया है जिसे हिन्दु धर्म के व्यक्ति सत्य मानते हैं। जो ज्ञान आज तक (संत रामपाल जी से पहले) किसी ने स्पष्ट नहीं किया, कोई भी नहीं बता पाया जो अपने सद्ग्रन्थों में लिखा है। इसलिए संत रामपाल जी विश्व में एकमात्र तत्वदर्शी परम संत हैं। मानव को इनका विशेष सम्मान करना चाहिए। इनके परोपकार का धन्यवाद करना चाहिए।

‘‘संक्षिप्त सृष्टि रचना‘‘

यह अमृतवाणी कबीर परमात्मा जी ने सन् 1398-1518 के दौरान बोली थी जिसमें श्री ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी का जन्म तथा इनके माता-पिता का नाम तक बताया था, परंतु हिन्दू धर्म के गुरूजनों ने परमात्मा की सत्य वाणी को समाज के लोगों के सामने झूठी बताया था। उस वाणी को प्रमाणित करने के लिए यह सृष्टि रचना लिखी है जिसमें सब ग्रन्थों का प्रमाण है।

कृपा प्रेमी पाठक पढ़ें निम्न अमृतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारित :-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवोंका भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवनकी उत्पति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि रामका का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारा। साहब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।

सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह संख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उनको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कह रहे हैं कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टि रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टि की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं।

अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़) की, तब दुर्गा (प्रकृति) ने इसके पेट में शरण ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्माण्ड समेत 16 संख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकृति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे

हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?

❖ सबसे पहले सतपुरुष अकेले थे, कोई रचना नहीं थी। सर्वप्रथम परमेश्वर जी ने चार अविनाशी लोक की रचना वचन (शब्द) से की।

1. अनामी लोक जिसको अकह लोक भी कहते हैं।

2. अगम लोक 3. अलख लोक 4. सतलोक।

फिर परमात्मा ने चारों लोकों में चार रुप धारण किए। चार उपमात्मक नामों से प्रत्येक लोक में प्रसिद्ध हुए।

1. अनामी लोक में अनामी पुरुष या अकह पुरुष।
2. अगम लोक में अगम पुरुष।
3. अलख लोक में अलख पुरुष।
4. सतलोक में सतपुरुष उपमात्मक नाम रखे।

फिर चारों लोकों में परमात्मा ने वचन से ही एक-एक सिंहासन (तख्त) बनाया। प्रत्येक सिंहासन पर सम्राट के समान मुकुट आदि धारण करके विराजमान हो गए। फिर सतलोक में परमेश्वर ने अन्य रचना की। एक शब्द (वचन) से 16 द्वीपों तथा एक मानसरोवर की रचना की। पुनः 16 वचन से 16 पुत्रों की उत्पत्ति की। उनमें मुख्य भूमिका अचिन्त, तेज, सहजदास, जोगजीत, कूर्म, इच्छा, धैर्य और ज्ञानी की रही है।

अपने पुत्रों को सबक सिखाने के लिए कि समर्थ के बिना कोई कार्य सफल नहीं हो सकता। जिसका काम उसी को साजे और करे तो मूर्ख बाजे।

सतपुरुष ने अपने पुत्र अचिन्त से कहा कि आप अन्य रचना सतलोक में करें। मैंने कुछ शक्ति तेरे को प्रदान कर दी है। अचिन्त ने अपने वचन से अक्षर पुरुष की उत्पत्ति की। अक्षर पुरुष युवा उत्पन्न हुआ। मानसरोवर में स्नान करने गया, उसी जल पर तैरने लगा। कुछ देर में निंद्रा आ गई। सरोवर में गहरा नीचे चला गया। (सतलोक में अमर शरीर है, वहाँ पर शरीर श्वांसों पर निर्भर नहीं है।) बहुत समय तक अक्षर पुरूष जल से बाहर नहीं आया। अचिन्त आगे सष्टि नहीं कर सका, तब सतपुरुष (परम अक्षर पुरुष) ने मानसरोवर पर जाकर कुछ जल अपनी चुल्लु (हाथ) में लिया। उसका एक विशाल अण्डा वचन से बनाया तथा एक आत्मा वचन से उत्पन्न करके अण्डे में प्रवेश की और अण्डे को जल में छोड़ दिया। जल में अण्डा नीचे जाने लगा तो उसकी गड़गड़ाहट के शोर से अक्षर पुरूष की निंद्रा भंग हो गई। अक्षर पुरुष ने क्रोध से देखा कि किसने मुझे जगा दिया। क्रोध उस अण्डे पर गिरा तो अण्डा फूट गया। उसमें से एक युवा तेजोमय व्यक्ति निकला। उसका नाम क्षर पुरुष रखा। (आगे चलकर यही काल कहलाया) सतपुरुष ने दोनों से कहा कि आप जल से बाहर आओ। अक्षर पुरुष तुम निंद्रा में थे, तेरे को नींद से उठाने के लिए यह सब किया है। अक्षर पुरुष और क्षर पुरुष से सतपुरुष ने कहा कि आप दोनों अचिंत के लोक में रहो।

कुछ समय के पश्चात् (क्षर पुरुष जिसे ज्योति निरंजन काल भी कहते हैं) ने

मन में विचार किया कि हम तीन तो एक लोक में रह रहे हैं। मेरे अन्य भाई एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। यह विचार कर उसने अलग द्वीप प्राप्त करने के लिए तप प्रारम्भ किया।

इससे पहले सतपुरुष जी ने अपने पुत्र अचिन्त से कहा कि आप संष्टि रचना नहीं कर सकते। मैंने तुम्हें यह शिक्षा देने के लिए ही आप से कहा कि अन्य रचना कर। परन्तु अचिन्त आप तो अक्षर पुरुष को भी नहीं उठा सके। अब आगे कोई भी यह कोशिश न करना। सर्व रचना मैं अपनी शब्द शक्ति से रचूँगा।

सतपुरुष जी ने सतलोक में असँख्यों लोक रचे तथा प्रत्येक में अपने वचन (शब्द) से अन्य आत्माओं की उत्पत्ति की। ये सब लोक सतपुरुष के सिंहासन के इर्द-गिर्द थे। इनमें केवल नर हंस (सतलोक में मनुष्यों को हंस कहते हैं) ही रहते हैं और उनको परमेश्वर ने शक्ति दे रखी है कि वे अपना परिवार (नर हंस) वचन से उत्पन्न कर सकते है। वे केवल दो पुत्र ही उत्पन्न कर सकते हैं।

क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने तप करना शुरु किया। उसने 70 युग तक तप किया। सत्पुरुष जी ने क्षर पुरुष से पूछा कि आप तप किसलिए कर रहे हो? क्षर पुरुष ने कहा कि यह स्थान मेरे लिए कम है। मुझे अलग स्थान चाहिए। परमेश्वर (सतपुरुष) जी ने उसे 70 युग के तप के प्रतिफल में 21 ब्रह्माण्ड दे दिए जो सतलोक के बाहरी क्षेत्र में थे जैसे 21 प्लॉट मिल गए हों। ज्योति निरंजन (क्षर पुरुष) ने विचार किया कि इन ब्रह्माण्डों में कुछ रचना भी होनी चहिए। उसके लिए, फिर 70 युग तक तप किया। फिर सतपुरुष जी ने पूछा कि अब क्या चाहता है? क्षर पुरुष ने कहा कि संष्टि रचना की सामग्री देने की कंपा करें। सतपुरुष जी ने उसको पाँच तत्व (जल, पंथ्वी, अग्नि, वायु तथा आकाश) तथा तीन गुण (रजगुण, सतगुण तथा तमगुण) दे दिये तथा कहा कि इनसे अपनी रचना कर।

क्षर पुरूष ने तीसरी बार फिर तप प्रारम्भ किया। जब 64 (चौंसठ) युग तप करते हो गए तो सत्य पुरूष जी ने पूछा कि आप और क्या चाहते हैं? क्षर पुरूष (ज्योति निरंजन) ने कहा कि मुझे कुछ आत्मा दे दो। मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। क्षर पुरूष को आत्मा ऐसे मिली, आगे पढ़ें :-

''हम काल के लोक में कैसे आए ?''

जिस समय क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) एक पैर पर खड़ा होकर तप कर रहा था। तब हम सभी आत्माऐं इस क्षर पुरुष पर आकर्षित हो गए। जैसे जवान बच्चे अभिनेता व अभिनेत्री पर आसक्त हो जाते हैं। लेना एक न देने दो। व्यर्थ में चाहने लग जाते हैं। वे अपनी कमाई करने के लिए नाचते-कूदते हैं। युवा-बच्चे उन्हें देखकर अपना धन नष्ट करते हैं। ठीक इसी प्रकार हम अपने परमपिता सतपुरुष को छोड़कर काल पुरुष (क्षर पुरुष) को हृदय से चाहने लग गए थे। जो परमेश्वर हमें सर्व सुख सुविधा दे रहा था। उससे मुँह मोड़कर इस नकली ड्रामा करने वाले काल ब्रह्म को चाहने लगे। सत पुरुष जी ने बीच-बीच में बहुत बार आकाशवाणी

की कि बच्चो तुम इस काल की क्रिया को मत देखो, मस्त रहो। हम ऊपर से तो सावधान हो गए, परन्तु अन्दर से चाहते रहे। परमेश्वर तो अन्तर्यामी है। इन्होंने जान लिया कि ये यहाँ रखने के योग्य नहीं रहे। काल पुरुष (क्षर पुरुष = ज्योति निरंजन) ने जब दो बार तप करके फल प्राप्त कर लिया तब उसने सोचा कि अब कुछ जीवात्मा भी मेरे साथ रहनी चाहिए। मेरा अकेले का दिल नहीं लगेगा। इसलिए जीवात्मा प्राप्ति के लिए तप करना शुरु किया। 64 युग तक तप करने के पश्चात् परमेश्वर जी ने पूछा कि ज्योति निरंजन अब किसलिए तप कर रहा है? क्षर पुरुष ने कहा कि कुछ आत्माएं प्रदान करो, मेरा अकेले का दिल नहीं लगता। सतपुरुष ने कहा कि तेरे तप के बदले में और ब्रह्माण्ड दे सकता हूं, परन्तु अपनी आत्माएं नहीं दूँगा। ये मेरे शरीर से उत्पन्न हुई हैं। हाँ, यदि वे स्वयं जाना चाहते हैं तो वह जा सकते हैं। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुनकर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेरकर खड़े हो गए। ज्योति निरंजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्माण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्माण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं। यदि पिता जी आज्ञा दें, तब क्षर पुरूष(काल), पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकति देने वाले को आज्ञा दूँगा। क्षर पुरूष तथा परम अक्षर पुरूष (कविर्मितौजा) दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंसात्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता हैं, हाथ ऊपर करके स्वीकति दें। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल(ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्माण्डों में फँसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकति दी है, मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूँगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्माण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्माण्ड सतलोक में ही थे।

तत्पश्चात् पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/प्रकति देवी/दुर्गा) पड़ा तथा सत्यपुरूष ने कहा कि पुत्री मैंने तेरे को शब्द शक्ति प्रदान कर दी है। जितने जीव ब्रह्म कहे आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कर्विदेव (कबीर साहेब) ने अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकति को क्षर पुरूष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सब आत्माओं को प्रवेश कर

दिया है, जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी। इसको वचन शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकृति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कहकर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकृति देवी के साथ अभद्र गतिविधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरू मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकृति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकृति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देखकर सूक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्ण ब्रह्म कविर् देव से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कर्विदेव(कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मृत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरूष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्रणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्माण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्माण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह शंख कोस (एक कोस लगभग 3 कि.मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

विशेष विवरण :- अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरूष, अकालपुरूष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/पुरूष आदि। यह पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्माण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।

2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरूष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात शंख ब्रह्माण्डों का स्वामी है।

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरूष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है जो केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टि के एक ब्रह्माण्ड का परिचय दिया जाएगा जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे:- ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

<u>ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद</u> - एक ब्रह्माण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरूष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकृति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है।

उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है, वह एक ब्रह्माण्ड में केवल तीन लोकों (पथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकिय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है, उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकिय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।

श्री विष्णु पुराण में प्रमाण :- चतुर्थ अंश अध्याय 1 पष्ठ 230-231 पर श्री ब्रह्मा जी ने कहाः- जिस अजन्मा सर्वमय विधाता परमेश्वर का आदि, मध्य, अन्त, स्वरूप, स्वभाव और सार हम नहीं जान पाते। (श्लोक 83)

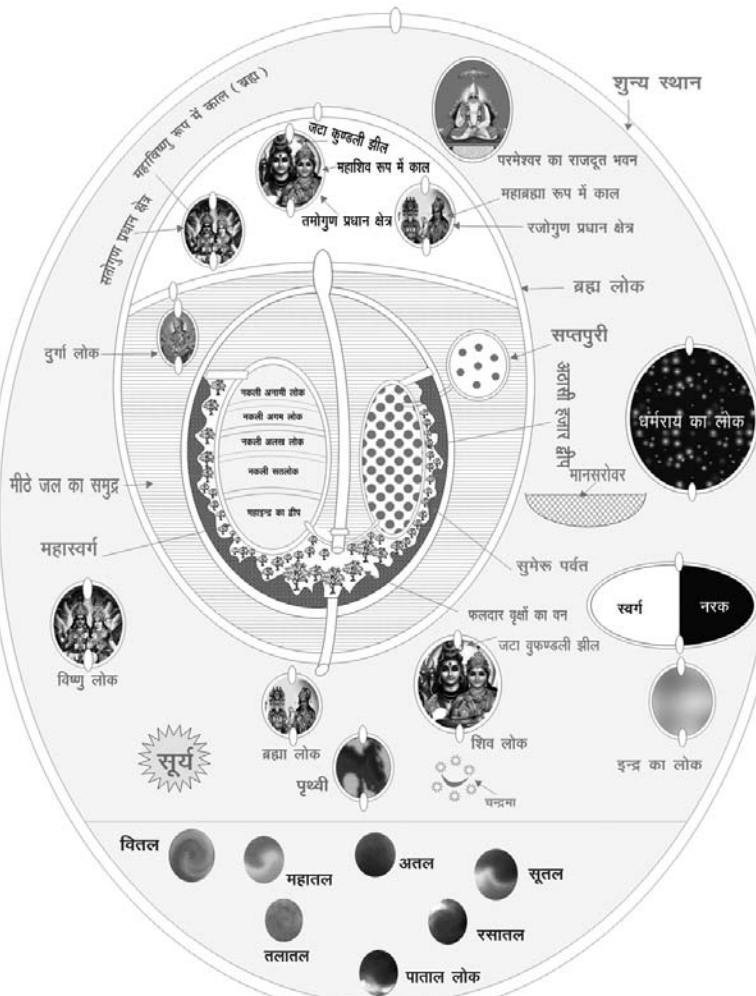
जो मेरा रूप धारण कर संसार की रचना करता है, स्थिति के समय जो पुरूष रूप है तथा जो रूद्र रूप से विश्व का ग्रास कर जाता है, अनन्त रूप से सम्पूर्ण जगत् को धारण करता है। (श्लोक 86)

"श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी की उत्पत्ति"

काल(ब्रह्म) ने प्रकति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाड़ेगा? मनमानी करूँगा। प्रकति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आपकी (ब्रह्म) की अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद मे मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ। मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी, मिल गई। मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मैं मनमानी करूँगा। यह कहकर काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने प्रकति के साथ जबरदस्ती शादी की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त विष्णु जी तथा तमगुण युक्त शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इकट्ठे कर देता है।

(देखें एक ब्रह्माण्ड का लघु चित्र)

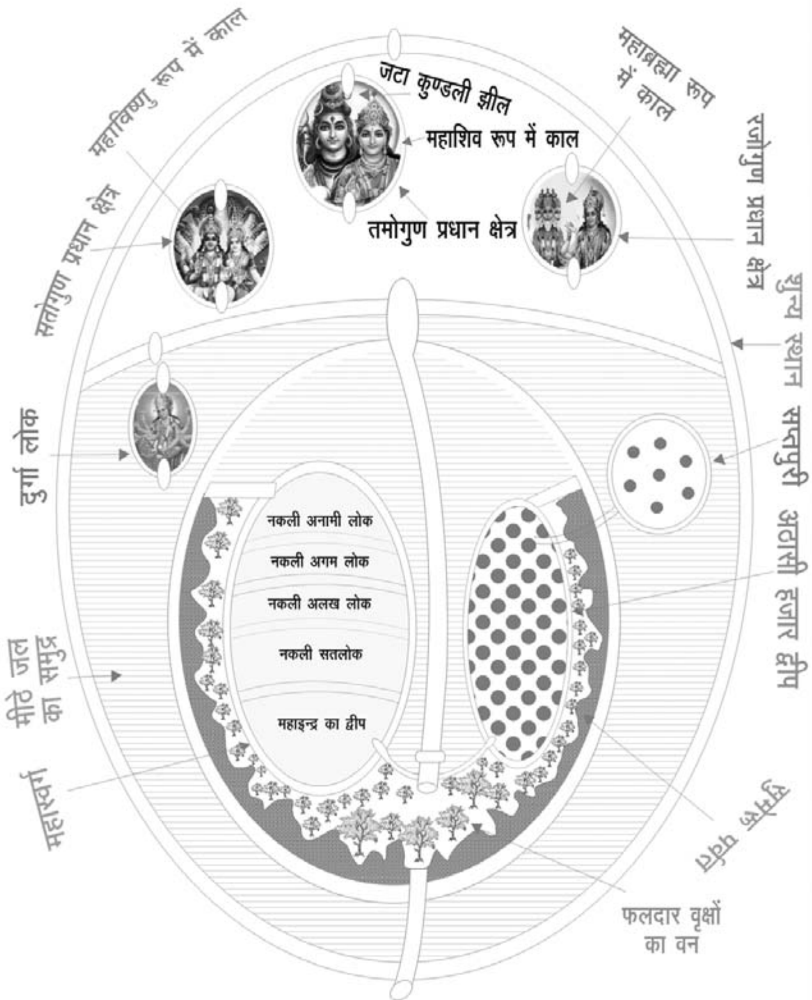
एक ब्रह्माण्ड का लघु चित्र



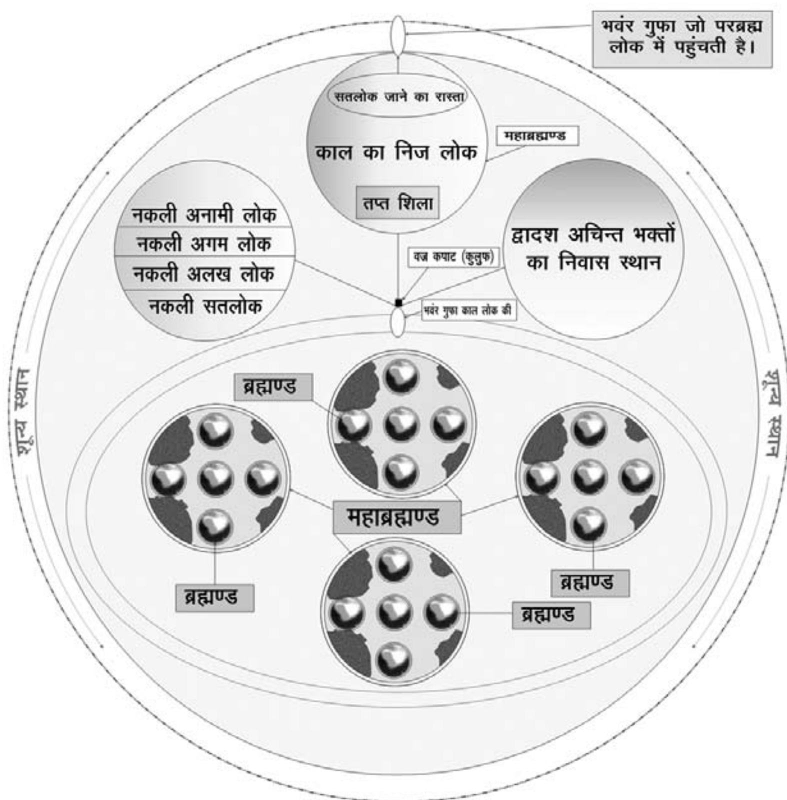
तत्पश्चात् प्रकति (दुर्गा) द्वारा इन तीनों का विवाह कर दिया जाता है तथा एक ब्रह्माण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पथ्वी लोक, तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्माण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है। उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है, वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है। दूसरा स्थान सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरूष स्वयं महाविष्णु रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रखकर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है, उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, विध्वेश्वर संहिता के पष्ठ 24-26 पर जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा महेश्वर से अन्य सदाशिव है तथा रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7,9 पष्ठ नं०. 100 से, 105 तथा 110 पर अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद् देवी महापुराण तीसरा स्कंद पष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता है श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रखकर अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रखकर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार (क्योंकि काल पुरूष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकालकर खाना होता है, उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिघलाकर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) श्री शिव जी द्वारा करवाता है। जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलीन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिंतन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देशभक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म(काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।

(देखें ब्रह्म लोक का लघु चित्र व ज्योति निंरजन (काल) ब्रह्म, के लोक 21 ब्रह्माण्ड का लघु चित्र इसी पुस्तक के पष्ठ 215 व 216 पर)

ब्रह्म लोक का लघु चित्र



ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र



''सम्पूर्ण संष्टि रचना''

(सूक्ष्मवेद से निष्कर्ष रूप संष्टि रचना का वर्णन)

प्रभु प्रेमी आत्माऐं प्रथम बार निम्न संष्टि की रचना को पढेंगे तो ऐसे लगेगा जैसे दन्त कथा हो, परन्तु सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के प्रमाणों को पढ़कर दाँतों तले उँगली दबाऐंगे कि यह वास्तविक अमंत ज्ञान कहाँ छुपा था? कंप्या धैर्य के साथ पढ़ते पढ़ें तथा इस अमंत ज्ञान को सुरक्षित रखें। आप की एक सौ एक पीढ़ी तक काम आएगा। पवित्रात्माऐं कंप्या सत्यनारायण (अविनाशी प्रभु/सतपुरुष) द्वारा रची संष्टि रचना का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।

1. पूर्ण ब्रह्म :- इस संष्टि रचना में सतपुरुष-सतलोक का स्वामी (प्रभु), अलख पुरुष-अलख लोक का स्वामी (प्रभु), अगम पुरुष-अगम लोक का स्वामी (प्रभु) तथा अनामी पुरुष-अनामी अकह लोक का स्वामी (प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, जो वास्तव में अविनाशी प्रभु है जो भिन्न-२ रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्माण्ड आते हैं।

2. परब्रह्म :- यह केवल सात संख ब्रह्माण्ड का स्वामी (प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परन्तु यह तथा इसके ब्रह्माण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।

3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी (प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्माण्ड नाशवान हैं।

(उपरोक्त तीनों पुरूषों (प्रभुओं) का प्रमाण पवित्र श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी है।)

4. ब्रह्मा :- ब्रह्मा इसी ब्रह्म का ज्येष्ठ पुत्र है, विष्णु मध्य वाला पुत्र है तथा शिव अंतिम तीसरा पुत्र है। ये तीनों ब्रह्म के पुत्र केवल एक ब्रह्माण्ड में एक विभाग (गुण) के स्वामी (प्रभु) हैं तथा नाशवान हैं। विस्तंत विवरण के लिए कंप्या पढ़ें निम्न लिखित संष्टि रचना :-

{कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने सूक्ष्मवेद अर्थात् कबिर्बाणी में अपने द्वारा रची संष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया है जो निम्नलिखित है}

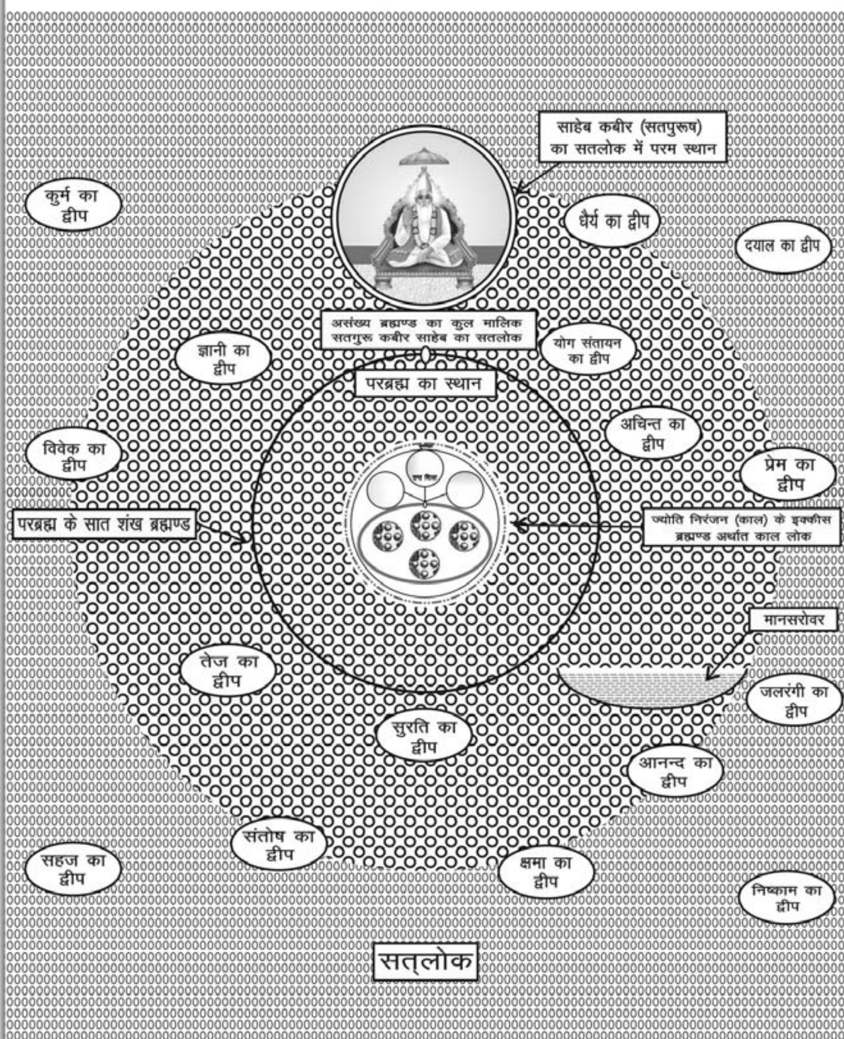
सर्व प्रथम केवल एक स्थान 'अनामी (अनामय) लोक' था। जिसे अकह लोक भी कहा जाता है, पूर्ण परमात्मा उस अनामी लोक में अकेला रहता था। उस परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। सभी आत्माऐं उस पूर्ण धनी के शरीर में समाई हुई थी। इसी कविर्देव का उपमात्मक (पदवी का) नाम अनामी पुरुष है (पुरुष का अर्थ प्रभु होता है। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया है, इसलिए मानव का नाम भी पुरुष ही पड़ा है।) अनामी पुरूष के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश संख सूर्यों की रोशनी से भी अधिक है।

परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का लघु चित्र

अनामी लोक : इस लोक में कबीर साहेब अनामी पुरूष रूप में रहते हैं। यहाँ अकेले हैं।

अगम लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अगम पुरूष रूप में रहते हैं।

अलख लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अलख पुरूष रूप में रहते हैं।



विशेष :- जैसे किसी देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा पद का उपमात्मक (पदवी का) नाम प्रधानमंत्री होता है। कई बार प्रधानमंत्री जी अपने पास कई विभाग भी रख लेते हैं। तब जिस भी विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हैं तो उस समय उसी पद को लिखते हैं। जैसे गृह मंत्रालय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करेगें तो अपने को गृह मंत्री लिखेगें। वहाँ उसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की शक्ति कम होती है। इसी प्रकार कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की रोशनी में अंतर भिन्न-२ लोकों में होता जाता है।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने नीचे के तीन और लोकों (अगमलोक, अलख लोक, सतलोक) की रचना शब्द(वचन) से की। यही पूर्णब्रह्म परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही अगम लोक में प्रकट हुआ तथा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अगम लोक का भी स्वामी है तथा वहाँ इनका उपमात्मक (पदवी का) नाम अगम पुरुष अर्थात् अगम प्रभु है। इसी अगम प्रभु का मानव सदृश शरीर बहुत तेजोमय है जिसके एक रोम (शरीर के बाल) की रोशनी खरब सूर्य की रोशनी से भी अधिक है।

यह पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबिर देव=कबीर परमेश्वर) अलख लोक में प्रकट हुआ तथा स्वयं ही अलख लोक का भी स्वामी है तथा उपमात्मक (पदवी का) नाम अलख पुरुष भी इसी परमेश्वर का है तथा इस पूर्ण प्रभु का मानव सदृश शरीर तेजोमय (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित है। एक रोम (शरीर के बाल) की रोशनी अरब सूर्यों के प्रकाश से भी ज्यादा है।

यही पूर्ण प्रभु सतलोक में प्रकट हुआ तथा सतलोक का भी अधिपति यही है। इसलिए इसी का उपमात्मक (पदवी का) नाम सतपुरुष (अविनाशी प्रभु)है। इसी का नाम अकालमूर्ति - शब्द स्वरूपी राम - पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। इसी सतपुरुष कविर्देव (कबीर प्रभु) का मानव सदृश शरीर तेजोमय है। जिसके एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है।

इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की।

एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की। एक मानसरोवर की रचना की जिसमें अमृत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'', (11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया,

वहाँ आनन्द आया तथा सो गया। लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने उसी मानसरोवर से कुछ अमंत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे में एक आत्मा प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमंत जल में छोड़ा। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। उसने अण्डे को क्रोध से देखा जिस कारण से अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निंरजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। इसका वास्तविक नाम ''कैल'' है। तब सतपुरुष (कविर्देव) ने आकाशवाणी की कि आप दोनों बाहर आओ तथा अचिंत के द्वीप में रहो। आज्ञा पाकर अक्षर पुरुष तथा क्षर पुरुष (कैल) दोनों अचिंत के द्वीप में रहने लगे (बच्चों की नालायकी उन्हीं को दिखाई कि कहीं फिर प्रभुता की तड़फ न बन जाए, क्योंकि समर्थ बिन कार्य सफल नहीं होता) फिर पूर्ण धनी कविर्देव ने सर्व रचना स्वयं की। अपनी शब्द शक्ति से एक राजेश्वरी (राष्ट्री) शक्ति उत्पन्न की, जिससे सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया। इसी को पराशक्ति परानन्दनी भी कहते हैं। पूर्ण ब्रह्म ने सर्व आत्माओं को अपने ही अन्दर से अपनी वचन शक्ति से अपने मानव शरीर सदंश उत्पन्न किया। प्रत्येक हंस आत्मा का परमात्मा जैसा ही शरीर रचा जिसका तेज 16 (सोलह) सूर्यों जैसा मानव सदंश ही है। परन्तु परमेश्वर के शरीर के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी ज्यादा है। बहुत समय उपरान्त क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने सोचा कि हम तीनों (अचिन्त - अक्षर पुरुष - क्षर पुरुष) एक द्वीप में रह रहे हैं तथा अन्य एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। मैं भी साधना करके अलग द्वीप प्राप्त करूँगा। उसने ऐसा विचार करके एक पैर पर खड़ा होकर सत्तर (70) युग तक तप किया।

"आत्माऐं काल के जाल में कैसे फँसी?"

विशेष :- जब ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप कर रहा था हम सभी आत्माऐं, जो आज ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्माण्डों में रहते हैं इसकी साधना पर आसक्त हो गए तथा हृदय से इसे चाहने लगे। अपने सुखदाई प्रभु सत्य पुरूष से विमुख हो गए। जिस कारण से पतिव्रता पद से गिर गए। पूर्ण प्रभु के बार-बार सावधान करने पर भी हमारी आसक्ति क्षर पुरुष से नहीं हटी। {यही प्रभाव आज भी काल संष्टि में विद्यमान है। जैसे नौजवान बच्चे फिल्म स्टारों (अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों) की बनावटी अदाओं तथा अपने रोजगार उद्देश्य से कर रहे भूमिका पर अति आसक्त हो जाते हैं, रोकने से नहीं रूकते। यदि कोई अभिनेता या अभिनेत्री निकटवर्ती शहर में आ जाए तो देखें उन नादान बच्चों की भीड़ केवल दर्शन करने के लिए बहु संख्या में एकत्रित हो जाती हैं। 'लेना एक न देने दो' रोजी रोटी अभिनेता कमा रहे हैं, नौजवान बच्चे लुट रहे हैं। माता–पिता कितना ही समझाऐं किन्तु बच्चे नहीं मानते। कहीं न कहीं, कभी न कभी, लुक–छिप कर जाते ही रहते हैं।}

पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) ने क्षर पुरुष से पूछा कि बोलो क्या चाहते हो?

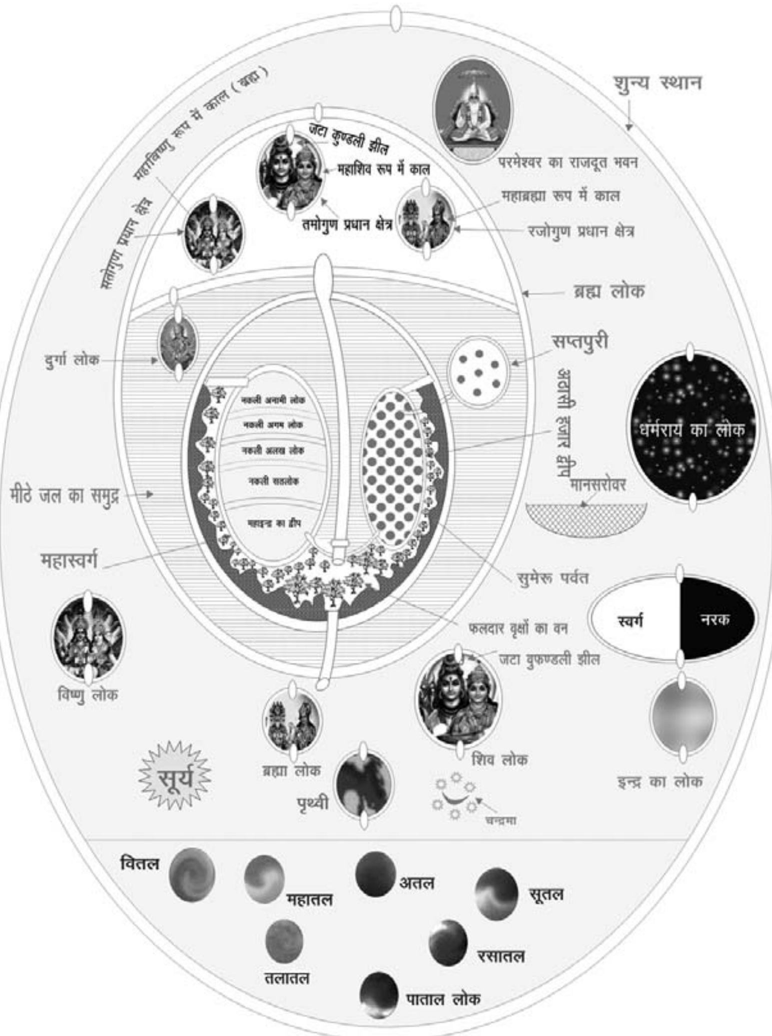
उसने कहा कि पिता जी यह स्थान मेरे लिए कम है, मुझे अलग से द्वीप प्रदान करने की कृपा करें। हक्का कबीर (सत् कबीर) ने उसे 21 (इक्कीस) ब्रह्माण्ड प्रदान कर दिए। कुछ समय उपरान्त ज्योति निरंजन ने सोचा इस में कुछ रचना करनी चाहिए। खाली ब्रह्माण्ड(प्लाट) किस काम के। यह विचार कर 70 युग तप करके पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर प्रभु) से रचना सामग्री की याचना की। सतपुरुष ने उसे तीन गुण तथा पाँच तत्व प्रदान कर दिए, जिससे ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपने ब्रह्माण्डों में कुछ रचना की। फिर सोचा कि इसमें जीव भी होने चाहिए, अकेले का दिल नहीं लगता। यह विचार करके 64 (चौसठ) युग तक फिर तप किया। पूर्ण परमात्मा कविर् देव के पूछने पर बताया कि मुझे कुछ आत्मा दे दो, मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। तब सतपुरुष कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि ब्रह्म तेरे तप के प्रतिफल में मैं तुझे और ब्रह्माण्ड दे सकता हूँ, परन्तु मेरी आत्माओं को किसी भी जप-तप साधना के फल रूप में नहीं दे सकता। हाँ, यदि कोई स्वेच्छा से तेरे साथ जाना चाहे तो वह जा सकता है। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुन कर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। ज्योति निंरजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्माण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्माण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं यदि पिता जी आज्ञा दें तब क्षर पुरुष पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकृति देने वाले को आज्ञा दूंगा। क्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष (कविरमितौजा=कविर अमित औजा यानि जिसकी शक्ति का कोई वार नहीं, वह कबीर) दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंस आत्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता है हाथ ऊपर करके स्वीकृति दे। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकृति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल (ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्माण्डों में फंसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकृति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकृति दी है मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूंगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्माण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्माण्ड सतलोक में ही थे।

तत्पश्चात् पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/ प्रकृति देवी/ दुर्गा) पड़ा तथा सत्य पुरूष ने कहा कि पुत्री मैंने तेरे को शब्द शक्ति प्रदान कर दी है जितने जीव ब्रह्म कहे

आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर साहेब) अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकंति को क्षर पुरुष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सर्व आत्माओं को प्रवेश कर दिया है जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी तथा इसको पिता जी ने वचन शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकंति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कह कर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकंति देवी के साथ अभद्र गति विधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरु मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकंति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकंति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देख सुक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्णब्रह्म कविर् देव से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कविर्देव (कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा कि ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मंत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरुष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्माण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्माण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह संख कोस (एक कोस लगभग 3 कि. मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र



विशेष विवरण - अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरुष, अकालपुरुष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/पुरुष आदि। यह पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्माण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।

2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरुष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात शंख ब्रह्माण्डों का स्वामी है।

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है, जो केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टि के एक ब्रह्माण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद - एक ब्रह्माण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरुष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकृति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है। उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है वह एक ब्रह्माण्ड में केवल तीन लोकों (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकीय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकिय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।

श्री विष्णु पुराण में प्रमाण :- चतुर्थ अंश अध्याय 1 पृष्ठ 230-231 पर श्री ब्रह्मा जी ने कहा :- जिस अजन्मा, सर्वमय विधाता परमेश्वर का आदि, मध्य, अन्त, स्वरूप, स्वभाव और सार हम नहीं जान पाते (श्लोक 83)

जो मेरा रूप धारण कर संसार की रचना करता है, स्थिति के समय जो पुरूष रूप है तथा जो रूद्र रूप से विश्व का ग्रास कर जाता है, अनन्त रूप से सम्पूर्ण जगत् को धारण करता है।(श्लोक 86)

”श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी की उत्पत्ति“

काल (ब्रह्म) ने प्रकृति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाडेगा? मन मानी करूंगा प्रकृति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो, क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आप की (ब्रह्म की) अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद में मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ, मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूंगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी मिल गई, मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मनमानी करूंगा। यह कह कर काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने प्रकृति के साथ जबरदस्ती शादी

की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त - ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त - विष्णु जी तथा तमगुण युक्त - शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इक्ट्ठे कर देता है। तत्पश्चात् प्रकति (दुर्गा) द्वारा इन तीनों का विवाह कर दिया जाता है तथा एक ब्रह्माण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पथ्वी लोक तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री (प्रभु) नियुक्त कर देता है। जैसे श्री ब्रह्मा जी को रजोगुण विभाग का तथा विष्णु जी को सत्तोगुण विभाग का तथा श्री शिव शंकर जी को तमोगुण विभाग का तथा स्वयं गुप्त (महाब्रह्मा - महाविष्णु - महाशिव) रूप से मुख्य मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्माण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है। उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है। दूसरा स्थान सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरुष स्वयं महाविष्णु रूप बना कर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रख कर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, विद्यवेश्वर संहिता पष्ठ 24-26 जिस में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा महेश्वर से अन्य सदाशिव है तथा रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7, 9 पष्ठ नं. 100 से, 105 तथा 110 पर अनुवाद कर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद्देवीमहापुराण तीसरा स्कंद पष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रख कर अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रख कर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार (क्योंकि काल पुरुष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकाल कर खाना होता है उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिंघला कर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) श्री शिव जी द्वारा करवाता है।

जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलिन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे

में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिन्तन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देश भक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म (काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।

''तीनों गुण क्या हैं? प्रमाण सहित''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकंति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पंष्ठ सं. 24 से 26 विद्यवेश्वर संहिता तथा पंष्ठ 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पंष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कंपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मंत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकंति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ ? अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हो। इस संसार की संष्टि-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कंष्ण दास प्रकाशन मुम्बई, इसमें संस्कंत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पंष्ठ 10, श्लोक 42 :-

ब्रह्मा – अहम् ईश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः
के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकंतिः पुराणा। (42)

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकंति तथा सनातनी देवी हो।

पंष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदांऽबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किसलिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया अर्थात् जीवों के जन्म-मंत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित हुआ की रजगुण - ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव है ये तीनों नाशवान है। दुर्गा का पति ब्रह्म (काल) है यह उसके साथ भोग विलास करता है।

"ब्रह्म (काल) की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा"

सूक्ष्मवेद से शेष संष्टि रचना-------

तीनों पुत्रों की उत्पत्ति के पश्चात् ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकति) से कहा मैं प्रतिज्ञा करता हुँ कि भविष्य में मैं किसी को अपने वास्तविक रूप में दर्शन नहीं दूंगा। जिस कारण से मैं अव्यक्त माना जाऊँगा। दुर्गा से कहा कि आप मेरा भेद किसी को मत देना। मैं गुप्त रहूँगा। दुर्गा ने पूछा कि क्या आप अपने पुत्रों को भी दर्शन नहीं दोगे? ब्रह्म ने कहा मैं अपने पुत्रों को तथा अन्य को किसी भी साधना से दर्शन नहीं दूंगा, यह मेरा अटल नियम रहेगा। दुर्गा ने कहा यह तो आपका उत्तम नियम नहीं है जो आप अपनी संतान से भी छुपे रहोगे। तब काल ने कहा दुर्गा मेरी विवशता है। मुझे एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करने का शाप लगा है। यदि मेरे पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को पता लग गया तो ये उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्य नहीं करेंगे। इसलिए यह मेरा अनुत्तम नियम सदा रहेगा। जब ये तीनों कुछ बड़े हो जाऐं तो इन्हें अचेत कर देना। मेरे विषय में नहीं बताना, नहीं तो मैं तुझे भी दण्ड दूंगा, दुर्गा इस डर के मारे वास्तविकता नहीं बताती। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में कहा है कि यह बुद्धिहीन जन समुदाय मेरे अनुत्तम नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी भी किसी के सामने प्रकट नहीं होता अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ। इसलिए मुझ अव्यक्त को मनुष्य रूप में आया हुआ अर्थात् कष्ण मानते हैं।

(अबुद्धयः) बुद्धि हीन (मम्) मेरे (अनुत्तमम्) अनुत्तम अर्थात् घटिया (अव्ययम्) अविनाशी (परम् भावम्) विशेष भाव को (अजानन्तः) न जानते हुए (माम् अव्यक्तम्) मुझ अव्यक्त को (व्यक्तिम्) मनुष्य रूप में (आपन्नम) आया (मन्यन्ते) मानते हैं अर्थात् मैं कष्ण नहीं हूँ। (गीता अध्याय 7 श्लोक 24)

गीता अध्याय 11 श्लोक 47 तथा 48 में कहा है कि यह मेरा वास्तविक काल रूप है। इसके दर्शन अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति न वेदों में वर्णित विधि से, न जप से, न तप से तथा न किसी क्रिया से हो सकती है।

जब तीनों बच्चे युवा हो गए तब माता भवानी (प्रकति, अष्टंगी) ने कहा कि तुम सागर मन्थन करो। प्रथम बार सागर मन्थन किया तो (ज्योति निरंजन ने अपने श्वांसों द्वारा चार वेद उत्पन्न किए। उनको गुप्त वाणी द्वारा आज्ञा दी कि सागर में निवास करो) चारों वेद निकले वह ब्रह्मा ने लिए। वस्तु लेकर तीनों बच्चे माता के पास आए तब माता ने कहा कि चारों वेदों को ब्रह्मा रखे व पढ़े।

नोट :- वास्तव में पूर्णब्रह्म ने, ब्रह्म अर्थात् काल को पाँच वेद प्रदान किए थे। लेकिन ब्रह्म ने केवल चार वेदों को प्रकट किया। पाँचवां वेद छुपा दिया। जो पूर्ण परमात्मा ने स्वयं प्रकट होकर कविर्गिर्भीः अर्थात् कविर्वाणी (कबीर वाणी) द्वारा लोकोक्तियों व दोहों के माध्यम से प्रकट किया है।

दूसरी बार सागर मन्थन किया तो तीन कन्याऐं मिली। माता ने तीनों को बांट दिया। प्रकंति (दुर्गा) ने अपने ही अन्य तीन रूप (सावित्री,लक्ष्मी तथा पार्वती) धारण किए तथा समुन्द्र में छुपा दी। सागर मन्थन के समय बाहर आ गई। वही प्रकंति तीन रूप हुई तथा भगवान ब्रह्मा को सावित्री, भगवान विष्णु को लक्ष्मी, भगवान शंकर को पार्वती पत्नी रूप में दी। तीनों ने भोग विलास किया, सुर तथा असुर दोनों पैदा हुए।

{जब तीसरी बार सागर मन्थन किया तो चौदह रत्न ब्रह्मा को तथा अमंत विष्णु को व देवताओं को, मद्य(शराब) असुरों को तथा विष परमार्थ शिव ने अपने कंठ में ठहराया। यह तो बहुत बाद की बात है।} जब ब्रह्मा वेद पढ़ने लगा तो पता चला कि कोई सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करने वाला कुल का मालिक पुरूष (प्रभु) और है। तब ब्रह्मा जी ने विष्णु जी व शंकर जी को बताया कि वेदों में वर्णन है कि संजनहार कोई और प्रभु है परन्तु वेद कहते हैं कि भेद हम भी नहीं जानते, उसके लिए संकेत है कि किसी तत्वदर्शी संत से पूछो। तब ब्रह्मा माता के पास आया और सब वंतांत कह सुनाया। माता कहा करती थी कि मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं है। मैं ही कर्ता हूँ। मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ परन्तु ब्रह्मा ने कहा कि वेद ईश्वर कंत हैं यह झूठ नहीं हो सकते। दुर्गा ने कहा कि तेरा पिता तुझे दर्शन नहीं देगा, उसने प्रतिज्ञा की हुई है। तब ब्रह्मा ने कहा माता जी अब आप की बात पर अविश्वास हो गया है। मैं उस पुरूष (प्रभु) का पता लगाकर ही रहूँगा। दुर्गा ने कहा कि यदि वह तुझे दर्शन नहीं देगा तो तुम क्या करोगे? ब्रह्मा ने कहा कि मैं आपको शक्ल नहीं दिखाऊँगा। दूसरी तरफ ज्योति निरंजन ने कसम खाई है कि मैं अव्यक्त रहूँगा किसी को दर्शन नहीं दूंगा अर्थात् 21 ब्रह्माण्ड में कभी भी अपने वास्तविक काल रूप में आकार में नहीं आऊँगा।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 24

अव्यक्तम्, व्यक्तिम्, आपन्नम्, मन्यन्ते, माम्, अबुद्धयः।
परम्, भावम्, अजानन्तः, मम, अव्ययम्, अनुत्तमम्।।24।।

अनुवाद : (अबुद्धयः) बुद्धिहीन लोग (मम्) मेरे (अनुतमम्) अश्रेष्ठ (अव्ययम्) अटल (परम्) परम (भावम्) भावको (अजानन्तः) न जानते हुए (अव्यक्तम्) अदंश्यमान (माम्) मुझ कालको (व्यक्तिम्) नर रूप आकार में कंष्ण (आपन्नम्) प्राप्त हुआ (मन्यन्ते) मानते हैं।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 25

न, अहम्, प्रकाशः, सर्वस्य, योगमायासमावंतः।
मूढः, अयम्, न, अभिजानाति, लोकः, माम्, अजम्, अव्ययम्।।25।।

अनुवाद : (अहम्) मैं (योगमाया समावंतः) योगमाय ासे छिपा हुआ (सर्वस्य) सबके (प्रकाशः) प्रत्यक्ष (न) नहीं होता अर्थात् अदंश्य अर्थात् अव्यक्त रहता हूँ। इसलिये (अजम्) जन्म न लेने वाले (अव्ययम्) अविनाशी अटल भाव को (अयम्) यह (मूढः) अज्ञानी (लोकः)

जन समुदाय संसार (माम्) मुझे (न) नहीं (अभिजानाति) जानता अर्थात् मुझको कष्ण समझता है क्योंकि ब्रह्म अपनी शब्द शक्ति से अपने नाना रूप बना लेता है। यह दुर्गा का पति है। इसलिए इस मंत्र में कह रहा है कि मैं श्री कष्ण आदि की तरह दुर्गा से जन्म नहीं लेता।

"ब्रह्मा का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रयत्न"

तब दुर्गा ने ब्रह्मा जी से कहा कि अलख निरंजन तुम्हारा पिता है परन्तु वह तुम्हें दर्शन नहीं देगा। ब्रह्मा ने कहा कि मैं दर्शन करके ही लौटूंगा। माता ने पूछा कि यदि तुझे दर्शन नहीं हुए तो क्या करेगा ? ब्रह्मा ने कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि पिता के दर्शन नहीं हुए तो मैं आपके समक्ष नहीं आऊंगा। यह कह कर ब्रह्मा जी व्याकुल होकर उत्तर दिशा की तरफ चल दिया जहाँ अन्धेरा ही अन्धेरा है। वहाँ ब्रह्मा ने चार युग तक ध्यान लगाया परन्तु कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई। काल ने आकाशवाणी की कि जीव उत्पत्ति क्यों नहीं की? भवानी ने कहा कि आप का ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा जिद्द करके आप की तलाश में गया है। ब्रह्मा के बिना जीव उत्पति का सब कार्य असम्भव है। ब्रह्म (काल) ने कहा उसे वापिस बुला लो। मैं उसे दर्शन नहीं दूँगा। तब दुर्गा (प्रकति) ने अपनी शब्द शक्ति से गायत्री नाम की लड़की उत्पन्न की तथा उसे ब्रह्मा को लौटा लाने को कहा। गायत्री ब्रह्मा जी के पास गई परंतु ब्रह्मा जी समाधि लगाए हुए थे उन्हें कोई आभास ही नहीं था कि कोई आया है। तब आदि कुमारी (प्रकति) ने गायत्री को ध्यान द्वारा बताया कि इस के चरण स्पर्श कर। तब गायत्री ने ऐसा ही किया। ब्रह्मा जी का ध्यान भंग हुआ तो क्रोध वश बोले कि कौन पापिन है जिसने मेरा ध्यान भंग किया है। मैं तुझे शाप दूंगा। गायत्री कहने लगी कि मेरा दोष नहीं है पहले मेरी बात सुनो तब शाप देना। मेरे को माता ने तुम्हें लौटा लाने को कहा है क्योंकि आपके बिना जीव उत्पत्ति नहीं हो सकती। ब्रह्मा ने कहा कि मैं कैसे जाऊँ? पिता जी के दर्शन हुए नहीं, ऐसे जाऊँ तो मेरा उपहास होगा। यदि आप माता जी के समक्ष यह कह दें कि ब्रह्मा को पिता (ज्योति निरंजन) के दर्शन हुए हैं, मैंने अपनी आँखो से देखा है तो मैं आपके साथ चलूं। तब गायत्री ने कहा कि आप मेरे साथ संभोग (सैक्स) करोगे तो मैं आपकी झूठी साक्षी (गवाही) भरूंगी। तब ब्रह्मा ने सोचा कि पिता के दर्शन हुए नहीं, वैसे जाऊँ तो माता के सामने शर्म लगेगी और चारा नहीं दिखाई दिया, फिर गायत्री से रति क्रिया (संभोग) की।

तब गायत्री ने कहा कि क्यों न एक गवाह और तैयार किया जाए। ब्रह्मा ने कहा बहुत ही अच्छा है। तब गायत्री ने शब्द शक्ति से एक लड़की (पुहपवति नाम की) पैदा की तथा उससे दोनों ने कहा कि आप गवाही देना कि ब्रह्मा ने पिता के दर्शन किए हैं। तब पुहपवति ने कहा कि मैं क्यों झूठी गवाही दूँ ? हाँ, यदि ब्रह्मा मेरे से रति क्रिया (संभोग) करे तो गवाही दे सकती हूँ। गायत्री ने ब्रह्मा को समझाया (उकसाया) कि और कोई चारा नहीं है तब ब्रह्मा ने पुहपवति से संभोग किया तो तीनों मिलकर आदि माया (प्रकति) के पास आए। दोनों देवियों ने उपरोक्त शर्त इसलिए रखी थी कि

यदि ब्रह्मा माता के सामने हमारी झूठी गवाही को बता देगा तो माता हमें शॉप दे देगी। इसलिए उसे भी दोषी बना लिया।

(यहाँ महाराज गरीबदास जी कहते हैं कि – ''दास गरीब यह चूक धुरों धुर'')

''माता (दुर्गा) द्वारा ब्रह्मा को शॉप देना''

तब माता ने ब्रह्मा से पूछा क्या तुझे तेरे पिता के दर्शन हुए? ब्रह्मा ने कहा हाँ मुझे पिता के दर्शन हुए हैं। दुर्गा ने कहा साक्षी बता। तब ब्रह्मा ने कहा इन दोनों के समक्ष साक्षात्कार हुआ है। देवी ने उन दोनों लड़कियों से पूछा क्या तुम्हारे सामने ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ है तब दोनों ने कहा कि हाँ, हमने अपनी आँखों से देखा है। फिर भवानी (प्रकंति) को संशय हुआ कि मुझे तो ब्रह्म ने कहा था कि मैं किसी को दर्शन नहीं दूंगा, परन्तु ये कहते हैं कि दर्शन हुए हैं। तब अष्टंगी ने ध्यान लगाया और काल/ज्योति निरंजन से पूछा कि यह क्या कहानी है? ज्योति निंरजन जी ने कहा कि ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब माता ने कहा तुम झूठ बोल रहे हो। आकाशवाणी हुई है कि इन्हें कोई दर्शन नहीं हुए। यह बात सुनकर ब्रह्मा ने कहा कि माता जी मैं सौगंध खाकर पिता की तलाश करने गया था। परन्तु पिता (ब्रह्म) के दर्शन हुए नहीं। आप के पास आने में शर्म लग रही थी। इसलिए हमने झूठ बोल दिया। तब माता (दुर्गा) ने कहा कि अब मैं तुम्हें शाप देती हूँ।

ब्रह्मा को शॉप : -- तेरी पूजा जग में नहीं होगी। आगे तेरे वंशज होंगे वे बहुत पाखण्ड करेंगे। झूठी बात बना कर जग को ठगेंगे। ऊपर से तो कर्म काण्ड करते दिखाई देंगे अन्दर से विकार करेंगे। कथा पुराणों को पढ़कर सुनाया करेंगे, स्वयं को ज्ञान नहीं होगा कि सद्ग्रन्थों में वास्तविकता क्या है, फिर भी मान वश तथा धन प्राप्ति के लिए गुरु बन कर अनुयाइयों को लोकवेद (शास्त्र विरुद्ध दंत कथा) सुनाया करेंगे। देवी-देवों की पूजा करके तथा करवाके, दूसरों की निन्दा करके कष्ट पर कष्ट उठायेंगे। जो उनके अनुयाई होंगे उनको परमार्थ नहीं बताएंगे। दक्षिणा के लिए जगत को गुमराह करते रहेंगे। अपने आपको सबसे अच्छा मानेंगे, दूसरों को नीचा समझेंगे। जब माता के मुख से यह सुना तो ब्रह्मा मुर्छित होकर जमीन पर गिर गया। बहुत समय उपरान्त होश में आया।

गायत्री को शॉप : -- तेरे कई सांड पति होंगे। तू मंतलोक में गाय बनेगी।

पुहपवति को शॉप : -- तेरी जगह गंदगी में होगी। तेरे फूलों को कोई पूजा में नहीं लाएगा। इस झूठी गवाही के कारण तुझे यह नरक भोगना होगा। तेरा नाम केवड़ा केतकी होगा। (हरियाणा में कुसोंधी कहते हैं। यह गंदगी (कुरड़ियों) वाली जगह पर होती है।)

इस प्रकार तीनों को शाप देकर माता भवानी बहुत पछताई। {इस प्रकार पहले तो जीव बिना सोचे मन (काल निरंजन) के प्रभाव से गलत कार्य कर देता है परन्तु जब आत्मा (सतपुरूष अंश) के प्रभाव से उसे ज्ञान होता है तो पीछे पछताना पड़ता है। जिस प्रकार माता-पिता अपने बच्चों को छोटी सी गलती के कारण ताड़ते हैं (क्रोधवश

होकर) परन्तु बाद में बहुत पछताते हैं। यही प्रक्रिया मन (काल-निंरजन) के प्रभाव से सर्व जीवों में क्रियावान हो रही है।} हाँ, यहाँ एक बात विशेष है कि निरंजन (काल-ब्रह्म) ने भी अपना कानून बना रखा है कि यदि कोई जीव किसी दुर्बल जीव को सताएगा तो उसे उसका बदला देना पड़ेगा। जब आदि भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने ब्रह्मा, गायत्री व पुहपवति को शाप दिया तो अलख निंरजन (ब्रह्म-काल) ने कहा कि हे भवानी (प्रकृति/अष्टंगी) यह आपने अच्छा नहीं किया। अब मैं (निरंजन) आपको शाप देता हूँ कि द्वापर युग में तेरे भी पाँच पति होंगे। (द्रोपदी ही आदिमाया का अवतार हुई है।) जब यह आकाश वाणी सुनी तो आदि माया ने कहा कि हे ज्योति निंरजन (काल) मैं तेरे वश पड़ी हूँ जो चाहे सो कर ले।

{सृष्टि रचना में दुर्गा जी के अन्य नामों का बार-बार लिखने का उद्देश्य है कि पुराणों, गीता तथा वेदों में प्रमाण देखते समय भ्रम उत्पन्न नहीं होगा। जैसे गीता अध्याय 14 श्लोक 3-4 में काल ब्रह्म ने कहा है कि प्रकृति तो गर्भ धारण करने वाली सब जीवों की माता है। मैं उसके गर्भ में बीज स्थापित करने वाला पिता हूँ। श्लोक 4 में कहा है कि प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुण जीवात्मा को कर्मों के बँधन में बाँधते हैं।-(लेख समाप्त)। इस प्रकरण में प्रकृति तो दुर्गा है तथा तीनों गुण तीनों देवता यानि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव के सांकेतिक नाम हैं।}

"विष्णु का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रस्थान व माता का आशीर्वाद पाना"

इसके बाद विष्णु से प्रकृति ने कहा कि पुत्र तू भी अपने पिता का पता लगा ले। तब विष्णु अपने पिता जी काल (ब्रह्म) का पता करते-करते पाताल लोक में चले गए, जहाँ शेषनाग था। उसने विष्णु को अपनी सीमा में प्रविष्ट होते देख कर क्रोधित हो कर जहर भरा फुंकारा मारा। उसके विष के प्रभाव से विष्णु जी का रंग सांवला हो गया, जैसे स्प्रे पेंट हो जाता है। तब विष्णु ने चाहा कि इस नाग को मजा चखाना चाहिए। तब ज्योति निरंजन (काल) ने देखा कि अब विष्णु को शांत करना चाहिए। तब आकाशवाणी हुई कि विष्णु अब तू अपनी माता जी के पास जा और सत्य-सत्य सारा विवरण बता देना तथा जो कष्ट आपको शेषनाग से हुआ है, इसका प्रतिशोध द्वापर युग में लेना। द्वापर युग में आप (विष्णु) तो कृष्ण अवतार धारण करोगे और कालीदह में कालिन्द्री नामक नाग, शेष नाग का अवतार होगा।

ऊँच होई के नीच सतावै, ताकर ओएल (बदला) मोही सों पावै।
जो जीव देई पीर पुनी काँहु, हम पुनि ओएल दिवावें ताहूँ।।

तब विष्णु जी माता जी के पास आए तथा सत्य-सत्य कह दिया कि मुझे पिता के दर्शन नहीं हुए। इस बात से माता (प्रकृति) बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि पुत्र तू सत्यवादी है। अब मैं अपनी शक्ति से तेरे पिता से मिलाती हूँ तथा तेरे मन का संशय खत्म करती हूँ।

कबीर, देख पुत्र तोहि पिता भीटाऊँ, तौरे मन का धोखा मिटाऊँ।

मन स्वरूप कर्ता कह जानों, मन ते दूजा और न मानो।
स्वर्ग पाताल दौर मन केरा, मन अस्थीर मन अहै अनेरा।
निंरकार मन ही को कहिए, मन की आस निश दिन रहिए।
देख हूँ पलटि सुन्य मह ज्योति, जहाँ पर झिलमिल झालर होती।।

इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकंति) ने विष्णु से कहा कि मन ही जग का कर्ता है, यही ज्योति निरंजन है। ध्यान में जो एक हजार ज्योतियाँ नजर आती हैं वही उसका रूप है। जो शंख, घण्टा आदि का बाजा सुना, यह महास्वर्ग में निरंजन का ही बज रहा है। तब माता (अष्टंगी, प्रकंति) ने कहा कि हे पुत्र तुम सब देवों के सरताज हो और तेरी हर कामना व कार्य मैं पूर्ण करूंगी। तेरी पूजा सर्व जग में होगी। आपने मुझे सच-सच बताया है। काल के इक्कीस ब्रह्माण्ड़ों के प्राणियों की विशेष आदत है कि अपनी व्यर्थ महिमा बनाता है। जैसे दुर्गा जी श्री विष्णु जी को कह रही है कि तेरी पूजा जग में होगी। मैंने तुझे तेरे पिता के दर्शन करा दिए। दुर्गा ने केवल प्रकाश दिखा कर श्री विष्णु जी को बहका दिया। श्री विष्णु जी भी प्रभु की यही स्थिति अपने अनुयाइयों को समझाने लगे कि परमात्मा का केवल प्रकाश दिखाई देता है। परमात्मा निराकार है। इसके बाद आदि भवानी रूद्र(महेश जी) के पास गई तथा कहा कि महेश तू भी कर ले अपने पिता की खोज तेरे दोनों भाइयों को तो तुम्हारे पिता के दर्शन नहीं हुए उनको जो देना था वह प्रदान कर दिया है अब आप माँगो जो माँगना है। तब महेश ने कहा कि हे जननी ! मेरे दोनों बड़े भाईयों को पिता के दर्शन नहीं हुए फिर प्रयत्न करना व्यर्थ है। कंपा मुझे ऐसा वर दो कि मैं अमर (मंत्युंजय) हो जाऊँ। तब माता ने कहा कि यह मैं नहीं कर सकती। हाँ युक्ति बता सकती हूँ, जिससे तेरी आयु सबसे लम्बी बनी रहेगी। विधि योग समाधि है (इसलिए महादेव जी ज्यादातर समाधि में ही रहते हैं)। इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकंति) ने तीनों पुत्रों को विभाग बांट दिए : --

भगवान ब्रह्मा जी को काल लोक में लख चौरासी के चोले (शरीर) रचने (बनाने) का अर्थात् रजोगुण प्रभावित करके संतान उत्पत्ति के लिए विवश करके जीव उत्पत्ति कराने का विभाग प्रदान किया। भगवान विष्णु जी को इन जीवों के पालन पोषण (कर्मानुसार) करने, तथा मोह-ममता उत्पन्न करके स्थिति बनाए रखने का विभाग दिया।

भगवान शिव शंकर (महादेव) को संहार करने का विभाग प्रदान किया क्योंकि इनके पिता निरंजन को एक लाख मानव शरीर धारी जीव प्रतिदिन खाने पड़ते हैं।

यहाँ पर मन में एक प्रश्न उत्पन्न होगा कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर जी से उत्पत्ति, स्थिति और संहार कैसे होता है। ये तीनों अपने-२ लोक में रहते हैं। जैसे आजकल संचार प्रणाली को चलाने के लिए उपग्रहों को ऊपर आसमान में छोड़ा जाता है और वे नीचे पंथ्वी पर संचार प्रणाली को चलाते हैं। ठीक इसी प्रकार ये तीनों देव जहां भी रहते हैं इनके शरीर से निकलने वाले सूक्ष्म गुण की तरंगें तीनों लोकों में अपने आप हर प्राणी पर प्रभाव बनाए रहती है। उपरोक्त विवरण एक ब्रह्माण्ड में ब्रह्म (काल) की रचना का है। ऐसे-ऐसे क्षर पुरुष (काल) के इक्कीस ब्रह्माण्ड हैं।

परन्तु क्षर पुरूष (काल) स्वयं व्यक्त अर्थात् वास्तविक शरीर रूप में सबके सामने नहीं आता। उसी को प्राप्त करने के लिए तीनों देवों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी, शिव जी) को वेदों में वर्णित विधि अनुसार भरसक साधना करने पर भी ब्रह्म (काल) के दर्शन नहीं हुए। बाद में ऋषियों ने वेदों को पढ़ा। उसमें लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि' (पवित्र यजुर्वेद अ. 1 मंत्र 15) परमेश्वर सशरीर है तथा पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूर् असि'। इस मंत्र में दो बार वेद गवाही दे रहा है कि सर्वव्यापक, सर्वपालन कर्ता सतपुरुष सशरीर है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 8 में कहा है कि (कविर् मनिषी) जिस परमेश्वर की सर्व प्राणियों को चाह है, वह कविर् अर्थात् कबीर है। उसका शरीर बिना नाड़ी (अस्नाविरम्) का है, (शुक्रम्) वीर्य से बनी पाँच तत्व से बनी भौतिक (अकायम्) काया रहित है। वह सर्व का मालिक सर्वोपरि सत्यलोक में विराजमान है, उस परमेश्वर का तेजपुंज का (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित शरीर है जो शब्द रूप अर्थात् अविनाशी है। वही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है जो सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करने वाला (व्यदधाता) सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार (स्वयम्भूः) स्वयं प्रकट होने वाला (यथा तथ्य अर्थान्) वास्तव में (शाश्वत्) अविनाशी है (गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी प्रमाण है।) भावार्थ है कि पूर्ण ब्रह्म का शरीर का नाम कबीर (कविर देव) है। उस परमेश्वर का शरीर नूर तत्व से बना है। परमात्मा का शरीर अति सूक्ष्म है जो उस साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार जीव का भी सुक्ष्म शरीर है जिसके ऊपर पाँच तत्व का खोल (कवर) अर्थात् पाँच तत्व की काया चढ़ी होती है जो माता-पिता के संयोग से (शुक्रम) वीर्य से बनी है। शरीर त्यागने के पश्चात् भी जीव का सुक्ष्म शरीर साथ रहता है। वह शरीर उसी साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार परमात्मा व जीव की स्थिति को समझें। वेदों में ओ३म् नाम के स्मरण का प्रमाण है जो केवल ब्रह्म साधना है। इस उद्देश्य से ओ३म् नाम के जाप को पूर्ण ब्रह्म का मान कर ऋषियों ने भी हजारों वर्ष हठयोग (समाधि लगा कर) करके प्रभु प्राप्ति की चेष्टा की, परन्तु प्रभु दर्शन नहीं हुए, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। उन्हीं सिद्धी रूपी खिलौनों से खेल कर ऋषि भी जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रह गए तथा अपने अनुभव के शास्त्रों में परमात्मा को निराकार लिख दिया। ब्रह्म (काल) ने कसम खाई है कि मैं अपने वास्तविक रूप में किसी को दर्शन नहीं दूँगा। मुझे अव्यक्त जाना करेंगे (अव्यक्त का भावार्थ है कि कोई आकार में है परन्तु व्यक्तिगत रूप से स्थूल रूप में दर्शन नहीं देता। जैसे आकाश में बादल छा जाने पर दिन के समय सूर्य अदृश हो जाता है। वह दृश्यमान नहीं है, परन्तु वास्तव में बादलों के पार ज्यों का त्यों है, इस अवस्था को अव्यक्त कहते हैं।)। (प्रमाण के लिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25, अध्याय 11 श्लोक 48 तथा 32)

पवित्र गीता जी बोलने वाला ब्रह्म (काल) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके कह रहा है कि अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ और सर्व को खाने के लिए

आया हूँ। (गीता अध्याय 11 का श्लोक नं. 32) यह मेरा वास्तविक रूप है, इसको तेरे अतिरिक्त न तो कोई पहले देख सका तथा न कोई आगे देख सकता है अर्थात् वेदों में वर्णित यज्ञ-जप-तप तथा ओ3म् नाम आदि की विधि से मेरे इस वास्तविक स्वरूप के दर्शन नहीं हो सकते। (गीता अध्याय 11 श्लोक नं 48) मैं कृष्ण नहीं हूँ, ये मूर्ख लोग कृष्ण रूप में मुझ अव्यक्त को व्यक्त (मनुष्य रूप) मान रहे हैं। क्योंकि ये मेरे घटिया नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी वास्तविक इस काल रूप में सबके सामने नहीं आता। अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ (गीता अध्याय 7 श्लोक नं. 24-25) विचार करें :- अपने छुपे रहने वाले विधान को स्वयं अश्रेष्ठ (अनुत्तम) क्यों कह रहे हैं?

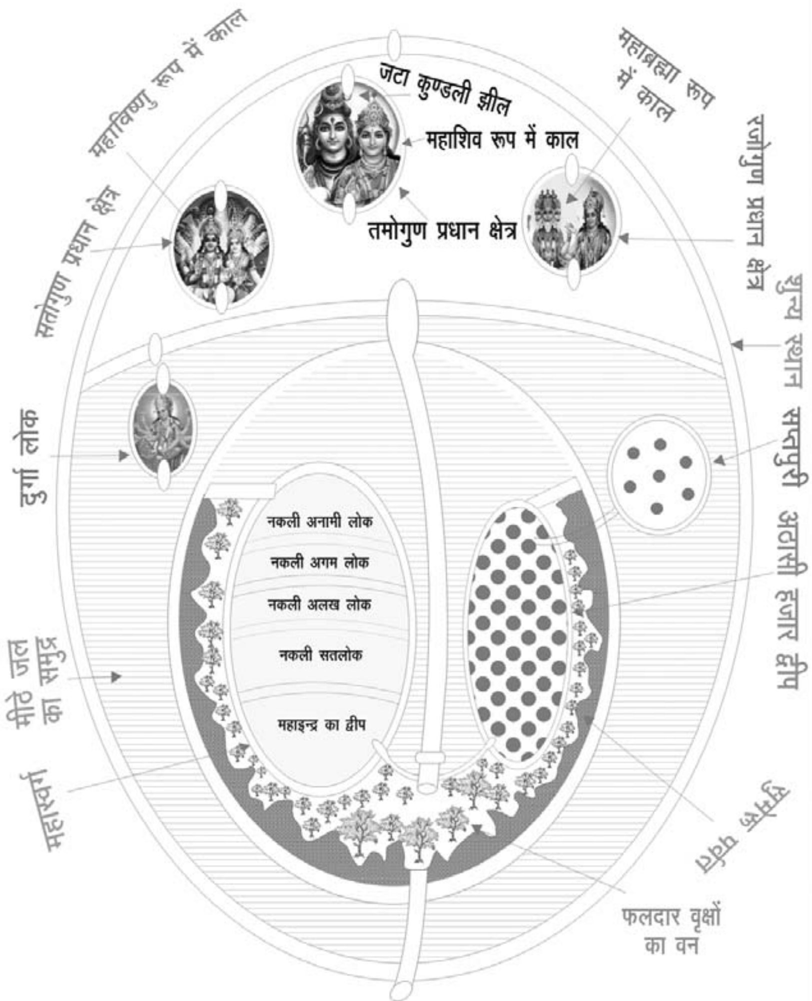
यदि पिता अपनी सन्तान को भी दर्शन नहीं देता तो उसमें कोई त्रुटि है जिस कारण से छुपा है तथा सुविधाएं भी प्रदान कर रहा है। काल (ब्रह्म) को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करना पड़ता है तथा 25 प्रतिशत प्रतिदिन जो ज्यादा उत्पन्न होते हैं उन्हें ठिकाने लगाने के लिए तथा कर्म भोग का दण्ड देने के लिए चौरासी लाख योनियों की रचना की हुई है। यदि सबके सामने बैठ कर किसी की पुत्री, किसी की पत्नी, किसी के पुत्र, माता-पिता को खाएगा तो सर्व को ब्रह्म से घृणा हो जाए तथा जब भी कभी पूर्ण परमात्मा कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) स्वयं आए या अपना कोई संदेशवाहक (दूत) भेंजे तो सर्व प्राणी सत्यभक्ति करके काल के जाल से निकल जाऐं।

इसलिए धोखा देकर रखता है तथा पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 18,24,25 में अपनी साधना से होने वाली मुक्ति (गति) को भी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ कहा है तथा अपने विधान (नियम)को भी (अनुत्तम) अश्रेष्ठ कहा है।

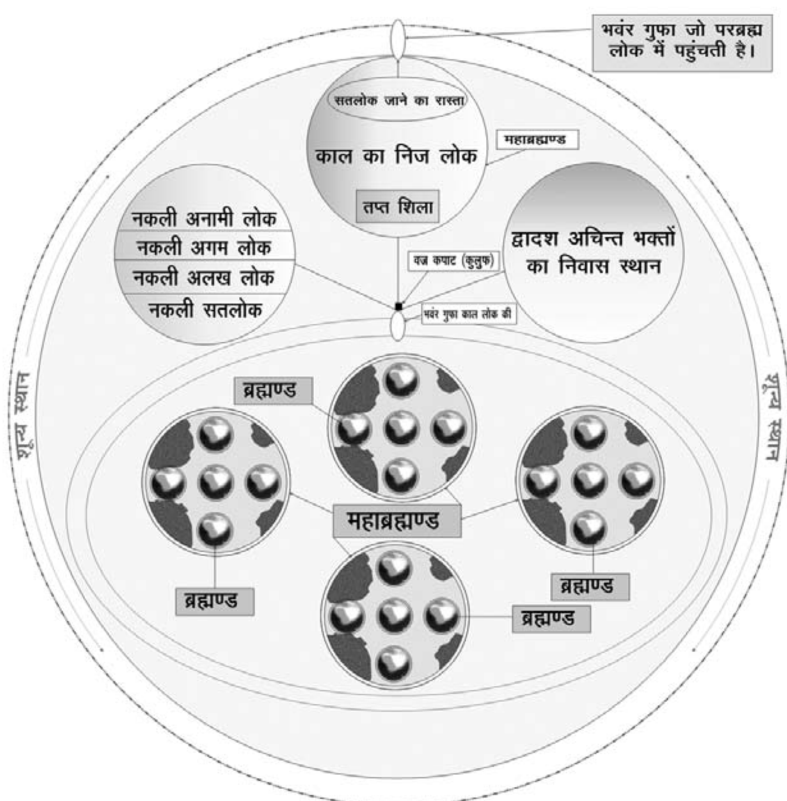
प्रत्येक ब्रह्माण्ड में बने ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बनाया है। महास्वर्ग में एक स्थान पर नकली सतलोक - नकली अलख लोक - नकली अगम लोक तथा नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखा देने के लिए प्रकृति (दुर्गा/आदि माया) द्वारा करवा रखी है। कबीर साहेब का एक शब्द है 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' में वाणी है कि 'काया भेद किया निरवारा, यह सब रचना पिण्ड मंझारा है। माया अविगत जाल पसारा, सो कारीगर भारा है। आदि माया किन्ही चतुराई, झूठी बाजी पिण्ड दिखाई, अविगत रचना रचि अण्ड माहि वाका प्रतिबिम्ब डारा है।'

एक ब्रह्माण्ड में अन्य लोकों की भी रचना है, जैसे श्री ब्रह्मा जी का लोक, श्री विष्णु जी का लोक, श्री शिव जी का लोक। जहाँ पर बैठकर तीनों प्रभु नीचे के तीन लोकों (स्वर्गलोक अर्थात् इन्द्र का लोक - पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) पर एक - एक विभाग के मालिक बन कर प्रभुता करते हैं तथा अपने पिता काल के खाने के लिए प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्यभार संभालते हैं। तीनों प्रभुओं की भी जन्म व मृत्यु होती है। तब काल इन्हें भी खाता है। इसी ब्रह्माण्ड {इसे अण्ड भी कहते हैं क्योंकि ब्रह्माण्ड की बनावट अण्डाकार है, इसे पिण्ड भी कहते हैं क्योंकि शरीर (पिण्ड) में एक ब्रह्माण्ड की रचना कमलों में टी.वी. की तरह

ब्रह्म लोक का लघु चित्र



ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र



देखी जाती है} में एक मानसरोवर तथा धर्मराय (न्यायधीश) का भी लोक है तथा एक गुप्त स्थान पर पूर्ण परमात्मा अन्य रूप धारण करके रहता है जैसे प्रत्येक देश का राजदूत भवन होता है। वहाँ पर कोई नहीं जा सकता। वहाँ पर वे आत्माऐं रहती हैं जिनकी सत्यलोक की भक्ति अधूरी रहती है। जब भक्ति युग आता है तो उस समय परमेश्वर कबीर जी अपना प्रतिनिधी पूर्ण संत सतगुरु भेजते हैं। इन पुण्यात्माओं को पथ्वी पर उस समय मानव शरीर प्राप्त होता है तथा ये शीघ्र ही सत भक्ति पर लग जाते हैं तथा सतगुरु से दीक्षा प्राप्त करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर जाते हैं। उस स्थान पर रहने वाले हंस आत्माओं की निजी भक्ति कमाई खर्च नहीं होती। परमात्मा के भण्डार से सर्व सुविधाऐं उपलब्ध होती हैं। ब्रह्म (काल) के उपासकों की भक्ति कमाई स्वर्ग-महा स्वर्ग में समाप्त हो जाती है क्योंकि इस काल लोक (ब्रह्म लोक) तथा परब्रह्म लोक में प्राणियों को अपना किया कर्मफल ही मिलता है।

क्षर पुरुष (ब्रह्म) ने अपने 20 ब्रह्माण्डों को चार महाब्रह्माण्डों में विभाजित किया है। एक महाब्रह्माण्ड में पाँच ब्रह्माण्डों का समूह बनाया है तथा चारों ओर से अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है तथा चारों महा ब्रह्माण्डों को भी फिर अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड की रचना एक महाब्रह्माण्ड जितना स्थान लेकर की है। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में प्रवेश होते ही तीन रास्ते बनाए हैं। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में भी बांई तरफ नकली सतलोक, नकली अलख लोक, नकली अगम लोक, नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखे में रखने के लिए आदि माया (दुर्गा) से करवाई है तथा दांई तरफ बारह सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म साधकों (भक्तों) को रखता है। फिर प्रत्येक युग में उन्हें अपने संदेश वाहक (सन्त सतगुरू) बनाकर पथ्वी पर भेजता है, जो शास्त्र विधि रहित साधना व ज्ञान बताते हैं तथा स्वयं भी भक्तिहीन हो जाते हैं तथा अनुयाइयों को भी काल जाल में फंसा जाते हैं। फिर वे गुरु जी तथा अनुयाई दोनों ही नरक में जाते हैं। फिर सामने एक ताला (कुलुफ) लगा रखा है। वह रास्ता काल (ब्रह्म) के निज लोक में जाता है। जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) अपने वास्तविक मानव सदश काल रूप में रहता है। इसी स्थान पर एक पत्थर की टुकड़ी तवे के आकार की (चपाती पकाने की लोहे की गोल प्लेट सी होती है) स्वतः गर्म रहती है। जिस पर एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को भूनकर उनमें से गंदगी निकाल कर खाता है। उस समय सर्व प्राणी बहुत पीड़ा अनुभव करते हैं तथा हाहाकार मच जाती है। फिर कुछ समय उपरान्त वे बेहोश हो जाते हैं। जीव मरता नहीं। फिर धर्मराय के लोक में जाकर कर्माधार से अन्य जन्म प्राप्त करते हैं तथा जन्म-मत्यु का चक्कर बना रहता है। उपरोक्त सामने लगा ताला ब्रह्म (काल) केवल अपने आहार वाले प्राणियों के लिए कुछ क्षण के लिए खोलता है। पूर्ण परमात्मा के सत्यनाम व सारनाम से यह ताला स्वयं खुल जाता है। ऐसे काल का जाल पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर साहेब) ने स्वयं ही अपने निजी भक्त धर्मदास जी को समझाया।

"परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों की स्थापना"

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने आगे बताया है कि परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने अपने कार्य में गफलत की क्योंकि यह मानसरोवर में सो गया तथा जब परमेश्वर (मैंनें अर्थात् कबीर साहेब ने) उस सरोवर में अण्डा छोड़ा तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) ने उसे क्रोध से देखा। इन दोनों अपराधों के कारण इसे भी सात संख ब्रह्माण्ड़ों सहित सतलोक से बाहर कर दिया। अन्य कारण अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अपने साथी ब्रह्म (क्षर पुरुष) की विदाई में व्याकुल होकर परमपिता कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की याद भूलकर उसी को याद करने लगा तथा सोचा कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तो बहुत आनन्द मना रहा होगा, वह स्वतंत्र राज्य करेगा, मैं पीछे रह गया तथा अन्य कुछ आत्माऐं जो परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्माण्डों में जन्म-मंत्यु का कर्मदण्ड भोग रही हैं, उन हंस आत्माओं की विदाई की याद में खो गई जो ब्रह्म (काल) के साथ इक्कीस ब्रह्माण्डों में फंसी हैं तथा पूर्ण परमात्मा, सुखदाई कविर्देव की याद भुला दी। परमेश्वर कविर् देव के बार-बार समझाने पर भी आस्था कम नहीं हुई। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने सोचा कि मैं भी अलग स्थान प्राप्त करूं तो अच्छा रहे। यह सोच कर राज्य प्राप्ति की इच्छा से सारनाम का जाप प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार अन्य आत्माओं ने (जो परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों में फंसी हैं) सोचा कि वे जो ब्रह्म के साथ आत्माऐं गई हैं वे तो वहाँ मौज-मस्ती मनाऐंगे, हम पीछे रह गये। परब्रह्म के मन में यह धारणा बनी कि क्षर पुरुष अलग होकर बहुत सुखी होगा। यह विचार कर अन्तरात्मा से भिन्न स्थान प्राप्ति की ठान ली। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने हठ योग नहीं किया, परन्तु केवल अलग राज्य प्राप्ति के लिए सहज ध्यान योग विशेष कसक के साथ करता रहा। अलग स्थान प्राप्त करने के लिए पागलों की तरह विचरने लगा, खाना-पीना भी त्याग दिया। अन्य कुछ आत्माऐं जो पहले काल ब्रह्म के साथ गई आत्माओं के प्रेम में व्याकुल थी, वे अक्षर पुरूष के वैराग्य पर आसक्त होकर उसे चाहने लगी। पूर्ण प्रभु के पूछने पर परब्रह्म ने अलग स्थान माँगा तथा कुछ हंसात्माओं के लिए भी याचना की। तब कविर्देव ने कहा कि जो आत्मा आपके साथ स्वेच्छा से जाना चाहें उन्हें भेज देता हूँ। पूर्ण प्रभु ने पूछा कि कौन हंस आत्मा परब्रह्म के साथ जाना चाहता है, सहमति व्यक्त करे। बहुत समय उपरान्त एक हंस ने स्वीकंति दी, फिर देखा-देखी उन सर्व आत्माओं ने भी सहमति व्यक्त कर दी। सर्व प्रथम स्वीकंति देने वाले हंस को स्त्री रूप बनाया, उसका नाम ईश्वरी माया (प्रकंति सुरति) रखा तथा अन्य आत्माओं को उस ईश्वरी माया में प्रवेश करके अचिन्त द्वारा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) के पास भेजा। (पतिव्रता पद से गिरने की सजा पाई।) कई युगों तक दोनों सात संख ब्रह्माण्डों में रहे, परन्तु परब्रह्म ने दुर्व्यवहार नहीं किया। ईश्वरी माया की स्वेच्छा से अंगीकार किया तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (योनि) बनाई। ईश्वरी देवी की सहमति से संतान उत्पन्न की। इसलिए परब्रह्म के लोक (सात संख ब्रह्माण्डों) में प्राणियों को

तप्तशिला का कष्ट नहीं है तथा वहाँ पशु-पक्षी भी ब्रह्म लोक के देवों से अच्छे चरित्र युक्त हैं। आयु भी बहुत लम्बी है, परन्तु जन्म - मत्यु कर्माधार पर कर्मदण्ड तथा परिश्रम करके ही उदर पूर्ति होती है। स्वर्ग तथा नरक भी ऐसे ही बने हैं। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) को सात संख ब्रह्माण्ड उसके इच्छा रूपी भक्ति ध्यान अर्थात् सहज समाधि विधि से की उस की कमाई के प्रतिफल में प्रदान किये तथा सत्यलोक से भिन्न स्थान पर गोलाकार परिधि में बन्द करके सात संख ब्रह्माण्डों सहित अक्षर ब्रह्म व ईश्वरी माया को निष्कासित कर दिया।

पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) असंख्य ब्रह्माण्डों जो सत्यलोक आदि में हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों का भी प्रभु (मालिक) है अर्थात् परमेश्वर कविर्देव कुल का मालिक है।

श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि के चार-चार भुजाएं तथा 16 कलाएं हैं तथा प्रकति देवी (दुर्गा) की आठ भुजाएं हैं तथा 64 कलाएं हैं। ब्रह्म (क्षर पुरुष) की एक हजार भुजाएं हैं तथा एक हजार कलाएं है तथा इक्कीस ब्रह्माण्ड़ों का प्रभु है। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) की दस हजार भुजाएं हैं तथा दस हजार कला हैं तथा सात संख ब्रह्माण्डों का प्रभु है। पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष अर्थात् सतपुरुष) की असंख्य भुजाएं तथा असंख्य कलाएं हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्ड व परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों सहित असंख्य ब्रह्माण्डों का प्रभु है। प्रत्येक प्रभु अपनी सर्व भुजाओं को समेट कर केवल दो भुजाएं भी रख सकते हैं तथा जब चाहें सर्व भुजाओं को भी प्रकट कर सकते हैं। पूर्ण परमात्मा परब्रह्म के प्रत्येक ब्रह्माण्ड में भी अलग स्थान बनाकर अन्य रूप में गुप्त रहता है। यूं समझो जैसे एक घूमने वाला कैमरा बाहर लगा देते हैं तथा अन्दर टी.वी. (टेलीविजन) रख देते हैं। टी. वी. पर बाहर का सर्व दश्य नजर आता है तथा दूसरा टी.वी. बाहर रख कर अन्दर का कैमरा स्थाई करके रख दिया जाए, उसमें केवल अन्दर बैठे प्रबन्धक का चित्र दिखाई देता है। जिससे सर्व कर्मचारी सावधान रहते हैं।

इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा अपने सतलोक में बैठ कर सर्व को नियंत्रित किए हुए हैं तथा प्रत्येक ब्रह्माण्ड में भी सतगुरु कविर्देव विद्यमान रहते हैं जैसे सूर्य दूर होते हुए भी अपना प्रभाव अन्य लोकों में बनाए हुए है।

“पवित्र अथर्ववेद में सष्टि रचना का प्रमाण”

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 1 :-

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्त्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।

सः बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।। 1।।

ब्रह्म—ज—ज्ञानम्—प्रथमम्—पुरस्त्तात्—विसिमतः—सुरुचः—वेनः—आवः—सः—बुध्न्याः —उपमा—अस्य—विष्ठाः—सतः—च—योनिम्—असतः—च—वि वः

अनुवाद :— (प्रथमम्) प्राचीन अर्थात् सनातन (ब्रह्म) परमात्मा ने (ज) प्रकट होकर (ज्ञानम्) अपनी सूझ—बूझ से (पुरस्त्तात्) शिखर में अर्थात् सतलोक आदि को (सुरुचः)

स्वइच्छा से बड़े चाव से स्वप्रकाशित (विसिमतः) सीमा रहित अर्थात् विशाल सीमा वाले भिन्न लोकों को रचा। उस (वेनः) जुलाहे ने ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर (आवः) सुरक्षित किया (च) तथा (सः) वह पूर्ण ब्रह्म ही सर्व रचना करता है (अस्य) इसलिए उसी (बुध्न्याः) मूल मालिक ने (योनिम्) मूलस्थान सत्यलोक की रचना की है (अस्य) इस के (उपमा) सदंश अर्थात् मिलते जुलते (सतः) अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म के लोक कुछ स्थाई (च) तथा (असतः) क्षर पुरुष के अस्थाई लोक आदि (वि वः) आवास स्थान भिन्न (विष्ठाः) स्थापित किए।

भावार्थ :- पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म (काल) कह रहा है कि सनातन परमेश्वर ने स्वयं अनामय (अनामी) लोक से सत्यलोक में प्रकट होकर अपनी सूझ-बूझ से कपड़े की तरह रचना करके ऊपर के सतलोक आदि को सीमा रहित स्वप्रकाशित अजर - अमर अर्थात् अविनाशी ठहराए तथा नीचे के परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्ड व इनमें छोटी-से छोटी रचना भी उसी परमात्मा ने अस्थाई की है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 2 :-

इयं पित्र्या राष्ट्रयेत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।
तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।।2।।

इयम्—पित्र्या—राष्ट्रि—एतु—अग्रे—प्रथमाय—जनुषे—भुवनेष्ठाः—तस्मा—एतम्—सुरुचम् — हवारमह्यम्—धर्मम्—श्रीणान्तु—प्रथमाय—धास्यवे

अनुवाद :— (इयम्) इसी (पित्र्या) जगतपिता परमेश्वर ने (एतु) इस (अग्रे) सर्वोत्तम् (प्रथमाय) सर्व से पहली माया परानन्दनी (राष्ट्रि) राजेश्वरी शक्ति अर्थात् पराशक्ति जिसे आकर्षण शक्ति भी कहते हैं, को (जनुषे) उत्पन्न करके (भुवनेष्ठाः) लोक स्थापना की (तस्मा) उसी परमेश्वर ने (सुरुचम्) बड़े चाव के साथ स्वेच्छा से (एतम्) इस (प्रथमाय) प्रथम उत्पत्ति की शक्ति अर्थात्। पराशक्ति के द्वारा (ह्वारमह्यम्) एक दूसरे के वियोग को रोकने अर्थात् आकर्षण शक्ति के (श्रीणान्तु) गुरूत्व आकर्षण को परमात्मा ने आदेश दिया सदा रहो उस कभी समाप्त न होने वाले (धर्मम्) स्वभाव से (धास्यवे) धारण करके ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर रोके हुए है।

भावार्थ :- जगतपिता परमेश्वर ने अपनी शब्द शक्ति से राष्ट्री अर्थात् सबसे पहली माया राजेश्वरी उत्पन्न की तथा उसी पराशक्ति के द्वारा एक-दूसरे को आकर्षण शक्ति से रोकने वाले कभी न समाप्त होने वाले गुण से उपरोक्त सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 3 :-

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति।
ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।।3।।

प्र—यः—जज्ञे—विद्वानस्य—बन्धुः—विश्वा—देवानाम्—जनिमा—विवक्ति—ब्रह्मः—ब्रह्मणः— उज्जभार—मध्यात्—निचैः—उच्चैः—स्वधा—अभिः—प्रतस्थौ

अनुवाद :— (प्र) सर्व प्रथम (देवानाम्) देवताओं व ब्रह्माण्डों की (जज्ञे) उत्पति के ज्ञान

को (विद्वानस्य) जिज्ञासु भक्त का (यः) जो (बन्धुः) वास्तविक साथी अर्थात् पूर्ण परमात्मा ही अपने निज सेवक को (जनिमा) अपने द्वारा संजन किए हुए को (विवक्ति) स्वयं ही ठीक–ठीक विस्त्तार पूर्वक बताता है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा ने (मध्यात्) अपने मध्य से अर्थात् शब्द शक्ति से (ब्रह्मः) ब्रह्म–क्षर पुरूष अर्थात् काल को (उज्जभार) उत्पन्न करके (विश्वा) सारे संसार को अर्थात् सर्व लोकों को (उच्चैः) ऊपर सत्यलोक आदि (निचैः) नीचे परब्रह्म व ब्रह्म के सर्व ब्रह्माण्ड (स्वधा) अपनी धारण करने वाली (अभिः) आकर्षण शक्ति से (प्र तस्थौ) दोनों को अच्छी प्रकार स्थित किया।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अपने द्वारा रची संष्टि का ज्ञान तथा सर्व आत्माओं की उत्पत्ति का ज्ञान अपने निजी दास को स्वयं ही सही बताता है कि पूर्ण परमात्मा ने अपने मध्य अर्थात् अपने शरीर से अपनी शब्द शक्ति के द्वारा ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) की उत्पत्ति की तथा सर्व ब्रह्माण्डों को ऊपर सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक आदि तथा नीचे परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्डों को अपनी धारण करने वाली आकर्षण शक्ति से ठहराया हुआ है।

जैसे पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने अपने निजी सेवक अर्थात् सखा श्री धर्मदास जी, आदरणीय गरीबदास जी आदि को अपने द्वारा रची संष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया। उपरोक्त वेद मंत्र भी यही समर्थन कर रहा है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 4

सः हि दिवः सः पंथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्।
महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रजः।।4।।

:–हि–दिवः–स–पंथिव्या–ऋतस्था–मही–क्षेमम्–रोदसी–अकस्भायत्–
महान् –मही–अस्कभायद्–विजातः–धाम्–सदम्–पार्थिवम्–च–रजः

अनुवाद – (सः)उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा ने (हि) निःसंदेह (दिवः) ऊपर के चारों दिव्य लोक जैसे सत्य लोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी अर्थात् अकह लोक अर्थात् दिव्य गुणों युक्त लोकों को (ऋतस्था) सत्य स्थिर अर्थात् अजर–अमर रूप से स्थिर किए (स) उन्हीं के समान (पंथिव्या) नीचे के पंथ्वी वाले सर्व लोकों जैसे परब्रह्म के सात संख तथा ब्रह्म/काल के इक्कीस ब्रह्माण्ड (मही) पंथ्वी तत्व से (क्षेमम्) सुरक्षा के साथ (अस्कभायत्) ठहराया (रोदसी) आकाश तत्व तथा पंथ्वी तत्व दोनों से ऊपर नीचे के ब्रह्माण्डों को{जैसे आकाश एक सुक्ष्म तत्व है, आकाश का गुण शब्द है, पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के लोक शब्द रूप रचे जो तेजपुंज के बनाए हैं तथा नीचे के परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सप्त संख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म/क्षर पुरूष के इक्कीस ब्रह्माण्डों को पंथ्वी तत्व से अस्थाई रचा} (महान्) पूर्ण परमात्मा ने (पार्थिवम्) पंथ्वी वाले (वि) भिन्न–भिन्न (धाम्) लोक (च) और (सदम्) आवास स्थान (मही) पंथ्वी तत्व से (रजः) प्रत्येक ब्रह्माण्ड में छोटे–छोटे लोकों की (जातः) रचना करके (अस्कभायत्) स्थिर किया।

भावार्थ :- ऊपर के चारों लोक सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक, यह तो अजर-अमर स्थाई अर्थात् अविनाशी रचे हैं तथा नीचे के ब्रह्म तथा

परब्रह्म के लोकों को अस्थाई रचना करके तथा अन्य छोटे-छोटे लोक भी उसी परमेश्वर ने रच कर स्थिर किए।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 5

सः बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बंहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट्।
अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः।।5।।

सः–बुध्न्यात्–आष्ट्र–जनुषेः–अभि–अग्रम्–बंहस्पतिः–देवता–तस्य–सम्राट–अहः– यत्–शुक्रम्–ज्योतिषः–जनिष्ट–अथ–द्युमन्तः–वि–वसन्तु–विप्राः

अनुवाद :– (सः) उसी (बुध्न्यात्) मूल मालिक से (अभि–अग्रम्) सर्व प्रथम स्थान पर (आष्ट्र) अष्टँगी माया–दुर्गा अर्थात् प्रकंति देवी (जनुषेः) उत्पन्न हुई क्योंकि नीचे के परब्रह्म व ब्रह्म के लोकों का प्रथम स्थान सतलोक है यह तीसरा धाम भी कहलाता है (तस्य) इस दुर्गा का भी मालिक यही (सम्राट) राजाधिराज (बंहस्पतिः) सबसे बड़ा पति व जगतगुरु (देवता) परमेश्वर है। (यत्) जिस से (अहः) सबका वियोग हुआ (अथ) इसके बाद (ज्योतिषः) ज्योति रूप निरंजन अर्थात् काल के (शुक्रम्) वीर्य अर्थात् बीज शक्ति से (जनिष्ट) दुर्गा के उदर से उत्पन्न होकर (विप्राः) भक्त आत्माएं (वि) अलग से (द्युमन्तः) मनुष्य लोक तथा स्वर्ग लोक में ज्योति निरंजन के आदेश से दुर्गा ने कहा (वसन्तु) निवास करो, अर्थात् वे निवास करने लगी।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के चारों लोकों में से जो नीचे से सबसे प्रथम अर्थात् सत्यलोक में आष्ट्रा अर्थात् अष्टंगी (प्रकंति देवी/दुर्गा) की उत्पत्ति की। यही राजाधिराज, जगतगुरु, पूर्ण परमेश्वर (सतपुरुष) है जिससे सबका वियोग हुआ है। फिर सर्व प्राणी ज्योति निरंजन (काल) के (वीर्य) बीज से दुर्गा (आष्ट्रा) के गर्भ द्वारा उत्पन्न होकर स्वर्ग लोक व पंथ्वी लोक पर निवास करने लगे।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 6

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम।
एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु।।6।।

नूनम्–तत्–अस्य–काव्यः–महः–देवस्य–पूर्व्यस्य–धाम–हिनोति–पूर्वे–विषिते–एष– जज्ञे–बहुभिः–साकम्–इत्था–अर्धे–ससन्–नु।

अनुवाद – (नूनम्) निसंदेह (तत्) वह पूर्ण परमेश्वर अर्थात् तत् ब्रह्म ही (अस्य) इस (काव्यः) भक्त आत्मा जो पूर्ण परमेश्वर की भक्ति विधिवत करता है को वापिस (महः) सर्वशक्तिमान (देवस्य) परमेश्वर के (पूर्व्यस्य) पहले के (धाम) लोक में अर्थात् सत्यलोक में (हिनोति) भेजता है।

(पूर्वे) पहले वाले (विषिते) विशेष चाहे हुए (एष) इस परमेश्वर को व (जज्ञे) संष्टि उत्पति के ज्ञान को जान कर (बहुभिः) बहुत आनन्द (साकम्) के साथ (अर्धे) आधा (ससन्) सोता हुआ (इत्था) विधिवत् इस प्रकार (नु) सच्ची आत्मा से स्तुति करता है।

भावार्थ :- वही पूर्ण परमेश्वर सत्य साधना करने वाले साधक को उसी पहले वाले स्थान (सत्यलोक) में ले जाता है, जहाँ से बिछुड़ कर आए थे। वहाँ उस

वास्तविक सुखदाई प्रभु को प्राप्त करके खुशी से आत्म विभोर होकर मस्ती से स्तुति करता है कि हे परमात्मा असंख्य जन्मों के भूले-भटकों को वास्तविक ठिकाना मिल गया। इसी का प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16 में भी है।

आदरणीय गरीबदास जी को इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) स्वयं सत्यभक्ति प्रदान करके सत्यलोक लेकर गए थे, तब अपनी अमृतवाणी में आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने आँखों देखकर कहाः-

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमकुँ सतगुरु आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

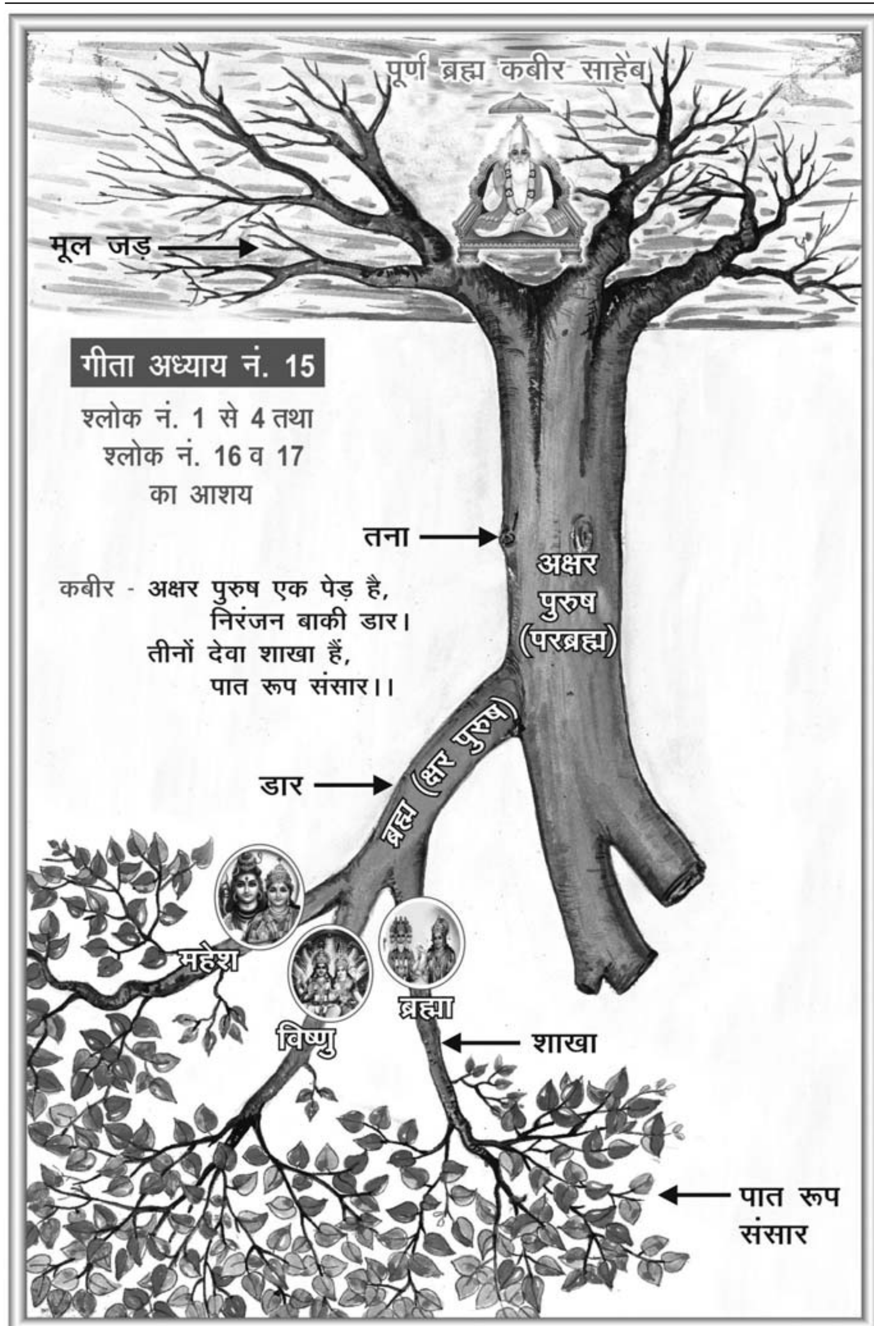
योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः—अथर्वाणम्—पित्तरम्—देवबन्धुम्—बृहस्पतिम्—नमसा—अव—च— गच्छात्—त्वम्—विश्वेषाम्—जनिता—यथा—सः—कविर्देवः—न—दभायत्—स्वधावान्

अनुवाद :— (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) जगतगुरु (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को अर्थात् जिनका पूर्ण मोक्ष हो गया, वे सत्यलोक में जा चुके हैं। उनको सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्माण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्माण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणंम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।



ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष का चित्र

"पवित्र ऋग्वेद में संष्टि रचना का प्रमाण"

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 1

सहस्त्रशीर्षा पुरूषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
स भूमिं विश्वतों वंत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।। 1 ।।

सहस्त्रशिर्षा—पुरूषः—सहस्त्राक्षः—सहस्त्रपात्
स—भूमिम्—विश्वतः—वंत्वा—अत्यातिष्ठत् —दशंगुलम् ।

अनुवाद :— (पुरूषः) विराट रूप काल भगवान अर्थात् क्षर पुरूष (सहस्रशिर्षा) हजार सिरों वाला (सहस्राक्षः) हजार आँखों वाला (सहस्रपात्) हजार पैरों वाला है (स) वह काल (भूमिम्) पंथ्वी वाले इक्कीस ब्रह्माण्डों को (विश्वतः) सब ओर से (दशंगुलम्) दसों अंगुलियों से अर्थात् पूर्ण रूप से काबू किए हुए (वंत्वा) गोलाकार घेरे में घेर कर (अत्यातिष्ठत्) इस से बढ़कर अर्थात् अपने काल लोक में सबसे न्यारा भी इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में ठहरा है अर्थात् रहता है।

भावार्थ :- इस मंत्र में विराट (काल/ब्रह्म) का वर्णन है। (गीता अध्याय 10-11 में भी इसी काल/ब्रह्म का ऐसा ही वर्णन है अध्याय 11 मंत्र नं. 46 में अर्जुन ने कहा है कि हे सहस्राबाहु अर्थात् हजार भुजा वाले आप अपने चतुर्भुज रूप में दर्शन दीजिए।)

जिसके हजारों हाथ, पैर, हजारों आँखे, कान आदि हैं वह विराट रूप काल प्रभु अपने आधीन सर्व प्राणियों को पूर्ण रूप से काबू करके अर्थात् 20 ब्रह्माण्डों को गोलाकार परिधि में रोककर स्वयं इनसे ऊपर (अलग) इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में बैठा है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 2

पुरूष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामंतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।। 2 ।।

पुरूष—एव—इदम्—सर्वम्—यत्—भूतम्—यत्—च—भाव्यम्
उत—अमंतत्वस्य— इशानः—यत्—अन्नेन—अतिरोहति

अनुवाद :— (एव) इसी प्रकार कुछ सही तौर पर (पुरूष) भगवान है वह अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म है (च) और (इदम्) यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत्) जो (भाव्यम्) भविष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत्) प्रयत्न से अर्थात् मेहनत द्वारा (अन्नेन) अन्न से (अतिरोहति) विकसित होता है। यह अक्षर पुरूष भी (उत) सन्देह युक्त (अमंतत्वस्य) मोक्ष का (इशानः) स्वामी है अर्थात् भगवान तो अक्षर पुरूष भी कुछ सही है परन्तु पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है।

भावार्थ :- इस मंत्र में परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का विवरण है जो कुछ भगवान वाले लक्षणों से युक्त है, परन्तु इसकी भक्ति से भी पूर्ण मोक्ष नहीं है, इसलिए इसे संदेहयुक्त मुक्ति दाता कहा है। इसे कुछ प्रभु के गुणों युक्त इसलिए कहा है कि यह काल की तरह तप्तशिला पर भून कर नहीं खाता। परन्तु इस परब्रह्म के लोक

में भी प्राणियों को परिश्रम करके कर्माधार पर ही फल प्राप्त होता है तथा अन्न से ही सर्व प्राणियों के शरीर विकसित होते हैं, जन्म तथा मृत्यु का समय भले ही काल (क्षर पुरुष) से अधिक है, परन्तु फिर भी उत्पत्ति प्रलय तथा चौरासी लाख योनियों में यातना बनी रहती है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 3

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

तावान्—अस्य—महिमा—अतः—ज्यायान्—च—पुरूषः
पादः—अस्य—विश्वा— भूतानि—त्रि—पाद्—अस्य—अमृतम्—दिवि

अनुवाद :— (अस्य) इस अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म की तो (एतावान्) इतनी ही (महिमा) प्रभुता है। (च) तथा (पुरूषः) वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तो (अतः) इससे भी (ज्यायान्) बड़ा है (विश्वा) समस्त (भूतानि) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष तथा इनके लोकों में तथा सत्यलोक तथा इन लोकों में जितने भी प्राणी हैं (अस्य) इस पूर्ण परमात्मा परम अक्षर पुरूष का (पादः) एक पैर है अर्थात् एक अंश मात्र है। (अस्य) इस परमेश्वर के (त्रि) तीन (दिवि) दिव्य लोक जैसे सत्यलोक—अलख लोक—अगम लोक (अमृतम्) अविनाशी (पाद्) दूसरा पैर है अर्थात् जो भी सर्व ब्रह्माण्डों में उत्पन्न है वह सत्यपुरूष पूर्ण परमात्मा का ही अंश या अंग है।

भावार्थ :- इस ऊपर के मंत्र 2 में वर्णित अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की तो इतनी ही महिमा है तथा वह पूर्ण पुरुष कविर्देव तो इससे भी बड़ा है अर्थात् सर्वशक्तिमान है तथा सर्व ब्रह्माण्ड उसी के अंश मात्र पर ठहरे हैं। इस मंत्र में तीन लोकों का वर्णन इसलिए है क्योंकि चौथा अनामी (अनामय) लोक अन्य रचना से पहले का है। यही तीन प्रभुओं (क्षर पुरूष-अक्षर पुरूष तथा इन दोनों से अन्य परम अक्षर पुरूष) का विवरण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक संख्या 16-17 में है {इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास साहेब जी कहते हैं कि:-

गरीब, जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय दादू साहेब जी कह रहे हैं कि :-

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार। दादू दूसरा कोए नहीं, कबीर सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय नानक साहेब जी देते हैं कि :-

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार। हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब, पृष्ठ नं. 721, महला 1, राग तिलंग)

कून करतार का अर्थ होता है सर्व का रचनहार, अर्थात् शब्द शक्ति से रचना करने वाला शब्द स्वरूपी प्रभु, हक्का कबीर का अर्थ है सत् कबीर, करीम का अर्थ दयालु, परवरदिगार का अर्थ परमात्मा है।}

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 4

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्व ङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि ।।4।।

त्रि—पाद—ऊर्ध्वः—उदैत्—पुरूषः—पादः—अस्य—इह—अभवत्—पूनः
ततः— विश्वङ्— व्यक्रामत्—सः—अशनानशने—अभि

अनुवाद :— (पुरूषः) यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् अविनाशी परमात्मा (ऊर्ध्वः) ऊपर (त्रि) तीन लोक जैसे सत्यलोक—अलख लोक—अगम लोक रूप (पाद) पैर अर्थात् ऊपर के हिस्से में (उदैत्) प्रकट होता है अर्थात् विराजमान है (अस्य) इसी परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म का (पादः) एक पैर अर्थात् एक हिस्सा जगत रूप (पुनर्) फिर (इह) यहाँ (अभवत्) प्रकट होता है (ततः) इसलिए (सः) वह अविनाशी पूर्ण परमात्मा (अशनानशने) खाने वाले काल अर्थात् क्षर पुरूष व न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष के भी (अभि)ऊपर (विश्वङ्)सर्वत्र (व्यक्रामत्)व्याप्त है अर्थात् उसकी प्रभुता सर्व ब्रह्माण्डों व सर्व प्रभुओं पर है वह कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है।

भावार्थ :- यही सर्व सष्टि रचन हार प्रभु अपनी रचना के ऊपर के हिस्से में तीनों स्थानों (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) में तीन रूप में स्वयं प्रकट होता है अर्थात् स्वयं ही विराजमान है। यहाँ अनामी लोक का वर्णन इसलिए नहीं किया क्योंकि अनामी लोक में कोई रचना नहीं है तथा अकह (अनामय) लोक शेष रचना से पूर्व का है फिर कहा है कि उसी परमात्मा के सत्यलोक से बिछुड़ कर नीचे के ब्रह्म व परब्रह्म के लोक उत्पन्न होते हैं और वह पूर्ण परमात्मा खाने वाले ब्रह्म अर्थात् काल से (क्योंकि ब्रह्म/काल विराट शाप वश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाता है) तथा न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष से (परब्रह्म प्राणियों को खाता नहीं, परन्तु जन्म-मत्यु, कर्मदण्ड ज्यों का त्यों बना रहता है) भी ऊपर सर्वत्र व्याप्त है अर्थात् इस पूर्ण परमात्मा की प्रभुता सर्व के ऊपर है, कबीर परमेश्वर ही कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है जैसे सूर्य अपने प्रकाश को सर्व के ऊपर फैला कर प्रभावित करता है, ऐसे पूर्ण परमात्मा ने अपनी शक्ति रूपी रेंज (क्षमता) को सर्व ब्रह्माण्डों को नियन्त्रित रखने के लिए छोड़ा हुआ है जैसे मोबाईल फोन का टावर एक देशिय होते हुए अपनी शक्ति अर्थात् मोबाइल फोन की रेंज (क्षमता) चहुं ओर फैलाए रहता है। इसी प्रकार पूर्ण प्रभु ने अपनी निराकार शक्ति सर्व व्यापक की है जिससे पूर्ण परमात्मा सर्व ब्रह्माण्डों को एक स्थान पर बैठ कर नियन्त्रित रखता है।

इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास जी महाराज दे रहे हैं। (अमतवाणी राग कल्याण)

तीन चरण चिन्तामणी साहेब, शेष बदन पर छाए।
माता, पिता, कुल न बन्धु, ना किन्हें जननी जाये।।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 5

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरूषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।5।।

तस्मात्—विराट्—अजायत—विराजः—अधि—पुरूषः

स—जातः—अत्यरिच्यत— पश्चात् —भूमिम्—अथः—पुरः।

अनुवाद :— (तस्मात्) उसके पश्चात् उस परमेश्वर सत्यपुरूष की शब्द शक्ति से (विराट्) विराट अर्थात् ब्रह्म, जिसे क्षर पुरूष व काल भी कहते हैं (अजायत) उत्पन्न हुआ है (पश्चात्) इसके बाद (विराजः) विराट पुरूष अर्थात् काल भगवान से (अधि) बड़े (पुरूषः) परमेश्वर ने (भूमिम्) पंथ्वी वाले लोक, काल ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोक को (अत्यरिच्यत) अच्छी तरह रचा (अथः) फिर (पुरः) अन्य छोटे—छोटे लोक (स) उस पूर्ण परमेश्वर ने ही (जातः) उत्पन्न किया अर्थात् स्थापित किया।

भावार्थ :- उपरोक्त मंत्र 4 में वर्णित तीनों लोकों (अगमलोक, अलख लोक तथा सतलोक) की रचना के पश्चात पूर्ण परमात्मा ने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) की उत्पत्ति की अर्थात् उसी सर्व शक्तिमान परमात्मा पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) से ही विराट अर्थात् ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति हुई। यही प्रमाण गीता अध्याय 3 मन्त्र 15 में है कि अक्षर पुरूष अर्थात् अविनाशी प्रभु से ब्रह्म उत्पन्न हुआ यही प्रमाण अर्थववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 सुक्त 3 में है कि पूर्ण ब्रह्म से ब्रह्म की उत्पत्ति हुई उसी पूर्ण ब्रह्म ने (भूमिम्) भूमि आदि छोटे-बड़े सर्व लोकों की रचना की। वह पूर्णब्रह्म इस विराट भगवान अर्थात् ब्रह्म से भी बड़ा है अर्थात् इसका भी मालिक है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 15

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कंताः।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरूषं पशुम्।।15।।

सप्त—अस्य—आसन्—परिधयः—त्रिसप्त—समिधः—कंताः

देवा—यत्—यज्ञम्— तन्वानाः— अबध्नन्—पुरूषम्—पशुम्।

अनुवाद :— (सप्त) सात संख ब्रह्माण्ड तो परब्रह्म के तथा (त्रिसप्त) इक्कीस ब्रह्माण्ड काल ब्रह्म के (समिधः) कर्मदण्ड दुःख रूपी आग से दुःखी (कंताः) करने वाले (परिधयः) गोलाकार घेरा रूप सीमा में (आसन्) विद्यमान हैं (यत्) जो (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा की (यज्ञम्) विधिवत् धार्मिक कर्म अर्थात् पूजा करता है (पशुम्) बलि के पशु रूपी काल के जाल में कर्म बन्धन में बंधे (देवा) भक्तात्माओं को (तन्वानाः) काल के द्वारा रचे अर्थात् फैलाये पाप कर्म बंधन जाल से (अबध्नन्) बन्धन रहित करता है अर्थात् बन्दी छुड़ाने वाला बन्दी छोड़ है।

भावार्थ :- सात संख ब्रह्माण्ड परब्रह्म के तथा इक्कीस ब्रह्माण्ड ब्रह्म के हैं जिन में गोलाकार सीमा में बंद पाप कर्मों की आग में जल रहे प्राणियों को वास्तविक पूजा विधि बता कर सही उपासना करवाता है जिस कारण से बलि दिए जाने वाले पशु की तरह जन्म-मंत्यु के काल (ब्रह्म) के खाने के लिए तप्त शिला के कष्ट से पीड़ित भक्तात्माओं को काल के कर्म बन्धन के फैलाए जाल को तोड़कर बन्धन रहित करता है अर्थात् बंधन छुड़वाने वाला बन्दी छोड़ है। इसी का प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में है कि कविरंघारिसि (कविर्) कबिर परमेश्वर (अंघ) पाप का (अरि) शत्रु (असि) है अर्थात् पाप विनाशक कबीर है। बम्भारिसि (बम्भारि) बन्धन का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर (असि) है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

यज्ञेन्–अयज्ञम–अ–यजन्त–देवाः–तानि–धर्माणि–प्रथमानि– आसन्–ते–ह–नाकम्– महिमानः– सचन्त– यत्र–पूर्वे–साध्याः–सन्ति देवाः।

अनुवाद :– जो (देवाः) निर्विकार देव स्वरूप भक्तात्माएं (अयज्ञम्) अधूरी गलत धार्मिक पूजा के स्थान पर (यज्ञेन) सत्य भक्ति धार्मिक कर्म के आधार पर (अयजन्त) पूजा करते हैं (तानि) वे (धर्माणि) धार्मिक शक्ति सम्पन्न (प्रथमानि) मुख्य अर्थात् उत्तम (आसन्) हैं (ते ह) वे ही वास्तव में (महिमानः) महान भक्ति शक्ति युक्त होकर (साध्याः) सफल भक्त जन (नाकम्) पूर्ण सुखदायक परमेश्वर को (सचन्त) भक्ति निमित कारण अर्थात् सत्भक्ति की कमाई से प्राप्त होते हैं, वे वहाँ चले जाते हैं। (यत्र) जहाँ पर (पूर्वे) पहले वाली संष्टि के (देवाः) पापरहित देव स्वरूप भक्त आत्माएं (सन्ति) रहती हैं।

भावार्थ :- जो निर्विकार (जिन्होने मांस,शराब, तम्बाकू सेवन करना त्याग दिया है तथा अन्य बुराईयों से रहित है वे) देव स्वरूप भक्त आत्माएं शास्त्र विधि रहित पूजा को त्याग कर शास्त्रानुकूल साधना करते हैं वे भक्ति की कमाई से धनी होकर काल के ऋण से मुक्त होकर अपनी सत्य भक्ति की कमाई के कारण उस सर्व सुखदाई परमात्मा को प्राप्त करते हैं अर्थात् सत्यलोक में चले जाते हैं जहाँ पर सर्व प्रथम रची संष्टि के देव स्वरूप अर्थात् पाप रहित हंस आत्माएं रहती हैं।

जैसे कुछ आत्माएं तो काल (ब्रह्म) के जाल में फंस कर यहाँ आ गई, कुछ परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्माण्डों में आ गई, फिर भी असंख्य आत्माएं जिनका विश्वास पूर्ण परमात्मा में अटल रहा, जो पतिव्रता पद से नहीं गिरी वे वहीं रह गई, इसलिए यहाँ वही वर्णन पवित्र वेदों ने भी सत्य बताया है। यही प्रमाण गीता अध्याय 8 के श्लोक संख्या 8 से 10 में वर्णन है कि जो साधक पूर्ण परमात्मा की सतसाधना शास्त्रविधि अनुसार करता है वह भक्ति की कमाई के बल से उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त होता है अर्थात् उसके पास चला जाता है। इससे सिद्ध हुआ कि तीन प्रभु हैं ब्रह्म - परब्रह्म - पूर्णब्रह्म। इन्हीं को 1. ब्रह्म - ईश - क्षर पुरुष 2. परब्रह्म - अक्षर पुरुष/अक्षर ब्रह्म ईश्वर तथा 3. पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म - परमेश्वर - सतपुरुष आदि पर्यायवाची शब्दों से जाना जाता है।

यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 में स्पष्ट है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है तथा अपना निर्मल ज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान (कविर्गीर्भिः) कबीर वाणी के द्वारा अपने अनुयाइयों को बोल-बोल कर वर्णन करता है। वह कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ब्रह्म (क्षर पुरुष) के धाम तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) के धाम से भिन्न जो पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) का तीसरा ऋतधाम (सतलोक) है, उसमें आकार में विराजमान है तथा सतलोक से चौथा अनामी लोक है, उसमें भी यही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अनामी पुरुष रूप में मनुष्य सदंश आकार में विराजमान है।

''पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में संष्टि रचना का प्रमाण''

''ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के माता—पिता''

(दुर्गा और ब्रह्म के योग से ब्रह्मा, विष्णु और शिव का जन्म)

पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण तीसरा स्कन्द अध्याय 1-3(गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी जी, पंष्ठ नं. 114 से)

पंष्ठ नं. 114 से 118 तक विवरण है कि कितने ही आचार्य भवानी को सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करने वाली बताते हैं। वह प्रकंति कहलाती है तथा ब्रह्म के साथ अभेद सम्बन्ध है। {जैसे पत्नी को अर्धांगनी भी कहते हैं अर्थात् दुर्गा ब्रह्म (काल) की पत्नी है।} एक ब्रह्माण्ड की संष्टि रचना के विषय में राजा श्री परीक्षित के पूछने पर श्री व्यास जी ने बताया कि मैंने श्री नारद जी से पूछा था कि हे देवर्षे ! इस ब्रह्माण्ड की रचना कैसे हुई? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में श्री नारद जी ने कहा कि मैंने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पिता श्री इस ब्रह्माण्ड की रचना आपने की या श्री विष्णु जी इसके रचयिता हैं या शिव जी ने रचा है? सच-सच बताने की कंपा करें।

तब मेरे पूज्य पिता श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद, मैंने अपने आपको कमल के फूल पर बैठा पाया था, मुझे ज्ञान नहीं, इस अगाध जल में मैं कहाँ से उत्पन्न हो गया। एक हजार वर्ष तक पंथ्वी का अन्वेषण करता रहा, कहीं जल का ओर-छोर नहीं पाया। फिर आकाशवाणी हुई कि तप करो। एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर संष्टि करने की आकाशवाणी हुई। इतने में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस आए, उनके भय से मैं कमल का डण्ठल पकड़ कर नीचे उतरा। वहाँ भगवान विष्णु जी शेष शैय्या पर अचेत पड़े थे। उनमें से एक स्त्री (प्रेतवत प्रविष्ट दुर्गा) निकली। वह आकाश में आभूषण पहने दिखाई देने लगी। तब भगवान विष्णु होश में आए। अब मैं तथा विष्णु जी दो थे। इतने में भगवान शंकर भी आ गए। देवी ने हमें विमान में बैठाया तथा ब्रह्म लोक में ले गई। वहाँ एक ब्रह्मा, एक विष्णु तथा एक शिव और देखा फिर एक देवी देखी,उसे देख कर विष्णु जी ने विवेक पूर्वक निम्न वर्णन किया (ब्रह्म काल ने भगवान विष्णु को चेतना प्रदान कर दी, उसको अपने बाल्यकाल की याद आई तब बचपन की कहानी सुनाई)।

पंष्ठ नं. 119-120 पर भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि यह हम तीनों की माता है, यही जगत् जननी प्रकंति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा सा बालक था, यह मुझे पालने में झुला रही थी।

तीसरा स्कंद पंष्ठ नं. 123 पर श्री विष्णु जी ने श्री दुर्गा जी की स्तुति करते हुए कहा - तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उद्भासित हो रहा है, मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर हम सभी तुम्हारी कंपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) और तिरोभाव (मंत्यु) हुआ करता है अर्थात् हम तीनों देव नाशवान हैं, केवल तुम ही नित्य (अविनाशी) हो, जगत जननी हो, प्रकंति देवी हो।

भगवान शंकर बोले - देवी यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो।

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी नाशवान हैं। मत्युंजय (अजर-अमर) व सर्वेश्वर नहीं हैं तथा दुर्गा (प्रकति) के पुत्र हैं तथा ब्रह्म (काल-सदाशिव) इनका पिता है।

तीसरा स्कंद पष्ठ नं. 125 पर ब्रह्मा जी के पूछने पर कि हे माता! वेदों में जो ब्रह्म कहा है वह आप ही हैं या कोई अन्य प्रभु है ? इसके उत्तर में यहाँ तो दुर्गा कह रही है कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं। फिर इसी स्कंद अ. 6 के पष्ठ नं. 129 पर कहा है कि अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिए विमान पर बैठ कर तुम लोग शीघ्र पधारो (जाओ)। कोई कठिन कार्य उपस्थित होने पर जब तुम मुझे याद करोगे, तब मैं सामने आ जाऊँगी। देवताओं मेरा (दुर्गा का) तथा ब्रह्म का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिए। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में तनिक भी संदेह नहीं है।

उपरोक्त व्याख्या से स्वसिद्ध है कि दुर्गा (प्रकति) तथा ब्रह्म (काल) ही तीनों देवताओं के माता-पिता हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु व शिव जी नाशवान हैं व पूर्ण शक्ति युक्त नहीं हैं।

तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) की शादी दुर्गा (प्रकति देवी) ने की। पष्ठ नं. 128-129 पर, तीसरे स्कंद में।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 12

ये, च, एव, सात्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,
मतः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि।।

अनुवाद : (च) और (एव) भी (ये) जो (सात्विकाः) सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति (भावाः) भाव हैं और (ये) जो (राजसाः) रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति (च) तथा (तामसाः) तमोगुण शिव से संहार हैं (तान्) उन सबको तू (मतः,एव) मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं (इति) ऐसा (विद्धि) जान (तु) परन्तु वास्तवमें (तेषु) उनमें (अहम्) मैं और (ते) वे (मयि) मुझमें (न) नहीं हैं।

''पवित्र शिव महापुराण में सष्टि रचना का प्रमाण''

(काल ब्रह्म व दुर्गा से विष्णु, ब्रह्मा व शिव की उत्पत्ति)

इसी का प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पष्ठ नं. 100 पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकति (दुर्गा), त्रिदेव जननी (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता) कहलाई।

जिसकी आठ भुजाऐं हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभू और महेश्वर भी कहते हैं। (पंष्ठ नं. 101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा। (शिव पुराण पंष्ठ नं. 102)

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पंष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकंति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पंष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।

यहाँ पर चार सिद्ध हुए अर्थात् सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकंति (दुर्गा) से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। तीनों भगवानों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।

''पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी में संष्टि रचना का प्रमाण''

इसी का प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 तक है। ब्रह्म (काल) कह रहा है कि प्रकंति (दुर्गा) तो मेरी पत्नी है, मैं ब्रह्म (काल) इसका पति हूँ। हम दोनों के संयोग से सर्व प्राणियों सहित तीनों गुणों (रजगुण - ब्रह्मा जी, सतगुण - विष्णु जी, तमगुण - शिवजी) की उत्पत्ति हुई है। मैं (ब्रह्म) सर्व प्राणियों का पिता हूँ तथा प्रकंति (दुर्गा) इनकी माता है। मैं इसके उदर में बीज स्थापना करता हूँ जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है। प्रकंति (दुर्गा) से उत्पन्न तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) जीव को कर्म आधार से शरीर में बांधते हैं। यही प्रमाण अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16, 17 में भी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित् ।।

अनुवाद : (ऊर्ध्वमूलम्) ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला (अधःशाखम्) नीचे को तीनों गुण अर्थात् रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु व तमगुण शिव रूपी शाखा वाला (अव्ययम्) अविनाशी (अश्वत्थम्) विस्तारित पीपल का वंक्ष है, (यस्य) जिसके (छन्दांसि) जैसे वेद में छन्द है ऐसे संसार रूपी वंक्ष के भी विभाग छोटे–छोटे हिस्से टहनियाँ व (पर्णानि) पत्ते (प्राहुः) कहे हैं (तम्) उस संसाररूप वंक्षको (यः) जो (वेद) इसे विस्तार से जानता है (सः) वह (वेदवित्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसंताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवंद्धाः,
विषयप्रवालाः, अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके ।।

अनुवाद : (तस्य) उस वंक्षकी (अधः) नीचे (च) और (ऊर्ध्वम्) ऊपर (गुणप्रवंद्धाः) तीनों

गुणों ब्रह्मा–रजगुण, विष्णु–सतगुण, शिव–तमगुण रूपी (प्रसता) फैली हुई (विषयप्रवालाः) विकार– काम क्रोध, मोह, लोभ अहंकार रूपी कोपल (शाखाः) डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव (कर्मानुबन्धीनि) जीवको कर्मों में बाँधने की (मूलानि) जड़ें अर्थात् मुख्य कारण हैं (च) तथा (मनुष्यलोके) मनुष्यलोक – अर्थात् पथ्वी लोक में (अधः) नीचे – नरक, चौरासी लाख जूनियों में (ऊर्ध्वम्) ऊपर स्वर्ग लोक आदि में (अनुसन्ततानि) व्यवस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असंगशस्त्रेण, दढेन, छित्वा।।

अनुवाद : (अस्य) इस रचना का (न) नहीं (आदिः) शुरूवात (च) तथा (न) नहीं (अन्तः) अन्त है (न) नहीं (तथा) वैसा (रूपम्) स्वरूप (उपलभ्यते) पाया जाता है (च) तथा (इह) यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी (न) नहीं है (सम्प्रतिष्ठा) क्योंकि सर्वब्रह्माण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है (एनम्) इस (सुविरूढमूलम्) अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला (अश्वत्थम्) मजबूत स्वरूपवाले संसार रूपी वक्ष के ज्ञान को (असंङ्गशस्त्रेण) पूर्ण ज्ञान रूपी (दढेन्) दढ़ सूक्ष्म वेद अर्थात् तत्वज्ञान के द्वारा जानकर (छित्वा) काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक अर्थात् क्षण भंगुर जानकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म से भी आगे पूर्णब्रह्म की तलाश करनी चाहिए।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितव्यम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः,
तम्, एव्, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवतिः, प्रसता, पुराणी।।

अनुवाद : जब तत्वदर्शी संत मिल जाए (ततः) इसके पश्चात् (तत्) उस परमात्मा के (पदम्) पद स्थान अर्थात् सतलोक को (परिमार्गितव्यम्) भली भाँति खोजना चाहिए (यस्मिन्) जिसमें (गताः) गए हुए साधक (भूयः) फिर (न, निवर्तन्ति) लौटकर संसार में नहीं आते (च) और (यतः) जिस परमात्मा–परम अक्षर ब्रह्म से (पुराणी) आदि (प्रवतिः) रचना–सष्टि (प्रसता) उत्पन्न हुई है (तम्) अज्ञात (आद्यम्) आदि यम अर्थात् मैं काल निरंजन (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा की (एव) ही (प्रपद्ये) मैं शरण में हूँ तथा उसी की पूजा करता हूँ।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 16

द्वौ, इमौ, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च, अक्षरः, एव, च,
क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते।।

अनुवाद : (लोके) इस संसारमें (द्वौ) दो प्रकारके (क्षरः) नाशवान् (च) और (अक्षरः) अविनाशी (पुरुषौ) भगवान हैं (एव) इसी प्रकार (इमौ) इन दोनों प्रभुओं के लोकों में (सर्वाणि) सम्पूर्ण (भूतानि) प्राणियों के शरीर तो (क्षरः) नाशवान् (च) और (कूटस्थः) जीवात्मा (अक्षरः) अविनाशी (उच्यते) कहा जाता है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 17

उत्तमः, पुरुषः, तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः,
यः, लोकत्रयम् आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः।।

अनुवाद : (उत्तमः) उत्तम (पुरुषः) प्रभु (तु) तो (अन्यः) उपरोक्त दोनों प्रभुओं ''क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष'' से भी अन्य ही है (इति) यह वास्तव में (परमात्मा) परमात्मा (उदाहृतः) कहा गया है (यः) जो (लोकत्रयम्) तीनों लोकों में (आविश्य) प्रवेश करके (बिभर्ति) सबका धारण पोषण करता है एवं (अव्ययः) अविनाशी (ईश्वरः) ईश्वर (प्रभुओं में श्रेष्ठ अर्थात् समर्थ प्रभु) है।

भावार्थ - गीता ज्ञान दाता प्रभु ने केवल इतना ही बताया है कि यह संसार उल्टे लटके वंक्ष तुल्य जानो। ऊपर जड़ें (मूल) तो पूर्ण परमात्मा है। नीचे टहनीयां आदि अन्य हिस्से जानों। इस संसार रूपी वंक्ष के प्रत्येक भाग का भिन्न-भिन्न विवरण जो संत जानता है वह तत्वदर्शी संत है जिसके विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक नं. 2-3 में केवल इतना ही बताया है कि तीन गुण रूपी शाखा हैं। यहां विचारकाल में अर्थात् गीता में आपको मैं (गीता ज्ञान दाता) पूर्ण जानकारी नहीं दे सकता क्योंकि मुझे इस संसार की रचना के आदि व अंत का ज्ञान नहीं है। उस के लिए गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है कि किसी तत्व दर्शी संत से उस पूर्ण परमात्मा का ज्ञान जानों इस गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में उस तत्वदर्शी संत की पहचान बताई है कि वह संसार रूपी वंक्ष के प्रत्येक भाग का ज्ञान कराएगा। उसी से पूछो। गीता अध्याय 15 के श्लोक 4 में कहा है कि उस तत्वदर्शी संत के मिल जाने के पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए अर्थात् उस तत्वदर्शी संत के बताए अनुसार साधना करनी चाहिए जिससे पूर्ण मोक्ष (अनादि मोक्ष) प्राप्त होता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट किया है कि तीन प्रभु हैं एक क्षर पुरूष (ब्रह्म) दूसरा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) तीसरा परम अक्षर पुरूष (पूर्ण ब्रह्म)। क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष वास्तव में अविनाशी नहीं हैं। वह अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य ही है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है।

उपरोक्त श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में यह प्रमाणित हुआ कि उल्टे लटके हुए संसार रूपी वंक्ष की मूल अर्थात् जड़ तो परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म है जिससे पूर्ण वंक्ष का पालन होता है तथा वंक्ष का जो हिस्सा पंथ्वी के तुरन्त बाहर जमीन के साथ दिखाई देता है वह तना होता है उसे अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म जानों। उस तने से ऊपर चल कर अन्य मोटी डार निकलती है उनमें से एक डार को ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष जानों तथा उसी डार से अन्य तीन शाखाएं निकलती हैं उन्हें ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जानों तथा शाखाओं से आगे पत्ते रूप में सांसारिक प्राणी जानों। उपरोक्त गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट है कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तथा इन दोनों के लोकों में जितने प्राणी हैं उनके स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है अर्थात् उपरोक्त दोनों प्रभु व इनके अन्तर्गत सर्व प्राणी नाशवान हैं। भले ही अक्षर पुरुष (परब्रह्म) को अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य है। वह तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका पालन-पोषण करता है। उपरोक्त विवरण में तीन प्रभुओं का भिन्न-भिन्न विवरण दिया है।

"पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुरान शरीफ में संष्टि रचना का प्रमाण"

इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुरान शरीफ में भी है।

कुरान शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है संष्टि रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है।

पवित्र बाईबल (उत्पत्ति ग्रन्थ पंष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :– प्राणी और मनुष्य :

अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की संष्टि की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, (माँस खाना नहीं कहा है।)

सातवां दिन :– विश्राम का दिन :

परमेश्वर ने छः दिन में सर्व संष्टि की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदंश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व संष्टि की रचना की तथा फिर विश्राम किया।

पवित्र कुरान शरीफ (सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)

आयत 52 :– फला तुतिअल् – काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा (कबीरन्)।।52।

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर ! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी–देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुरान के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना (लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :– व तवक्कल् अलल् – हरिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा (कबीरा)।।58।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी (पवित्र महिमा) का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह (कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।

आयत 59 :– अल्ल्जी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्(कबीरन्)।।59।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुरान शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व सष्टि की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो (बैठ) गया। उसके विषय में जानकारी किसी (बाखबर) तत्वदर्शी संत से पूछो

उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो, मैं नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मों (ईसाई तथा मुसलमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व सष्टि रचनहार, सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू भी कहते हैं।

आदरणीय धर्मदास जी ने पूज्य कबीर प्रभु से पूछा कि हे सर्वशक्तिमान ! आज तक यह तत्वज्ञान किसी ने नहीं बताया, वेदों के मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी नहीं बताया। इससे सिद्ध है कि चारों पवित्र वेद तथा चारों पवित्र कतेब (कुरान शरीफ आदि) झूठे हैं। पूर्ण परमात्मा ने कहा :-

कबीर, बेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहिं।

भावार्थ है कि चारों पवित्र वेद (ऋग्वेद - अथर्ववेद - यजुर्वेद - सामवेद) तथा पवित्र चारों कतेब (कुरान शरीफ - जबूर - तौरात - इंजिल) गलत नहीं हैं। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।

”पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमतवाणी में सष्टि रचना“

विशेष :- निम्न अमतवाणी सन् 1403 से {जब पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) लीलामय शरीर में पाँच वर्ष के हुए} सन् 1518 {जब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए} के बीच में लगभग 600 वर्ष पूर्व परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी द्वारा अपने निजी सेवक (दास भक्त) आदरणीय धर्मदास साहेब जी को सुनाई थी तथा धनी धर्मदास साहेब जी ने लिपिबद्ध की थी। परन्तु उस समय के पवित्र हिन्दुओं तथा पवित्र मुसलमानों के नादान गुरुओं (नीम-हकीमों) ने कहा कि यह धाणक (जुलाहा) कबीर झूठा है। किसी भी सद् ग्रन्थ में श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता का नाम नहीं है। ये तीनों प्रभु अविनाशी हैं इनका जन्म मत्यु नहीं होता। न ही पवित्र वेदों व पवित्र कुरान शरीफ आदि में कबीर परमेश्वर का प्रमाण है तथा परमात्मा को निराकार लिखा है। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। भोली आत्माओं ने उन विचक्षणों (चतुर गुरुओं) पर विश्वास कर लिया कि सचमुच यह कबीर धाणक तो अशिक्षित है तथा गुरु जी शिक्षित हैं, सत्य कह रहे होंगे। आज वही सच्चाई प्रकाश में आ रही है तथा अपने सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थ साक्षी हैं। इससे सिद्ध है कि पूर्ण परमेश्वर, सर्व सष्टि रचनहार, कुल करतार तथा सर्वज्ञ कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही है जो काशी

(बनारस) में कमल के फूल पर प्रकट हुए तथा 120 वर्ष तक वास्तविक तेजोमय शरीर के ऊपर मानव सदृश शरीर हल्के तेज का बना कर रहे तथा अपने द्वारा रची सृष्टि का ठीक-ठीक (वास्तविक तत्व) ज्ञान देकर सशरीर सतलोक चले गए।

कृपा प्रेमी पाठक पढ़ें निम्न अमृतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारित :-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवोंका भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवनकी उत्पति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि रामका का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारा। साहब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह संख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उनको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।

तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

उपरोक्त अमंतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कह रहे हैं कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण संष्टि रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची संष्टि की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़) की, तब दुर्गा (प्रकंति) ने इसके पेट में शरण ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्माण्ड समेत 16 संख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकंति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?

विशेषः- प्रिय पाठक विचार करें कि श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की स्थिति अविनाशी बताई गई थी। सर्व हिन्दु समाज अभी तक तीनों परमात्माओं को अजर, अमर व जन्म-मंत्यु रहित मानते रहे जबकि ये तीनों नाशवान हैं। इन के पिता काल रूपी ब्रह्म तथा माता दुर्गा (प्रकंति/अष्टांगी) हैं जैसा आप ने पूर्व प्रमाणों में पढ़ा यह ज्ञान अपने शास्त्रों में भी विद्यमान है परन्तु हिन्दु समाज के कलयुगी गुरूओं, ऋषियों, सन्तों को ज्ञान नहीं। जो अध्यापक पाठ्यक्रम (सलेबस) से ही अपरिचित है वह अध्यापक ठीक नहीं (विद्वान नहीं) है, विद्यार्थियों के भविष्य का शत्रु है। इसी प्रकार जिन गुरूओं को अभी तक यह नहीं पता कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? तो वे गुरू, ऋषि,सन्त ज्ञान हीन हैं। जिस कारण से सर्व भक्त समाज को शास्त्र विरूद्ध ज्ञान (लोक वेद अर्थात् दन्त कथा) सुना कर अज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। शास्त्रविधि विरूद्ध भक्तिसाधना करा के परमात्मा के वास्तविक लाभ (पूर्ण मोक्ष) से वंचित रखा सबका मानव जन्म नष्ट करा दिया क्योंकि श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में यही प्रमाण है कि जो शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण पूजा करता है। उसे कोई लाभ नहीं होता पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने पाँच वर्ष की लीलामय आयु में सन् 1403 से ही सर्व शास्त्रोंयुक्त ज्ञान अपनी अमंतवाणी (कविरवाणी) में

बताना प्रारम्भ किया था। परन्तु उन अज्ञानी गुरूओं ने यह ज्ञान भक्त समाज तक नहीं जाने दिया। जो वर्तमान में सर्व सद्ग्रन्थों से स्पष्ट हो रहा है इससे सिद्ध है कि कविंदेव (कबीर प्रभु) तत्वदर्शी सन्त रूप में स्वयं पूर्ण परमात्मा ही आए थे।

"आदरणीय गरीबदास साहेब जी की अमृतवाणी में सृष्टि रचना का प्रमाण"

आदि रमैणी (सद् ग्रन्थ पृष्ठ नं. 690 से 692 तक)

आदि रमैंणी अदली सारा। जा दिन होते धुंधुंकारा।।1।।
सतपुरुष कीन्हा प्रकाशा। हम होते तखत कबीर खवासा ।।2।।
मन मोहिनी सिरजी माया। सतपुरुष एक ख्याल बनाया।।3।।
धर्मराय सिरजे दरबानी। चौसठ जुगतप सेवा ठांनी।।4।।
पुरुष पृथिवी जाकूं दीन्ही। राज करो देवा आधीनी।।5।।
ब्रह्माण्ड इकीस राज तुम्ह दीन्हा। मन की इच्छा सब जुग लीन्हा।।6।।
माया मूल रूप एक छाजा। मोहि लिये जिनहूँ धर्मराजा।।7।।
धर्म का मन चंचल चित धार्या। मन माया का रूप बिचारा।।8।।
चंचल चेरी चपल चिरागा। या के परसे सरबस जागा।।9।।
धर्मराय कीया मन का भागी। विषय वासना संग से जागी।।10।।
आदि पुरुष अदली अनरागी। धर्मराय दिया दिल सें त्यागी।।11।।
पुरुष लोक सें दीया ढहाही। अगम दीप चलि आये भाई।।12।।
सहज दास जिस दीप रहंता। कारण कौंन कौंन कुल पंथा।।13।।
धर्मराय बोले दरबानी। सुनो सहज दास ब्रह्मज्ञानी।।14।।
चौसठ जुग हम सेवा कीन्ही। पुरुष पृथिवी हम कूं दीन्ही।।15।।
चंचल रूप भया मन बौरा। मनमोहिनी ठगिया भौंरा।।16।।
सतपुरुष के ना मन भाये। पुरुष लोक से हम चलि आये।।17।।
अगर दीप सुनत बड़भागी। सहज दास मेटो मन पागी।।18।।
बोले सहजदास दिल दानी। हम तो चाकर सत सहदानी।।19।।
सतपुरुष सें अरज गुजारूं। जब तुम्हारा बिवाण उतारूं।।20।।
सहज दास को कीया पीयाना। सत्यलोक लीया प्रवाना।।21।।
सतपुरुष साहिब सरबंगी। अविगत अदली अचल अभंगी।।22।।
धर्मराय तुम्हरा दरबानी। अगर दीप चलि गये प्रानी।।23।।
कौंन हुकम करी अरज अवाजा। कहां पठावौ उस धर्मराजा।।24।।
भई अवाज अदली एक साचा। विषय लोक जा तीन्यूं बाचा।।25।।
सहज विमाँन चले अधिकाई। छिन में अगर दीप चलि आई।।26।।
हमतो अरज करी अनरागी। तुम्ह विषय लोक जावो बड़भागी।।27।।
धर्मराय के चले विमाना। मानसरोवर आये प्राना।।28।
मानसरोवर रहन न पाये। दरै कबीरा थांना लाये।।29।।

बंकनाल की विषमी बाटी। तहां कबीरा रोकी घाटी।।30।।
इन पाँचों मिलि जगत बंधाना। लख चौरासी जीव संताना।।31।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया। धर्मराय का राज पठाया।।32।।
यौह खोखा पुर झूठी बाजी। भिसति बैकुण्ठ दगासी साजी।।33।।
कृतिम जीव भुलांनें भाई। निज घर की तो खबरि न पाई।।34।।
सवा लाख उपजें नित हंसा। एक लाख विनशें नित अंसा।।35।।
उपति खपति प्रलय फेरी। हर्ष शोक जौंरा जम जेरी।।36।।
पाँचों तत्त्व हैं प्रलय माँही। सत्त्वगुण रजगुण तमगुण झांई।।37।।
आठों अंग मिली है माया। पिण्ड ब्रह्माण्ड सकल भरमाया।।38।।
या में सुरति शब्द की डोरी। पिण्ड ब्रह्माण्ड लगी है खोरी।।39।।
श्वासा पारस मन गह राखो। खोल्हि कपाट अमीरस चाखो।।40।।
सुनाऊं हंस शब्द सुन दासा। अगम दीप है अग है बासा।।41।।
भवसागर जम दण्ड जमाना। धर्मराय का है तलबांना।।42।।
पाँचों ऊपर पद की नगरी। बाट बिहंगम बंकी डगरी।।43।।
हमरा धर्मराय सों दावा। भवसागर में जीव भरमावा।।44।।
हम तो कहैं अगम की बानी। जहाँ अविगत अदली आप बिनानी।।45।।
बंदी छोड़ हमारा नामं। अजर अमर है अस्थीर ठामं।।46।।
जुगन जुगन हम कहते आये। जम जौंरा सें हंस छुटाये।।47।।
जो कोई मानें शब्द हमारा। भवसागर नहीं भरमें धारा।।48।।
या में सुरति शब्द का लेखा। तन अंदर मन कहो कीन्ही देखा।।49।।
दास गरीब अगम की बानी। खोजा हंसा शब्द सहदानी।।50।।

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि यहाँ पहले केवल अंधकार था तथा पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी सत्यलोक में तख्त (सिंहासन) पर विराजमान थे। हम वहाँ चाकर थे। परमात्मा ने ज्योति निरंजन को उत्पन्न किया। फिर उसके तप के प्रतिफल में इक्कीस ब्रह्माण्ड प्रदान किए। फिर माया (प्रकृति) की उत्पत्ति की। युवा दुर्गा के रूप पर मोहित होकर ज्योति निरंजन (ब्रह्म) ने दुर्गा (प्रकृति) से बलात्कार करने की चेष्टा की। ब्रह्म को उसकी सजा मिली। उसे सत्यलोक से निकाल दिया तथा शाप लगा कि एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का प्रतिदिन आहार करेगा, सवा लाख उत्पन्न करेगा। यहाँ सर्व प्राणी जन्म-मृत्यु का कष्ट उठा रहे हैं। यदि कोई पूर्ण परमात्मा का वास्तविक शब्द (सच्चानाम जाप मंत्र) हमारे से प्राप्त करेगा, उसको काल की बंद से छुड़वा देंगे। हमारा बन्दी छोड़ नाम है। आदरणीय गरीबदास जी अपने गुरु व प्रभु कबीर परमात्मा के आधार पर कह रहे हैं कि सच्चे मंत्र अर्थात् सत्यनाम व सारशब्द की प्राप्ति कर लो, पूर्ण मोक्ष हो जायेगा। नहीं तो नकली नाम दाता संतों व महन्तों की मीठी-मीठी बातों में फंस कर शास्त्र विधि रहित साधना करके काल जाल में रह जाओगे। फिर कष्ट पर कष्ट उठाओगे।

।।गरीबदास जी महाराज की वाणी।।

(सत ग्रन्थ साहिब पष्ठ नं. 690 से सहाभार)

माया आदि निरंजन भाई, अपने जाऐ आपै खाई।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर चेला, ऊँ सोहं का है खेला।।
सिखर सुन्न में धर्म अन्यायी, जिन शक्ति डायन महल पठाई।।
लाख ग्रासै नित उठ दूती, माया आदि तख्त की कुती।।
सवा लाख घड़िये नित भांडे, हंसा उतपति परलय डांडे।
ये तीनों चेला बटपारी, सिरजे पुरुषा सिरजी नारी।।
खोखापुर में जीव भुलाये, स्वपना बहिस्त वैकुंठ बनाये।
यो हरहट का कुआ लोई, या गल बंध्या है सब कोई।।
कीड़ी कुजंर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा।
अरब अलील इन्द्र हैं भाई, हरहट डोरी बंधे सब आई।।
शेष महेश गणेश्वर ताहिं, हरहट डोरी बंधे सब आहिं।
शुक्रादिक ब्रह्मादिक देवा, हरहट डोरी बंधे सब खेवा।।
कोटिक कर्ता फिरता देख्या, हरहट डोरी कहूँ सुन लेखा।
चतुर्भुजी भगवान कहावैं, हरहट डोरी बंधे सब आवैं।।
यो है खोखापुर का कुआ, या में पड़ा सो निश्चय मुवा।

ज्योति निरंजन (कालबली) के वश होकर के ये तीनों देवता (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) अपनी महिमा दिखाकर जीवों को स्वर्ग नरक तथा भवसागर में (लख चौरासी योनियों में) भटकाते रहते हैं। ज्योति निरंजन अपनी माया से नागिनी की तरह जीवों को पैदा करते हैं और फिर मार देते हैं। जिस प्रकार उसको नागिनी खा जाती है। फन मारते समय कई अण्डे फूट जाते हैं क्योंकि नागिनी के काफी अण्डे होते हैं। जो अण्डे फूटते हैं उनमें से बच्चे निकलते हैं यदि कोई बच्चा नागिनी अपनी दुम से अण्डों के चारों ओर कुण्डली बनाती है फिर उन अण्डों पर अपना फन मारती है। जिससे अण्डा फूट जाता है। उसमें से बच्चा निकल जाता है। कुण्डली (सर्पनी की दुम का घेरा) से बाहर निकल जाता है तो वह बच्चा बच जाता है नहीं तो कुण्डली में वह (नागिनी) छोड़ती नहीं। जितने बच्चे उस कुण्डली के अन्दर होते हैं उन सबको खा जाती है।

माया काली नागिनी, अपने जाये खात। कुण्डली में छोड़ै नहीं, सौ बातों की बात।।

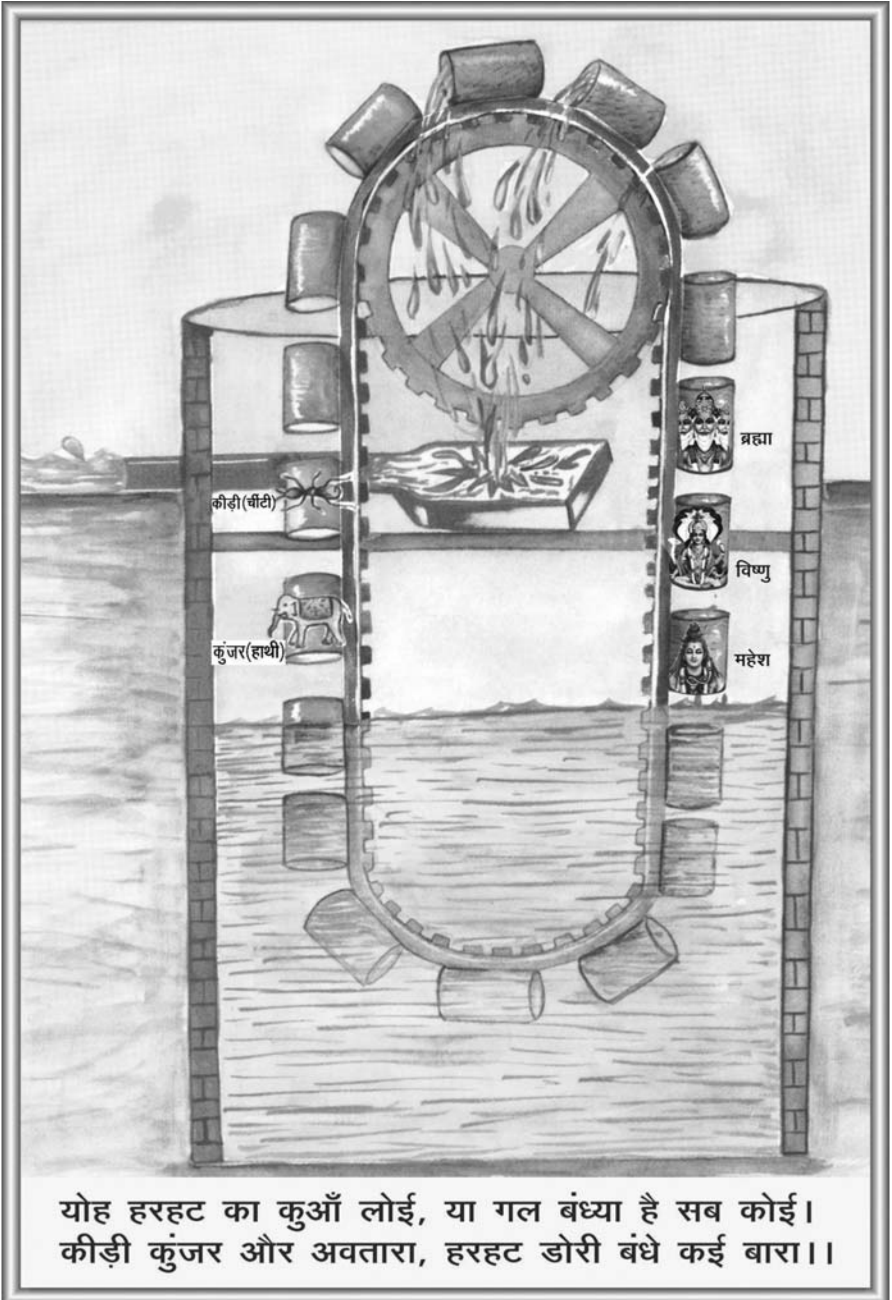
इसी प्रकार यह कालबली का जाल है। निरंजन तक की भक्ति पूरे संत से नाम लेकर करेगें तो भी इस निरंजन की कुण्डली (इक्कीस ब्रह्माण्डों) से बाहर नहीं निकल सकते। स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि माया शेराँवाली भी निरंजन की कुण्डली में है। ये बेचारे अवतार धार कर आते हैं और जन्म-मत्यु का चक्कर काटते रहते हैं। इसलिए विचार करें सोहं जाप जो कि ध्रुव व प्रहलाद व शुकदेव ऋषि ने जपा, वह भी पार नहीं हुए। क्योंकि श्री विष्णु पुराण के प्रथम अंश के अध्याय 12 के श्लोक 93 में पष्ठ 51 पर लिखा है कि ध्रुव केवल एक कल्प अर्थात् एक हजार चतुर्युग तक ही मुक्त है। इसलिए

काल लोक में ही रहे तथा 'ऊँ नमः भगवते वासुदेवाय' मन्त्र जाप करने वाले भक्त भी कृष्ण तक की भक्ति कर रहे हैं, वे भी चौरासी लाख योनियों के चक्कर काटने से नहीं बच सकते। यह परम पूज्य कबीर साहिब जी व आदरणीय गरीबदास साहेब जी महाराज की वाणी प्रत्यक्ष प्रमाण देती हैं।

अनन्त कोटि अवतार हैं, माया के गोविन्द। कर्ता हो हो अवतरे, बहुर पड़े जग फंध।।

सतपुरुष कबीर साहिब जी की भक्ति से ही जीव मुक्त हो सकता है। जब तक जीव सतलोक में वापिस नहीं चला जाएगा तब तक काल लोक में इसी तरह कर्म करेगा और की हुई नाम व दान धर्म की कमाई स्वर्ग रूपी होटलों में समाप्त करके वापिस कर्म आधार से चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाने वाले काल लोक में चक्कर काटता रहेगा। माया (दुर्गा) से उत्पन्न हो कर करोड़ों गोबिन्द(ब्रह्मा-विष्णु-शिव) मर चुके हैं। भगवान का अवतार बन कर आये थे। फिर कर्म बन्धन में बन्ध कर कर्मों को भोग कर चौरासी लाख योनियों में चले गए। जैसे भगवान विष्णु जी को देवर्षि नारद का शाप लगा। वे श्री रामचन्द्र रूप में अयोध्या में आए। फिर श्री राम जी रूप में बाली का वध किया था। उस कर्म का दण्ड भोगने के लिए श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ। फिर बाली वाली आत्मा शिकारी बना तथा अपना प्रतिशोध लिया। श्री कृष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर मार कर वध किया। महाराज गरीबदास जी अपनी वाणी में कहते हैं :

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, और धर्मराय कहिये।
इन पाँचों मिल परपंच बनाया, वाणी हमरी लहिये।।
इन पाँचों मिल जीव अटकाये, जुगन–जुगन हम आन छुटाये।
बन्दी छोड़ हमारा नामं, अजर अमर है अस्थिर ठामं।।
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया, सुर नर मुनिजन ज्ञानी।
येता को तो राह न पाया, जम के बंधे प्राणी।।
धर्मराय की धूमा–धामी, जम पर जंग चलाऊँ।
जोरा को तो जान न दूगां, बांध अदल घर ल्याऊँ।।
काल अकाल दोहूँ को मोसूं, महाकाल सिर मूंडू।
मैं तो तख्त हजूरी हुकमी, चोर खोज कूं ढूंढू।।
मूला माया मग में बैठी, हंसा चुन–चुन खाई।
ज्योति स्वरूपी भया निरंजन, मैं ही कर्ता भाई।।
संहस अठासी दीप मुनीश्वर, बंधे मुला डोरी।
ऐत्यां में जम का तलबाना, चलिए पुरुष कीशोरी।।
मूला का तो माथा दागूं, सतकी मोहर करूंगा।
पुरुष दीप कूं हंस चलाऊँ, दरा न रोकन दूंगा।।
हम तो बन्दी छोड़ कहावां, धर्मराय है चकवै।
सतलोक की सकल सुनावां, वाणी हमरी अखवै।।
नौ लख पटट्न ऊपर खेलूं, साहदरे कूं रोकूं।



काल लोक में जन्म-मरण रूपी हरहट (चक्र)

द्वादस कोटि कटक सब काटूं, हंस पठाऊँ मोखूं।।
चौदह भुवन गमन है मेरा, जल थल में सरबंगी।
खालिक खलक खलक में खालिक, अविगत अचल अभंगी।।
अगर अलील चक्र है मेरा, जित से हम चल आए।
पाँचों पर प्रवाना मेरा, बंधि छुटावन धाये।।
जहाँ ओंकार निरंजन नाहीं, ब्रह्मा विष्णु वेद नहीं जाहीं।
जहाँ करता नहीं काल भगवाना, काया माया पिण्ड न प्राणा।।
पाँच तत्व तीनों गुण नाहीं, जोरा काल दीप नहीं जाहीं।
अमर करूं सतलोक पठाँऊ, तातैं बन्दी छोड़ कहाऊँ।।

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की महिमा बताते हुए आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि हमारे प्रभु कविर् (कविर्देव) बन्दी छोड़ हैं। बन्दी छोड़ का भावार्थ है काल की कारागार से छुटवाने वाला, काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों में सर्व प्राणी पापों के कारण काल के बंदी हैं। पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब पाप का विनाश कर देते हैं। पापों का विनाश न ब्रह्म, न परब्रह्म, न ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी कर सकते हैं। केवल जैसा कर्म है, उसका वैसा ही फल दे देते हैं। इसीलिए यजुर्वेद अध्याय 5 के मन्त्र 32 में लिखा है 'कविरंघारिरसि' कविर्देव (कबीर परमेश्वर) पापों का शत्रु है, 'बम्भारिरसि' बन्धनों का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ है।

इन पाँचों (ब्रह्मा-विष्णु-शिव-माया और धर्मराय) से ऊपर सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) है। जो सतलोक का मालिक है। शेष सर्व परब्रह्म-ब्रह्म तथा ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी व आदि माया नाशवान परमात्मा हैं। महाप्रलय में ये सब तथा इनके लोक समाप्त हो जाएंगे। आम जीव से कई हजार गुणा ज्यादा लम्बी इनकी उम्र है। परन्तु जो समय निर्धारित है वह एक दिन पूरा अवश्य होगा। आदरणीय गरीबदास जी महाराज कहते हैं :-

शिव ब्रह्मा का राज, इन्द्र गिनती कहां। चार मुक्ति वैकुंण्ठ समझ, येता लह्या।।
संख जुगन की जुनी, उम्र बड़ धाारिया। जा जननी कुर्बान, सु कागज पारिया।।
येती उम्र बुलंद मरैगा अंत रे। सतगुरु लगे न कान, न भैंटे संत रे।।

चाहे संख युग की लम्बी उम्र भी क्यों न हो वह एक दिन समाप्त जरूर होगी। यदि सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब के नुमाँयदे पूर्ण संत(गुरु) जो तीन नाम का मंत्र (जिसमें एक ओ३म + तत् + सत् सांकेतिक हैं) देता है तथा उसे पूर्ण संत द्वारा नाम दान करने का आदेश है, उससे उपदेश लेकर नाम की कमाई करेंगे तो हम सतलोक के अधिकारी हंस हो सकते हैं। सत्य साधना बिना बहुत लम्बी उम्र कोई काम नहीं आएगी क्योंकि निरंजन लोक में दुःख ही दुःख है।

कबीर, जीवना तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।

कबीर साहिब अपनी (पूर्णब्रह्म की) जानकारी स्वयं बताते हैं कि इन परमात्माओं से ऊपर असंख्य भुजा का परमात्मा सतपुरुष है जो सत्यलोक (सच्च खण्ड, सतधाम)

में रहता है तथा उसके अन्तर्गत सर्वलोक [ब्रह्म (काल) के 21 ब्रह्माण्ड व ब्रह्मा, विष्णु, शिव शक्ति के लोक तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्ड व अन्य सर्व ब्रह्माण्ड] आते हैं और वहाँ पर सत्यनाम-सारनाम के जाप द्वारा जाया जाएगा जो पूरे गुरु से प्राप्त होता है। सच्चखण्ड (सतलोक) में जो आत्मा चली जाती है उसका पुनर्जन्म नहीं होता। सतपुरुष (पूर्णब्रह्म) कबीर साहेब (कविर्देव) ही अन्य लोकों में स्वयं ही भिन्न-भिन्न नामों से विराजमान हैं। जैसे अलख लोक में अलख पुरुष, अगम लोक में अगम पुरुष तथा अकह लोक में अनामी पुरुष रूप में विराजमान हैं। ये तो उपमात्मक नाम हैं, परन्तु वास्तविक नाम उस पूर्ण पुरुष का कविर्देव (भाषा भिन्न होकर कबीर साहेब) है।

“आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में संष्टि रचना का संकेत”

श्री नानक साहेब जी की अमंतवाणी, महला 1, राग बिलावलु, अंश 1 (गु.ग्र. पं. 839)

आपे सचु कीआ कर जोड़ि। अंडज फोड़ि जोडि विछोड़।।
धरती आकाश कीए बैसण कउ थाउ। राति दिनंतु कीए भउ–भाउ।।
जिन कीए करि वेखणहारा।(3)
त्रितीआ ब्रह्मा–बिसनु–महेसा। देवी देव उपाए वेसा।।(4)
पउण पाणी अगनी बिसराउ। ताही निरंजन साचो नाउ।।
तिसु महि मनुआ रहिआ लिव लाई। प्रणवति नानकु कालु न खाई।।(10)

उपरोक्त अमंतवाणी का भावार्थ है कि सच्चे परमात्मा (सतपुरुष) ने स्वयं ही अपने हाथों से सर्व संष्टि की रचना की है। उसी ने अण्डा बनाया फिर फोड़ा तथा उसमें से ज्योति निरंजन निकला। उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व प्राणियों के रहने के लिए धरती, आकाश, पवन, पानी आदि पाँच तत्व रचे। अपने द्वारा रची संष्टि का स्वयं ही साक्षी है। दूसरा कोई सही जानकारी नहीं दे सकता। फिर अण्डे के फूटने से निकले निरंजन के बाद तीनों श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की उत्पत्ति हुई तथा अन्य देवी-देवता उत्पन्न हुए तथा अनगिनत जीवों की उत्पत्ति हुई। उसके बाद अन्य देवों के जीवन चरित्र तथा अन्य ऋषियों के अनुभव के छः शास्त्र तथा अठारह पुराण बन गए। पूर्ण परमात्मा के सच्चे नाम (सत्यनाम) की साधना अनन्य मन से करने से तथा गुरु मर्यादा में रहने वाले (प्रणवति) को श्री नानक जी कह रहे हैं कि काल नहीं खाता।

राग मारु(अंश) अमंतवाणी महला 1(गु.ग्र.पं. 1037)

सुनहु ब्रह्मा, बिसनु, महेसु उपाए। सुने वरते जुग सबाए।।
इसु पद बिचारे सो जनु पुरा। तिस मिलिए भरमु चुकाइदा।।(3)
साम वेदु, रुगु जुजरु अथरबणु। ब्रहमें मुख माइआ है त्रैगुण।।
ता की कीमत कहि न सकै। को तिउ बोले जिउ बुलाईदा।।(9)

उपरोक्त अमंतवाणी का सारांश है कि जो संत पूर्ण संष्टि रचना सुना देगा तथा बताएगा कि अण्डे के दो भाग होकर कौन निकला, जिसने फिर ब्रह्मलोक की सुन्न में अर्थात् गुप्त स्थान पर ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी की उत्पत्ति की तथा वह परमात्मा

कौन है जिसने ब्रह्म (काल) के मुख से चारों वेदों (पवित्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) को उच्चारण करवाया, वह पूर्ण परमात्मा जैसा चाहे वैसे ही प्रत्येक प्राणी को बुलवाता है। इस सर्व ज्ञान को पूर्ण बताने वाला सन्त मिल जाए तो उसके पास जाइए तथा जो सभी शंकाओं का पूर्ण निवारण करता है, वही पूर्ण सन्त अर्थात् तत्वदर्शी है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 929 अमृत वाणी श्री नानक साहेब जी की राग रामकली महला 1 दखणी ओअंकार

ओअंकारि ब्रह्मा उतपति। ओअंकारू कीआ जिनि चित। ओअंकारि सैल जुग भए। ओअंकारि बेद निरमए। ओअंकारि सबदि उधरे। ओअंकारि गुरुमुखि तरे। ओनम अखर सुणहू बीचारु। ओनम अखरु त्रिभवण सारु।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि ओंकार अर्थात् ज्योति निरंजन (काल) से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई। कई युगों मस्ती मार कर ओंकार (ब्रह्म) ने वेदों की उत्पत्ति की जो ब्रह्मा जी को प्राप्त हुए। तीन लोक की भक्ति का केवल एक ओउम् मंत्र ही वास्तव में जाप करने का है। इस ओउम् शब्द को पूरे संत से उपदेश लेकर अर्थात् गुरू धारण करके जाप करने से उद्धार होता है।

विशेष :– श्री नानक साहेब जी ने तीनों मंत्रों (ओउम् + तत् + सत्) का स्थान-स्थान पर रहस्यात्मक विवरण दिया है। उसको केवल पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) ही समझ सकता है तथा तीनों मंत्रों के जाप को उपदेशी को समझाया जाता है।

(पृ. 1038) उत्तम सतिगुरु पुरुष निराले, सबदि रते हरि रस मतवाले।
रिधि, बुधि, सिधि, गिआन गुरु ते पाइए, पूरे भाग मिलाईदा।।(15)
सतिगुरु ते पाए बीचारा, सुन समाधि सचे घरबारा।
नानक निरमल नादु सबद धुनि, सचु रामैं नामि समाइदा (17)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि वास्तविक ज्ञान देने वाले सतगुरु तो निराले ही हैं, वे केवल नाम जाप को जपते हैं, अन्य हठयोग साधना नहीं बताते। यदि आप को धन दौलत, पद, बुद्धि या भक्ति शक्ति भी चाहिए तो वह भक्ति मार्ग का ज्ञान पूर्ण संत ही पूरा प्रदान करेगा, ऐसा पूर्ण संत बड़े भाग्य से ही मिलता है। वही पूर्ण संत विवरण बताएगा कि ऊपर सुन्न (आकाश) में अपना वास्तविक घर (सत्यलोक) परमेश्वर ने रच रखा है।

उसमें एक वास्तविक सार नाम की धुन (आवाज) हो रही है। उस आनन्द में अविनाशी परमेश्वर के सार शब्द से समाया जाता है अर्थात् उस वास्तविक सुखदाई स्थान में वास हो सकता है, अन्य नामों तथा अधूरे गुरुओं से नहीं हो सकता।

आंशिक अमृतवाणी महला पहला (श्री गु. ग्र. पृ. 359-360)

सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप त्यागी वादं।(1)
सिंडी सबद सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं।(2)

हरि कीरति रह रासि हमारी गुरु मुख पंथ अतीतं (3)
सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरण अनेकं।
कह नानक सुणि भरथरी जोगी पारब्रह्म लिव एकं।(4)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि हे भरथरी योगी जी आप की साधना भगवान शिव तक है, उससे आप को शिव नगरी (लोक) में स्थान मिला है और शरीर में जो सिंगी शब्द आदि हो रहा है वह इन्हीं कमलों का है तथा टेलीविजन की तरह प्रत्येक देव के लोक से शरीर में सुनाई दे रहा है।

हम तो एक परमात्मा पारब्रह्म अर्थात् सर्व से पार जो पूर्ण परमात्मा है अन्य किसी और एक परमात्मा में लौ (अनन्य मन से लग्न) लगाते हैं।

हम ऊपरी दिखावा (भस्म लगाना, हाथ में दंडा रखना) नहीं करते। मैं तो सर्व प्राणियों को एक पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) की सन्तान समझता हूँ। सर्व उसी शक्ति से चलायमान हैं। हमारी मुद्रा तो सच्चा नाम जाप गुरु से प्राप्त करके करना है तथा क्षमा करना हमारा बाणा (वेशभूषा) है। मैं तो पूर्ण परमात्मा का उपासक हूँ तथा पूर्ण सतगुरु का भक्ति मार्ग इससे भिन्न है।

अमृतवाणी राग आसा महला 1 (श्री गु. ग्र. पृ. 420)

।।आसा महला 1।। जिनी नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई। मूलु छोड़ि डाली लगे किआ पावहि छाई।।1।। साहिबु मेरा एकु है अवरु नहीं भाई। किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई।।3।। गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए। नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए।।8।।18।।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि जो पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम भूल कर अन्य भगवानों के नामों के जाप में भ्रम रहे हैं वे तो ऐसा कर रहे हैं कि मूल (पूर्ण परमात्मा) को छोड़ कर डालियों (तीनों गुण रूप रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिवजी) की सिंचाई (पूजा) कर रहे हैं। उस साधना से कोई सुख नहीं हो सकता अर्थात् पौधा सूख जाएगा तो छाया में नहीं बैठ पाओगे। भावार्थ है कि शास्त्र विधि रहित साधना करने से व्यर्थ प्रयत्न है। कोई लाभ नहीं। इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी है। उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने के लिए मनमुखी (मनमानी) साधना त्याग कर पूर्ण गुरुदेव को समर्पण करने से तथा सच्चे नाम के जाप से ही मोक्ष संभव है, नहीं तो मृत्यु के उपरांत नरक जाएगा।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 843-844)

।।बिलावलु महला 1।। मैं मन चाहु घणा साचि विगासी राम। मोही प्रेम पिरे प्रभु अबिनासी राम।। अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ। किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ। मैं आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ। साचि सूचा सदा नानक गुरसबदि झगरु निबेरओ।।4।।2।।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि अविनाशी पूर्ण

परमात्मा नाथों का भी नाथ है अर्थात् देवों का भी देव है (सर्व प्रभुओं श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्म व परब्रह्म पर भी नाथ है अर्थात् स्वामी है) मैं तो सच्चे नाम को ह्रदय में समा चुका हूँ। हे परमात्मा ! सर्व प्राणी का जीवन आधार भी आप ही हो। मैं आपके आश्रित हूँ आप मेरे मालिक हो। आपने ही गुरु रूप में आकर सत्यभक्ति का निर्णायक ज्ञान देकर सर्व झगड़ा निपटा दिया अर्थात् सर्व शंका का समाधान कर दिया।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पंष्ठ नं. 721, राग तिलंग महला 1)

यक अर्ज गुफतम् पेश तो दर कून करतार।
हक्का कबीर करीम तू बेअब परवरदिगार।
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पाखाक।

उपरोक्त अमंतवाणी में स्पष्ट कर दिया कि हे (हक्का कबीर) आप सत्कबीर (कून करतार) शब्द शक्ति से रचना करने वाले शब्द स्वरूपी प्रभु अर्थात् सर्व संष्टि के रचन हार हो, आप ही बेएब निर्विकार (परवरदिगार) सर्व के पालन कर्ता दयालु प्रभु हो, मैं आपके दासों का भी दास हूँ।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पंष्ठ नं. 24, राग सीरी महला 1)

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहो आस ऐहो आधार।
नानक नीच कहै बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।

उपरोक्त अमंतवाणी में प्रमाण किया है कि जो काशी में धाणक (जुलाहा) है यही (करतार) कुल का संजनहार है। अति आधीन होकर श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मैं सत कह रहा हूँ कि यह धाणक अर्थात् कबीर जुलाहा ही पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) है।

विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों के सांकेतिक ज्ञान से प्रमाणित हुआ संष्टि रचना कैसे हुई? पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिए जो पूर्ण संत से नाम लेकर ही संभव है।

''अन्य संतों द्वारा संष्टि रचना की दन्त कथा''

अन्य संतों द्वारा जो संष्टि रचना का ज्ञान बताया है वह कैसा है? कंप्या निम्न पढ़ेः- संष्टि रचना के विषय में राधास्वामी पंथ के सन्तों के व धन-धन सतगुरू पंथ के सन्त के विचार :-

पवित्र पुस्तक जीवन चरित्र परम संत बाबा जयमल सिंह जी महाराज'' पंष्ठ नं. 102-103 से ''संष्टि की रचना'' (सावन कंपाल पब्लिकेशन, दिल्ली)

''पहले सतपुरुष निराकार था, फिर इजहार (आकार) में आया तो ऊपर के तीन निर्मल मण्डल (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) बन गया तथा प्रकाश तथा मण्डलों का नाद (धुनि) बन गया।''

पवित्र पुस्तक सारवचन (नसर) प्रकाशक :- राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग आगरा, ''संष्टि की रचना'' पंष्ठ 8 :-

''प्रथम धूंधूकार था। उसमें पुरुष सुन्न समाध में थे। जब कुछ रचना नहीं हुई थी। फिर

जब मौज हुई तब शब्द प्रकट हुआ और उससे सब रचना हुई, पहले सतलोक और फिर सतपुरुष की कला से तीन लोक और सब विस्तार हुआ।''

यह ज्ञान तो ऐसा है जैसे एक समय कोई बच्चा नौकरी लगने के लिए साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए गया। अधिकारी ने पूछा कि आप ने महाभारत पढ़ा है। लड़के ने उत्तर दिया कि उंगलियों पर रट रखा है। अधिकारी ने प्रश्न किया कि पाँचों पाण्डवों के नाम बताओ। लड़के ने उत्तर दिया कि एक भीम था, एक उसका बड़ा भाई था, एक उससे छोटा था, एक और था तथा एक का नाम मैं भूल गया। उपरोक्त संष्टि रचना का ज्ञान तो ऐसा है।

सतपुरुष व सतलोक की महिमा बताने वाले व पाँच नाम (औंकार - ज्योति निरंजन - ररंकार - सोहं - सत्यनाम) देने वाले व तीन नाम (अकाल मूर्ति - सतपुरुष - शब्द स्वरूपी राम) देने वाले संतों द्वारा रची पुस्तकों से कुछ निष्कर्ष :-

संतमत प्रकाश भाग 3 पंष्ठ 76 पर लिखा है कि ''सच्चखण्ड या सतनाम चौथा लोक है'', यहाँ पर 'सतनाम' को स्थान कहा है। फिर इस पवित्र पुस्तक के पंष्ठ नं. 79 पर लिखा है कि ''एक राम दशरथ का बेटा, दूसरा राम 'मन', तीसरा राम 'ब्रह्म', चौथा राम 'सतनाम', यह असली राम है।'' फिर पवित्र पुस्तक संतमत प्रकाश पहला भाग पंष्ठ नं. 17 पर लिखा है कि ''वह सतलोक है, उसी को सतनाम कहा जाता है।'' पवित्र पुस्तक 'सार वचन नसर यानि वार्तिक' पंष्ठ नं. 3 पर लिखा है कि ''अब समझना चाहिए कि राधा स्वामी पद सबसे उच्चा मुकाम है कि जिसको संतों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सार शब्द और सत शब्द और सतनाम और सतपुरुष करके ब्यान किया है।'' पवित्र पुस्तक सार वचन (नसर) आगरा से प्रकाशित पंष्ठ नं. 4 पर भी उपरोक्त ज्यों का त्यों वर्णन है। पवित्र पुस्तक 'सच्चखण्ड की सड़क' पंष्ठ नं. 226 ''संतों का देश सच्चखण्ड या सतलोक है, उसी को सतनाम- सतशब्द-सारशब्द कहा जाता है।''

विशेष :- उपरोक्त व्याख्या ऐसी लगी जैसे किसी ने जीवन में न तो शहर देखा, न कार देखी और न पैट्रोल देखा है, न ड्राईवर का ज्ञान हो कि ड्राईवर किसे कहते हैं और वह व्यक्ति अन्य साथियों से कहे कि मैं शहर में जाता हूँ, कार में बैठ कर आनंद मनाता हूँ। फिर साथियों ने पूछा कि कार कैसी है, पैट्रोल कैसा है और ड्राईवर कैसा है, शहर कैसा है? उस गुरु जी ने उत्तर दिया कि शहर कहो चाहे कार एक ही बात है, शहर भी कार ही है, पैट्रोल भी कार को ही कहते हैं, ड्राईवर भी कार को ही कहते हैं, सड़क भी कार को ही कहते हैं।

आओ विचार करें - सतपुरुष तो पूर्ण परमात्मा है, सतनाम वह दो मंत्र का नाम है जिसमें एक ओ३म् + तत् सांकेतिक है तथा इसके बाद सारनाम साधक को पूर्ण गुरु द्वारा दिया जाता है। यह सतनाम तथा सारनाम दोनों स्मरण करने के नाम हैं। सतलोक वह स्थान है जहाँ सतपुरुष रहता है। पुण्यात्माएं स्वयं निर्णय करें सत्य तथा असत्य का।